श्रीआनन्दचन्द्रग्रन्थाब्धौ(ग्रन्थरत्नाकरे) ग्रन्थरत्नम्-१६.

शाश्वतानन्ददायक-श्रीयन्त्राधिराजराजेश्वर-श्रीसिद्धचक्रेभ्यो नमो नमः ।

सकलसमीहितपूरक-श्रीशङ्खेश्वरपार्श्वनाथो विजयतेतमाम् । शासनसञ्चालक-सूत्रकृच्छ्रीसुधर्मगणभृते नमो नमः ॥

वर्तमानशासनमान्यसूत्रकार-पञ्चमगणधरप्रवरश्रीसुधर्मस्वामिसंदृब्धं, तत्सूत्रार्थरहस्यकार-श्रीमद्भद्रबाहुस्वामिनिर्मितनिर्युक्तियुतं,

नवाङ्गीवृत्तिकार-श्रीमदभयदेवसूरिविहितविवरणसुशोभितं, संपादकीयविविधप्रत्यन्तरपाठाद्यनेकपरिशिष्टसमलङ्कृतं च—

॥ श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गम् ॥

[तस्यायं श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गीय-प्रथमश्रुतस्कंधस्याष्टाध्ययनस्वरूपः प्रथमो विभागः]

संशोधकः सम्पादकश्च

प्रातःस्मरणीयपूज्यानां गीतार्थसार्वभौमानामागमोद्धारकाणां श्रीवर्द्धमानजैनागममन्दिरसंस्थापकानां प्रावचनिकधुरन्धराणां

स्व० श्रीआनन्दसागरसूरीश्वराणां विद्वद्विनेयः आचार्यश्रीचन्द्रसागरसूरिः ।

प्रकाशिका—“ श्रीसिद्धचक्रसाहित्यप्रचारकसमिति ” इति संस्था ।

वीरसंवत् २४७८ । विक्रमसवत् २००८ । : पण्यम् [illegible]-०-० क्राइस्टाब्द १९५१ ।

प्रकाशिका—
श्रीसिद्धचक्र-साहित्यप्रचारक-समिति-
प्रधानसञ्चालक-
पानाचन्द रूपचन्द झवेरी.
२२४ शेखमेमणस्ट्रीट, मुम्बाइ नं० २

॥ स्व० पू० गुरुदेव-आगमोद्धारक-सुधावाक् ॥

सर्वव्यापक योग कयो ?, धर्मकथानुयोग. धर्मिष्ठोना चरित्रोनो संचय तेनुं नाम धर्मकथानुयोग छे. धर्मकथानुयोग ए एक व्यापक चीज छे, के जेओ शासनमान्यमार्गमां प्रवेशेला न होय, अने नवा दाखल थतां होय, ते बधाने प्रथम-देशनामां धर्मकथानुयोग कहेवो.

(देशनानन्दसुधासिन्धु-देशना-६)

मुद्रक—शाह गुलाबचन्द लल्लुभाई,
श्रीमहोदय प्रिन्टींग प्रेस.
दाणापीठ-भावनगर.
(सौराष्ट्र)

आर्थिक-सहायक-नामावलि.

श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्ग-भा-१-२ ना मुद्रण माटे अगाऊथी भेट रकम आपनार पुण्यशालीओ ।

वडोदरा

१००१) श्री जानीशेरी वडोदरा जैन उपाश्रयना ज्ञानखाता तरफथी.
२५१) श्रीकोठीपोल वडोदरा जैन उपाश्रय तरफथी.
२५१) शा मंगलदास लक्ष्मीचन्द वडुवाला.
१०१) शा छगनलाल रायचन्द ह० रंगीलदासभाइ.
१०१) शा केसरीमलजी हीराचन्दजी नवापुरा.
१०१) शा अमृतलाल हरिलाल तरफथी. ह. चन्दुलाल परसोतमदास.
१०१) श्री शाहखाते ह. मंगलदास शिवलाल.
१०१) शा नेमचन्द बेचरदास तरफथी भेट, ह. केशरीचन्द कल्याणचन्द.
१०१) शा जमनादास जेठाभाइ छाणीवाला.
१०१) शा वाडीलाल केशवलाल काटवाला.
१०१) शा सुकनराज हीराचन्दजी.
५१) बाइ गंगाबेन ते त्रिभोवनदास दुर्लभदासनी दीकरी तरफथी ह. जमनादास कालीदास.
५१) श्री शाहखाते ह. शान्तिभाइ जमनादास वैद्य.
५१) शा दलसुखभाइ मोहनलाल अंगुठणवाला.
५१) गांधी कान्तिलाल अमृतलाल वेजलपुरवाला.
५१) शा नगीनदास गुलाबचन्द घीया.
५१) शा त्रिभोवनदास मोहोलाल हाथीपोलवाला.
५१) शा मोतीलाल मोहनलाल.
४१) शेठ अम्बालाल हीराचंद.
३१) शा भायचन्दभाइ त्रिभोवनदास पटवा.
३१) शा भीखमचन्दजी फोजमलजी.
३१) शा नगीनदास छोटालाल दोडकावाला.
३१) शा मणिलाल मोतीलाल दोडकावाला.
२५) शा मगनलाल कस्तुरचन्द मेथीवाला.
११) शा सुन्दरलाल चुनीलाल.
११) उषा-कुलोथ मरचन्ट ह. व्होरा भोगीलालभाइ.

श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गे-



प्रकाशिकानुं निवेदन.

श्रीसिद्धचक्रनो अने समितिनो जन्म—

प्रातःस्मरणीय, पूज्यपाद, तपागच्छगगनदिनमणि–श्रीदेवसूरसंघपरम्परासंरक्षक–आगमोद्धारक–श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजश्रीनुं अनेक ठाणां सह वि. सं. १९८८ मुम्बाइ–मूलेश्वर–लालबागना उपाश्रये सकल संघनी विनंतिथी चातुर्मास थयुं, अने ते अवसरे पू. मुनिश्री चन्द्रसागरजी (हालमां पू० आचार्य–श्रीचन्द्रसागरसूरिजी) पण साथे हता.

आ चातुर्मास थयुं ते अवसरे युवानीआओए शासनमान्य–दीक्षाना अस्खलित–प्रवाहने रोकवा कम्मर कसी हती, तन–मन अने धनद्वाराए दीक्षार्थीओने कनडगत करवानी अनेकविध कार्यवाहीओ शरू करी हती, मानव–जीवनने कलंक समान क्रान्तिमालाना लेखोनी हारमाला लखीने–प्रचारीने आगेवान युवकोए भद्रिक–युवान वर्गना मगज व्हेकावी मूकवानी वेगभरी शरूआत करी हती, प्रव्रज्याना पवित्र प्रबल वेगने रोकवा गामे गाम युवकसंघनी स्थापना करी हती–थती हती; आवा विषम वातावरणमां सम्यक्त्व पामेलाओ सम्यक्त्वथी पतित थाय, नवा जीवो सम्यक्त्व पामे नहिं, अने सम्यक्त्वनी अभिमुख थयेलो वर्ग खसी जाय तेवां तेवां भाषणो थतां, तथा आत्मशक्तिना विकासने रुंधनारा अनेकविध प्रकाशनो, प्रबन्धो, लेखो, मासिको, पाक्षिको, साप्ताहिको दी उगे देखाव देतां

हतां; तेवा शासन ऊपरना भयंकर आक्रमण अवसरे प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद आगमोद्धारक स्व० आ० श्री **आनन्दसागरसूरीश्वरजीनी** संमतिने अनुसरीने तेओश्रीना विद्वद्विनेयरत्न–श्रीसिद्धचक्रतीर्थोद्धारक–श्रीसिद्धचक्र–नवपदआराधकसमाजसंस्थापक–वैयाकरणकेशरी–श्रीसिद्धहेमचन्द्रशब्दानुशासनमहाव्याकरण पर श्रीआनन्दबोधिनी वृत्तिना रचयिता, श्रीवर्द्धमानतपोमाहात्म्य, विंशति विंशिका–सारांश–रहस्य, पंचाशकशास्त्रसारांश, सूत्रकृताङ्गसारांश, सुधावर्षादि विविध साहित्यना आलेखनकार पूज्यपाद **आचार्यदेवश्री चन्द्रसागर-सूरिजीनी** शासनसंरक्षक प्रेरणाथी अने तेओश्रीनी पुनित देखरेख नीचे उपर जणावेला अनेकविध विघातक तत्त्वोने जडमूलथी नाबुद करवा माटे अने शासनरसिक–चतुर्विधसंघमां धर्मना जोमने प्रबलवेग आपवा माटे **श्रीसिद्धचक्रपाक्षिकनो** जन्म थयो. ते पाक्षिकनुं संचालन करवा माटे अने आराधकोनी आराधना आराध्यपदने अनुसरवा साथे उज्ज्वल बने ते हेतुथी तेने अनुसरतुं शासन–मान्यसाहित्यनुं प्रकाशन करवा माटे साथे साथे **श्रीसिद्धचक्र–साहित्य–प्रचारक–समितिनो** पण जन्म थयो.

बन्नेनी प्रशंसनीय कार्यवाही—

आ शासनसंरक्षक–श्रीसिद्धचक्रपाक्षिकने प्रबळवेग आपीने पगभर बनाववा माटे पू. आगमोद्धारकनी **अमोघदेशनाओ,** तथा तेओश्रीए आपेल समाधानोना संचयरूप **श्रीसागरसमाधानद्वाराए** जटिलप्रश्नोना प्रत्युत्तरो, आराधकोना जीवन आराधनामां ओतप्रोत बने अने विराधनाथी बचे ते सारु सुधानी गरज सारी शके तेवा तेओ श्रीमान्‌ना हृदयस्पर्शी सुधा समान वाक्योना संचयरूप, **सुधासागर,** शासन पर हुमला करनाराओने जडबातोड जवाब मली शके ते सारु **समालोचना** विगेरे सुन्दरविभागोने–सुन्दर–अतीव उपकारीक सामग्रीओथी, अने तेओश्रीना विद्वद्विनेयश्रीचन्द्रसागरसूरिजीना प्रेरणात्मक सदुपदेशे आर्थिकसहायको मलवाथी समिति

अने पाक्षिक शासनसंरक्षकना कामने निर्विघ्ने आगल वधारवाने समर्थ थया. आ पाक्षिकनुं अने समितिनुं संचालन करवानुं काम संभाली लेवानी जवाबदारी शरूआतथी जे में उपाडी लीधी हती अने ते जवाबदारी अद्यापि पर्यन्त सेवाभाविपणाथी हुं बजावी रह्यो छुं. आ श्रीसिद्धचक्रपाक्षिके अने श्री सि० सा० प्र० समितिए शासनमान्य सुप्रसिद्ध सेवाओ शासन पर आवी पडेली आपत्तिकालमां बजावी छे के-जे सेवाओ माटे अद्यापिपर्यन्त श्रीचतुर्विधसंघनी दरेक व्यक्ति ते बन्ने माटे (पाक्षिक-समिति माटे) हार्दिक आशीर्वाद आपी रही छे, अने मुक्त कण्ठे प्रशंसा गाई रही छे.

संचालननुं पुण्यकार्य—

उपर जणाव्या मुजबनो शासन पर आवेलो विषम जुवाल लगभग शमी गयेल होवाथी, शासनमां अनेकविध कार्योनी जवाबदारी पू० आ० श्री चन्द्रसागरसूरिमहाराजने होवाथी, अने श्रीसिद्धचक्र-पाक्षिक माटेनी प्रेस मेटर नियमित अवसरसर मेलववामां मुश्केली थती होवाथी, आ पाक्षिकने मासिकना रूपमां प्रकाशन करवानुं समितिए नकी कर्युं, अने ते पछी सत्तर वर्षनी परिसमाप्ति सुधी नियमित मासिकरूपे आ सिद्धचक्रनुं प्रकाशन थयुं छे, अने वांचको, विचारको, अभ्यासको तेनो सारो लाभ ले छे. हालमां चतुर्विध संघना सहकार साथे आ श्री सिद्धचक्र-मासिके अढारमा वर्षमां प्रवेश करेलो छे. वांचको-विचारको अने अभ्यासकोने शासनमान्य साहित्य मलतुं रहे ते हेतुथी समिति तरफथी लगभग म्हें पंदर ग्रन्थो मुद्रण करावीने प्रसिद्ध कर्या छे, अने प० पू० आ० श्रीचन्द्रसागरसूरिजीनी महेरबानीथी आ श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्ग नामना छट्ठा अंगना प्रथम विभागनुं (ग्रन्थरत्न नं. १६मानुं) प्रकाशन करवा अमारी समिति तरफथी हुं भाग्यशाळी थयो छुं. खरेखर ! दुःषम कालमां शासनहितकर-मासिकनुं अने समितिनुं

संचालन करवानुं कार्य प्रबल पुण्यनी अनुकूलता वगर बनी शकतुं ज नथी.

आ ग्रन्थना बे विभाग—

आ ग्रन्थनी प्रथम आवृत्ति प्रातःस्मरणीय पू० आगमोद्धारक आचार्यदेवेश स्व० गुरुदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी तरफथी प्रकाशन थयेल छे, ते पछी पू० श्रमण भगवन्तोनी संख्यामां वधारो थवाथी दशगुणी किंमते पण ते ग्रन्थ मेलववानुं मुश्केल थई जवाथी आ ग्रन्थनुं द्वितीय आवृत्तिरूपे हस्तलिखितप्रतिओ साथे मेलवीने अभ्यासीयोनी सवळता माटे प्रत्यन्तर पाठो-प्रस्तावना-परिशिष्टो-सारांश विगेरेथी सुशोभित बनावीने आ ग्रन्थनो प्रथम विभाग प्रसिद्ध कराय छे. प्रस्तावना परिशिष्टो विगेरेथी आ ग्रन्थनुं कद मोटुं थइ जवाथी आ ग्रन्थने बे विभागमां व्यवस्थित रीतिए व्हार पाडवामां आवे छे.

हवे आ ग्रन्थना **प्रथम विभागमां**-प्रथमश्रुतस्कंधना प्रथमअध्ययनथी आठ अध्ययनो संपूर्ण छे तथा प्रस्तावना-परिशिष्टो, अध्ययनोनो सारांश विषयानुक्रम पण तेटला ज अध्ययनोनो तेनी साथे छे. **बीजा विभागमां** प्रथमश्रुतस्कंधना नवमा अध्ययनथी १९ अध्ययनो संपूर्ण छे, अने तेनी साथे बीजाश्रुतस्कंधना सर्व अध्ययनो छे. आ बीजा भागनी साथे पण प्रस्तावना-परिशिष्टो-सारांश-विषयानुक्रम हवे पछी आपवामां आवनार छे.

ग्रन्थप्रकाशननुं निमित्त—

वडोदरा शहेरमां-प० पू० पन्न्यासप्रवर श्री चन्द्रसागरगणीन्द्रश्रीनुं (वर्तमानमां आ० श्री चन्द्रसागरसूरिजीनुं) आठ ठाणा सह चातुर्मास (वि० सं० २००६) हतु. पू० पंन्यासप्रवरश्रीजीने अने तेओश्रीना शिष्य प्रशिष्यादिने आ दरम्यान वर्षीतप

चालु हतो तेथी ते तपना पारणा निमित्ते आ ग्रन्थनुं प्रकाशन थाय अने तेनी थोडी नकलो पूज्य साधु साध्वीजीओने वर्षीतपना पारणा निमित्ते भेट अपाय ते हेतुथी श्रीसंघे ते अवसरे चञ्चल लक्ष्मीने स्थिर करवा माटे श्रीसंघनी उदार चित्तवाळी जुदी जुदी व्यक्तिओए पैसा आप्या के जेओश्रीना मुबारक नामो आर्थिक सहायकोनी नामावलिमां छे.

प्रथमआवृत्तिरूपे प्रकाशन थयेला श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गग्रन्थने हस्तलिखित प्रतो साथे मेळववामां अने प्रत्यन्तरपाठो आपवामां, प्रेस-मेटर तैयार करवामां धारणा करतां वधु विलम्ब थयो तेथी प्रेस पर मुद्रण करावावा माटे मोकलवामां विलम्ब थवाथी वर्षीतपना पारणाना अवसर पर ते ग्रन्थ तैयार थइ शक्यो नहिं, परन्तु ते अवसरे दानवीर श्रेष्ठिवर्य श्रीचीमनलाल डाह्याभाई परीख तरफथी 'देशनानन्दसुधासिन्धु' के जेनी अंदर श्रीभगवतिसूत्रनी शरुआतनी शास्त्र प्रस्तावना अने सूत्रो उपर स्व० आगमोद्धारकश्रीनी १०१ देशनाओ बहार पडी, अने ते ग्रन्थ ६५ फर्मा उपरांतनो दलदार अने पाका बाइन्डींगनो ग्रन्थ वर्षीतपना पारणा निमित्ते भेट आपवामां तेओश्रीनी संमति आववाथी आप्यो; आ रीते प्राप्त थयेला प्रसंगने साचवीने तेओश्रीमाने अखण्ड पुण्य उपार्जन कर्युं.

हवे आ ग्रन्थप्रकाशनरूपे प्रसिद्ध थाय छे, तेना मूल निमित्तरूप श्रीवडोदरा श्रीसंघना आगेवानो छे. चातुर्मासना अवसरे श्री वडोदरा-संघना माननीय गृहस्थोनी ग्रन्थ प्रकाशनमां आपेली आर्थिक मददने सफलीभूत बनाववा माटेनो उपर जणाव्या मुजब प्रथम प्रसंग साचवी न शकायो, छतां पालीताणा खुशालभुवनमां चातुर्मास विराजमान पू० आचार्यमहाराज श्रीचन्द्रसागरसूरिजी पोताना शिष्य-प्रशिष्यादि विशाल परिवार साथे शाश्वत तीर्थनी नवाणुं यात्रा करे छे, तेथी तेनी परिसमाप्तिना आ बीजा शुभ प्रसंगे पूर्वे नियत थयेल ग्रन्थनी नकलो भेट तरीके व्हेंचीने पुण्यना भागीदार श्रीवडोदरा श्रीसंघना आर्थिक सहायको बनशे आ हेतुने अत्र स्पष्ट करवामां आवे छे.

उपसंहार—

आ ग्रन्थने प्रकाशन करवानी प्रथमतः पहेल करनार तरीके वडोदरा शहेरना श्रीसंघना आर्थिक सहायकोनो, हस्तलिखित ग्रन्थनी प्रतिओ साथे मेळववानुं काम करनार पू० उपा० श्रीदेवेन्द्रसागरगणीवरना शिष्य पू० मुनिश्रीदोलतसागरजी म० नो, प्रेस मेटर तैयार करवानुं, प्रेस प्रूफो संशोधन करवानुं, परिशिष्टो तैयार करवानुं अने शुद्धिपत्रक तैयार करवानुं शुभ कार्य करनार पू० मुनिश्रीचन्दनसागरजी म० नो, बनती त्वराए सुन्दर काम करी आपनार प्रेस मालीक शा गुलाबचन्द लल्लुभाईनो, तेमज तेओश्रीना प्रेसना कंपोझीटर वगेरेनो अने संशोधननुं तथा ग्रन्थ सम्पादननुं सर्वोत्तम कार्य प० पू० आ० श्रीचन्द्रसागरसूरिजीनी पुनित नजरतळे थयेल होवाथी तेओश्री आदिनो हार्दिक आभार मानुं छुं. वांचको–विचारको–अभ्यासको वांचवा पहेलां शुद्धिपत्रकथी अशुद्धस्थलो शुद्ध करीने वांचे–विचारे अने परिशीलन करे एज एक शुभेच्छा.

२२४ शेखमेमणस्ट्रीट
मुंबाई नं. २
२००८ सौभाग्य पञ्चमी.

निवेदक:—
पानाचन्द रूपचन्द झवेरी,
श्रीसिद्धचक्र–मासिकना तन्त्री
तथा
श्रीसिद्धचक्र–साहित्य–प्रचारक–समितिना प्रधान–संचालक.

परिशिष्ट—१ ।

॥ वाचनाभेद—पाठान्तर-संग्रहः ॥

पाठ	पृ.	पंक्ति
अथवा संक्लिष्टादिविशेषानि०	२	२
हरितालाभ इति वृद्धाः	५	४
वलयाद्याक्रान्तत्वादिति वृद्धाः	५	४
इह ग्रन्थे वाचनाद्वयमस्ति, तत्रैका बृहत्तरां व्याख्यास्यामो, द्वितीया तु प्रायः सुगमैव; यच्च तत्र दुरवगमं तदितरव्याख्यानतोऽवबोद्धव्यमिति ।	७	१२
कचिद्राजगृहे गुणसिलके इति दृश्यते, स चापपाठ इति मन्यते	९	१०
वृद्धव्याख्या तु कनकस्य, न लोहादेर्यः पुलकः०	१०	१७
द्वारमित्यन्ये; स्तम्भविशेषणमिदमित्यन्ये	१६	६
कैश्चित्पुनरेवं संभावितमिदं 'सरसच्छधाउवलवन्नरइएत्ति०	१६	१३
पाठान्तरापेक्षया चन्दनवरकनककलशैः	१६	२२
वाचनान्तरे त्वेवं दृश्यते 'जाव सीहं सुविणे पासेत्ताणं पडिबुद्धा' तत्र यावत्करणादिदं द्रष्टव्यम्	१७	२२
अत्र वट्टतट्ट—इत्येतावदेव पुस्तके दृष्टं संभावनया तु वृत्ततर्द्दित इति व्याख्यातमिति पाठान्तरेण तु 'वट्टपडिपुण्णपसत्थनिद्धमहुगुलियपिंगलच्छं स्फुटश्चायं पाठः	१८	८
तथा शिरसावर्त्त इत्येके, शिरसा अप्राप्त इत्यन्ये	१९	९
पाठान्तरेण 'कुलहेउं' कुलकारणं,	२०	१५
क्वचिद्वृत्तिकरमित्यपि दृश्यते वृत्तिश्च निर्वाहः;	२०	१६

	पृष्ठ.	पंक्ति
छेकैः–अवसरज्ञैर्द्विसप्ततिकलापण्डितैरिति वृद्धाः	२४	२६
प्रष्ठैः–वाग्मिभिरिति वृद्धव्याख्या	२४	२७
व्याख्यान्तरं तु छेकैः प्रयोगज्ञैर्दक्षैः शीघ्रकारिभिः,	२५	२
पाठान्तरे 'समत्तजालाभिरामे'त्ति तत्र समस्तैर्जालकैर-भिरामो यः स तथा, पाठान्तरेण 'ससुत्तजालाभिरामे' सहमुक्ताजालैर्यो वर्ततेऽभिरामश्च स तथा तत्र०	२५	७
मतान्तरेणाणिमाधैश्वर्ययुक्ताः	२६	४
भाण्डागारिका इति वृद्धाः;	२६	६
तथा क्वचित् 'सिद्धत्थयहरियालियाकयमंगलमुद्धाणा एवं पाठः	२६	२८
क्वचि 'द्विण्णय'त्ति पाठः स च व्याख्यात एव,	२७	९
वाचनान्तरे. "सनस्थाने काञ्चनं सर्षपस्थाने सरिसगोत्ति पठ्यते"	२८	२४
अथवा "सामत्तिपाठः, तत्र श्यामा पियङ्गुः,"	२९	३
पाठान्तरे नगेषु पर्वतेषु	२९	१३
पाठान्तरेण परिश्रामिताः कृतप्रभाभ्रंशाः	३०	१
तथा–"कुंडलोज्जोतिताननां वरपायपत्तनेउरमणिमेह-लाहाररइयउविय कडगखुड्डयएगावलिकंठमुरयतिसर-यवखलयहेमसुत्तकुंडलुज्जोवियाणणाओत्ति	३०	७
पाठान्तरे "सर्वर्तुकसुरभिकुसुमैः सुरचिता प्रल-म्बमाना शोभमाना कान्ता विकसन्ती चित्रा माला यासां तास्तथा, एवमन्यान्यपि पदानि बहुवचना-न्तानि संस्करणीयानि, इह वर्णके बृहत्तरो वाचना-भेदः"	३०	१८
अयमेवार्थो वाचनान्तरे इत्थमधीतः	३०	२१
वाचनान्तरे तु 'ओलोएमाणीओ २, आहिंडेमाणीओ		

	पृष्ठ:	पंक्ति
२, डोहलं विणिति' विनयन्त्यपनयन्तीत्यर्थः, 'तं जति णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव डोहलं- विणेज्जामि' विनयेयमित्यर्थः, संगतश्चायं पाठ इति	३१	११
वाचनान्तरे तु 'जेणेव धारणीदेवी तेणेवेत्यतः पहारेत्थ गमणाए' इत्येतद् दृश्यते	३७	१२
'किण्ह किन्न' मिति वा पाठो	३७	१८
क्वचित्करिष्यामीति पाठः	३७	२०
पाठान्तरे उत्पत्तिं वा तस्यैवेत्यर्थः	३७	२२
क्वचिन्नाधीयत इति;	३७	२६
वाचनान्तरे 'पूर्वभवजनितस्नेहप्रीतिबहुमानजनित- शोभस्तत्र	३८	१७
वाचनान्तरे 'धरणीतलगमनसंजनितमनःप्रचार; इति	३८	२०
वाचनान्तरे—पुनरेवं विशेषणत्रयं दृश्यते । "वाघु- ल्लियविमलकणगपयरगवडेंसगपकंपमाणचललोल- ललियपरिलंबमाणनरमगरतुरगमुहसयविणिग्ग- उग्गिन्नपवरमोत्तियविरायमाणमउडुक्कडाडोवदरि- सणिज्जे"	३८	२६
एकस्तावदेष गमः—पाठः, अन्योऽपि—द्वितीयोगमो वाचनाविशेषः पुस्तकान्तरेषु दृश्यते	३९	१६
अयं च द्वितीयो गमो जीवाभिगमसूत्रवृत्त्यनुसारेण लिखितः	३९	१९
पाठन्तरेण हृदेषु च कक्षेषु च गहनेषु च,	४०	२
अंकिला इत्येके	४४	६
राज्ञः स्तोत्रपाठका इत्यन्ये;	४४	६
वाचनान्तरे 'दसदिवसियं ठियवडिय'न्ति	४४	२२
वाचनान्तरे शतिकांश्चेत्यादि	४४	२२

	पृष्ठ०	पङ्क्ति०
पाठान्तरे तु प्रथमदिवसे स्थितिपतितां	४४	२६
' निव्वत्ते सुइजायकम्मकरणे 'त्ति, वा पाठान्तरं	४४	२७
पाठान्तरे तु ' उवणच्चिज्जमाणे २, उवगाइज्जमाणे २, उवलालिज्जमाणे २, अवगूहिज्जमाणे ' २,	४५	२०
अन्ये त्वाहुः-नंदं-वृत्तं लोहासनं	४७	२१
वाचनान्तरे रथानन्तरमश्वा हस्तिनश्चाभिधीयन्ते, तत्र ते वाहनभूताः-ज्ञेयाः।	४१	८
क्वचिद्वियोसरणयेति पाठः,	५०	२४
क्वचिदेगत्तभावेणं ति पाठः,	५०	२७
वाचनान्तरे तु जीविउस्सइएत्ति	५४	२३
वाचनान्तरे-मेघकुमारभार्यावर्णक एवमुपलभ्यते,	५५	५
पाठान्तरेण-एकान्ता एकविभागाश्रया धारा यस्य तत्तथा	५६	६
अन्ये त्वाहुः अष्टसंख्यानि अष्टमङ्गलसंज्ञानि वस्तूनीति,	६२	५

	पृष्ठ०	पङ्क्ति०
पुरुषारूढः पुरुष इत्यन्ये, स्वस्तिकपञ्चकमित्यन्ये, प्रासादविशेष इत्यन्ये,	६२	७
अन्ये तु ' भायल ' त्ति मन्यन्ते,	६३	१६
क्वचिद्वरा इति पाठः,	६४	२
क्वचित् रहसंगेल्लीति पाठः,	६४	३
पाठान्तरेण बलिका-दृढा बद्धा कक्षा येन स तथा	६४	१५
पाठान्तरे अल्पं च तत्सारं चेत्यल्पसारं मूल्यगुरुकं	६६	१८
पाठान्तरे ' पच्छाउरस्स 'त्ति	६६	२०
वाचनान्तरे विशेषणद्वयमिदं०	७२	४
पर्वतदेशेष्वित्यन्ये;	७२	१९
क्वचित् ' किमवत्ति ' पाठः	७३	६
वाचनान्तरे-खरपरुषरिष्ठ्याहतानि०	७३	१०
' क्वचिचितुले 'त्ति०	७४	४

	पृष्ठ०	पङ्क्ति०
क्वचित् ' दवग्गिसंताणकारणट्ठ ' त्ति	७४	२०
पाठान्तरे तु वनरेणवो-वनपांशवो	७४	२७
क्वचित् ' उउयकुसुम ' त्ति पाठः,	७५	१
पाठान्तरे-परिशोषितानि तरुवरशिखराणि०	७५	५
पाठान्तरे-उक्तविशेषणेन प्रतिमारुतेनादिग्धं	७५	८
पाठान्तरे-शब्दोद्धतश्च यः स तथा	७५	१३
पाठान्तरेण-' आयवालोय ' त्ति,	७५	१६
पाठान्तरं-तत्राभोगो-विस्तरः,	७५	२०
वाचनान्तरे तु सित एवासावित्ति,	७६	८
पाठान्तरे-निरुपहतशरीरप्राप्तश्चासौ लब्धपञ्चेन्द्रियश्चेति समासः,	७७	९
पाठान्तरे-संस्मारितपूर्वभवः,	७७	१५
चिर्भटिकाकच्छक इति तु जीवाभिगमचूर्णिकारः,	८४	१३

	पृष्ठ०	पङ्क्ति०
कचित्-हरितःशुकपिच्छवत्, हरितालाभ इति वृद्धाः	८४	१८
वल्ल्याद्याक्रान्तत्वादिति च वृद्धाः	८४	४
वाचनान्तरे त्विदमधिकं पठ्यते पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे हरितकश्चासौ रेरिज्जमाणे त्ति भृशं राजमानश्च यः स तथा	८४	२१
क्वचित् ' कूविएहिय ' त्ति पाठः,	८४	२३
पाठान्तरेण-' खचएहिं ' ति-खातैर्गर्तैरित्यर्थः,	८४	२४
पाठान्तरे-निसंसे ति नृन्-नरान् शंसति-हिनस्तीति नृशंसः निःशंसो वा विगतश्लाघः, अथवा-वर्मितशब्दः	८६	११
क्वचिन्नाधीयत एव	९१	८
वाचनान्तरे-त्विदं नाधीयत एव,	९३	९
पाठान्तरेण ' भरेइ ' त्ति पूरयति	९३	१२
पाठान्तरेण भोजनपिटके करोति अशनादीनि	९३	२७

	पृष्ठ०	पङ्क्ति०
क्वचित् 'सव्वोउए'त्ति दृश्यते,	९७	१८
पाठान्तरे–' सहिच्च 'त्ति संहृत्य सहसंभूय	९९	१०
वाचनान्तरे–त्विदमधिकं ' सुंदरथणजघणवयणचरण-नयणलावण्णरूवजोव्वणविलासकलिया '	९९	१५
पाठान्तरेण–' लहुकरणजुत्तएहिं 'ति	९९	२०
वाचनान्तरे ' जंबूणयमयकलावजुत्तपइविसिट्ठएहिं '	९९	२३
वाचनान्तरेऽधिकमिदं ' सुजातजुगजुत्त०	९९	२७
क्वचित्कदलीगृहादिपदानि यावच्छब्देन सूच्यन्त इति,	१०२	३
वाचनान्तरे विचित्राः पिच्छेष्वसक्ताः	१०२	१४
क्वचिदिदमधिकं दृश्यते 'अच्छविमलसलिलपलिच्छन्ने'	१०४	२३
क्वचित्तु 'संछन्ने' त्यादिसूचनादिदं दृश्यं ' संछन्नपउम-पत्तभिसमुणाले'	१०४	२३

	पृष्ठ०	पङ्क्ति०
क्वचिदेवं पाठः ' संछन्नपत्तपुप्फपलासे '	१०४	२५
क्वचित्सामुदायिकीमिति पाठः,	१०७	२८
मौनीन्द्रप्रवचनावाप्त्या परितुष्टमना इत्यर्थः इतिवृद्धव्याख्या; केचित्त्वाहुः उच्छ्रितः–अर्गलास्थानादपनीय ऊर्ध्वीकृतो न तिरश्चीनः कपाटपश्चाद्भागादपनीत इत्यर्थः	११६	९
' अवंगुयदुवारे '......अस्थगितगृहद्वार इत्यर्थः इत्येकीयं व्याख्यानं, वृद्धानां-तु भावनावाक्यमेवं यदुत०	११६	१२
वाचनान्तरे तु यावत्करणादेवमिदमवगन्तव्यं,	११६	२२
क्वचित्काञ्चनिका करोटिका चाऽधीयेते ते च	११७	२
' वेयणा पाउब्भूया ' इत्यस्य स्थाने रोगायंकेत्ति क्वचित् दृश्यते,	११९	२४
पाठान्तरेण–' तइया व ' त्ति सञ्जातत्वच इत्यर्थः;	१२५	२६
गमनिकैवेयं पाठान्तरेण शक्यकिताः	१२६	२

	पृष्ठ०	पङ्क्ति०
ग्रन्थान्तरे—नलिनावतीत्युच्यते	१२९	२२
पाठान्तरे तु 'एसो' त्ति एष महाबलो०	१३०	१४
वाचनान्तरे तु गिम्हाणं पढमे इत्यादि दृश्यते,	१३२	९
पाठान्तरेण—धवलदन्तश्रेणिका०	१३६	३
वाचनान्तरेण—वरकमलकोमलाङ्गीत्यनवद्यमेव,	१३६	७
पाठान्तरेण 'पउमुप्पलुप्पलगंघनीसास' त्ति	१३६	८
पाठान्तरेण 'भुग्गभग्गे'—अतीववक्रे	१४४	३
वाचनान्तरे 'विगयभुग्गभुमय०'	१४४	७
गमान्तरं—'आगासदेवयाओ नच्चंति,'	१४४	१४
अत एव वाचनान्तरे नेदमुपलभ्यते,	१४४	१५
'अवच्छियं' ति प्रसारितमित्येके, अन्ये तु यकारस्या-लुप्तत्वात्, 'अवयच्छियं' प्रसारितमुखत्वेन दृश्य-मानमित्याहुः,	१४४	२५

	पृष्ठ०	पङ्क्ति०
प्रत्यंतरे च कर्मधारयेण	१४५	१
अन्ये त्वाहुः आमूषितानि—संकुटितानि	१४५	३
संलग्नौ—सम्बद्धावित्येके	१४५	१०
पाठान्तरेण-भ्रूकुटितं-कृतभ्रूकुटिललाटं यस्य स तथा तं	१४५	११
पाठान्तरेण—अप्रस्थितः सन् यः प्रस्थित इव मुमूर्षु-रित्यर्थः,	१४६	३
अन्ये त्वेवं विलासमाहुः "स्थानासनगमनानां हस्तभ्रूनेत्र-कर्मणां चैव। उत्पद्यते विशेषो यः श्लिष्टोऽसौ विलासः स्यात् ॥"	१५०	२४
इह च 'किमंग पुण' त्ति यत्कचिद् दृश्यते, ततः 'इमस्स पुण' त्ति पठनीयं वाचनान्तरे तथादर्शनात्;	१५६	१२
क्वचित् प्रेषितेभ्य इत्यर्थः,	१५९	२१
क्वचित् 'कायकोडियाणं' ति	१५९	२२

	पृष्ठ०	पङ्क्ति०
'एवमेगं हत्थामासं 'ति वाचनान्तरे दृश्यते,	१५९	२४
' सुरासुरियं 'ति वाचनान्तरे दृश्यते,	१६०	४
' दुमासपरियाए ' इति कचित्, कचिच्च ' चउमास-परियाए ',	१६२	३

परिशिष्ट—२.

श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गवृत्तौ आगताः आर्षप्रयोग-निपातन-व्याकरणपाठाः ।

	पृष्ठ०	पङ्क्ति०
ते इत्यत्र च य एकारः प्राकृतशैलीप्रभवो०	१	१६
अधिकरणे चेयं सप्तमी,	१	१७
अथवा-तृतीयैवेयं	१	१९
राजदन्तादिदर्शनादाकीर्णजनमनुष्येत्युक्तं;	१	२६
संतोषवतीति कर्मधारयो०	२	१७
शुभा च वेति कर्मधारयः,	२	१८
उप-अप-इत्येतस्य शब्दत्रयस्य स्थाने शकन्ध्वादिदर्शनादकारलोपे उपपेतेति भवतीति,	२	२७
ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः,	३	९
राजदन्तादिदर्शनात् सा	३	१३
बहवो येषां ते तथा, ततः कर्मधारयः,	६	१८
इह च प्राकृतत्वेन ' उल्लोयचिच्चियतले '०	१६	२०
इह चार्षत्वादेकरेफलोपेन ' पुव्वरत्तावरत्ते 'त्युक्तं,	१७	१८
ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः,	२५	१६
ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः,	२५	१८
छान्दसत्वात्०	२८	१८

	पृष्ठ०	पङ्क्ति०		पृष्ठ०	पङ्क्ति०
एवं सर्वत्र सप्तमी योज्या,	३८	१८	आर्षत्वाच्चैवंविधः समास इति,	४६	२४
तानि तथा ततः कर्मधारयः,	२९	२८	वरचिह्नपट्टो यैस्ते तथा ततः कर्मधारयः,	९१	२५
ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः,	३०	७	करणे तृतीया वेयं०	९५	१७
वरपादप्राप्तनूपुरादीनां कर्मधारयः,	३०	११	इह आइं शब्दो भाषायां,	१३८	६
'मणु'त्ति मकारस्य प्राकृतशैलीप्रभवत्वात्०	३८	२३	ततः पदचतुष्कस्य कर्मधारयः,	१५६	१

परिशिष्ट—३.

साक्षिपाठाः ।

'करेमि भंते!' इत्यादिषु०	१	१६	कणगावलिरयणावलि०	४७	६
यदाह—"पिंडविसोही समिई भावण०"	८	१३	सिरिहिरिधिइ०	४७	७
"वयसमणधम्मसंजमवेयावच्चं च०"	८	१४	हत्थी जाणा जुग्गा०	४७	८
वक्ता हर्षभयादिभिरा०	१८	२२	किंकरकंचुइमयहर०	४७	९
अट्ठ हिरण्णसुवन्नय०	४७	५	पावीढ भिसिय०	४७	९

	पृष्ठ०	पङ्क्ति०
हंसे १ कुंचे २ गरुडे०	४७	११
तेल्ले कोट्ठसमुग्गा०	४७	११
खुज्जा चिलाइ०	४७	१२
लासिय लउसिय०	४७	१३
छत्तधरी चेडीओ०	४७	१४
अट्टंगमद्दियाओ०	४७	१५
उच्छाविया उ तह०	४७	१५
वलकारिय०	४७	१७
अवणेइ पंच ककुहाणि०	५०	१५
हावो मुखविकारः०	६१	२१
अनुलापो मुहुर्भाषा०	६१	२२
प्राणा द्वित्रिचतुः प्रोक्ताः०	६७	२
पडिवज्जइ एयाओ०	७८	२४

	पृष्ठ०	पङ्क्ति०
गच्छेच्चिय निम्माओ०	७८	२५
वोसट्ठचत्तदेहो०	७८	२६
दुट्ठस्सहत्थिमाइ०	७८	२७
पण्णरसवीसचउवीस चेव०	७९	८
तीस तेत्तीसावि य०	७९	९
पनरसदसट्ठ छप्पं च०	७९	१०
महुरेहिं निउणेहिं०	८३	१७
सो होइ साइजोगो०	८६	२०
सिवसाहणेसु आहारविरहिओ०	९६	२१
जिणवरभासिय०	१०२	२०
निस्संदेहत्तं पुण०	१०२	२०
कत्थइ मइदुब्बलेण	१०२	२१
हेऊदाहरणासंभवे०	१०२	२२

पाठः	पृष्ठ०	पङ्क्ति०
अणुवकयपराणुग्गहपरायणा०	१०२	२३
विसएसु इंदिआइं०	१०५	६
अवरे उ अणत्थपरंपरा उ०	१०५	७
सिढिलियसंजमकज्जावि०	१२०	८
जह मिउलेवालित्तं०	१२१	१७
तं चेव तव्विमुक्कं०	१२१	१८
दो असईओ पसई०	१२६	७
जह सेट्ठी तह गुरुणो०	१२६	२१
जह सा उज्झियनामा०	१२६	२२
तह भव्वो जो कोई०	१२६	२३
सो इह चेव भवंमी०	१२६	२४
" धम्माओ भट्ठे " वुत्तं " इहेवऽहम्मो " वुत्तं	१२६	२५
जह वा सा भोगवती०	१२६	२६
तह जो महव्वयाइं०	१२७	१

पाठः	पृष्ठ०	पङ्क्ति०
सो एत्थ जहिच्छाए०	१२७	१
जह वा रक्खियवहुया०	१२७	२
तह जो जीवो सम्मं०	१२७	३
सो अप्पहिएक्करई०	१२७	४
जह रोहिणी उ सुण्हा०	१२७	५
तह जो भव्वो पाविय०	१२७	६
सो इह संघपहाणो०	१२७	६
तित्थस्स वुड्ढिकारी०	१२७	७
पउमाभवासुपुज्जा रत्ता०	१३६	४
हावो मुखविकारःस्याद्०	१५०	२३
स्थानासनगमनानां०	१५०	२४
इष्टानामर्थानां०	१५०	२५
उग्गतवसंजमवओ०	१६२	२०
जह मल्लिस्स महाबलभवंमि०	१६२	२१

शुद्धिपत्रकम् ।

अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठ.	पङ्क्ति.	अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठ.	पङ्क्ति.
एकारः प्राक्०	एकारः स प्राक्०	१	१६	०तोक्ततानि	०तोक्तानि	१२	२३
पुऽरातनं	पुरातनं	४	५	स्तम्म०	स्तम्भ०	१६	६
०भूत्ततत्०	भूततत्	४	७	कश्चित्	कैश्चित्	१६	१३
०इगुलयः	०ङ्गुलयः	४	१४	तदूभूते	०तद्भूते	१७	४
वृद्धः	वृद्धाः	५	५	हट्ठा	हट्ठ	२१	३
वृन्दककल्पे	वृन्दकल्पे	५	८	०वाहृण	वाहृणे	२३	१४
दुखगमं	दुरवगमं	७	१३	सेणीए	सेणिए	२३	१५
कुणिकनाम	कुणिकनामा	७	१३	०छत्ति	०छत्ति	२३	१७
प्रधान तत्र	प्रधानस्तत्र	८	१३	प्रकाश्ये	प्राकाश्ये	२४	१
०त्सुक्यभाव०	त्सुक्याभाव०	९	७	ये न	येन	२५	१३
०णामे	०णामे०	९	१७	०वगएसु	०वग्गएसु	२८	१२
ऊर्द्ध	ऊर्द्धं	१०	२५	०रवुड्डय०	०खुड्डय०	३०	८

अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठ.	पङ्क्ति.
०धारयः	०धारयः	३०	११
०यायमाणा	०याणमाणा	३१	१२
झियाइ	झियायइ	३७	९
यद्दर्शन	यद्दर्शनं	३९	११
०यव	०यवं	४२	११
दर्शनं	दर्शने	४६	१२
क्रदन्ती	क्रंदन्ती	५२	२३
०वर्जिता०	वर्जिता०	५६	२०
उवट्ठ०	उवट्ठ०	५७	३
०वुक्का०	०वुल्ला०	५८	१८
कोडंबिय०	कोडुंबिय०	५९	६
गुलसिलए	गुणसेलए	५९	२०
भचितं	भद्दितं	५९	२८

अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठ.	पङ्क्ति.
०नट्टभी०	०नट्टगी०	५९	२८
द्रवि०	द्रावि०	६१	२४
मज्झ०	मज्झं०	६३	२
०भागस०	०भागय०	६४	३
ला ङ्गलं	लाङ्गलं	६४	११
कार्पहिक०	कार्पटिक०	६४	१२
चेत्येवं	चेत्येवं	६४	१९
चिट्टि०	चिट्ठि०	६५	२३
०न्नसो	०न्नसौ	६६	२५
धर्म्मामा०	धर्म्ममा०	६६	२५
संस्तास्का: वाचनायै	संस्तारकाः शय्या- संस्तारकाः वाचनायै	६७	५
तुर्मं	तुमं	६९	३

अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठ.	पङ्क्ति.
पुब्वा०	पुवा०	७०	३
वात्यया	वात्यया	७५	९
उद्धाब०	उद्धाव०	७५	१२
चिकट्टुं	चिकट्टु	७६	३
उर्द्ध०	उर्द्ध०	७६	७
इत्यर्थः	इत्यर्थः	७७	२३
०सत्वः	०सत्त्व०	७८	२८
सम्यगू	सम्यग्	७८	२८
भुबि	भुवि	७९	१७
रयणी	रयणीए	७९	२१
णण	णूण	८०	१५
विप्रकीण०	विप्रकीर्ण०	८२	२६
पयइ०	पगइ०	८३	६
०वच्छाइए	०वच्छछाइए	८४	३
स्निग्धो	स्निग्धो	८४	१९
घण०	घण०	८४	२०
कुडुंबेसुय जाव	कुडुंबेसुय मंतेसुय जाव	८५	६
०कारक०	०दारक०	८६	२५
०कारक०	०दारक०	८६	२५
०सट्टमु०	०सट्टमु०	८८	२३
तम्हा	जम्हा	८९	१४
त्ति	ति	८९	२७
०सुणति	०सुणेति	९३	१०
०वेसेत्ति	०वेसेति	९३	१२
लत्ता	लता	९३	२२

अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठ.	पङ्क्ति.	अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठ.	पङ्क्ति.
४२	४७	९५	३	यँन्तस्त०	यत्ततस्त०	१०२	२५
४७	४८	९६	३	०तवितथं	०तमवितथं	१०२	२७
४८	४९	९६	११	बउहु	बहुउ	१०३	७
०नाभिमा०	नामिमा०	९६	१३	०प्रापि०	०प्राप्ति०	१०५	२६
'संगारं'त्ति	'संगारं'ति	९८	१०	०भुट्ठियं	०भुट्ठियं	११३	२
॥ १० ॥	॥ १०० ॥	१००	२८	पडिवघं	पडिबंधं	११५	१२
मउर०	मऊर०	१०१	१८	०खभावे	०स्वभावे	११७	२०
०त्यर्थः	०त्यर्थः	१०२	२	०माणं	०माणे	१२०	२५
प्रवेशेन	प्रवेशनेन	१०२	९	दभः	दर्भैः	१२१	१३
०दुवल्लेण	०दुब्बलेण	१०२	२१	वहूणं	बहूणं	१२२	४
०णेणं च ना०	०णेणं ना०	१०२	२२	एतमठ्ठं	एतमट्ठं	१२४	११
०दएणं ॥	दएणं च ॥	१०२	२२	०दुःस्व०	०दुःख	१२६	१२
इह	इइ	१०२	२२	०सुखो	०सुखी	१२७	११

अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठ.	पङ्क्ति.	अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठ.	पङ्क्ति.
०मंइ०	०मेइ०	१३१	१०	अवि०	अव०	१४४	२५
उक्विट्ठा	उक्किट्ठा	१३३	१	कूंडल०	कुंडल०	१४८	४
णिस्सम	णिसम्म	१३८	१०	०प्पिणत्ति	०प्पिणति	१५७	१३
जाव	जाव	१३९	१४	पल्खे	पक्खे	१५९	९
बिदेह०	विदेह०	१४२	९	प्रहणं	ग्रहणं	१६०	६
न्युष०	न्युप०	१४४	१३				



वर्णक(वण्णओ)यावत्(जाव)शब्दातिदिष्टपाठाः ।

परिशिष्ट—४ ।

ज्ञा. पृ. प.

१–१५ चंपानामं नयरी होत्था; वण्णओ
उव. सू. १, पृ. १ थी ३

३–२७ पुण्णभद्दे नामं चेइए होत्था; वण्णओ
उव. सू. २ थी ५, पृ. ४ थी १०

४– १ कोणिको नामं राया होत्था; वण्णओ
उव. सू. ६ पृ. ११

१०– ३–६ भगवता महवीरेणं जाव संपत्तेणं
उव. सू. १२, पृ. १५

१२– ९ जति णं भंते जाव संपत्तेणं उव. सू. १२, पृ. १५

१२– ९ उक्खित्तणाए जाव पुंडरीएत्ति. ज्ञा. पृ. १०, पं. ७

ज्ञा. पृ. प. — ज्ञा. पृ. प.

१२–११ रायगिहे नामं नयरे होत्था, वण्णओ
उव. सू. १, पृ. १ थी ३

१२–११ चेतिए, वन्नओ उव. सू. २ थी ५, पृ. ४ थी ३

१२–१२ महाहिमवंत० वन्नओ उव. सू. ६, पृ. ११

१२–१३ सुकुमालपाणिपाया वण्णओ उव. सू. ७, पृ. १२

१२–१५ अहीण जाव सुरूवे १२–२६

१४– ७ धारिणी नामं देवी होत्था जाव
सेणियस्स रन्नो इट्ठा जाव विहरइ १५– ९

१५– ५ सालिंगणवट्टिए जाव नियगवयण० १४– ३

१५– ६, २२, १० उरालस्स जाव सुमिणस्स १४–२१

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
१९–१२	हट्ठ जाव हियये	१४–२२
१९–१६	धारिणिं देवीं ताहिं जाव हियय०	१४–२५
१९– ८	सुकुमालपाणिपायं जाव दारयं	१५– ९
१९–२४/२३–१०/१५	सुमिणे दिट्ठे जाव आरोग्ग०	१९–१६
१९–२६/२२/१५/२३/२२	हट्ठतुट्ठा जाव हियया	१४–२२
१९–२६	करतलपरिग्गहियं जाव अंजलिं	१५– ४
२१– ३/२२/११	समाणा हट्ठतुट्ठा जाव पच्चप्पिणंति	२०–२७
२२–२४	उरालस्स जाव सस्सिरीयस्स	१४–११
२२–१६	कम्मा जाव पायच्छित्ता	२६–२६
२३–१२	पडिपुन्नाणं जाव दारयं	१९–१९
२३–१६	हट्ठ जाव हियये	१४–२२
२३–२१	सुमिणा जाव एगं	२३– १

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
२८–१०	ओवलित्तं जाव सुगंधवरगंधियं	२१– १
२८–१२	मेहेसु अब्भुवगएसु जाव दोहलं	
३१–१८	ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ	३१–१४ कल्पसू० सूत्र ९२ !
३१–१९	ओलुग्गं जाव झियायमाणिं०	३१–१४
३१–२०/२४	ओलुग्गसरीरा जाव झियायसि,	१५– ४
३२– १	करतलपरिग्गहियं जाव कट्टु जएणं०	३१–१४
३२– २/६	ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगया०	३१–१४
३२– ५	ओलुग्गसरीरं जाव अट्टज्झाणोवगयं०	३१–२४
३२– ७	नो आढाइ जाव तुसिणीया०	३१–१४
३२– ८	ओलुग्गा जाव झियायसि ?	१४–२१
३२–१३	उरालस्स जाव महासुमिणस्स०	२७–११
३२–१६	अम्मयाओ जाव वेभारगिरिपायमूलं०	२७–१३

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
३२–१६	अहमवि जाव डोहलं०	३१–१४
३२–१७/१८	ओलुग्गा जाव अट्टज्झाणोवगया०	
३२–२०	ओलुग्गा जाव झियाहि,	३१–१४
३२–२५	ओहयमणसंकप्पे जाव झियायति,	कल्पसू. सू. ९२
३२–२६	कयबलिकम्मे जाव सवालंकार-विभूसिए,	क. सू. ९५
३३– १	ओहयमणसंकप्पं जाव पासइ,	क. सू. ९२
३३–१७	अम्मयाओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव विर्णिति,	२७, २१
३३–१८	ओहयमणसंकप्पे जाव झियायामि,	क. सू. ९२
३३–१९	ओहय० जाव झियामि,	क. सू. ९२
३३–२०	हट्ठ जाव हियए,	१४–२२
३३–२०	ओहयमण० जाव झियायह,	क. सू. ९२

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
३३–२२	इट्ठाहिं कंताहिं जाव समासासेइ,	१४–२५
३३–२३	हट्ठतुट्ठे जाव अभयकुमारं०	१४–२२
३३–२६/३४–८	अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था,	क. सू. १५०
३४– १	महिड्ढीए जाव महासोक्खे,	३८– ३
३४– ७	बंभयारी जाव पुव्वसंगतियं०	३४– २
३५– ६	करयल० अंजलिं०	१५– ४
३५– ८	अम्मयाओ तहेव पुव्वगमेणं जाव विणिज्जामि,	२७–११
३५– ९	हट्ठतुट्ठ० अभयकुमारं०	१४–२२
३५–२३	हट्ठतुट्ठ० कोडुंबियपुरिसे०	१४–२२
३५–२४	आसित्तसित्त जाव सुगंधवरगंधियं०	२८–१०
३५–२५	कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति,	३५–२३

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
३५–२७	तहेव जाव पच्चप्पिणंति,	३५–२५
३६– १	सगज्जिया जाव पाउससिरी,	३५–१३
३६– ४	वरपायपत्तणेउर जाव आगास०	२८– १
३६– ६	कयबलिकम्मे जाव सस्सिरीए !	
३६– ९	सव्वजुइए जाव दुंदभि०	क. सू., १०२
३६–१९	हयगय जाव रहेणं (!)	
४०–१२	सुकुमालपाणिपादं जाव सव्वंगसुंदरगं,	१५– ९
४०–१३/१५	नवण्हं मासाणं जाव दारगं,	१९–१९
४०–२०	रायगिहं नगरं आसिय जाव परिगयं,	४३–१८
४०–२१	पच्चप्पिणह जाव आमन्त्रेति,	४०–२०
४०–२५	तहेव पच्चप्पिणंति,	४०–२१
४१– ३	दंडणायग जाव आमन्तेति,	क. सू. ६२
४१– ४	कयकोउय जाव सव्वालंकार०	,, ,, ९५

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
४१– ५	मित्तनातिगणणायग जाव सद्धिं,	क. सू. १०४
४१– ९	बावत्तरिकलापंडितं जाव वियालचारी;	४२– ७
४१–१६	इहामिय जाव भत्तिचित्तं,	क. सू. ४४
४१–१९	लाउल्लोइयमहियं जाव गंधवट्टिभूयं, उव. सू. २९, पृ. ६१.	
४३– १	धणकणग जाव परिभाइउं,	४२–२५
४३– १	दलयति जाव एगमेगं (!)	
४३– ५	चेतिए जाव विहरति,	७ –२५
४३– ६	सिंघाडग० महया बहुजणसद्देति जाव बहवे उग्गा भोगा जाव रायगिहस्स, उव. सू. २७, पृ. २८.	
४३– ८	मुयंगमत्थएहिं जाव माणुस्सए (!)	
४३– ९	उग्गे भोगे जाव एगदिसामुहे (!)	

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
४३–१२/१४	उग्गा भोगा जाव एगदिसि (!)	
४३–१४	इंदमहेति जाव गिरिजत्ताओ,	४३–१०
४३–१६	अहापडि० जाव विहरति,	७ –२५
५०– ८	ण्हाते जाव सवालंकारविभूसिए,	क. सू. ९५
५०–१९	धम्मकहा भाणियवा, जाव परिसा पडिगया,	उव. सू. ३४/३५ पृ. ७७ थी ८२
५३– ५	एगे पुत्ते तं चेव जाव निरावयक्खे,	५२–२५
५३–५/१२	समणस्स ३ जाव पवइस्ससि,	५३– २
५३–१४	सरिसियाओ जाव समणस्स०	५३–१०
५३–१८	अम्मयाओ ! जाव पवतित्तए,	५१–१८
५३–२४	अज्जगपज्जग० जाव तओपच्छा०	५३–१९
५३–२५	सुवण्णे य जाव सावतेज्जे,	५३–२०
५३–२६	अग्गिसामन्ने जाव मच्चुसामन्ने,	५३–२५

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
५३–२७	अम्मयाओ ! के जाव गमणाए तं,	५३– ८
५३–२७	इच्छामि णं जाव पवतित्तए,	५१–१८
५४–१२	समणस्स ३ जाव पवइस्ससि,	५१–१९
५४–१८	भगवओ जाव पवइत्तए०	५१–१९
५७– २	कोडुंबियपुरिसा जाव तेवि तहेव,	५७–२–!
५७– ३	०णायगेहि य जाव संपरिवुडे,	क. सू. ६२
५७– ७	सवबलेणं जाव दुंदभिनिग्घोस०	क. सू. १०२
५७– ७	करयल जाव कट्टु०	१५– ४
५७– ९	मित्तपक्खं जाव भरहो०	५९–२६
५७–१०	गामागरनगर जाव सन्निवेसाणं,	५९–२७
५७–११	महया जाव विहरति,	उव. सू. ६ पृ. ११
५७–२०	हट्ठे जाव हयहियए,	१४–२२
५७–२५	हट्ठ जाव हियए,	१४–२२

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
५८– ८	नासानीसासवायवोज्झं जाव हंसलक्खणं०	२८– २
५८–१८	हट्ठतुट्ठा जाव उवट्ठवेंति,	५८–१३
५८–२०	कयबलिकम्मा जाव अप्प०	क. सू. ९५
५८–२६	सिंगारागारचारुवेसाओ जाव कुसलाओ,	५८–२३
५९– १	सिंगारा जाव कुसला,	५८–२३
५९– ३	वरतरुणी जाव सुरूवा,	५८–२३
५९– ६	सद्दावेह जाव सद्दावेंति,	१४–२२
५९– ७	हट्ठा, ण्हाया जाव एगाभरण०	क. सू. ९५
५९–१४	दप्पण जाव बहवे अत्थात्थिया जाव ताहिं इट्ठाहिं जाव अणवरयं अभिणंदता य०	६२– ७
६४–२३	कंते जाव जीवियाउसासए,	५२–२५

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
६५–२२	आयार जाव धम्ममातिक्खइ,	६५–२१
६६– ६	अब्भत्थिए जाव समुपज्जित्था,	क. सू. १५
६६– ७	मेहे, जाव समणयाए (!)	
६६–११	समणा नो आढायंति; जाव नो संलवंति०	६६– ८
६६–१२, ६७, १९	पुच्छणाए जाव महालियं०	६६– २
६६–१३/१५. ८०–७/१२	रयणीए जाव तेयसा जलंते,	२१– ४
६६–१६	वंदइ नमंसइ जाव पज्जुवासइ,	९–२०
६७–२१	आढायंति जाव परियाणंति,	६६– ८
६७–२२	आढायंति जाव न परियाणंति,	६६– ८
६७–२३	वायणाए जाव पायरेणुगुंडियं०	६६– २
६७–२५	अट्टदुहट्टवसट्टमाणसे जाव रयणीं०	६६–१६
६८– ८/१३/२५	हत्थिहिय जाव परिवुडे०	६८– ४

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
६९–१०	कक्खडा जाव दुरहियासा (!)	
६९–११	उज्जलं जाव दुरहियासं०	६९– ९
६९–२१	तहेव जाव पडिरूवे,	६७–२८
६९–२३	दिसासु जाव मंडलवाएव,	६८–१६
६९–२४	तत्थे जाव संजायभए,	६८–२७
७०– २	मूले जाव तत्थ णं महया०	६७–२७
७०– ३	सत्तुस्सेहे जाव सन्निजाइस्सरणे,	६७–२८
७०– ४	अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था,	क. सू. १५
७०– ८	हत्थीहिं जाव कलभियाहि०	६८–१६
७०–१२	गिरीसु य जाव विहरसि,	६८– ८
७०–१५	तणं वा जाव सुहंसुहेणं,	७०– ९
७०–२७	पायवसंघंसमट्टिएणं जाव संघट्टिएसु०	६८–१५
७१– ४	वहूहिं सीहेहिं जाव चिल्ललएहिं,	७१– १

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
७१– ८	पाणाणुकंपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए,	७१– ७
७१–१०	सीहाय जाव चिल्लला,	७१– १
७१–१०	तं वणदवं निट्ठियं जाव विज्झायं,	७१– ९
७१–१२	हत्थि जाव छुहाए०	६८– ४
७१–१६	उज्जला जाव दाहवक्कंतिए०	६९– ९
७१–१७	तं उज्जलं जाव दुरहियासं०	६९– ९
७६–११	पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा०	७१– ७
७६–१४	वायणाए जाव धम्माणुओगचिंताए,	६६– २
७६–२४	मुंडावियं जाव सयमेव०	६५–२०
७६–२५	पव्वावेइ जाव जायामायावत्तियं०	६५–२०
७७– १	तह चिट्ठति जाव संजमेणं संजमति,	६५–२३
७७– २	अणगार वन्नओ भणियव्वो,	७७–१७
७८–१८	अहासुत्तं जाव सम्मं०	७७–२६

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
७८–१९	अहाकप्पं जाव किट्टेत्ता०	७७–२७
७९–२७	तित्थयरे जाव पुव्वाणुपुव्विं०	उव. सू. १०, पृ. १४ थी २१
८०–३/१५	अज्झत्थिते जाव समुपज्जित्था,	क. सू. १५
८०– ३	उरालेणं तहेव जाव भासं०	७९–१७
८०– ५	संवेगे जाव इमे,	८०– ४
८०–१६	ओरालेणं जाव जेणेव०	७९–१७
८०–२०	हट्ठ जाव हियए०	१४–२२
८०–३३	भगवंताणं जाव संपत्ताणं–	उव. सू. १२, पृ. २५
८०–२४	महावीरस्स जाव संपा-विउकामस्स०	उव. सू. १०, पृ. १४
८०– १	पच्चक्खामि जाव मिच्छादंसणसल्लं,	८०–२६
८१– ३	पियं जाव विविहा० !	

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
८१–१२/१९	पगइभद्दए जाव विणीते,	८३– ५
८१–२१	तहारूवेहिं जाव विउलं०	८०–२२
८२– ५	तित्थगरेणं जाव संपत्तेणं०	उव. सू. २२, पृ. २५

इति प्रथममध्ययनम् ।

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
८३–२७	रायगिहे णामं नयरे	उव. सू. १
८४– २	गुणसिलए नामं चेतिए,	उव. सू. २, पृ. ४
८४– ५	किण्होभासे जाव रम्मे०	८४–१४
८४–२७	दिव्वे जाव विउलभत्तपाणे०	८५–२६
८५– ३	चारुवेसा जाव पडिरूवा	५८–२३
८५– ६/७	जाव चक्खुभूते मंतेसु य०	१२–१८
८५–२५	छिद्देसु य जाव एवं०	८५–१८
८७–१९	अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था,	क. सू. १५

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
८७–२१	अम्मयाओ जाव सुलद्धे०	२७–११
८७–२५	रयणीए जाव जलंते०	२१– ४
८८– १	नागपडिमाण य जाव वेसमण-पडिमाण य,	८७–२८
८८–४, ८९–३	कल्लं जाव जलंते,	२१– ४
८८– ६	वासातिं जाव देंति,	८७–१९
८८– ७	असणं ४ जाव अणुवड्ढेमि,	८८– ३
८८–१०	हट्ठतुट्ठ जाव हयहियया,	१४–२२
८८–१४	उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं (!)	
८८–१५	नागधरए जाव वेसमणघरए,	८७–२८
८८–१७	नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण,	८७–२८
८८–१९	करेति २, जाव धूवं डहति २ (!)	
८८–२१	अहं जायं च जाव अणुवड्ढेमि,	८८– ३

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
८८–२१	विपुलं असणं आसाएमाणी जाव,	क. सू. १०४
८८–२२	जिमिया जाव सुइभूया,	क. सू. १०५
८८–२२	नागाय जाव वेसमणाय आयमाणी जाव विहरति !	८७–२८
८८–२६	अम्मयाओ जाव कयलक्खणाओ,	२७–११
८९– २	आसाएमाणीओ जाव पडिभुंजेमाणीओ,	क. सू. १४
८९– ४	गब्भस्स जाव विणेति,	८८–२४
८९– ५	समाणी जाव विहरित्तए,	८७–२६
८९– ६	हट्ठतुट्ठा जाव विपुलं०	१४–२२
८९– ६	जाव ण्हाया जाव उल्लपडसाडगा०	८८–११
८९– ७	नागघरते जाव धूवं डहति,	८८–१५
८९– ८	मित्तनाति जाव नगरमहिलाओ०	८७–२७
८९–१०	असणं ४ जाव परिभुंजमाणी०	८८–२७

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
८९–११	संपुन्नडोहला जाव तं गब्भं०	क. सू. ९५
८९–१२	सुकुमालपाणिपादं जाव दारगं०	उव. सू. ७, पृ. १२
८९–१३	तहेव जाव विपुलं असणं ४ उवक्खडावेंति,	४१– १
८९–८५	नागपडिमाणय जाव वेसमणपडिमाण य०	८७–२८
९०– ९	डिंभियाहिय जाव कुमारियाहिय०	९०– ५
९०–१०	डिंभिएहिय जाव कुमारियाहिय०	९०– ५
९०–१२	तहेव जाव आभोएमाणे,	८५–१४
९०–२५	दारयं ण्हायं जाव मम हत्थंसि०	९०– ६
९०–२५	गिण्हामि जाव मग्गणगवेसणं०	९०– ८
९१– ५	इट्ठे जाव उंबरपुप्फंपिव (!)	
९१– ६	पंथगस्स हत्थे दलाति जाव पायवडिए०	९०– ७

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
९१– ८	उप्पीलियसरासणवट्टिया जाव गहियाउहपयहरणा०	९१–२४
९१–१०	अतिगमणाणि य जाव पवासु य०	८५–१४
९२– ६	तक्करे जाव गिद्धे विव आमिसभक्खी०	८५ ७
९२– ९	तिसंझं कसप्पहारे जाव निवाएमाणा०	९२– ४
९२–१०	रोयमाणे जाव विलवमाणे०	९०–२१
९२–१४ / ९३–१२	कलं जाव जलंते विपुलं०	२१– ४
९३– ३	कसप्पहारेहिय जाव लयापहारेहिय (!)	
९३–१६/९४, २१	पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स०	९२–२४
९४– ५	रुट्ठा जाव मिसिमिसेमाणा,	६९– ७
९४– ९	कयबलिकम्मे जाव रायगिहं०	क. सू. ९५
९४–२५	हट्ठं जाव आसणतो०	१४–२२

ज्ञा. पृ. पं.		ज्ञा. पृ. प.
९४-२५	ण्हाया जाव पायच्छिता०	क. सू. ९५
९४-२७	कसप्पहारेहिय जाव तण्हाए य०	९३- ३
९४-२८	कालोभासे जाव वेयणं०	९५-११
९५-१९	जातिसंपन्ना २ जाव पुव्वाणुपुर्विं०	७ -१८
९५-२०	चेतिए जाव अहापडिरूवं०	७ -२५
९५-२२	अज्झत्थिते जाव समुपज्जित्था,	क. सू. १५
९५-२६	पावयणे जाव पव्वतिए जाव बहूणि वासाणि,	५१- ५
९६- २	सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणमंतं०	८२- ४
९६- ३	धम्मोत्तिव वा जाव विजयस्स०	९४-२२
९६- ५	अम्हं निग्गंथे वा २, जाव पव्वतिए,	९५- २
९६-१०	अणवदग्गं दीहं जाव वीतियतिस्सति,	९५- १
९६-१०	समणेणं जाव दोच्चस्स०	उव. सू. १२, पृ. २६

इति द्वितीयमध्ययनम् ।

ज्ञा. पृ. प.		ज्ञा. पृ. प.
९३- ८	मालुयाकच्छए वन्नओ,	८४- ५
९८- ६	अड्ढा जाव भत्तपाणा,	८५-२६
९९- ८	संगयगयहसिय०	९९-१३
९८-११	आहेवच्चं जाव विहरति,	५९-२७
९८-१२	कल्लं जाव जलंते विपुलं०	२१- ४
९८-१८	सुगंध जाव कलियं करेह,	क. सू. १००
९८-१८	चिट्ठह जाव चिट्ठंति,	९८-१५
९८-२२	ण्हाया जाव सरीरा०	क. सू. ९५
९८-२८	पवर जाव सिरिसमाणवेसा०	२८- १
१००-१२	परियागये जाव पासित्ता (!)	
१००-१८	पक्खिवह जाव तेवि पक्खिवेंति	१००-१६

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१००–२३	कलुं जाव जलंते०	२१– ४
१०१– २	ओहतमणं जाव झियायति,	क० सू० ९२
१०१– ३	पंचमहव्वएसु जाव छज्जीवनिकाएसु (!)	ज्ञा० पृ० प०
१०१– ४	संकिते जाव कलुससमावन्ने,	१००–२४
१०१– ६	दंडणाणि य जाव अणुपरियट्टए (!)	
१०१– ८	उव्वत्तेवि जाव नो टिट्टियावेति	१००–२६
१०१– ९	अणुवत्तिज्जमाणे जाव अटिट्टियाविज्जमाणे	१००–२६
१०१–१४	मयूरपोयगं जाव नट्टुल्लग०	१०१–११
१०१–१७	उम्मुक्क जाव करेमाण०	१०१–१४
१०१–१९	पीतिदाणं जाव पडिविसज्जेइ,	२३–२८
१०१–२२	सिंघाडग जाव पहेसु,	क० सू० १००

ज्ञा० पृ० प०

इति तृतीयाध्ययने ।

ज्ञा० पृ० प०		
१०३– ५	वाणारसी नामं नयरी होत्था, वन्नओ,	उव० सू० १५
१०३– ८	पासादीए ४	१०५–३
१०३–११	मालुयाकच्छओ होत्था वण्णओ,	ज्ञा० ८४–५
१०२–१८	आहारत्थी जाव आहारं (!)	
१०३–२६/१०४–५	उव्वत्तेंति जाव नो चेव संचाइन्ति	१०३–२३
१०४– ६	चत्तारि वि पाया जाव सणियं,	१०४–२
१०४–१०	दंडणाणं जाव अणुपरियट्टति (!)	
१०४–१२	उव्वत्तेंति जाव दंतेहिं अक्खुडेंति जाव करेत्तए,	१०३–२३
१०४–१२	तच्चंपि जाव नो संचाएन्ति,	१०३–२३
१०४–१३	विवाहं वा जाव छविच्छेयं.	१०३–२५

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
		१०५–१२
१०४–१५	ताए उक्किट्ठाए	
१०४–१८	गुत्तातिं भवंति जाव जहा उ से, (!)	
	इति चतुर्थाध्ययने ।	
१०६–१६	ईसरतलवर जाव सत्थवाहपभिईणं,	२१–२६
१०६–१७	आहेवच्चं जाव पालेमाणे,	५९–२७
१०६–२६	अड्ढा जाव अपरिभूता,	८५–२६
१०७–२७	सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे, उव० सू० ७५, पृ. १२	
१०७– २	उवणेंति जाव भोगसमत्थं०	ज्ञा० ४१–२३
१०७– ३	दाओ जाव बत्तीसाए,	
१०७– ३	सद्दफरिसरसरुपवन्नगंधे जाव भुंजमाणे	४३– ३
१०७– ४	अरहा अरिट्ठनेमी, सो चेव वण्णओ, उव० सू० १०, पृ० १५, पं० ४	
१०७– ६	चरमाणे जाव जेणेव,	७–२४

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१०७–११	हट्ठ जाव मत्थए अंजलिं०	१४–२२
१०७–१२	तहत्ति जाव पडिसुणेंति,	१०७–१०
१०७–१८	दसदसारा जाव गणिया सहस्साइं	१०६–१२
१०७–२२	दसदसारे जाव अंतियं०	१०६–१२
१०७–२३	हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे०	१४–२२
१०८–१३	मित्त जाव संपरिवुडा.	क० सू० १०४
१०८–१६	इट्ठे जाव से णं०	ज्ञा० ६४–२२
१०८–१७	अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वतित्तए,	५१–१९
१०९– ४	०चत्तर जाव हत्थिखंधवरगया (!)	२८– ९
१०९– ९	घोसेह जाव घोसंति,	१०९– ५
१०९–१३	जाव अरहतो अरिट्ठनेमिस्स०	५८– ६
१०९–१४	विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता,	५०–११
१०९–१९	लोयं करेति जाव पव्वतिए,	६५–१४

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१०९–२०	भासासमिए जाव विहरति ।	११०– ७
१०९–२१	बहूहिं जाव चउत्थेणं.	७७– ४
१११–११	भोगा जाव चइत्ता.	उव० सू० १४, पं. १६
१११–११	हिरन्नं जाव पवइत्ता.	उव० सू० १४, पं. १६
१११–१२	पंचाणुवइयं जाव समणोवासए,	ज्ञा० ११५–२४
१११–१२	जीवाजीवे जाव अप्पाणं०	११५–२६
१११–१४	सोगंधिया नाम नयरी होत्था, वन्नओ,	उव० सू० १५, पं. १
१११–१५	अड्ढे जाव अपरिभूते,	ज्ञा० ८५–२६
१११–२२	हव्वमागते जाव विहरइ,	१११–१६
११२– १	पडिलाभेमाणे जाव विहरति,	११६–१७
११२–१२	सोयमूले धम्मे पन्नत्ते जाव सग्गं गच्छंति,	१११–२४

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
११२–१५	तुब्भंपि पाणातिवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं,	८०–२६
११२–२०	पाणाइवायावेरमणेणं जाव मिच्छादंसणवेरमणेणं,	८०–२६
११२–२१	वत्थस्स जाव सुद्धेणं वारिणा.	११२–१७
११२–२३	जाणित्तए जाव समणोवासए,	१११–१२
११२–२३	अहिगयजीवाजीवे जाव समुप्पज्जित्था,	११५–२६
११३– ३	अब्भुट्ठेसि जाव वंदसि इयाणिं.	११३– १
११३– ४	पासित्ता जाव णो वंदसि०	११३– १
११३– ७	अणगारे जाव इहमागए (!)	
११३–१०	अट्ठाति जाव वागरति,	११३– ९
११४–१३	अहासुहं जाव उत्तरपुरच्छिमे०	५१/९. ६५, ३

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
११४-२०	तिडंडय जाव धाउरत्ताओ य (।)	१११-१८.
११४-२१	भविचा जाव पव्वत्तिए,	६५-२७
११४-२५	पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमणं (।)	
११४-२६	अणसणाए जाव केवलवरनाणदंसणं.	८१- ८
११४-२७	पच्छासिद्धे जाव पहीणे,	क० सू० ११४
११५- ६	संसारभयउव्विग्गे जाव पवयामि,	ज्ञा० ६४-२७
११५-७/११	संसार जाव पवयह,	६४-२७
११५- ९	कारणेसु य जाव तहा.	१२-१६
११५- ९	संसारभयउव्विग्गा जाव पव्वयामो,	६४-२७
११५-१०	बहुसु जाव चक्खुभूते,	१२-१६
११५-१४	महत्थं जाव रायाभिसेयं०	५७- २
११५-१५	अभिसिंचति जाव राया विहरति,	५६- ७
११५-१६	आसित जाव गंधवट्टिभूतं०	२१-१०

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
११५-१८	महत्थं जाव निक्खमणाभिसेयं०	५७- २
११५-१९	तहेव जाव सामातियमातियातिं०	
११५-२०	बहूहिं चउत्थ जाव विहरति,	७८-१९
११५-२३	पव्वए जाव सिद्धे,	क० सू० १२४
११८- १	उज्जला जाव दुरहियासा०	ज्ञा० ६९- ९
११८- ३	चरमाणे जाव जेणेव०	७-२४
११८- ४	अणगारं जाव वंदति (।)	
११८- ५	सुक्कं जाव सबाबाहं०	७९-१८
११८-११	फासुयं पीढ जाव विहरति,	११६-१७
११८-१२	जाव तेगिच्छं आउट्टेह,	११८- ६
११८-१४	अहापवत्तेहिं जाव मज्जपाणेण०	१११-११
११९-२०	सहियाणं जाव पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि (।)	

ज्ञा० पृ० पं०		
११८–२१	अब्भत्थिए जाव समुपज्जित्था,	क० सू० १५
११८–२१	रज्ज जाव पव्वतिए,	उव० सू० १४, पृ. २७
११८–२२	नो संचाएति विहरित्तए,	ज्ञा० ११८–१७
११८–२४	अब्भुज्जएणं जाव विहरित्तए,	११८–१९
११८–२५	पीढ० पच्चप्पिणंति,	११८–१८
११८–२६	बहिया जाव विहरंति,	११८–१९
११९– ३	आसुरत्ते जाव मिसिमिसेमाणे.	६९– ७
११९– ४	अप्पत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए.	
११९– ५	करयल० कट्टु,	१५– ४
११९– ९	अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था,	क० सू० १५
११९– ९	रज्जं जाव ओसन्नो.	उव० सू० १४, पृ. २७
११९–१०	ओसन्नो जाव उउबद्धपीढ.	ज्ञा० ११८–१७
११९–१२	अब्भुज्जएणं जाव जणवयविहारेणं.	११८–१९

ज्ञा० पृ० पं०		ज्ञा० पृ० पं०
११९–१३	कल्लं जाव विहरति,	२१– ४
११९–१३	समणाउसो जाव निग्गंथो वा (!)	
११९–१३	ओसन्ने जाव संथारए.	११८–१७
११९–१६	पंथएणं बहिया जाव विहरति,	११८–१३
११९–१९	जो निग्गंथो वा२, जाव विहरिस्सति,	
	इति पञ्चमाध्ययने ।	
१२०–१८/१९	समणेणं जाव संपत्तेणं,	उव० सू० १२, पृ० २५
१२०–२०	अदूरसामंते जाव सुक्कज्झाणोवगए (!)	उव० सू० ३८, पृ.
१२०–२६	सुक्कचेमाणे जाव अट्ठहिं.	ज्ञा० १२०–२३
१२१– २	पाणातिवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं.	८०–२६
१२१– ६	मट्टियालेवे जाव उप्पतित्ता.	

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१२१– १	तिन्नेसु जाव विमुक्कबंधणे.	
१२१– ९	पाणातिवातवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं.	८०–२६

इति षष्ठाध्ययने ।

१२१–२२/२४	समणेणं जाव संपत्तेणं,	उव० सू० १२, पृ. १५
१२१–२६	पंचेंदिय० जाव सुरूवा,	१२–२६/८५–२६
१२२– ३	अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था,	क० सू० १५
१२२– ४	ईसर जाव पभिईणं,	ज्ञा० २१–२७. ।
१२२–८/१२३	कल्लं जाव जलंते,	२१– ४
१२२–१०, २५/२७	धुवपुप्फवत्थगंध–जाव सक्कारेत्ता,	२३–१८
१२२–१३	कल्लं जाव मिचणाति.	२१– ४

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१२२–१५	असण ४ जाव सक्कारेति,	१२२–१०
१२२–२६	हत्थाओ जाव पडिदिज्जाएज्जासि,	१२२–१६
१२३– १	मित्त जाव चउत्थिं रोहिणीयं.	१२२–१५
१२३– २	जाव तं भवियव्वं.	१२२–२६
१२३–११	किण्होभासा जाव निउरंबभूया.	५–२ थी ६–१८ सुधी
१२३–१३	पत्तिए जाव सल्लइए.	१२३–१२
१२३–१९	उक्खयणिहए जाव लुणेंति,	१२३–१२
१२३–१९	जाव चलणतलमलिए.	१२३–१३
१२३–२०	कुडवा जाव एगदेसंसि.	१२३–१६
१२३–२१	केदारे सुपरि० जाव लुणेंति,	१२३–१९
१२३–२१	मलेंति, जाव बहवे कुंभा जाया;	१२३–१४
१२३–२२	पक्खिवंति जाव विहरंति,	१२३–१६

ज्ञा० पृ० पं०		ज्ञा० पृ० पं०
१२३–२६	परिजाइत्तए जाव जाणामि ताव काए किहं सारक्खिया,	१२२–१२
१२३–२७	सुण्हाणं, कुलघर जाव सम्माणित्ता.	१२२– ९
१२४–११	कुल० जाव विहरामि,	१२२–१३
१२४–१४	आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे.	६९– ७
१२४–१७	निग्गंथो वा २ जाव पव्वतिते,	९५– २
१२४–१८	समणाणं ४ जाव अणुपरियट्टइस्सइ,	९५– १
१२४–२१	समणाणं ४ जाव हील ४ (!)	
१२४–२६	पंचमंमि जाव भवियव्वं.	१२४–१०
१२४–२७	वत्थे जाव तिसंझं.	१२२–१८
१२५– १	समाणाउसो ! जाव पंच.	९५– २
१२५– २	समणाणं ४ अच्चणिज्जे जहा जाव सा.	९६– २

ज्ञा० पृ० पं०		ज्ञा० पृ० पं०
१२५– ६	मित्त जाव बहवे कुंभसया.	१२१–१/२१
१२५–१०	सिंघाडग जाव बहुजणो.	उव० सू० २७
१२५–१४	कज्जेसु य जाव रहस्सेसु य.	१२२– ४
१२५–१५	आपुच्छणिज्जं जाव वड्ढावितं.	१२२– ५
१२५–१७	समणाउसो जाव पंच महव्वया,	९५– २
१२५–१७	समणाणं जाव वीतीवइस्सइ जहा रोहिणीया,	९६– ७
	इति सप्तमाऽध्ययने ।	
१२७–२३	नवजोयणविच्छिन्ना जाव पच्चक्खं.	१०६– ३
१२७–२८	उम्मुक्क जाव भोगसमत्थे (!)	
१२८– १	पंचसतो दातो जाव विहरति,	४२–२३ !
१२८– ३	ठावेति जाव एक्कारसंगवी.	११५ १/१९
१२८– ४	सीहं सु० जाव बलभद्दो.	ज्ञा० सूत्र ९/१९

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१२८– ६	सहजायया जाव संहिचाते.	९७/१२
१२८– ८	ठावेमि जाव छप्पिय बालवयंसए.	११५– १
१२८– ९	अन्ने आहारे वा जाव पवयामो,	११५– ८
१२८–१०	सद्धिं जाव पवयह.	६४–२७
१२८–११	दुरूढा जाव पाउब्भवंति,	१२८–१०
१२८–१३	जाव महया इड्ढीए,	६२
१२८–१४	चउत्थ जाव भावेमाणे,	७७– ४
१२८–१७/१२९–२६	चउत्थ जाव विहरति,	७७– ४
१२८–२६	विहरंति जाव एगराइयं.	७७/७८
१२९– ९	अहासुत्ता जाव आराहिया भवइ,	७७–२६
१२९–१२	अहासुत्तं जाव आणाए.	७७–२६
१२९–१४	जहा खुड्डागं नवरं,	१२९– १
१२९–१७	अहासुत्तं जाव आराहेत्ता,	७७–२६

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१२९–१९	मुक्खा जाव खंदओ,	श्री भगवती सू. ७९–१८
१२९–१९	दुरूहति जाव दोमासियाए.	८०–२०
१३१–१४	चोद्दस महासुमिणा, वन्नओ,	क० सू० ३३ थी ४५
६३२–१५	सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरति,	क० सू० ६९ थी ९५
१३१–२०	जलथलय० जाव दसद्धवन्नमल्लं.	ज्ञा० १३१–१६
१३१–२१	सिरिदामगंडं जाव मुयंतं.	१३१–१७
१३१–२२	जलथलय जाव मल्लेणं.	१३१–१६
१३१–२२	पसत्थडोहला जाव विहरइ,	क० सू० ९५
१३१–२४	उच्चट्ठाण० जाव पमुइय.	क० सू० ९६
१३२–२१	जहा जम्बूदीवपन्नत्तीए जम्मणं सव्वं.	जम्बू. प्र. वक्ष. २, सू. ११२ थी १२३. १३३ १५ थी १३५ २२

ज्ञा० पृ० पं०		ज्ञा० पृ० पं०
१३२–२२	जाव नंदीसरवरे, जम्बू. प्र. वक्ष. २, सू. ३३.	
१३२–२३	तित्थयर० जाव कम्मं जाव नामकरणं.	क० सू० ९९ थी १०७
१३२–२४	जहा महाबले नाम जाव परिवड्डिया,	१२७–२६
१३२–२८	उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण.	क० सू० ७९
१३३– २	पडिबुद्धि जाव जियसत्तु.	ज्ञा० १३१– ७
१३३– ५	करेह २ जाव पच्चप्पिणंति,	१३३– ३
१३३– ८	मत्थयछिड्डाए जाव पडिमाए.	१३३– ६
१३३– ९	कणगमतीए जाव मत्थयछिड्डाए.	१३३– ६
१३३–१०	अहिमडे त्ति जाव एत्तो.	१३६–१७
१३७–१५	सिरिदामगंडं जाव गंधद्धुणिं,	१३१–१७
१३७–१६	कोडुंबिया जाव चिट्ठंति,	१३७–१०

ज्ञा० पृ० पं०		ज्ञा० पृ० पं०
१३७–१७	आसितसम्मज्जितोवलित्तं जाव पच्चप्पिणंति,	२१–१/२८–१०
१३७–१८	लहुकरणजुत्तं जाव जुत्तामेव.	९८–१९
१३७–१९	ण्हाया जाव धम्मियं.	क० सू० ९५
१३७–२१	जलमज्जणं जाव परमसुइभूया,	ज्ञा० ८८–१३
१३७–२२	उप्पलाति जाव गेण्हति (!)	
१३७–२७	सकोरंट जाव सेयवरचामराहिं.	६६–२२
१३८– २	गामागर जाव सन्निवेसाइं.	५९–२७
१३८– २	रायईसर जाव गिहाति.	२१–२७
१३८–१०	सुपइट्ठियकुम्मुन्नयचारुचरणा वन्नओ, (!)	
१३८–१५	दुरूढे जाव हयगय० (!)	
१३९– ३	अड्ढा जाव अपरिभूया,	८५–२६
१३९– ३	अहिगयजीवाजीवे वन्नओ,	११५–२६

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१३९– ८	भुंजावेंति जाव आपुच्छंति २, (!)	
१३९–१०	गणिमस्स जाव चउव्विहस्स.	क० सू० ८९, वि० टीका.
१३९–१४	अरहन्नग जाव वाणियगाणं परियणो.	ज्ञा० १३९– ४
१३९–२०	उक्किट्ठिसीहनाय जाव रवेणं.	४९–१
१३९–२१	एगदिसिं जाव वाणियगा (!)	१३९–४
१४०–२४	अरहंताणं जाव संपत्ताणं,	उव० सू० १२
१४१– १	अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया,	ज्ञा०१४६– ३
१४१– ४	सीलव्वयं जाव ण परिच्चयसि,	१४१– २
१४१– ७	देवेण वा निग्गंथाओ (!)	
१४१– ९	अभीए जाव अभिन्नमुहरागण-यणवन्ने (!)	६८–२७

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१४१–११	हं भो अरहन्नगा !०	१४१– १
१४१–१३	सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं.	१४१– ४
१४१–१४	सीलव्वय तहेव जाव धम्म-ज्झाणोवगए,	१४१–२/१०
१४१–१५	उवसंते जाव निविन्ने,	१०३–२७
१४१–१७	सखिंखिणियाइं जाव परिहिते.	३५– २
१४१–१८	देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले,	२७–११
१४१–२२	चालित्तए जाव विपरिणामेत्तए,	१४१– ८
१४१–२४	किं चालेति जाव परिच्चयति,	१४१– ८
१४१–२८	जसे जाव परक्कमे,	१४६–२५ !
१४२– ४	अरहन्नपामोक्खा जाव वाणियगा.	१३९– २
१४२– ८	संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ २,	१३९– २
१४२–११	वत्थगंध जाव उस्सुकं.	२३–१७

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१४२–१४	संकामेंति २ जाव महत्थं.	१४२– ५
१४२–१५	महत्थं जाव उवणेंति,	१४२– ७
१४२–१७	गामागार जाव आहिंडह,	५९–२७
१४२–२०	अहिणमतिरित्तं जाव कुंभगस्स.	१३९ थी १४२– ८
१४२–२३	देवकन्ना वा जाव जारिसिया.	१४७– २
१४२–२४	सद्दावेति जाव जइविय.	१३८–१०
१४२–२५	हट्ठे जाव पहारेत्थ.	१३८–१२
१४७– ६	सुकुमाल० रूवेण य,	उव. सू. ७
१४७–१०	साहरेह, जाव सिरिदामगंडे.	ज्ञा० १४७–१२
१४७–१३	पट्ठयं रएह २ जाव पच्चप्पिणंति,	१३७– ९
१४७–१९	लाव० जाव० विम्हिए (!)	
१४७–२२	हर्ष्टपि करयल०	१५– ४

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१४७–२५	सेसं तहेव०	१३८–११
१४८– ४	आएहि य जाव परिणामेमाणा,	३२–२३
१४८ ६	सद्दावेह २ जाव संधि.	१४७ १
१४८ ७	सुवन्नगारभिसियाओ जाव नो संचाएमो.	१४७ ३
१४८ १५	महत्थं जाव पाहुडं.	१४२ ७
१४८ १६	करयल० जाव एवं.	१५ ४
१४८ २१	सद्दावेति २ जाव निव्विसया.	१४८ ६ थी ११
१४८ २४	गंधवकन्नगा वा जाव जारिसिया.	१४७ २
१४८ २५	सद्दावेति जाव तहेव,	१३८ ११
१४९ ३	राया होत्था जाव विहरति,	उव० सू० ६
१४९ ४	कुमारे जाव जुवराया (!)	
१४९ ६	अणेग जाव पच्चप्पिणह,	ज्ञा० १४९ ७

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१४९ ७	चित्तेह २ जाव पच्चप्पिणह,	१४९ ७
१४९ १०	हावभाव जाव चित्तेउ,	१४९ ७
१४९ १३	इमेयारूवे जाव सेयं.	क० सू० १५
१४९ १४	सरिसगं जाव गुणोववेयं (!)	
१४९ १५	चित्तसमं जाव हावभावे,	ज्ञा० १४९ ७
१४९ १६	तेणेव २, जाव एतमाणातियं.	१४९ ७
१४९ २१	अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था,	क० सू० १५
१४९ २७	अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए.	ज्ञा० १४६ ४
१४९ २८	देवभूयाए जाव निर्वात्तिए,	२४९ २४
१५० १/९. १५२ २८	करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेइ २,	१५ ४
१५० ३	दुपयस्स वा जाव णिवत्तेति,	१४९ ११
१५० ८	महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ २	१४७ ७

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१५० १२	बाहुच्छायापरिग्गहिए जाव परिवसित्तए (!)	
१५० १५	मम चित्तसमं तं चेव सवं भाणियवं. जाव मम संडासगं छिंदावेइ २,	१४९ ६ थी १५० ४
१५० २१	तहेव जाव पहारेत्थ गमणाए,	१३८ ११
१५१- ३	रिउव्वेद जाव परिणिट्ठिया,	१११-१६
१५१- ४	राईसर जाव सत्थवाहपभितीणं,	२१-२७
१५१- ६	कुंडियं च जाव धाउरत्ताओ,	१११-१८
१५१- ९	दाणधम्मं च जाव विहरति,	१५१- ४
१५१-११	मट्टियाए जाव अविग्घेणं,	१११-२४
१५१-१४	पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं,	८०-२६
१५१-२०	दासचेडियाहिं जाव गरहिज्जमाणी,	१५१-१७

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१५१–२०	आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणी,	६९– ७
१५१–२३	राइसर जाव परूवेमाणी,	२१–२७
१५१–२४	परियालसद्धिं संपरिवुडे एवं जाव विहरति (!)	
१५१–२७	उदगपरिफासियाए जाव भिसियाए०	१५१– ८
१५१–२८	रज्जे य जाव अंतेउरे य कुसलोदंत० (!)	
१५२– १	दाणधम्मं जाव अंतेउरे०	१५१– ४
१५२– २	गामागर जाव अडह,	५१–२७
१५२– ३	रन्नो वा जाव एरिसए (!)	
१५२– ७	अगडे वा जाव सागरे वा,	१५२– ६
१५२–१५	राईसर जाव सत्थवाइपभिईणं,	११–२७
१५२–१७	जुवणेण जाव नो खलु,	१३२–२८
१५२–२०	सद्दावेति २, जाव पहारेत्थ गमणाए०	१३८–११

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१५२–२३	करयल० साणं० २,	१५– ४
१५२–२४	आसुरत्ते जाव तिवलियं०	६९– ७
१५३– १	मिहिला जाव अवदारेणं०	१५२–२१
१५३– ४	जमगसमगं चेव जाव निच्छूढा०	१५२–२१
१५३– ७	सकोरंट मल्लदामया जाव सेयवर०	६६–२२
१५३– ७	नगरेहिंतो जाव निग्गच्छंति (!)	
१५३– ८	सविड्ढीए जाव रवेणं	४९–१/६२–२६
१५३– ९	हय जाव सेण्णं सन्नाहेह, जाव पच्चप्पिणंति,	१५३–९
१५३–१०	हत्थिखंध०	१३७–२५
१५३–१०	सकोरंट०	६२–२२
१५३–१०	महया०	६२–२६
१५३–१५	हयमहित जाव पडिसेहिए	१५५–२६
१५३–१६	अवीरिए जाव अधारिणिज्जामि (!)	

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१५३–१६	तुरियं, जाव वेइयं (!)	
१५३–२२	ओहतमणसंकप्पे जाव झियायति,	क. सू. ९२
१५३–२३	ण्हाया जाव बहूहिं०	क. सू. ९५
१५३–२५	एज्जमाणं, जाव निवेसेह,	१५३–२४
१५३–२७	असक्कारिया जाव निच्छूढा,	१५२–२५
१५३–२८	निस्संचारं जाव चिट्ठंति,	१५३–१८
१५४– १	अलभमाणे जाव झियामि,	१५३–२०
१५४– २	ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह,	क. सू. ९५
१५४– ६	तं चेव जाव पवेसेति,	१५४– ३
१५७– ७	पाउब्भूया जाव जालंतरेहिं०	१५४– ४
१५४– ९	गिद्धा जाव अज्झोववण्णा (!)	
१५४–१०	ण्हाया जाव पायच्छित्ता,	क. सू. १५
१५४–११	खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता (!)	

ज्ञा० पृ० प०		ज्ञा० पृ० प०
१५४–१२	अहिमडेति जाव असुभतराए०	१३६–१७
१५४–१४	उचरिज्जेहिं जाव परम्मुहा०	१५४–१३
१५४–१६	सएहिं जाव चिट्ठामो,	१५४–१३
१५४–१७	कणग जाव पडिमाए,	१३३– ६
१५४–१९	सडण जाव धम्मस्स०	५३–१७
१५४–२३	सहजाया जाव पवतिता,	१२८–६/१३
१५४–२५	सेस तहेव सवं,	१२८–१८ थी १२९–२१
१५४–२७	जंबूद्दीवे २ जाव साइं०	१३१– ६
१५४–२८	आउक्खएणं जाव दारियत्तए,	क. सू. ३
१५५– ३	ईहावूह०, जाव सण्णिज्जाइसरणे,	७६–१८
१५५– ९	संसार जाव पव्वयह,	६४–२७
१५५–१०	मेढी पमाणं जाव धम्मधुरा,	१२१– ५
१५५–११	इण्हिंपि जाव भविस्सह,	१५५–१०

ज्ञा० पृ० पं०		ज्ञा० पृ० पं०
१५५–१२	संसारभउव्विग्गा जाव भीया,	६४–२७
१५५–१२	मुंडा भवित्ता, जाव पव्वयामो,	६५–२७
१५५–१३	तुब्भे संसार जाव मए सद्धिं,	६४–२७
१५५–१८	सक्कारेति, जाव पडिविसज्जेति,	२३–१८
१५७–२६	अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, क. सू. १५	
१५७– ३	भारहे वासे जाव असीतिं०	१५६–२६
१५७ ५	करयल जाव पडिसुणेइ २,	१५-- ४
१५७ ८	वेसमणेणं जाव सुणेत्ता (!)	
१५७ १	अवक्कमंति २, जाव उत्तर- वेउव्वियाइं०	३४ १२
१५७ ९	ताए उक्किट्ठाए जाव वीइयवमाण	१०५ १२
१५७ ११	कोडिसया जाव साहरंति,	१५७ १
१५७ ०२/१३	करयल जाव पच्चप्पिणंति,	१५ ४

ज्ञा० पृ० पं०		ज्ञा० पृ० पं०
१५७ १८	सुहासणवरगत० (!)	
१५७ १९	सिंघाडग जाव बहुजणो,	१. सू. १००
१५७ २३	समणाण य जाव परिवेसिज्जनि (!)	
१५७ २७	०गीयवाइय जाव रवेणं,	क. सू. १३
१५६ १	तहेव जाव अरहंताणं०	१५६ २७
१५८ ४	जंभगा जाव जेणेव मिहिला०	१५७ ९
१५८ ५	सखिंखिणियाइं जाव वत्थार्ति०	३५ २
१५८ ५	करयल०, ताहिं इट्ठा० १५	४/१४ २५
१५८ १०	भवित्ता जाव पव्वतित्तए,	६५ २७
१५८--११	सोवण्णियाणं जाव भोमेज्जाणंति	५७-- ४
१५८ ११	महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं०	५७ २
१५८ ११/१३	उवट्टवेह जाव उवट्ठवेंति;	१५८ १०

ज्ञा० पृ० प०			ज्ञा० पृ० प०
१५८	१२	चमरे असुरिंदे जाव अच्चुय-पज्जवसाणा० (!)	
१५८	१३	सोवण्णियाणं जाव अण्णं च तं०	१५८ ११
१५८	१५	सोवण्णियाणं जाव अभिसिंचति०	१५८ ११
१५८	१७	उत्तरावक्कमणं जाव सवालंकार-विभूसियं (!)	
१५८	१९	अणेगखंभ० जाव मणोरमं०	५८ १३
१५८	१९	उवट्ठवेह सा वि सीया०	१५८ १८
१५८	२२	ण्हाया जाव सवालंकार०	क. सू., ९५
१५८	२३	परिवहह जाव परिवहंति,	१५८ १२

ज्ञा० पृ० प०			
१५९	१	निग्गमो जहा जमालिस्स,	भग. श. ९, उ. ३३
१५९	२	अब्भिंतरवासविहि गाहा जाव परिधावंति (!)	
१५९	१४	अट्ठाहियं करेंति २, जाव पडिगया, (!)	
१५९	१७	अणंते जाव केवलनाणदंसणे०	क. सू. १२
१६०	२७	अट्ठाहियमहा० नंदीसरं० (!)	
१६१	१	मल्ली जाव पज्जुवासति,	औप. सू. ३२
१६१	४	भंते ! जाव पवइया,	६५ १५
१६१	१८	सिद्धे एवं परिनिवाणमहिमा भणियवा,	जम्बू. प्र. वक्ष. २, सू. ३३



परिशिष्ट—५

श्रीशङ्खेश्वरपार्श्वनाथाय नमः ।

॥ प्रथम—श्रीउत्क्षिप्त(मेघकुमार)—अध्ययन—सारांशः ॥

कथाप्रारम्भ—दोहदवर्णन—मेघकुमारविवाह—

जम्बूद्वीपना दक्षिणार्द्धभरतमां राजगृही नामनी नगरीमां श्रेणिकमहाराजा राज्य करता हता, अने तेओने धारिणी वगेरे राणीओ हती. अभयकुमार नामनो पुत्र, सकलबुद्धिनिधान बधा मंत्रीओ विषे मुख्य हतो. एकदा सुन्दर वासगृहमां पलंग विषे पोढेली धारिणी राणीए अर्धजागृत—अवस्थामां मध्य रात्रिए पोताना मुखमां अवतरता भव्य, सुन्दर, लक्षणोपेत हाथीनुं स्वप्न जोयुं, अने जागृत थई. आनन्दथी पूर्ण हृदये श्रेणिक महाराजानी पासे गई, अने जय-विजय-सूचक वाणीथी वधावी जागृत कर्या, अने स्वप्ननी वात कही. आ स्वप्ननी वात सांभळी हर्षान्वित थयेला राजाए स्वक्षयोपशम अनुसार प्राप्त थयेल बुद्धिना आधारे सम्यग् ऊहापोहपूर्वक तेनो विचार करी धारिणी राणीने जोयेला स्वप्ननुं अभिनन्दन आपवापूर्वक--कल्याण--मङ्गल--दीर्घायु अने आरोग्यादि विशिष्ट फलो सूचववा साथे अपूर्व भाग्यशाली पुत्ररत्ननी प्राप्ति जणावी. आ सांभली वधु आनन्दित बनेल धारिणीदेवीए शकुननी गांठ वाळी, अने शेष रात्रि निद्राथी प्राप्त थयेल महास्वप्ननो विघात न थाय ते हेतुथी धर्मकथा आदि द्वाराए पूर्ण करी. सवारे राजाए व्यायामशालामां अंग--श्रम करी, तैलादिथी विशिष्ट प्रकारनी मालीश आदि करावी स्नान करी अंगभूषा करी, प्रधानआप्तजनोना परिवार साथे विशेष प्रकारे

सजावेल बाह्य आस्थान--सभा(कचेरी)मां सिंहासन उपर बेसी अष्टांग निमित्तने जाणनारा स्वप्नपाठकोने(ज्योतिषीओने) तेडाव्या अने धारिणीराणीने ओझलपडदामां बेसाडी.

स्वप्नपाठको आवीने श्रेणिक महाराजाने आशीर्वादोथी नवाजी योग्य आसन पर बेठा. राजाए धारिणीराणीना स्वप्ननी वात जणावी अने तेना फलादेश श्रवणनी जिज्ञासा करी. पंडितोए तेनो योग्य विचार करी (कल्पसूत्रमां वर्णव्या मुजब) स्वप्नशास्त्रनो सामान्यथी परिचय आपीने छेवटे प्रस्तुत स्वप्ननो फलादेश जणावतां कह्युं के--" धारिणी राणी योग्य समये सर्व लक्षणोथी युक्त पुत्ररत्नने जन्म आपशे, ते पुत्र -विशालसमृद्धिथी शोभता महाराज्यनो भोक्ता थशे, अगर आत्मकल्याण साधी कृतार्थताभर्युं जीवन गुजारनार विशिष्ट अनगार (साधु) थशे ! " आ सांभली राजाए तेओनो योग्य सत्कार कर्यो, पारितोषिक--इनाम वगेरेथी संतोषी स्वप्नपाठकोने विदाय करी पोते धारिणीराणी पासे गया, स्वप्नना फलादेशनी वात कही, अने तेणे तेणीनी भाग्यशालिता सूचवी. धारिणी पण पोते उत्तमपुत्रनी माता थवानुं सौभाग्य मळ्याथी आनन्दित बनी योग्य रीतिए गर्भनुं पालन करवा लागी.

बे महिना जेटलो समय पसार थया बाद धारणीने "सघनमेघघटायुक्त, विजलीओना चमकारा सह मेघनी गर्जनाओथी व्याप्त सुन्दर चौमासानी ऋतु पूर बहारथी खीली होय अने हुं वैभारगिरिनी गिरिकन्दराओनी वनराजिओमां चतुरंग सैन्यना ठाठ साथे श्रेणिक महाराजा सह विहरण करुं" आवो दोहद प्रगट थयो. धारिणीए अकाले आवी मेघघटा वगेरेनो असंभव विचारी पोताना दोहदनी पूर्णता न थाय तेम होवाथी वात कोईने करी नहीं, किन्तु दोहदनी पूर्ति न थवाथी दिवसे दिवसे धारिणीनुं शरीर कृश थवा लाग्युं अने बेचेनी वधी. आ हकीकत दासदासीओए राजाने कही, अने श्रेणिकमहाराजाए आवीने ज्यारे आग्रहपूर्वक पूछयुं त्यारे

अनिच्छाए पण धारिणीए पोताना दोहदनी वात कही. राजाए राणीने आश्वासन आप्युं, अने पोते सभामां बेसीने मन्त्रीओ साथे विचारणा चलावी. परन्तु आ दोहद तो कुदरती बनावरूप होई मानव शक्तिओथी बहार होवाथी केवी रीते बने ?, आ कारणथी सहु चिन्तातुर बन्या. आ समये आवी पहोंचेला अभयकुमारे पिताश्रीनी गमगीनी जोई कारण पूछतां वातनो मर्म जाणी लई कह्युं के--पिताश्री ! दिव्यशक्ति आगल आ वात शी विसातमां छे ? हुं हमणां ज आनो उपाय करुं छुं ! एम जणावी पूर्ण विचार करी अट्ठमनो तप करी पूर्व सांगतिक--सौधर्मकल्पवासी देवनो संकल्प करी पौषधशालामां ध्यान धरी बेठो, पुण्यबले ते देवनुं आसन चलायमान थयुं. अवधिज्ञानना उपयोगथी अभयकुमारे याद कर्यानुं जाणी दिव्य रूप धारण करीने तुरतज अभयकुमार पासे हाजर थयो, अने मने शा माटे याद कर्यो छे ?, ते पूछवापूर्वक पोताना लायक काम फरमाववा कह्युं. अभयकुमारे "धारिणीमाताना अकाल मेघ संबंधी थयेल दोहदने पूर्ण करवा" सूचव्युं. देवे तुरत वैक्रिय शक्तिथी अकाले पण सघन चौमासानी ऋतुनो देखाव करी दोहद पूर्ण थाय तेवी गोठवण करवानुं कबूल कर्युं अने अदृश्य थई गयो. क्षणवारमां देवना कह्या प्रमाणे ऋतुनो पलटो निहाळी श्रेणिक महाराजाने वधामणीपूर्वक धारिणी-राणीना दोहदने पूर्ण करवा योग्य तैयारी कराववा विनंति करी. राजाए पण धामधूमपूर्वक राणीनी इच्छामुजब दोहद पूर्ण करावी यथायोग्य रीते गर्भनुं सन्मान कर्युं तेम विविध अनुकूल गर्भने योग्य आहारविहार सेवता क्रमशः योग्य समये धारिणी राणीए विशिष्ट लक्षणो युक्त तेजस्वी पुत्रने जन्म आप्यो.

तेनी वधामणीना समाचार आपवा अहमहमिकापूर्वक आवेली दासीओने मारहाजा श्रेणिके तेणीओना जीवनभरना दासीपणाने दूर कर्युं, अर्थात्-प्रमाणातीत इनाम (बक्षीस) आप्युं. राजाए आज्ञाकारी सेवको द्वारा पुत्रजन्मनी खुशालीमां आखाये राजगृहनगरने

शणगार्युं, विविध मनोरंजक—आयोजनो ठेर ठेर योज्यां, बंदीखानाओमांथी केदीओने मुक्त कर्या. एकंदर आखुं गाम नाच—गान—तानथी प्रमुदित बनी गयुं. राजमर्यादाने उचित वेपारीओ वगेरेने छूट आपवामां आवी (श्री कल्पसूत्रमां वर्णव्या मुजब) दश दिवसनी कुल मर्यादा अनुसार थती विधि पतावी, अशुचि निवारण थयेथी बारमे दिवसे सहु-ज्ञाति-स्वजन-मित्र परिवारादिने एकठा करी जमाडी सन्मान-सत्कार करी, अकाले मेघ सम्बन्धी दोहद थवाना कारणे पुत्रनुं शुभमुहूर्त्ते मेघकुमार एवुं नाम पाड्युं. ते पछी पांचधावमाताओथी लालनपालन कराता मेघकुमारे योग्य वय प्राप्त थये उपाध्याय(गृहशिक्षक) पासे व्होंतेर कलाओ शीखी विचक्षण थयो. युवावस्थामां पगलुं मांडतां मातापिताए होंशभेर उत्तमकुलनी आठ राजकन्याओ साथे एकज दिवसे लग्न कराव्यां, अने प्रमाणाधिक—अनर्गल धन—सम्पदाओथी भरपूर सुन्दर राजमहेल विषे ते मेघकुमार दोगुंदक देवनी जेम तेमनी साथे यथेच्छ सांसारिक सुखोने अनुभववा लाग्यो.

मेघकुमार दीक्षावर्णन—

एकदा श्रमण—भगवान्—श्रीमहावीर—देव राजगृहनगरनी बहार गुणशीलचैत्यमां समोसर्या, प्रभुनुं पधारवुं सांभली नगरना सहु लोको वन्दनार्थे जवा लाग्या. लोकोना समुहने उत्साहभेर जतां जोइने मेघकुमारे जिज्ञासाथी कंचुकी पुरुषने (महेलना द्वार उपर रहेनार नोकरने) पूछ्युं के शुं छे ?, आ बधा क्यां जाय छे ?; एटले कंचुकी पुरुषे तपास करीने प्रभुश्री महावीरस्वामी पधार्यानी वात करी, तुरतज नोकरो द्वारा सुन्दर चारघोडाथी जोडेला रथने मंगावी तेमां बेसी मेघकुमार पण प्रभु पासे गयो, अने विनयपूर्वक नमस्कार करी प्रभुनी मधुरदेशना श्रवण करवा बेठो. अखण्डदेशना सांभली भवनिर्वेदथी तुरत प्रभु पासे मातापिताने पूछीने संयम

लेवा आववानी भावना प्रगट करी. प्रभुए पण "जहा सुहं देवाणुप्पिया," कही, "श्रेयांसि बहुविघ्नानि" सूचवी धर्मना कार्यमां ढील न करवा जणाव्युं. घरे आवी मातापिताने वात करी अने संयम स्वीकारवा माटे अनुमति मांगी. धारिणीमाता तो आ सांभळी शोकथी विह्वल बनीने मूर्च्छा पामी बेभान थई गई. मूर्च्छा दूर थये मोहना आवेशथी अनेक प्रकारना रागोत्पादक वचनोथी मेघकुमारने संयमना विचारोथी खसेडवा प्रयत्न कर्यो, किन्तु मेघकुमारे तो अस्थिमज्जानुगतपणे प्रगटेला धर्मरागथी आत्मकल्याण साधवानी तालावेलीभरी तमन्ना बतावनारा विविध उत्तरोथी पोतानो भवनिर्वेद सूचव्यो; त्यारबाद माताए संयमनी दुष्करता अने शरीरनी सुकुमालता वगेरे जणावी संयम न लेवा सूचव्युं. मेघकुमारे स्वाधीनपणे संयममां आवता परीषहोपसर्गादि तथा सामाचारी पालननी दुःशक्यताओने सामी छातीए सामनो करवाथी, नरकादिमां पराधीनपणे अनन्तगुण भोगवी पडेल वेदनाओनी जेम निःसारपणुं नथी एम जणावी संयम स्वीकार माटेमो अटल-अणनम दृढ संकल्प जाहेर कर्यो. आथी निरूपाय थईने मातापिताए फक्त एक दिवसनुं राज्य भोगवी लेवानो आग्रह कर्यो, एटले मातापितानुं मन प्रसन्न करवा खातर मेघकुमारे मौनपणाथी संमति आपी. तुरतज विपुल तैयारीपूर्वक धामधूमथी मेघकुमारनो राज्याभिषेक कर्यो. त्यारपछी सिंहासने बेठेल मेघकुमारने महाराजा श्रेणिक पूछे छे के-शी आज्ञा छे? जवाबमां तुरतज ओघो-पात्रां मंगाववानुं अने हजामने बोलाववानी इच्छा दर्शावी. श्रेणिकराजाए आप्तपुरुषोद्वारा एक लाखना मूल्यथी ओघो, एक लाखना मूल्यथी पात्रां मंगाव्यां अने एक लाखना मूल्ये नावी-हजामने तेडाव्यो, अने विधि सहित हजाम पासे मस्तकना केशनुं चार आंगुलनी शिखा वर्जीने मुंडन कराव्युं. देदीप्यमान-स्वर्ण-रजतना कलशोथी स्नानविधि करावी, शुद्ध महामूलां वस्त्रोनुं परिधान करावी, एक हजार माणस उपाडे तेवी मनोरमा-शिबिका(पालखी) मां बेसाड्या. वर्णकमां वर्णित धामधूमपूर्वक

प्रभुमहावीर पासे मेघकुमार—मातापिता स्वजन मेला सह हाजर थया.

धारिणीमाताए विनयपूर्वक प्रभुने नमस्कार--वंदना करी विनंती करी के—अमारा प्राण करतां पण व्हाला, अनेक मनोरथोथी प्राप्त थयेल, काळजानी कोर सरखा आ मारा पुत्रने आपने शिष्य तरीके व्होरावुं छुं, तो आप कृपा करी स्वीकारो ! मेघकुमारे ईशान खूणे जई आभरणादि उतारी सर्प जेम कांचली उतारे तेम संसारनो मोह उतारवानो अभिनय कर्यो. आ समये मातानुं शोकना आवेगथी हृदय भराई आव्युं, अने विलापादि करवा मांडी. आ छतांये आत्मकल्याण साधी जीवनने उजालनार पुत्रने संयममार्गे विचरवानी शुभाशिष अने अप्रमत्तपणे सावध रहेवानी भलामणरूपे बे शब्दो कह्या. त्यारबाद मेघकुमारे प्रभु महावीरने त्रण प्रदक्षिणा करी अंजलि बांधी प्रार्थना करी के--हे प्रभु ! आ संसार विषय कषाय अग्निथी व्याप्त छे. हे प्रभु ! तेमांथी बचवा माटे मने संयम—दीक्षानुं प्रदान करो ! स्वयं प्रभुए सामायिक उच्चरावी संयमनी महत्ता तथा तेनी साचवणी वगेरेनो उपदेश करी मेघकुमारने अणगार-धर्मनो पथिक बनाव्यो.

मेघकुमारनुं आर्त्तध्यान, अने प्रभुए करेलुं तेना पूर्वभवनुं वर्णन—

दीक्षापर्यायना अनुक्रमे मेघकुमारनो संथारो साधुओना जवा-आववाना प्रवेशद्वार पर आव्यो, आथी रात्रिए वाचना-पृच्छनादि अने अने ठल्ले मात्रादि माटे जता आवता साधुमहात्माओना पादरजथी संथारो भराई गयो अने रात्रिए ते महात्माओना पगनी ठोकरो वागी, अंधाराने लई शरीरना अवयवो पर पण पग लाग्या. आ हेतुए सुंवाली मखमलनी पथारी पर आलोटेल होवाथी शरीरनी अति कोमलताना कारणे मेघकुमारने क्षणवार पण निद्रा न आवी, अने नवदीक्षित होवाना कारणे आर्त्तध्याने चढी दुर्ध्यान थयुं के—' अहो !

आ साधुओ में दीक्षा लीधी न हती त्यांसुधी राजकुमार तरीके मने आदर-सन्मानथी बोलावता हतां, अने हवे तो मारो संथारो जवा आववाना बारणा पर खसेडी जता आवता साधुओनी ठोकरो अने धूल मने खवडावे छे !, माटे हवे आपणाथी तो आ संयम (साधुपणुं) नहीं पलाय, सवारे भगवान्‌ने पूछी घरे चाल्यो जाउं, आवी विचारणाओनी घटमालमां नरकनी वेदना सरखुं कष्ट–वेदना सहन करतो आर्तध्यान करतां रात्रि पूरी करी. सवार थतांज प्रभुए पोतेज मेघकुमारने रात्रिनी बधी बीना जणावी अने पूछयुं के–हे मेघकुमार ! में कह्युं ते साचुं छे ? मेघकुमारे कह्युं के–हे प्रभु ! साचुं छे. त्यारपछी मेघकुमारने स्थिर करवा माटे प्रभुए तेना पूर्वभवो जणाव्या—

हे मेघ ! अहींथी त्रीजा भवे तुं वैताढ्य पर्वतनी तलेटीमां सुन्दर लक्षणो युक्त अंगोपांगथी शोभतो सुमेरुप्रभ नामनो छ दंतूशलवालो हस्ती हतो. अनेक हाथणीओथी अने बच्चांओथी परवरेलो गिरिकंदराओ, सघन–झाडीओ विगेरेमां यथेच्छ तुं विचरतो हतो. एकदा ग्रीष्मऋतुमां जेठ महिना विषे वांस आदि झाडोना घसाराथी अचानक भयंकर दावानल प्रगट्यो, ते जोई प्राण बचाववा तारा परिवार साथे तें नाशभाग करी तेना परिणामे श्वासभेर दोडधाम करतां स्वयूथथी विखूटो पड्यो. दोडवाना अति परिश्रमथी अने दावानलना तापथी तेम जेठ मासना तापथी तृषातुर बनेलो दोडतां सख्त कीचड अने सामान्य जलवाला एक सरोवरमां पाणी पीवा माटे पड्यो, उपरथी देखाता पाणीना मोहमां पडतानी साथे ज सरोवरना कोहायेल–चीकणा कादवमां तारुं विशाल शरीर खुंची गयुं. प्रचंड तापथी उकळी गयेलुं तेनुं पाणी महामुश्केलीथी थोडुं पीने ज्यां तुं बहार निकलवा मथे छे त्यां तो तुं भारे शरीरना कारणे वधु खुंचवा लाग्यो, अने निकलवा माटे अशक्त थयो. निरुपाये भीषण कीचडनी भींसमां असह्य कलतरनी वेदना

भोगववा लाग्यो. आ समये तारा यूथमांथी यूथपति भविष्यमां थई जशे तेवी आशंकाथी पहेलां हांकी काढेल एक हाथी तेज सरोवरमां पाणी पीवा आव्यो. ते तो स्थाननो भोमियो होवाथी कीचडरहित किनारेथी पाणी पीने तृप्त थयो. त्यारबाद एक बाजु तने खुंचेलो देखी पूर्ववैरनुं स्मरण करी 'आ ठीक लाग छे' एम विचारी एक बाजुथी दावानल आदि अनेक असह्य पीडाओथी निर्बल बनेला तने पोताना दंतुशलना प्रहारथी मारीने पहाड जेवी तारी कायाने जर्जरित करी नाखी. परिणामे आखा शरीरमां भीषण दाह-ज्वर प्रगट्यो. पराधीनपणे कायाने जर्जरित करी नांखी. परिणामे अने न छूटके असह्य ते वेदनाओ तें सात दिवस सुधी अखण्डपणे भोगवी. छेवटे आर्त्त–रौद्रध्यानना संक्लिष्ट परिणामथी काल करी विंध्यपर्वतनी तलेटीमां एक हाथिणीनी कुक्षिमां उत्पन्न थयो. क्रमे करी जन्म थया बाद सारा लक्षणोथी शोभता, सुन्दर अंगोपांगवाला, देदीप्यमान कान्तिवाला अने चार दांतवाला एवा तारुं नाम वनचरोए मेरुप्रभ पाडयुं. क्रमे करी तुं युवावस्थामां यूथाधिपति थई यथेच्छपणे विचरवा लाग्यो. एक समये दावानलना कारणे पूर्वभवमां पोतानी थयेली दुर्दशा जातिस्मरण ज्ञानथी जाणी, आ वर्तमान भवमां हवे तेवी हाडमारी भोगववी न पडे तेथी पोताना रहेठाणभूत स्थाननी चारे दिशाए जोजनप्रमाण भूमि साफ करी अने तेमांथी झाड-पान-तणखला-घास वगेरे जे थाय ते बधुं भावी दावानल न फेलाइ शके माटे दूर करवा लाग्यो. भवितव्यताना योगे त्यां जंगलमां दावानल प्रगटयो. आथी तुं त्रास पामी बचवा माटे पहेलेथी साफ करेला मांडलामां पोताना परिवार साथे पेठ्यो, भयथी जीव बचाववा बीजा पण प्राणीओ वैर-विरोध भूली जई ते मांडलामां आववा लाग्या. चारे बाजुथी त्रास पामीने आवता जंगलना पशुओना समूहथी ते मांडलुं खीचोखीच भराइ गयुं, जरापण जग्या रही नहीं, आ समयमां एक बिचारुं ससलुं पोताना प्राण बचाववा बीजे जग्या न मलवाथी आमतेम दोडी रहेलुं

हतुं तेवा अवसरे खंजवाळवा माटे तारो एक पग तें ऊंचो कर्यो एटले ते खाली पडेली जग्यामां जग्या मळवानी आशाए ते ससलुं त्यां आवी गयुं, खंजवाळया पछी पग मूकवा जतां तारी नजर पग नीचे रहेल ससला उपर पडी. दयाथी तें पग अद्धरज राख्यो, ते वखते अपूर्व जीवदयाना माहात्म्यथी–प्रभावथी-संसार परित्त (अल्प) कर्यो अने मनुष्यनुं आयुष्य बांध्युं. अढी दिवस पछी दावानल शान्त थयो त्यारे सर्व जीवो-प्राणीओ पोतपोताना स्थाने चाली गया. तें अढी दिवस सुधी अद्धर राखेला पगने ज्यां भूमि पर मूकवानी तैयारी करी त्यां तो ते पग साठ कलाक सुधी वाळी राखेल होइ अकडाइ गयेलो होवाथी तुरतज तुं तो ते पग पर ढली पड्यो, आखा शरीरमां दाह आदि पीडा थवा लागी, किन्तु ते पीडाओ समतापूर्वक सहन करी ससलाना बचाव्याना शुभ ध्यानथी पवित्र भावनी श्रेणीए काल करी श्रेणिकमहाराजाने त्यां धारिणीराणीनी कुक्षिए तुं पुत्रपणे उत्पन्न थयो. अनुक्रमे युवावस्था पामी मारी पासे तुं अणगार(संयमी) थयो छे. हे मेघ ! पूर्वभवमां तें तिर्यंचयोनिमां सम्यक्त्वनी प्राप्ति न छतां पण ससलाने बचाववा आवी असह्य पीडा सहन करी, तेथी संसार परित्त कर्यो अने मनुष्यनुं आयुष्य बांध्युं. अने आ भवमां सम्यक्त्व अने उत्तमोत्तम चारित्र आदिने मेळव्यां छे, तो पछी आ महात्माओ–साधुभगवंतोनी चरणरजथी कंटाली स्थानभ्रष्ट थवा केम मागे छे ! आ दुःख तो तेनी आगल यत्किंचित् छे, विगेरे प्रभुए उपदेश आप्यो.

मेघकुमारनी सद्गति—

प्रभु महावीरनी अमृत सरखी वाणीनुं पान करवाथी मेघकुमारमुनिने ऊहापोह करतां जातिस्मरणज्ञान थयुं अने पूर्व भवो प्रभुए करेल वर्णन प्रमाणे साक्षात् ते ज्ञानथी जोतां पोतानी भूल तरत ज समजाणी अने थयेली भूल माटे पश्चात्ताप करतो प्रभुने

वंदन--नमस्कार करी कहेवा लाग्यो के--हे प्रभु ! आजथी मांडी हुं मारी चक्षु सिवाय बाकीनुं शरीर वोसरावी दउं छुं. अर्थात् चक्षु फरकवा सिवायना मारा शरीरनी हुं दरकार नथी राखतो ! ! ! एम कही फरीथी दीक्षा ग्रहण करी. स्थविरो पासे ग्रहण--आसेवन--शिक्षाथी मेघकुमार महात्मा तैयार थई एकादशांगपाठी बनी छट्ठ--अट्ठम आदि घोर तपस्या करी क्लिष्ट कर्मोने खपाववा लाग्या. योग्य समये प्रभु पासेथी आज्ञा प्राप्त करी साधुनी बार पडिमाओने विधिपूर्वक सेवी तेम लागट सोल मासनी उत्कृष्ट तपस्यावालो गुण-रत्नसंवत्सरतप आराध्यो. छेवटे तप आदिथी शरीर अति कृश थयुं जाणी संलेखनापूर्वक अनशन स्वीकारवानी प्रभुनी आज्ञा प्राप्त करी वैभारगिरि पर्वत पर स्थविर मुनिओ साथे जई शुद्धशिलातल पर वेसी, चारे आहारनां पच्चक्खाण करी, अढारे पापस्थानकोने आलोची, शुद्ध वैराग्यना वधता भावपूर्वक क्षमापना अने सुकृतनी अनुमोदना करी, एक महिना सुधी अनशन करी, विशुद्ध भावे कालधर्म पामी पांचमा अनुत्तर विमानमां विजय नामना विमानमां तेत्रीससागरोपमनी स्थितिना देवपणे मेघकुमारमुनि उत्पन्न थया. त्यांथी च्यवीने महाविदेहक्षेत्रमां मनुष्यपणे जन्मी संयम प्राप्त करी मोक्षे जशे.

। उपसंहार ।

पोताना आत्माने संयममांथी चलविचल थता परिणामोथी वचाववा आदर्श--नमूनेदार उदाहरणरूपे आ मेघकुमारनुं अध्ययन ज्ञातासूत्रमां प्रथम जणावेल छे. आमां मेघकुमारना पूर्वभवमां हाथीए जीवदया खातर पग ऊंचो राख्यो तेमां मनुष्य आयुष्य बांध्युं, अने जीवदयानुं उत्कृष्ट पुण्य बंधायुं तेथी मुख्यताए आ अध्ययननुं मुख्य नाम उत्क्षिप्तअध्ययन छे.

आ रीतिए प्रथम उत्क्षिप्त नामना अध्ययननो सारांश समाप्त थाय छे.

॥ द्वितीय–श्रीसंघाटकाध्ययनसारांशः ॥

कथाप्रारम्भ–पुत्रप्राप्ति—

राजगृहीनगरीमां विपुल धनधान्यादिनी समृद्धिवालो धन्य नामनो सार्थवाह हतो, तेने भद्रा नामनी स्त्री हती. घणा वर्ष विषयानन्दमां व्यतीत थया छतां भद्राशेठाणीने कंइ संतान थयुं नहीं. एक समये भद्राशेठाणी आ सम्बन्धी विचारधाराए चढी अने पुत्रादिनी अप्राप्ति माटे खूब आर्त्तध्यान करवा लागी, प्राप्त थयेला धन-संपत्ति अने वैभवोने अने स्वजिंदगीने निष्फल मानी दिन-प्रतिदिन वधु ने वधु चिन्तातुर थई. आ चिन्ताना परिणामे अनेक देव–देवीओनी मान्यताओ–पूजाओ करवा लागी. पुत्रप्राप्ति करवानी तीव्र अभिलाषा जागी, पोताना आ अभिप्रायनी वात धन्यशेठने करी संमति मेळवी पुष्कल आडम्बर-धामधूमयुक्त सखी-ओना परिवार साथे तमाम देवायतनो–मन्दिरोमां जई भावभक्तिपूर्वक सेवा–पूजा आदि करी पोतानी वर्षोजूनी आशाने फलवती बनाववा दृढ संकल्पपूर्वकनी मान्यताओ करी. तथाप्रकारनी भवितव्यताना योगे थोडा समयबाद शेठाणी गर्भवती थई, अने तेणीने योग्य सारसंभाल करतां योग्य समये पुत्ररत्ननो जन्म थयो, घणा हर्ष-प्रमोदथी महोत्सवपूर्वक देवताओनी बाधा-आखडीओथी आ पुत्र प्राप्त थयेलो छे तेम मानी तेनुं गुणनिष्पन्न एवुं देवदिन्न नाम पाड्युं.

विजयचोरना हाथे देवदिन्नपुत्रनुं मोत, अने विजयचोरनुं पकडावुं—

एकदा तहेवारना प्रसंगने पामी भद्राशेठाणीए पोताना आ एकना एक पुत्रने अति प्रेमथी स्नान करावी, किंमती वस्त्रो पहेरावी अति मूल्यवान आभूषणो पहेरावी, बालकनी सारसंभाल माटे राखेल अति विश्वासु पंथक नामना नोकरने विनोद माटे शहेरमां फेर-

वना माटे सोंप्यो. एक स्थाने अन्य शेठीयाओना बच्चाओ साथे रमवामां तल्लीन बनेला शेठना पुत्रने देखी त्यां तेने रमतो राखी
आजुबाजुमां ते लटार मारवा लाग्यो. आवा अवसरने पामी भलभला चतुर राज्याधिकारीओने पण थाप आपी नाशी जनार धाडपाडु
विजयनामना चोरनी चकोर दृष्टिए ते आव्यो. धननी तीव्र लालसाने वश थई बराबर समय जोई कोई न जाणे तेवी रीते तेनुं
हरण करी मारी नाखी ते बालकनां तमाम आभूषणो-वस्त्रो लई लीधां अने नगरबहारना गुणशीलचैत्यनी नजदीकना प्राचीन बगीचानी
गाढ-झाडीमां जीर्ण कूवामां ते बालकनी लाश फेंकी पोताना स्थाने जइ संताइ गयो. आ बाजु थोडीवारमां पंथकनुं ध्यान रमता बालको
तरफ जतां पोताना शेठना पुत्रने तेमां न जोतां तेम ज आजुबाजु न जोतां खूब ज बेबाकळो थई गयो. बधे तपास करी लोकोने
पूछ्युं पण तेनो कंई पत्तो लाग्यो नहीं त्यारे अति दीनभावे रडतो शेठनी पासे गयो अने सर्व वात कही. आ सांभळतां ज शेठ वज्रा-
घात लाग्यानी जेम एकदम बेभान थइ जमीन उपर पड्या अने मूर्च्छा वळ्या पछी खूब तपास करावी पण कंई पत्तो लाग्यो नहीं.
आथी भेटणुं लई श्रेणिक महाराजा पासे गयो अने फरियाद करी पोलीसनी मदद मागी, राजाए तुरतज तेनो प्रबंध कर्यो.

पोलिसोए चांपती तपास करी, पगेरुं शोधतां तेओ नगर बहारना जूना बगीचामां जूना कूवा पासे आवी पहोंच्या.

दुर्गन्ध आदिथी शंकित थयेला पोलिसोए शोधखोल करतां परिणामे जीर्ण कूवामांथी ते बालकनी लाश मळी आवी अने ते
लाशने बहार काढी धन्यशेठने सोंपी. शेठे अतिशोकव्याप्त हैये ते बालकना अग्निसंस्कारादि विधि करी. पोलिसोए खूनीनी पूरती
तपास करी अने खून करनार विजयचोरने पकडी श्रेणिकराजानी समक्ष हाजर कर्यो, तेनो इन्साफ करावी आखा नगरमां फेरव्यो
अने चाबूक आदिथी मार मारता अनेक प्रकारें कष्ट आपता पोलिसोए एने जेलमां-(केदखानामां) पूर्यो अने बेडी नाखी चाबूकना

मार मारवा लाग्या. एक समये सामान्य अपराध आवतां धन्यशेठने जेलमां पूर्या अने विजयचोरनी ज लोखंडी बेडीथी शेठने केद कर्या. भद्राशेठाणी हंमेशां सारुं सारुं खावानुं तैयार करी पंथक नोकर साथे जेलमां शेठने मोकले छे. ते खोराक शेठ एकला खाय छे, भूख्यो विजयचोर शेठ पासे खोराक मागे छे पण शेठ पोताना पुत्रना खून करनार खूनी विजयचोरने आपता नथी अने तेने हलका-तुच्छ शब्दोथी तिरस्कारे छे, विजयचोरने असह्य मारनी वेदना अने पेटपूर खोराकना अभावथी घणुं लागी आवे छे. घणी वखत शेठने कालावाला करे छे परन्तु शेठ पुत्रना खूनी विजयचोरने कंई आपता नथी. थोडा समय बाद धन्यशेठने हाजत लागतां एक ज बेडीमां शेठ अने चोर बन्ने होवाथी शेठे हाजत माटे जवा साथे आववा कह्युं त्यारे विजयचोरे तमे आहार-पाणी ल्यो छो एटले तमने हाजत थाय परन्तु मारे तो चाबूकना मारनी असह्य वेदना अने अल्पाहार मलवाथी क्षुधा-तृषाथी हाजतनी शंका थती नथी माटे हुं आवीश नहीं. थोडीवारमां शेठने हाजतनी उतावल थई एटले नम्रता सह कालावाला कर्या त्यारे विजयचोरे शेठने आवता आहारमांथी भाग आपवानी कबुलात मांगी, निरुपाय बनेला शेठे तेनी मागणी कबूल करी पोतानुं कार्य पताव्युं, ज्यारे ज्यारे पंथक आहार आदि शेठने आपवा लावे छे त्यारे त्यारे शेठ तेनो भाग आपी पोते खाय छे. आ वात पंथके शेठाणीने कही, शेठाणीने अंदरना रहस्यनी खबर न होवाथी घणुं माठुं लाग्युं. ज्यारे जेलनी सजानी अवधि-मर्यादा पूरी थई एटले शेठ छूटीने पोताना निवासे आव्या. शेठना छूटकाराथी अति हर्षित बनेला स्वजनसम्बन्धीओ हर्षथी शेठने भेटी पड्या, परन्तु नाराज थयेली शेठाणीए तो शेठनी म्हासुं पण न जोयुं, आथी शेठने आश्चर्य थयुं. शेठे आम करवानुं कारण शेठाणीने पूछयुं, त्यारे केदखानामां पुत्रना खूनी दुश्मनने खावानुं आप्याना दुःखनी वात करी, शेठे त्यां बनेली हकीकतथी तेने वाकेफ करी. शेठाणी आ श्रवण करी पोतानी तुच्छ बुद्धि माटे घणो

पस्तावो करवा लागी. विजयचोर आखी जिंदगी केदखानामां रही घोर वेदना भोगवी लोभना प्रतापे आ भवमां पण दुःखी थयो अने अन्तकाले काल करी नरकादिनां दुःख भोगवतो चारे गतिनां दुःख भोगवशे ! तेवी रीते हे जम्बू ! जे साधु अथवा साध्वी आचार्य उपाध्यायो पासे संयम जीवन अंगीकार करी उत्तम संयम प्राप्त कर्या छतां लोभना प्रतापे धन आदिथी लोभाय छे ते पण आ भवमां दुःखी थई परभवमां पण नरकादिनां दुःखो भोगवतो चारे गतिनां दुःखो पामतो संसारमां रखडशे ! भटकशे !

एक समये राजगृह नगरनी बहार गुणशीलचैत्यविषे धर्मघोष नामना आचार्य पधार्या हता, तेओने वंदना-नमस्कार अने धर्मनुं श्रवण करवा घणा लोको गया. धन्यश्रेष्ठी पण वंदना-नमस्कार करवा गया अने तेमनी वाणीनुं श्रवण करी जिनवचनविषे श्रद्धालु थई संयम ग्रहण कर्युं, घणा वर्ष संयमनुं पालन करी अंते एक मासनुं अनशन करी समाधिपूर्वक काल करी सौधर्मदेवलोकमां चारपल्योपमनी स्थितिवाळा देवपणे उत्पन्न थया त्यांथी च्यवीने महाविदेहक्षेत्रमां मोक्षने पामशे.

योजना—राजगृहनगरना सरखुं-मनुष्यक्षेत्र, धन्यशेठना समान साधुनो जीव, विजयचोरना सरखुं शरीर, पुत्रना सरखुं निरुपम निरन्तर-आनन्दना कारणे संयम (खराब वृत्तिमां प्रवर्तेल शरीरथी संयमनो घात थाय छे.) आभरण सरखा शब्द-रूप-रस-गन्ध-स्पर्श आदि विषयो. (तेने माटे प्रवर्तेला शरीरथी संयमनो घात थाय छे.) बन्नेनुं एक वेडीमां रहेवाना सरखुं जीव—शरीरने एकमेकपणे रहेवुं, राज्यपुरुषो समान कर्मना परिणाम, पोताना थोडा अपराध सरखा मनुष्य आयुष्यना बन्धना हेतुओ, मूत्र वगेरे मल सरखा पडिलेहण वगेरे व्यापारो, जे कारणथी आहारादिना अभावे जेवी रीते ते विजयचोर मात्रु वगेरे करवामां प्रवर्त्यो नहीं तेवी रीते आ शरीर पण आहार विना पडिलेहणादि क्रियाओमां प्रवर्त्तवा शक्तिवंत थतुं नथी. पन्थक तुल्य मुग्ध साधु, सार्थवाहीना स्थाने

आचार्यो. ते जेनी विवक्षा करवामां आवे छे एवा साधुने आहारादिथी शरीरने टेकाभूत करवानुं जुदी रीते श्रवण करी आचार्यो ठपको आपे छे ज्यारे वेदना वैयावच्चादिनुं पुष्ट कारण तेओने जणावे छे त्यारे आचार्यो तुष्ट थाय छे.

उपसंहार—आ दृष्टान्तथी धन्यशेठनो जेम जेलमां विजयचोरने खावानुं आपवामां फक्त हेतु शरीरनी बाधा दूर करवा पूरतो अने पोतानी अनुकूलता साचववा पूरतोज हतो, तेवी रीते साधु साध्वीओए फक्त धर्मनी आराधनामां टेकाभूत थाय तेज हेतुथी शरीरने पोषणकारी आहारादि ले परन्तु वर्णरूप–बलादिनी पुष्टिमाटे आहार वगेरे ले तो तेओ धन्यशेठनी जेम उत्तरोत्तर कल्याण साधी मुक्तिसुखने पामे छेः आ रीतिए द्वितीय अध्ययननो सारांश समाप्त थाय छे.



। तृतीय–श्रीअण्डकाध्ययन–सारांशः ।

कथाप्रारम्भ अने बे श्रेष्ठिपुत्रोनो वनविहार—

ते काले ते समये (प्रभु जे समये आ कथा कही रह्या छे ते काल अने समये) अतिसमृद्धिथी भरपूर चंपा नामनी नगरी विषे धनिक तरीके प्रसिद्ध जिनदत्त अने सागरदत्त नामना सार्थवाहना बे पुत्रो जिगरजान मित्ररूपे एकचित्तवाला हता. बन्ने मित्रो सांसारिक आदि कार्योमां अने सुख–दुःखमां दिलचोरी वगर एकएकना सहकारी बनीने नाना मोटा तमाम कार्यो साथे मलीनेज करवानो दृढ संकेत–निश्चय कर्यो, ते ज नगरीमां अनेक युवकजनोना हृदयने प्रमोद आपनारी स्त्रीओनी चोसठकलाओमां निपुण देवदत्ता नामनी गणिका रहेती हती.

एक प्रसंगे बन्ने मित्रोए मनोविनोद अर्थे देवदत्ता गणिका साथे नगर बहारना रमणीय बगीचामां स्वैरविहार करवानी, आनन्द-विलास भोगववानी अभिलाषा थतां खानपाननी विपुल तैयारीओ करावी बगीचाओमां तंबू ठोकावी विशिष्ट प्रकारना वस्त्र आभरणो पहेरी देवदत्ता गणिकाने घेरे जइ देवदत्ताने आमन्त्रण कर्युं अने तेनी साथे अनेक मित्रमण्डलयुक्त खुब आडंवरपूर्वक ते चंपानगरीनी बहार इशानखूणे आवेल सुभूमिभाग नामना बगीचामां पहोंच्या. यथेच्छ रीते विविध विलासो करता वनना निकुंजो अने लता-कुंजोमां फरतां फरतां ते बगीचाना उत्तर विभाग विषे रहेल एक घाडी झाडीमां प्रवेश्यां त्यां एक मयूरी देवदत्ता गणिका सह बन्नेने पोतानी बाजुमां आवता जोइ भयथी त्रास पामी पांखोने फफडावती नजीकना एक झाड उपर जइने बेसी अनिमिषदृष्टिए पोताना ताजा-तुरतमां प्रसवेला बे इंडाओने जोवा लागी. सार्थवाहना पुत्रो मयुरीनुं फफडाट सह उडी वृक्ष पर बेसवुं अने एकी नजरे एक बाजु मोरलीनुं जोवुं जोइ कुतूहलथी तपासतां सुन्दर-मनोहर रूपाळां मोरनां बे इंडां जोयां. पोताना क्रीडाना मोर बनाववानी लालचे परस्पर बन्ने मित्रोए निर्णय कर्यो के-आ इंडा आपणे कुकडीना इंडा भेगुं मेली दइशुं अने भद्रिक कुकडी पोतानां पारकां इंडां ओळख्या विना सेवशे अने कालक्रमे सुन्दर बे मोर तैयार थशे अने आपणा अपूर्व मनोविनोदनुं साधन थशे. आ प्रमाणे बन्ने मित्रोए परस्पर निश्चय करी पोताना सेवको पासे ते बन्ने इंडां लेवरावी कुकडीनां इंडां भेगां मूकावी दीधां. देवदत्ता गणिकाने घेर वोलावी यथायोग्य सत्कार करी तेनुं विसर्जन कर्युं, नोकरो द्वारा बन्ने इंडांओनी पूरती सारसंभाल करावी परन्तु तेमांना एक श्रेष्ठिपुत्रे पोताना इंडाने सारो मोर आमांथी थशे के केम ? परिपक्व थयुं छे के केम ? आदि शंकाथी कलुषित हृदयथी ते इंडांने उंचुं नीचुं करे छे, आंगलीओथी गोदा-टकारो मारी जुवे छे, आम करतां एक दिवस अपक्व अवस्थामां ते इंडुं फूटी गयुं; जेथी ते श्रेष्ठिपुत्रने हार्दिक

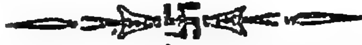
दुःख थयुं, अरे ! मारी मूलना परिणामे आ इंडु फूटी गयुं, अरे ! मारा मनने विनोद आपनार मोर आमांथी तैयार न करी शक्यो अने तेनुं मोत थयुं, आथी हृदयमां बलतरा करवा लाग्यो.

बीजा सार्थवाहना पुत्रे योग्य दरकार–संभाल पोताना भागमां आवेल इंडानी रखावी योग्य काले इंडामांथी बहार नीकळेल नाना मयूरने प्रेमपूर्वक व्हालभर्यो आवकार आपी मयूरोने उछेरनारने बोलावी कह्युं के–आ बालमयूरने तमे लई जई तेने योग्य रीते पालन-पोषण करी नृत्यकलादि अने मनरंजक विविधकलादि शिखवाडी लोकरंजन करवामां निपुण बनावो ! आ सांभळी मयूरपोषकलोकोए शेठना पुत्रना कहेवा प्रमाणे कबूल करी ते बालमोरने उछेरी मनोहर कलाओ शिखवाडी लोकरंजन करवामां अति निपुण बनाव्यो अने श्रेष्ठिपुत्रने पाछो सोंप्यो. श्रेष्ठिपुत्रे पण ते मोरनी सर्वप्रकारे हृदयहारी पींछाने फेलाववानी अने नाच करवानी विविध कलाओ करतो जोई हर्षित थई मयूरपालकोने धनादिथी सारी रीते संतोषी विदाय कर्या. श्रेष्ठिपुत्र पोते चंपानगरीना जाहेर जनसमवायोना प्रसंगे बीजाओना मोरोनी कला नृत्यादि साथे पोताना मोरनी कला वगेरेने ख्यातिमती साबित करी आपवा हजारोना दाव–होड करी बीजाओने हरावे छे अने हजारोनुं द्रव्य ले छे. आवी रीते ते श्रेष्ठिपुत्र घणी ऋद्धिसमृद्धिवालो थयो अने सुखी बन्यो.

उपसंहार—

हे जंबू ! जे साधु साध्वी दीक्षित थया पछी प्रभुशासनना प्ररूपेला सिद्धान्तोमां शंका आदि राखे छे ते प्रथम श्रेष्ठिनो पुत्र जेवी रीते मयूरप्राप्ति न करी शक्यो तेम मोक्षनी प्राप्ति करी शकतो नथी, अने जे साधु साध्वी प्रभुशासनना प्ररूपेला सिद्धान्तोमां विश्वास–दृढश्रद्धा राखे छे ते बीजा श्रेष्ठिना पुत्रे जेवी रीते मयूरनी प्राप्ति करी, लोकरंजन करीने पोतानी ख्याति मेळवी, तथा धन आदिथी

अति समृद्ध बन्यो अने सुखी थयो; तेवी रीते आ भवमां ख्याति अने उत्तरोत्तर सुख संपदाओ पामी क्रमे करी मोक्षसुखने पामे छे. आ रीतिए तृतीय अध्ययननो सारांश समाप्त थाय छे.



। चतुर्थ—श्रीकुर्माध्ययन—सारांशः ।

कथाप्रारम्भ—

वाणारसी शहेरनी बहार ईशानखूणे गंगा नामनी महा नदी अने मयंगतीरदह नामनुं मोटुं सरोवर छे. तेमां अनेक प्रकारना जलजंतुओ आनन्द कल्लोल करी रह्या हता. ते सरोवरनी नजीकमां घाढी एक झाडी हती, तेमां मांसाहारी—मांसलोलुपी बे शियालो हता. ते रात्रिनो लाभ लइ शीकार करी पोतानी लोलुपता पूर्ण करता हता. एक वखत ते सरोवरमांथी बे काचबाओ(कूर्मो) सूर्यना अस्त थवा पछी विकालवेलाए जनसंचार ओछो थयेथी आहारनी शोध माटे बहार आवी सरोवरनी चारे बाजु आमतेम फरवा निकल्या हता; तेवामां पेला बे शियालो आहारनी लालसाए अने मांसनी लोलुपता तृप्त करवा माटे झाडीमांथी निकली सरोवरनी नजीक आमतेम भटकतां पेला बे काचबाओने यथेच्छ फरता जोया. तेने जोई तेनो शिकार करवा माटे धीमेथी तेनी तरफ जवा लाग्या. बन्ने काचबाओए तेमने आवता जोई भय पामी पोतानुं शरीर संकोची लीधुं, बन्ने शियालोए ते बन्नेनी पीठ उपर घणाए नहोर मार्या, बचकां भर्यां पण तेनी पीठ दृढ वज्र समान होवाथी कंइ वळी शक्युं नहिं. छेवटे थाकी एक बाजु छूपी रीते लपाइ गया. केटलोक समय गया बाद एककाचबाए ते शियालो गयां हशे एम धारी एक पग बहार काढ्यो एटले छूपी रीते लपाइ गयेल शीयालाओए

आवी तेनो पग पकडी लीधो अने तेनुं भक्षण करी गया अने पाछा लपाइ गया, फरी पण ज्यां तेणे बीजो पग काढ्यो एटले तेनी दशा पूर्वनी जेम थई. यावत् एवी रीते पगो, ग्रीवा वगेरेनुं भक्षण करी गया. आम एक काचबानो नाश थयो ज्यारे बीजा काचबाए तो पोताना संकोचेला पग वगेरेने जरा पण फरकाव्या नहीं परन्तु शियालिआओ थाकीने चाली जाय त्यां सुधी पोताना अंगो स्थिर राख्या. शियालो ज्यारे चाली गयां त्यारे खूब शीघ्रताथी दोडी सरोवरमां प्रवेशी गयो अने दीर्घकाल सुधी सुखी थयो.

उपसंहार—

हे जंबू ! जे साधु-साध्वी संयम प्राप्त कर्या पछी पांचे इन्द्रियोने गोपवे नहिं, संयमित राखे नहिं, असंयममां प्रवर्तावे ते साधु-साध्वी प्रथम काचबानी जेम आ भवमां पण साधुपुरुषोने गर्हणीय-निंदणीय आचारवालो थई अनेक भवोमां रखडे छे अने दुःखी थाय छे, तेम जे साधु-साध्वी संयम प्राप्त कर्या पछी पांचे इन्द्रियोने गोपवे छे, संयमित राखे छे अने असंयममां प्रवर्तावता नथी अने जितेन्द्रिय थाय छे ते साधु-साध्वी आ भवमां पण साधुपुरुषोथी वखणाय छे, पूजनीय थाय छे तेम उत्तरोत्तर सुखसंपदाओने पामी मोक्षसुखने प्राप्त करे छे. आ रीतिए चोथा अध्ययननो सारांश समाप्त थाय छे.



। पंचम—श्रीशैलकाध्ययन—सारांशः ।

कथाप्रारम्भ—श्रीकृष्णवासुदेव—

आ भारतवर्षनी शोभामां अनेरो वधारो करती, बारयोजन लांबी, नवयोजन पहोळी अने नेनी उत्तर पश्चिमदिशामां रैवताचल

पर्वत छे एवी द्वारका नगरीमां त्रणखंडना स्वामी श्रीकृष्णवासुदेव हता, तेओ—समुद्रविजय वगेरे दश दशार्हो, बलदेव आदि पांच महान् वीरो, उग्रसेन विगेरे सोलहजारराजाओ, प्रद्युम्न आदि साडात्रणक्रोडकुमारो, शांब आदि साठहजारभडवीरयोद्धाओ, वीरसेन वगेरे एकवीशहजारसुभटो, महासेन विगेरे छप्पनहजारबलवानलडवैयाओ, रुक्मिणी विगेरे बत्रीशहजारराणीओ, अनंगसेना आदि हजारो विलासिनीओ वगेरे बृहत् परिवार साथे परम सुखने विलसी रह्यां हता.

थावच्चापूत्रनुं वर्णन—तेज द्वारिकामां थावच्चा नामनी परम धनिक शेठाणी रहेती हती, तेणीने सुन्दररूपादिगुणोथी मनोहर थावच्चा नामनो पुत्र हतो. योग्य वय थये ते पुत्र कलाओ ग्रहण करी व्यवहारनिपुण थयो. हर्षित थयेली माताए एकज दिवसे ३२ कन्याओ साथे परणाव्यो. एक समय द्वारिका नगरीना सीमाप्रान्ते ईशानखूणे शोभता रैवताचलपर्वतनी समीपना नंदनवन विषे सूरप्रिययक्षना मन्दिरमां आवेला अशोकवृक्षनी नीचे चालीसहजारसाध्वी, तथा अढारहजारसाधुओथी परिवरेला श्रीनेमनाथप्रभु समवसर्या छे तेवुं श्रवण करी हर्षान्वित थई परिवारसह आडम्बरपूर्वक वंदना करवा माटे कृष्ण महाराजा गया; प्रभुनी देशनामृतनुं पान कर्युं. थावच्चापुत्र पण आ वात सांभली सपरिवार प्रभु पासे वंदना करवा गयो अने देशनाने श्रवण करी हलुकर्मी एवा थावच्चाकुमार वैराग्यवासित बनी, मातानी अनुमति लेवा तुरत घरे आव्यो. माताए—अनुकूल—प्रतिकूल वचनभंगी द्वारा घणी रीते समजाव्यो छतां पुत्रनी दृढ वैराग्यता जाणी दीक्षामहोत्सव उजववानो पोतानो मनोरथ कह्यो, पुत्रे त्यां सुधी टकवानुं मौनपणे कबुल कर्युं. थावच्चा-माता कृष्णमहाराजनी पासे जइ विशिष्ट भेटणु करी राजशाही ठाठपूर्वक दीक्षा आपवा माटे छत्र, चामर वगेरे योग्य सामग्रीनी मागणी करी. सम्यक्त्वथी शुद्ध हृदयी कृष्णनरेशे भरयौवनमां बत्रीशसुन्दरीओने तथा अनर्गल लक्ष्मी—वैभवने तृणनी जेम त्याग

करता थावच्चापुत्रनी वारंवार अनुमोदना करता तेनो दीक्षा महोत्सव पोतेज उजववा माटे उत्सुकता दर्शावी अने पोते चतुरंगसेना साथे हस्ति उपर बेसी थावच्चापुत्रने घेर आव्या अने थावच्चापुत्रनी दृढता तपासवा मांडी.

श्रीकृष्णमहाराजे थावच्चापुत्रनी करेली परीक्षा—

हे महानुभाव ! तुं मारी निश्रामां रहे, हुं तने तारे जोइए तेवी भोगसामग्री मेळवी आपुं ! तुं तारी इच्छाप्रमाणे भोग भोगव ! तने कोइ पीडा अथवा मननुं दुःख होय ते मने कहे, हुं ते दुःख दूर करूं ! हुं उपरथी जता वायुने रोकवा समर्थ नथी बाकी बधी वाते समर्थ छुं ! तुं दीक्षा न लेइश ! आना जवाबमां थावच्चापुत्र कहेवा लाग्या के–हे राजन् ! मारा जीवनने अन्तकरवाआवता मृत्युने रोकी शको तथा शरीरना रूपनो विनाश करनारी जराने अटकावी शको तो तमारी निश्रामां तमे कहो छो ते प्रमाणे रहुं अने करुं. थावच्चापुत्रनो आवो स्पष्ट उत्तर श्रवणकरी कृष्णमहाराजे कह्युं के–हे देवानुप्रिय ! अति बलवान् देव के दानव कोईनाथी पण आ निवारी शकवा शक्य नथी. फक्त पोताना कर्मना क्षयथीज ते अटकी शके ! आ प्रमाणे कही तेनो दृढ निश्चय जाणी हर्षित थया.

थावच्चापुत्रनो दीक्षामहोत्सव अने दीक्षा—

कृष्णमहाराजे आखी द्वारकानगरीमां उद्घोषणा करावी के–" थावच्चापुत्रनी साथे जे कोइने दीक्षा–संयम प्राप्त करवा उत्सुकता होय, इच्छा होय अने पोतानी पाछलना कुटुंबपरिवारना योगक्षेमनी अगवडताना लीधे पोतानी भावना सफलता न करी शकता होय ते सर्वे दीक्षाना मनोरथवाळाओने कृष्णनरेश तरफथी जणावाय छे के–तेओ सुखेथी दीक्षा अंगीकार करी आत्मकल्याण साधे ! तेमनी पाछलना तमाम परिवारनी मारा पोताना परिवारनी जेम आजीवनपर्यंत कृष्णमहाराजा सारसंभाल राखशे !!! " थावच्चापुत्रविषे

अनुरागथी एकहजारमनुष्यो दीक्षा लेवा तैयार थया. कृष्णनरेशे अतिउत्साहथी एकहजारपुरुषो सह थावच्चापुत्रनो वरघोडो शिबिकामां बेसाडी काढ्यो अने नेमिनाथप्रभु पासे आव्या. दीक्षाना अर्थी थावच्चापुत्रादिए संसारसमुद्रमांथी पार उतारवानी प्रभु पासे मागणी करी. थावच्चापुत्रथी त्याग करातां आभरण—अलंकार वगेरे माता थावच्चाश्रेष्ठिनीए हंसलक्षणवस्त्रवडे ग्रहण कर्यां अने मोतीना सदृश् आंसुओनी धार छोडती थावच्चापुत्रने हितशिक्षा आपवा लागी के—हे पुत्र ! तमे संयम जीवनमां पराक्रमी थजो ! हे पुत्र ! तमे तमारा आत्म-हितमां अप्रमादी थजो ! आवा अनेक उत्तम हितशिक्षा स्वरूप आशीर्वादो आप्या. थावच्चापुत्रे एकहजारपुरुषो साथे पंचमुष्टिलोच करी प्रव्रज्या ग्रहण करी. ते वार पछी थावच्चापुत्र अणगार थया, ईर्यासमिति आदिवाला थया. अरिष्टनेमिप्रभुए अभ्यासआदि माटे स्थविरोने सोंप्या. स्थविरो पासेथी चौदपूर्व भण्या अने घणी कठीन तपस्याओ करवा लाग्या. एक समये हजार शिष्यसंपत्सहित विहार करवानी प्रभुपासे आज्ञा मागी अने प्रभुए विचरवानी आज्ञा आपी. ते वार पछी हजार शिष्यो सहित ग्रामानुग्राम विचरवा लाग्या.

शैलकराजा—थावच्चापुत्रआचार्य विचरता विचरता शैलकपुर नामना नगरना सुभूमिभाग नामना उद्यानमां पधार्या, शैलकपुरनो राजा शैलक नामनो छे. तेने पद्मावती नामनी राणी छे, मंडुक नामनो युवराज छे, अने पंथक वगेरे पांचसो मन्त्रिओ छे. शैलकराजा-थावच्चाआचार्य समोवसर्यानुं श्रवण करी सपरिवार वंदनार्थे आव्यो अने धर्मकथानुं श्रवण कर्युं. आ वखते घणाओए दीक्षा ग्रहणकरी, शैलक-नरपति संयम ग्रहण करवा शक्तिवान न थवाथी पंचअणुव्रतो वगेरे लई श्रमणोपासक थया अने जीव-अजीव आदि तत्त्वोने भण्या. पंथक वगेरे पांचसो मन्त्रिओ पण श्रमणोपासक थया.

सुदर्शनशेठ—थावच्चाचार्य त्यांथी विचरता २ सोगंधिका नामनी नगरीना नीलाशोक नामना उद्यानमां पधार्या. ते नगरीमां घणो

धनाढ्य सुदर्शन नामनो नगरशेठ वसे छे. त्यां एक वखत शुकनामनो सांख्यमतनो परिव्राजक एकहजारना परिवार साथे आवेलो. तेनो उपदेश सांभळी सुदर्शनशेठे ते परिव्राजकनो शौचमूल धर्मने अंगीकार कर्यो हतो, ते सुदर्शनशेठ थावच्चापुत्रआचार्यने पधारेला जाणी तेमनी देशना सांभळवा गयो अने देशना श्रवण करी देशनान्ते विनीतभावे पूछवा लाग्यो के-हे भगवन्! आपनो धर्म किं मूलक छे? थावच्चाआचार्ये तेना जवाबमां जणाव्युं के-विनयमूलक अमारो धर्म छे. ते विनय पण बे प्रकारनो छे, १ अगारविनय-२ अणगार-विनय. १ अगारविनय एटले-पांचमहाव्रत, सात शिक्षाव्रत, अग्यार उपासकपडिमाओ. २ अणगारविनय एटले-पांचमहाव्रत, अढार पापस्थानकोनो त्याग, दश प्रकारे पच्चक्खाण अने भिक्षुनी बार प्रतिमाओ. आ बे जातना विनयथी यावत् आठे जातिना कर्मो दूर करी लोकोत्तर-अनुपम मोक्षपदनी प्राप्ति थाय छे. थावच्चापुत्रआचार्ये-सुदर्शनशेठने पूछ्युं के हे महानुभाव! तमारो धर्म किं मूलक छे? सुदर्शनशेठे कह्युं के-अमारो धर्म शौचमूलक छे, एम कही पोताना धर्मने विस्तारपूर्वक वर्णव्यो. आ सांभळी थावच्चापुत्रआचार्ये तेने जणाव्युं के-हे सुदर्शन! हुं एक वात पूछुं? के-कोई माणस लोहीथी खरडायेल वस्त्रने लोहीथी धोवे तो शुं ते वस्त्र शुद्ध थाय? सुदर्शने उत्तरमां जणाव्युं के-ना! ना! एतो कदी न बने! त्यारे थावच्चापुत्रे कह्युं के तमारो धर्म अढारपापस्थानकोना परिहार विनानो कर्ममलथी खरडायेल छे ते आत्माने केवी रीते शुद्ध करनारो थाय? वगेरे विस्तारथी समजाव्युं. आथी तुरत प्रतिबोध पामेला सुदर्शनशेठे जिनमतनी सद्दहणा स्वीकारी अने परमश्रावक बन्या अने जीवादितत्त्वने पाम्या.

सुदर्शनशेठे विनयमूलधर्म स्वीकार्यो छे तेवुं जाणी शुकपरिव्राजक सपरिवार त्यां आव्यो अने थोडा शिष्यो सहित सुदर्शनशेठने त्यां गयो पण सुदर्शनशेठे तेनुं सन्मान न कर्युं. आ जोई शुकपरिव्राजके पूछयुं शेठ तमारी श्रद्धा केम फरी गई? सुदर्शनशेठे उत्तरमां कह्युं-

में थावच्चापुत्र नामना जैनाचार्यनी पासे जैनधर्म स्वीकार्यो छे वगेरे विस्तृत बीना कही. शुकपरिव्राजके पोताने साथे लई त्यां जवानी मनोकामना दर्शावी तेथी शुकपरिव्राजकनी साथे सुदर्शनशेठ गया. शुकपरिव्राजके थावच्चापुत्रआचार्य साथे विविध प्रश्नोनी छणावट- पूर्वक विचारणा करी अने शौचमूलक सांख्यमतनी असारता जाणी तुरत त्रिदंडकनो त्याग कर्यो, पंचमहाव्रत उच्चरी अणगार धर्मनो स्वीकार कर्यो अर्थात् तेओ जैनसाधु थया, गुरु पासे विनयपूर्वक अध्ययन आदि करी चौदपूर्वी थया अने गीतार्थपणे हजार शिष्यो साथे ग्रामानुगाम विचरवा लाग्या.

थावच्चापुत्रआचार्य घणा वर्षो सुधी भव्यजीवोने प्रतिबोध करी शत्रूंजयगिरि उपर महिनानुं अनशन करी सर्व कर्मनो क्षय करी केवलज्ञान प्राप्त करी मोक्षे पधार्या.

एकदा शुकाचार्य हजार शिष्योना परिवार साथे विचरता विचरता शेलकपुर नगरमां सुभूमिभाग नामना उद्यानमां समोवसर्या. द्वादशव्रतधारक श्रमणोपासक शैलकराजा पांचसो मन्त्रीओ आदि परिवारसह वंदना अर्थे आव्या, देशना श्रवण करी भव निर्वेद थवाथी मंडुकपूत्रने राज्य पर बेसाडी दीक्षा लेवानो विचार कर्यो, महेले आवी पंथक आदि पांचसो मन्त्रीने स्व अभिप्राय जणाव्यो अने पूछयुं के तमारो शो अभिप्राय छे? मन्त्रीओए पोते पण साथे जीवननी सफलता मेलववा चारित्रने अंगीकार करवानो अभिप्राय दर्शाव्यो. त्यारपछी राज्याधिकारीओद्वारा योग्य व्यवस्था करावी मंडुककुमारनो राज्याभिषेक करी वहोळा आडम्बरपूर्वक पांचसो मन्त्रीओ सहित शैलकराजाए शुकाचार्य पासे दीक्षा ग्रहण करी, गीतार्थोनी निश्रामां अग्यार अंग भणी बन्ने प्रकारनी शिक्षा प्राप्त करी

अनुक्रमे गीतार्थ थया. पंथग विगेरे पांचसो शिष्यो साथे–ग्रामानुग्राम विहार करता, ज्ञान-ध्यान-संयम वगेरेमां तत्पर रहेता अनेक भव्यजीवोने प्रतिबोधवा लाग्या.

शुकाचार्य हजार शिष्योना परिवार साथे पुंडरीकगिरि पर पधारी अनशन स्वीकारी मोक्षे गया.

शैलकराजर्षिनी शिथिलता—एक समय शैलकराजर्षिने अन्तप्रान्त-लूखा-शुष्क-आहारआदिना कारणे दाहज्वरनो रोग उत्पन्न थयो, किन्तु शरीरविषे ममत्वरहित निष्प्रतिक्रमता गुणनी दृढता प्राप्त करेला तेओ कोई पण जातनी चिकित्सा करावता नथी. अनुक्रमे विचरता विचरता शैलकपुर विषे पधार्या, त्यां तेमनो सांसारिकपुत्र–मंडुकराजाने तेमना आगमननी खबर पडतां सपरिवार वन्दना करवा आव्यो. धर्मकथा श्रवण कर्या पछी शरीरना रोगनी चिकित्सा कराववानो आग्रह कर्यो अने तेनी वैयावच्चादिनो लाभ पोताने आपवा विनंति करी. शैलकाचार्ये तेनी विनंतिनो स्वीकार कर्यो अने शिष्योना परिवार सहित शैलकपुरनगरमां पधार्या अने यानशालामां उतर्या.

राजाना बोलाववाथी आवेला चिकित्सकवैद्योए चिकित्सा करी अने दवा करी तेमां मद्यपाननुं अनुपान उपदेश्युं. भवितव्यताना योगे शैलकाचार्ये ते प्रमाणे करतां रोगनी शान्ति थई गई अने रोग जवाथी तेम राज्यना आहारादिथी हृष्ट-पुष्ट थया पण तेमांथी परिणाम ए आव्युं के तेओ मद्यपान अने राज्यना आहार वगेरेमां अति आसक्त थया तथा शिथिलविहारी थया, अर्थात् त्यांज स्थिरता करी. तेमनी शिथिलता अने आसक्ति जोई पंथकने गुरु भळावी, बाकीना शिष्यो विहार करी गया. पंथकमुनि अनन्य भक्तिपूर्वक गुरुनी साथे रह्या पण स्व आचारमां शिथिलता लाववा दीधी नहीं अने गुरुभक्तिमां तत्पर रह्या.

एक समय कार्तिक चौमासीने दिने पण तेओ मद्यादिना नशामां उन्मत्तनी जेम सुतेला छे.-पंथकमुनि देवसिकप्रतिक्रमणना क्षामणा पछी कार्तिक चौमासीना क्षामणा करवा आचार्यने पगे हाथ मूकतां मद्यना घेन साथे आवेली निद्रामां भंग थवाथी आचार्य क्रोधाय-मानथया छतां पंथकमुनि विनीतभावे निद्रामां करेल स्खलनाना बदले क्षमापना करवा लाग्या अने चौमासीना क्षामणानी हकीकत जणावी.

शैलकराजर्षिनो पश्चात्ताप अने मोक्षमार्गनुं साधवुं—

भवितव्यताना योगे पंथकमुनिए करेली क्षमापनाए शैलकराजर्षिना अध्यवसाय पलटी गया अने पोतानी शिथिलता आदिनी आत्मसाक्षीए निंदा करवा लाग्या अने पंथकने खमावी उद्यत विहार करवा तन्मय थया अने मंडुकराजाने जणावी वस्ति भळावी उद्यत विहार कर्यो अने प्रमादने दूर करी ग्रामानुग्राम विचरवा लाग्या.

आ श्रवण थवाथी हर्षित थयेला पहेलां शिथिलता जोईने छूटा पडेला शिष्यो पाछा आवीने मळ्या. घणा वर्ष संयम पर्याय पाळी स्वशिष्यो सह श्रीपुंडरीकगिरि जइ महीनानुं अनशन करी आठे कर्मो खपावी केवळज्ञान पामी मोक्षे गया.

उपसंहार—

जे साधु साध्वी प्राप्त थयेला शिथिलतादिदोषोनो त्याग करी शैलकाचार्यनी जेम स्वदोषोनो त्याग करशे ते आत्मकल्याण साधी मोक्षसुखने पामशे !

आ रीतिए पांचमा शैलकराजर्षि अध्ययननो सारांश समाप्त थाय छे.



॥ षष्ठ-तुम्बकाध्ययन-सारांशः ॥

ते काले, ते समये चरमतीर्थंकरप्रभु महावीरदेव एकदा विचरता विचरता राजगृहीनगरमां पधार्या, प्रभुने पधारेला जाणी श्रेणिक-राजा सपरिवार वंदना करवा आव्या अने धर्मदेशना श्रवण करी सहु स्व स्व स्थाने गया, ते समये प्रथम गणविभु श्रीगौतम-स्वामीजीए प्रभुने विनयपूर्वक वन्दना-नमस्कार करी पूछयुं के-हे भगवन्! जीवो भारे अने हलका शाथी थाय छे? प्रभुए जणाव्युं के-हे गौतम! जेवी रीते कोइ माणस बराबर सुकायेला तुम्बडाने डाभना घासथी वींटी माटीनो लेप करी त्यारबाद तडके सुकवे, अने बराबर सुकाया बाद फरी तेना उपर डाभना घासथी वींटी माटीनो लेप करी बराबर सुकवे, एवी रीते यावत् आठवार लेपादि करवानुं करे त्यारबाद तेने अगाध ऊंडा पाणी विषे तरतु मेले तो ते तुम्बडु स्वाभाविक तरवा योग्य वजनवाळुं होवा छतां घास अने माटीना लेपोना वजनथी डुबी जाय अर्थात् ते पाणीना तलीए जाय छे, तेज तुम्बडु पाणीमां रहेवाथी भींजाई माटी दूर थवाथी अने वींटळायेल घासना कोहवाइने दूर थवाथी जल उपर तरे छे अर्थात् ए स्व स्वभावथी तरवा मांडे छे.

तेवी रीते हे गौतम! संसारमां रहेला जीवो प्राणातिपातादि अढारपापस्थानकोथी उपार्जेला आठप्रकारना कर्मोना लेपथी भारे थयेला अगाध संसारसमुद्रमां डुबे छे किन्तु धीमे धीमे धर्मना उत्तम अनुष्ठानोद्वारा आठे कर्मोने दूर करतो हलकापणाने प्राप्त थई यावत् लोकना अग्रभागे-मोक्षे पहोंचे छे.

॥ सप्तम–श्रीरोहिणीअध्ययन–सारांशः ॥

राजगृहीनगरमां धन्यनामे सार्थवाह हतो, तेने भद्रानामनी स्त्री हती, धनपाळ,–धनदेव–धनगोप–धनरक्षित नामना चारपूत्रो हता, तेओने अनुक्रमे उज्झिता–भोगवती–रक्षिका अने रोहिणी नामनी स्त्रीओ हती. एक समये पोतानी पाकटवय थवाथी विचार आव्यो के–कोणजाणे क्यारे पक्कथवाथी सुकायेल पान(पत्र)नी जेम हुं खरी पडुं अने पाछळ आ म्हारुं विशाळ कुटुम्ब व्यवस्था विनाना वहीवटो करीने हतविहत न थाय माटे सहु-सहुनी लायकात प्रमाणे नववधुओने कार्योनी वहेंचण करीने व्यवस्था करुं जेथी म्हारी मेळवेली आबरु वगेरे सचवाय अने कुटुम्ब-परिवार दुःखी न थाय. आवो विचार करी पूत्रवधूओनी परीक्षा करवा माटे ज्ञाति-बंधुओने बोलावी योग्य सत्कार करीने भोजन आदि करावी पहेरामणी अर्पण करी. सहु स्वजनोनी समक्ष पूत्रवधूओने बोलावी अखण्ड डांगरना पांच पांच दाणाओ भारपूर्वक भलामण करी अर्पण कर्या, अने कह्युं के–हुं ज्यारे मागुं त्यारे मने आपजो. आवा ससराजीना वचनो श्रवण करी सहु सहुनी योग्यता प्रमाणे तेनो (डांगरना पांच दाणा सबंधनो) विचार कर्यो.

प्रथम पूत्रवधूए ससराजी आपे छे माटे आ नजीवी चीज छे छतां लेवी जोइए एम धारी लीधा अने विचार करवा लागी के आटलो समारंभ करी ससराजी कंइ अमूल्य वस्तु अर्पशे पण आ तेमने वृद्धावस्थामां शुं सुझ्युं के डांगरना दाणा आप्या, ससराजी ज्यारे मांगशे त्यारे भरेला डांगरना कोठारमांथी आपी दइश एम करी ते दाणाने कचरामां फेंकी दीधा.

बीजी पुत्रवधूए ससराजी वृद्ध छे, माननीय छे, घणा अनुभवी छे. आ तेमनी नानी शी पण प्रासादी छे, आने साचववानी जरुर नथी एम करी पोते वडीलनी प्रासादी धारी खाई गई.

त्रीजी पुत्रवधूए पोतानी बुद्धिने दोडावी के-लाखोनो वेपार करनार, व्यवहारकुशल एवा ससराजीए आवा विशाल समारम्भने योजी विना कारणे कंइ आ दाणा आपे नहीं तेम साचववानी पाकी भलामण पण करे नहीं माटे प्राणनी जेम साचवी राखवा एम विचारी एक डबीमां राखी बरोबर साचववा लागी.

चोथी पुत्रवधूए स्वबुद्धिवैभवथी विचार कर्यो के-ससराजीनुं आ कार्य बुद्धिनी परीक्षा माटे जरूर होवुं जोइए. ते पांचे दाणा पोताना विश्वासु माणसोने बोलावी केटलीक भलामण करी तेमनी द्वाराए पीयरमां मोकल्या. पीयरीयाओए पुत्रीनी भलामण मुजब जुदा खेतरमां वाव्या, अने तेमांथी उत्पन्न थयेला दाणाओने दरवर्षे वारंवार वाववा मांड्या, पांच वर्षे तो ते दाणानो कोठार थयो छे.

ज्यारे पांचवर्ष थयां त्यारे धन्यसार्थवाहे विचार करी चारे पुत्रवधूओने सर्वज्ञातिजनोनो पूर्वनी माफक समारम्भ करी बोलावी अने सर्वनी समक्ष ते दाणानी मागणी करी.

प्रथम पुत्रवधूए तूरतज कोठारमांथी पांच दाणा लावी ससराजीने अर्पण कर्या, ससराजीए तेने पुछयुं त्यारे पोतानी सत्य हकीकत कही अने कोठारमांथी लाव्यानी जाहेरात करी, शेठे जरा गुस्सो बतावी घरमां वाळवानुं, कचरो साफ करवा विगेरेनुं काम तेने सुप्रत कर्युं.

बीजी पुत्रवधूए आपनी प्रासादीमानी खाई गई छुं, तेम जणाव्युं तेने ससराजीए रसोडानो तमाम कारभार सुप्रत कर्यो.

त्रीजी पुत्रवधूए प्राणनी माफक आपनी प्रासादी मानी ते दाणा साचवी राख्यानुं जणावी रजु कर्या, तेने ससराजीए घरना खजानचीपणाए स्थापी पेढीना पटारा वगेरेनी चावीओ सोंपी.

चोथी पुत्रवधूए कह्युं के–पिताजी ! म्हारा पीयरे ते पांच दाणा लेवा माटे गाडां मोकलावो. आवा प्रकारना जुवाबथी आश्चर्य पामेला ससराजीए खुलासो पूछ्यो एटले तेणीए ते पांच दाणाथी भरायेल कोठारोनी विगत जणावी अने तूरत गाडां मोकली मंगाव्या. ससराजीए अतिआनन्दित बनी तेना खुब वखाण करी सर्वजन समक्ष आखा घरनी मुख्य स्वामिनी नीमी अने तेनाज हुकममां बधाने रहेवानी भलामण करी, पोताने पण चोथी पुत्रवधूना प्रतापे आखुं कुटुम्ब सुखी थशे एवी खात्री थई.

उपसंहार—

आवी रीते जे साधु पांचमहाव्रतोने प्रथमवहूनी जेम फेंकी दे छे, दीक्षाने छोडी दे छे ते आभव अने परभवमां दुःखी थाय छे. जे साधु बीजीवहूनी जेम पांचमहाव्रतनो दुन्यवी भोगो मेळववामां उपयोग करे छे, ते पण निंदनीय बने छे अने भव रखडे छे. जे साधु त्रीजी वहूनी जेम महाव्रतोने साचवी राखे छे ते वखाणवा लायक बनी परभवमां सुख पामे छे. जे साधु चोथी वहुनी जेम उत्तरोत्तर संयमगुणनी वृद्धि करी निरतिचार संयम पाळे छे, ते अहिं पण माननीय-पूजनीय थाय छे अने थोडा भवोमां मोक्ष लक्ष्मी पामे छे.

॥ अष्टम–श्रीमल्लीअध्ययन–सारांशः ॥

हे जंबू ! ते काले अने ते समये जम्बूद्वीप नामना द्वीपमां महाविदेहक्षेत्रमां सलिलावति नामना विजयमां वीतशोका नामनी देवलोकना सदृश् नगरी हती, ते नगरीनी बहार इंद्रकुम्भ नामनुं उद्यान हतुं अने बल नामनो राजा हतो. ते नृपतिना अन्तेपुरीमां

धारणी वगेरे १००० एक हजार राणीओ हती. एक समये धारिणी राणीए अर्धजाग्रतअवस्थामां सींहनुं स्वप्नुं जोयुं अने जाग्रत थई, यावत् तेणीने महाबल नामनो पुत्र थयो, युवावस्था प्राप्त थये तेमना मातापिताए पांचसो राजकन्याओ साथे पाणीग्रहण (लग्न) कर्युं तेओ साथे महाबलकुमार सुखानन्द भोगवी रह्यो छे.

तेवामां स्थविर महात्माओ इन्द्रकुम्भ उद्यानमां समवसर्या, बलराजा सपरिवार तेमनी वाणी श्रवण करवा पधार्या अने तेमनी वाणी श्रवण करी वैराग्य प्राप्त थवाथी महाबलकुमारने राज्यविषे स्थापन करी दीक्षा ग्रहण करी. अगीआर अंगी थया, घणा वर्षो संयमजीवन पाली चारुपर्वत उपर मासना उपवास करी मोक्षे पधार्या.

राज्यसिंहासने विराजेल महाबल राजाने कमलश्री राणीथी बलभद्र नामनो पुत्र थयो तेने युवराजपणे स्थाप्यो, महाबलराजाने बालमित्र राजाओ-१ अचल २ धरण ३ पूर्ण ४ वसु ५ वेसमण ६ अभिचन्द्र हता आ साते मित्रोए अंदरोअंदर एक साथे संयम ग्रहण करवानुं नक्की करी राखेलुं, एक समये इन्द्रकुम्भ उद्यानमां स्थविरमहात्माओ पधार्या तेमनी वाणी श्रवणकरी बलभद्र-कुमारने राज्यसिंहासने स्थापन करी साते मित्रोए संयम ग्रहण कर्युं. अगीआर अंगना अभ्यासी थया अने घणा वर्षो संयममां गया पछी एकसमये आपणे सातेये एक सरखो तप करवो तेवुं नक्की कर्युं अने विंशस्थानकनी आराधना करवा लाग्या किन्तु कपटथी कंईक व्हानुं काढी महाबलमुनी महात्मा वधु तप करे छे आथी तेमने स्त्रीनामगोत्रकर्म उपार्जन कर्युं अने विंशस्थानकतपथी तीर्थंकरनामकर्म बांध्युं.

सींहनिष्क्रीडित नामनो महान् तप सातेय मित्रे कर्यो यावत् बे महिनाना उपवास करी चारुपर्वत उपर अनशन करी कंइक न्युन

८४ लक्षवर्षनुं साधुपणुं पाळी ८४ लाखपूर्वनुं आयुष्य पूर्णकरी कालधर्मपामी जयंतनामना विमानमां देवपणे उत्पन्न थया. जयन्त-विमानविषे बत्रीससागरोपमनी उत्कृष्टस्थिति छे. महाबलदेव सिवायना छ मित्रदेवोनुं आयुष्य बत्रीससागरोपममां कंईक न्यून छे अने महाबलदेवनुं आयुष्य बत्रीससागरोपम पूर्ण छे, देवभवनो क्षय थये छते च्यवीने छए जणा सुद्ध माता-पितावाळा वंशोमां जुदाजुदा राजाओने त्यां जन्म्या.

मल्लीकुमारीनो जन्म—

भरतक्षेत्रमां मिथिला नामनी राजधानी छे त्यां कुम्भकनामनो राजा छे, ते राजाने प्रभावती नामनी राणी छे. सदरहु राणीनी कुक्षिविषे हेमंतऋतुना चोथे मासे, आठमापखवाडीए फाल्गुनसुदिचतुर्थिदिने मध्यरात्रिविषे जयन्तविमानथी महाबलदेवनो जीव च्यवी उत्पन्न थयो अर्थात् गर्भपणे उत्पन्न थयो, प्रभावतीराणीने अर्धजाग्रत अवस्थामां चौद महास्वप्नाओ आव्या, (अत्र सविस्तर हकीकत वर्णन वीरप्रभुना वर्णन समान जाणवी). प्रभावतीदेवीने गर्भना प्रभावे जे जे दोहदो थाय छे, ते ते दोहदो पूर्ण कर्या, नवमास–साडासात दिवस पूर्ण थये छते, हेमंतऋतुना प्रथममासे मागशर सुदि अगीआरसे मध्यरात्रिए अश्विनी नक्षत्रनो योग आव्ये छते निरोगी एवा ओगणीसमा तीर्थंकर श्रीमल्लीनाथने जन्म आप्यो. (अत्र दिक्कुमारीओनो महोत्सव, चोसठ इन्द्रोनु मेरुशिखरपर लइ जवुं, नंदीश्वरद्वीपे महिमा करवो वगेरे वीरप्रभुना वर्णन समान जाणवुं). ते पुत्रीनुं मातापिताए मल्लीकुमारी एवुं पवित्र नाम पाड्युं, अनुपम शोभावाळी ते कुमारी बालभाव मुक्त थतां योवन–लावण्यथी उत्कृष्टरुप अने शरीरवाळी थइ, कंइक न्यून एवा सो वर्ष थये विपुल एवा अवधिज्ञानथी छए प्रतिबुद्धि यावत् जितशत्रूराजाने उत्पन्न थयेला पूर्वना छये मित्रराजाओने जोया, ते वार पछी

असोकवणिकाविषे एक अनेकस्तम्भवाळुं मोहनघर कराव्युं अने तेना मध्यभागमां छगर्भघर कराव्यां, ते मोहनघरना मुख्य दरवाजानी नजीक मोहनघरमां एक मणीपीठिका रचीने ते उपर पोताना सरखा रूप लावण्यवाळी योवनअवस्थाए दीपती मस्तकना भागमां छिद्रवाळी अने उपर सुन्दर कमलोना ढंकणवाळी प्रतिमा करी, ते प्रतिमाना पोलाणमां उपरथी हंमेशां सुन्दर एवो आहार नांखी ढंकण बंध करे छे. ज्यारे ज्यारे आहार नाखवा ढांकण खोले छे त्यारे त्यारे मरेलासर्पकरतां पण अनिष्ट गंध नीकले छे.

। १ प्रतिबुद्धि ।

(१) कौशलदेशविषे साकेत नामनी नगरी छे, त्यां प्रतिबुद्धि नामनो इक्ष्वाकुराजा राज्य करता हता, पद्मावती नामनी राणी अने सुबुद्धी नामनो प्रधान हतो. नागपूजानो दिवस आव्ये छते स्वपति प्रतिबुद्धराजाने पद्मादेवी राणीए विनंती करी के–हे स्वामी! काले नागपूजानो दिवस छे तो आपनी आज्ञाथी त्यां महोत्सवमां आपनी साथे जवा इच्छुछुं, राजाए तेनी विनंतिनो स्वीकार कर्यो अने महोत्सवने वधु दीपाववा माटे अने आववा माटे कुटुम्बिओने जणाव्युं, अने मालीने जणाव्युं के–पंचवर्णना पुष्पोनो अति शोभावाळो दडो अने विविधप्रकारना चित्रोथी आश्चर्ययुक्त पुष्पनो मंडपने तुं बनाव! मालीए पण राजानी आज्ञा प्रमाणे बधुंये तैयार कर्युं. नगरनी अंदर अने बहार सारी रीते विभूषा करावी, प्रतिबुद्धिराजा तथा पद्मावतीराणी सपरिवार अति पवित्र थई आडम्बरसह नागमन्दिरे पधार्या. त्यां योग्य रीते पुजा विगेरे करी पुष्पमंडपमां पधार्या त्यारे मालिए बनावेलो अतिशोभायुक्त पुष्पनो दडो राणीनो जोई आश्चर्यमय बनेल राजाए प्रधानने पूछ्युं के–हे प्रधानजी? आ राणीना दडा सरखो कोई जगोए तमे दडो जोयो छे? प्रधाने उत्तर आपतां जणाव्युं के–हे राजन्! हुं ज्यारे आपनी आज्ञाथी–दूतपणाथी मिथिलानगरीए गयो हतो त्यारे कुंभकराजानी पूत्री मल्लीनी पासे जे दडो में

जोयो हतो ते दडो आ दडा करतां हजारगुणो तेजस्वी हतो, तेम ते कुमारी पण अतिरूपलावण्यना तेजथी शोभती हती.

प्रतिबुद्धिराजाए दूतने बोलावी मल्लीकुमारी मारी साथे वरावें तेवुं कथन करी कुम्भराजा पासे मोकल्यो. ते पण मिथिलानगरीमां गयो अने कुम्भराजानी राजसभामां गयो.

। २ चन्द्रच्छ ।

ते काल अने समये अंगदेशमां चंपानामनी नगरी हती. त्यां चन्द्रच्छ नामनो राजा हतो, ते चंपानगरीमां अरहन्नप्रमुख नाववाणिज्य करनारा वहेपारीओ वसे छे, अरहन्न-धनाढ्य श्रमणोपासक—श्रावक हतो, ते जीवादितत्त्वोने जाणनारो धर्मिष्ठ हतो.

अरहन्न श्रमणोपासकनी परीक्षा—

अरहन्न श्रावक एक समये घणा नाववाणिज्यना व्हेपारीओने लई अनेक प्रकारनां करीआणानां वाहणो भरी शुभमुहूर्त्ते समुद्रनी मुसाफरी करवावाळा धंधा अर्थे जतां सैंकडो गाउ समुद्रनुं उल्लंघन कर्या बाद-अतिउत्पादोने करतो अने अतिभयंकरस्वरूपथी भय उत्पन्न करतो आवतो पिसाच जोइ अरहन्नश्रावक सिवायना तमाम मनुष्यो भयथी कंपवा लाग्या अने पोतपोताना देवोनुं शरण करवा लाग्या. अरहन्नश्रावक ते पिशाचने जोइ अने थता उत्पादो देखी वहाणना एक भागने वस्त्रथी प्रमार्जी भय पाम्या विना हस्तकमल जोडी अरिहंतनुं स्मरण करी ज्यांसुधी आ उपसर्गथी न मुक्त थवाय त्यांसुधीनुं सागारिक भक्तपच्चक्खाण करी काउस्सग्गमां रह्यो. पिशाच अरहन्नश्रावकने कहेवा लाग्यो के-हे अरहन्न ! हुं शीलव्रत-गुणव्रत पापनापच्चक्खाण अने पोषधउपवासवाळो तुं होवाथी चलायमान करवा-क्षोभ पमाडवा अने फेंकी देवा विगेरेमां अशक्त छुं, परन्तु बे आंगलीथी वहाणने पकडी आकाशमां घणे ऊंचे उछाळी नीचे

पाडी अनेकवार एम करी तने दुःखीओ करी आर्त्तध्यान रौद्रध्यानथी असमाधिपणे अकाले नाश करवा समर्थ छुं!!! आम कहेवा छतां अरहन्नने निश्चल देखी पिसाचे अनेक प्रकारना दुःसह उपसर्गो करवा मांड्या अने सन्मार्गमांथी चलायमान करवाना तेना ते बधाये उपसर्गो निष्फल गया त्यारे पोतानुं पिसाचरूप संहरी लई पोतानुं दिव्यरूप विकुर्वी अरहन्न श्रावकने तेनी निश्चलतानां सौधर्मइन्द्रे करेलां वखाण अने पोतानुं ते वखाणनुं सही न शकवुं अने परिक्षा करवा आववुं तेम पोताना तमाम प्रयोगोनुं निष्फल थयानुं जणावी विनय-पूर्वक वन्दना–नमस्कार करी वारंवार खमावी जैनधर्मनी श्रद्धा करतो अरहन्नश्रावकने दिव्य बेकुंडलो अर्पण करी पोते अदश्य थयो.

चन्द्रच्छराजाए मोकलेल दूत—

अनुकूलवायुना प्रतापे अरहन्नश्रावक वगेरेनां वहाणो मिथिलानगरीए आवी पहोंच्यां. त्यांना राजा कुंभ पासे भेटणां लइने गया अने भेटणां सादरसमर्पण करी राज्यने योग्य कुण्डलो मानी ते दिव्यकुण्डलो भेट धर्यां. कुम्भराजाए मल्लीकुमारीने आप्यां. तेने ते कुण्डलो पहेरी पाछां आप्यां. खुश थयेला राजाए जगात मुक्त करवाथी अने वेपारनी छूट आपवाथी सारी रीते धंधो करी सर्वे पाछा चम्पानगरी आवी गया. चन्दच्छराजाने योग्य बन्ने दिव्यकुण्डलो भेट तरीके अर्पण कर्या ते चन्द्रच्छराजाए सादर स्वीकार्यां, अने देशान्तरनां आश्चर्यो पूछ्यां. अरहन्नश्रावके मिथिलानगरीना कुम्भराजानी पुत्री मल्लीकुमारीना आश्चर्यभर्या रूप अने गुणोनुं वर्णन कर्युं. आथी उत्पन्न थयेला आश्चर्यथी तेम रागोत्पत्तिथी कुंभराजा पासे मल्लीकुमारीनुं मागुं करवा दूत मोकल्यो.

। २ रुप्पी नृपति ।

ते काल अने ते समये कुणालनामना देशमां सावस्ति नामनी नगरी हती. त्यां रुप्पी नामनो राजा राज्य करतो हतो, तेने

धारिणी नामनी राणी हती अने सुबाहु नामनी पुत्री हती. चातुर्मासना स्नाननो महोत्सव आव्ये छते सुबाहुकुमारीए महोत्सव उजववा माटे पोतानो विचार रुप्पीराजाने जणाव्यो, रुप्पीराजाए कुटुम्बिपुरुषोने बोलावी सविस्तर महोत्सव उजववानी वात जणावी. अति उत्साहथी महोत्सव उजवतां आनंद पामेला राजाए पोताना दूतने पूछ्युं के-वारंवार दूतपणे फरतां तें आवो चातुर्मासना स्नाननो महोत्सव जोयो छे ? दूते जणाव्युं के-हुं एक वखत दूतपणे मिथिलानगरी गयो हतो त्यारे त्यां कुम्भराजानी मल्लीनामनी कुमारीनो जे चौमासी स्नान महोत्सव में जोयेलो तेना लाखमे भागे पण आ नथी. आ श्रवण करी तूरत मल्लीकुमारीने पोतानी साथे वरावावानुं कहेवा माटे कुम्भराजा पासे दूतने रवाना कर्यो.

। ४ संख राजा ।

ते काल अने समये काशीनामना देशमां वणारसीनगरीमां काशीदेशनो संख नामनो राजा राज्य करतो हतो. मल्लीकुमारीनां दिव्य कुण्डलोनी संधी खुली जवाथी कुंभराजाए सोनीओना समूहने बोलाव्यो अने दिव्यकुण्डलोनी सांधो फरी सांधी आपवा जणावी. सोनी लोको ते कुण्डलो लइ जइने घणा उपायो कर्या पण ते सांधो सांधी न शकाइ त्यारे राजा पासे जइ आवां बीजां कुण्डलो हमे करी आपीए पण आनी सांधो हमे सांधी शकीये तेम नथी. आ सांभली कोपायमान थयेला कुम्भराजाए तेओने देशपार कर्या, तेओ पण पोतानी घरवखरी सर्वे लई वणारसीनगरीए गया अने नगरी बहार घरवखरी राखी, संखराजा पासे त्यां वसवानी आज्ञा लेवा गया. संखराजाए देशांतरथी आवेला ते सोनारोने प्रश्न कर्यो के तमोने मिथिलाना राजाए शा माटे हदपार कर्या छे ? आवा प्रकारना प्रश्नना जवाबमां ते सोनीओए कुण्डलनी संधीओनी बीना अने मल्लीकुमारीनुं वर्णन कर्युं. सोनारो पासेथी सांभळेल हकीकतने कारणे संखराजा

मल्लीकुमारी प्रत्ये रागवाळो थयो अने पोतानी साथे तेनुं लग्न थाय तेवुं कहेण करवा शीघ्रताथी पोताना दूतने मिथिलानगरी विषे कुम्भ-राजा पासे मोकल्यो.

। ५ अदीनशत्रू ।

ते काल अने समये कुरुदेश नामनो देश हतो. तेमां हस्तिनापुरनामनुं नगर हतुं. त्यां अदीनशत्रूनामनो राजा राज्य करतो हतो.

मिथिलानगरीना राजा कुम्भने मल्लीकुमारीथी लघुवयनो मल्लदीन्न नामनो युवराज कुमार हतो. एक वखत ते कुमारने गृहउद्यानविषे चित्रसभा चितरावानी प्रबल भावना थइ आथी चित्रकारोना समूहने बोलाव्यो अने चित्रसभा चितरवानी आज्ञा करी, सर्वे चित्रकारोए प्रथम भीतरूपपीठिका शुद्ध करी जुदा जुदा प्रकारना रूपो चितरवा लाग्या. आ चित्रकारोमां एक चित्रकारने एवी लब्धि हती के कोइ पण वस्तुनो एक अंश देखे एटले आखुंय तेनुं रूप पोते आलेखी शके छे. एक वखत ओझलपडदामां रहेली मल्लीकुमारीना पगनो अंगुठो तेना जोवामां आवतां तेना रूप प्रमाणेनुं चित्र आलेखवानो भाव थयो आथी तेनुं आबेहुब रूप चितर्युं. चित्रकाम सर्वे पुरुं थया पछी कार्य समाप्त थयानी जाण मल्लदिन्नने चित्रकारोए करी, हर्षित बनेला मल्लदिन्नयुवराजे सर्व राज्यपरिवार सहित चित्रसभा जोवा मांडी, जेम जेम जुवे छे तेम तेम आनन्दनी वृद्धि थाय छे. आगल जतां चित्रेली मल्लीकुमारीने आबेहुब जोतां अनेक विकल्प करतां आ मारी वडील बहेन मल्लीकुमारीनुंज चित्र छे तेवुं मनमां नक्की करी अति कोप पामेला युवराजे ते चित्रकारनो वध करवानो हुकम कर्यो. चित्रकारनो वध थवानो आदेश थयानी वात बीजा चित्रकारोए सांभळी तेथी भेटणुं लई युवराज पासे सदर हु चित्रकारनी लब्धिनी हकीकत जणावी अने वध सिवायनो दंड-सजा करवानी विनंति करी, युवराजे तेनो अंगुठो छेदवो अने हदपार करवो आवो हुकम

कर्यो. अंगूठाना छेदन पामेलो ते चित्रकार पोतानी घरवखरी सर्वे लई कुरुदेशमां हस्तिनापुरनगरविषे आव्यो अने पोतानो सर्वे सामान नगर बहार राखी अदीनशत्रू राजा पासे आवी वसवानी रजा आपवा विनंति करी.

अदीनशत्रू राजाए तेने पूछ्युं के तमने मल्लदिन्नयुवराजे कया गुन्हाथी देशपार कर्या ? आवा प्रश्नना जवाबमां त्यां बनेल सर्व वृत्तांत कह्यो अने पोते फरीथी एक पाटीआ उपर चीतरेली मल्लीकुमारीनुं दृश्य बताव्युं अने ते पाटीउ राजाने भेट कर्युं. मल्लीकुमारीना रूपने जोइ मोहित थयेला अदीनशत्रूराजाए तेनी साथे परणवानो मनसूबो करी तेनुं मागुं करवा पोताना दूतने मिथिलानगरी विषे कुम्भराजा पासे रवाना कर्यो.

। ६ जितशत्रू राजा ।

ते काल अने समये पंचाल देशमां कांपिल्यपुरनामनी राजधानी विषे जितशत्रू नामनो राजा राज्य करतो हतो तेने धारिणी आदि एकहजार राणीओनुं अंतेउर हतुं.

मिथिलानगरीमां चोक्खा नामनी परिव्राजिका आवी छे ते ऋग्वेद आदिमां पारंगत छे. अनेक क्षत्रियो अने श्रेष्ठिओ आगल पोतानां शोचमूल धर्मने उपदेशे छे, एक वखत ते परिव्राजिका पोताना सामान्य परिवारने साथे लेइ राजमहेले गइ अने ज्यां मल्लीकुमारी छे त्यां गइ. मल्लीकुमारी आगल पोतानो धर्म अने तेनुं फल सविस्तर प्ररूप्यां, त्यारे मल्लीकुमारीए तेणीने प्रश्न कर्यो के–हे चोक्खा ! लोहीथी खरडायेल वस्त्र लोहीथी धोवामां आवे तो ते शुं धोवाय ? शुद्ध थाय ? चोक्खा परिव्राजिकाए जणाव्युं के शुद्ध न थाय तेम ते वस्त्र तेवी रीते धोवाय पण नहीं. त्यार पछी मल्लीकुमारीए तेने जणाव्युं के–प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शनथी मलिन

थयेल तारा शोचधर्मथी तेवी रीते आत्मा शुद्ध थइ शके नहीं !

आ प्रमाणेना जणावाथी शंकित थयेली चोक्खा परिव्राजिका कंई पण जवाब न आपी शकी अने मौन रही, आथी मल्लीकुमारीनी दासीओ अनेक–अनेकप्रकारे तेनी हांसी करवा लागवाथी क्रोधथी धमधमती त्यांथी ते निकली गामानुगाम फरती कांपिल्यपुरनगरमां आवी अने जितशत्रू राजा आगल शोचमूलधर्मनी प्ररूपणा करी राज्य अने अन्तेपुरीनी कुशलतानो वृत्तांत पूछ्यो. जितशत्रू राजाए कुशलता जणावी. अने पूछ्युं के–तमे घणा गामो नगरो वगेरेमां फरतां मारा जेवो स्त्रीओनो रूपवंतपरिवार कोइनो जोयो छे ! आवा प्रश्नना जवाबमां जितशत्रू राजाने कुवाना देडका समान तेनी अन्तेउरी जणावी मल्लीकुमारीना एक पगना अंगूठानारूपना लाखमा भागे पण तारी कोइ राणीनुं रूप नथी, आम कही ते परिव्राजिका गइ. आथी आश्चर्यने पामेला जितशत्रूराजाए पोतानी साथे लग्न करवानी कबूलात माटे पोताना दूतने मिथिलानगरीए कुम्भराजा पासे मोकल्यो.

जितशत्रू वगेरे छए राजाओना दूतो मिथिलानगरीनी बहारना उद्यानमां आवी पोतपोताना तंबुओमां उतर्या पछी ज्यां कुम्भ-राजानी राजसभा छे त्यां गया अने बे हाथ जोडी विनयपूर्वक छए दूतोए पोतपोताना राजाओनी वात जणावी, आ श्रवण करी अति कोपायमान थयेला कुम्भराजाए छए दूतोनो तिरस्कार कर्यो अने अपमान करी पाछले दरवाजेथी काढी मूक्या. अपमानित थयेला दूतोए पोताना स्थाने जई रूबरूमां पोतानां अपमानो वगेरेनुं निवेदन पोतपोताना नृपतिने जणाव्युं. आ सांभळी छए राजाओए सलाह करी एकी साथे कुम्भराजा साथे युद्ध करी अपमानो बदलो लेवा ठराव्युं. छए राजाओ युद्ध करवा माटे प्रयाण करी मिथिला राज्यना सीमाडे आव्या.

कुम्भराजा पण युद्ध करवा माटे सन्मुख आव्यो अने युद्ध चाल्युं. छए राजाओना सामटा हल्लाथी हतप्रहत थयेल कुम्भराजाए मिथिलाना दरवाजा बंध करावी दीधा. आथी छए राजाओए घेरो घाल्यो, कुम्भराजा तेओना घणा प्रकारे छिद्रोने जुवे छे पण छिद्र न प्राप्त थवाथी चिन्तातुर अवस्थामां एक वखत बेठा छे एवामां मल्लीकुमारी पिताजी पासे आवी विनीतभावे उभी रहेवा छतां चिन्ताग्रस्त अवस्थाना प्रतापे कुम्भराजाए आव्यानुं जाण्युं नहीं, मल्लीकुमारीए आवी अवस्था माटे पिताजीने प्रश्न कर्यो आथी आद्यन्त वृत्तान्त तेणीने नृपतिए कह्यो, मल्लीकुमारीए निर्भय थवानुं जणावी छए राजाओ पासे जुदा जुदा छुपी रीते दूतने मोकलो अने तमने आपशुं एम कही गुप्तमार्गे प्रवेश करावो अने दरवाजा बन्ध छे तेमने तेम रहेवा द्यो, मल्लीकुमारीनी सलाहथी कुम्भराजाए तेम कराव्युं अने छए राजाने तेवी रीते प्रवेश कराव्यो.

पूर्वे ओझल-पडदामां राखेली सुवर्णमय-मस्तके छिद्रवाळी अने तेना पर कमलोना ढांकणवाळी प्रतिमाने आ मल्लीकुमारी छे एम धारी एकी नजरे जोता छतां उभा रह्या छे एवामां स्नान आदिथी पवित्र बनी तमाम अलंकारो पहेरेली घणी एवी दासीओथी परिवरेली मल्ली त्यां आवी अने प्रतिमा उपरनुं कमलोनुं ढांकण दूर कर्युं, ढांकण दूर थतां मरेला सर्प करतां पण अधिकतर दुर्गन्ध निकलवाथी छए राजाओ पराङ्गमुख थया अने उत्तरीयवस्त्रथी नाक बन्ध कर्या.

मल्लीकुमारी, जितशत्रूराजा वगेरेने पूछवा लागी के उत्तरीय वस्त्रथी नाक बन्ध करी पराङ्गमुखवाळा केम थया ? आ प्रश्नना उत्तरमां तेओ कहेवा लाग्या के—आ अशुभ गन्धथी अमे आम थया छीए ! मल्ली कहेवा लागी के—आ प्रतिमामां ताजां अने मनोहर आहारादिनो पिण्ड हंमेशां नांखतां आवा अशुभ परिणामवाळा पुद्गलो थई जाय छे, तो आ औदारिक शरीर—खेलाश्रव, वंताश्रव,

पिताश्रव, शुक्र–लोही–पूताश्रव, खराब श्वासोश्वास अने पेसाब झाडाथी भरेलुं अने सडेला धर्मवाळुं केवा परिणामवाळुं हशे ! आवा मनुष्य सम्बन्धी कामभोगमां आसक्ति न करो ! वळी आथी त्रीजा भवमां अपरविदेहमां सलिलावतिनामना विजयविषे वितशोक नामनी राजधानीमां महाबल वगेरे साते आपणे बालमित्र राजाओ हता, साथे दीक्षा लीधी हती, अने में मायाए करी स्त्री नामगोत्र कर्म बांधेलुं, ते भवमांथी काळ करी आपणे सातेय देवलोकमां जयंत नामना विमानमां उत्पन्न थयेला, त्यांथी च्यवीने आ जम्बूद्वीपमां उत्पन्न थया छीए तेनुं तमने विस्मरण केम थयुं छे ? आ प्रमाणे मल्ली पासेथी श्रवण करी शुभ परिणाम, शुभ अध्यवसाय अने शुद्ध लेश्यावाळा परिणामथी तथाप्रकारना आवरणो दूर थये जातिस्मरणज्ञान उत्पन्न थयुं. आथी मल्लीए कथन करेली हकीकत बरोबर छे तेवो निश्चय थयो. अरहामल्लीए तेमने तथाप्रकारनुं जातिस्मरणज्ञान थयेलुं जाणी दरवाजा खुल्ला करावी दीधा.

अरहामल्लीए छए राजाओने हुं संयम ग्रहण करीश ! तमारी शुं इच्छा छे ? छए राजाओए जणाव्युं के–अमे पण संसारभयथी उद्वेग पामेला मोटा पूत्रोने राज्य विषे स्थापन करी दीक्षाने तमारी पासे ग्रहण करीशुं. छए राजाओ कुम्भराजाने पगे पड्या, कुंभराजाए तेओनो योग्य सत्कार करी विसर्जन कर्या.

अरहामल्लीए संवत्सरीदान (वीर चरित्र प्रमाणे बधुंये वर्णन अहिं जाणवुं फक्त एमां मिथिलानगरी, कुम्भराजा अने मल्ली अरहानुं नाम तेमां जोडी देवुं, आगळ पण तेवुं वर्णन हशे त्यां वीरवर्णननी जेम अहिं जाणवुं तेवुं सूचन थाय त्यां पण आवी रीते नामो फेरफार करी वांचवुं) दीधुं. लोकान्तिदेवोए तीर्थ प्रवर्तावता विनंती करी अने जेवी रीते आव्या तेवी रीते गया. (अत्र वर्णन वीरप्रभुनी जेम जाणवुं) मल्लीअरहाए दीक्षा माटे मातापिता पासे आज्ञा मागी अने मली. तेमने अभिषेक आदि करी मनोरमा नामनी शिबिकामां बेसाड्या (अत्र इन्द्रोनुं आववुं, शिबिकानुं प्रवेशवुं वगेरे वर्णन वीरप्रभुनी जेम जाणवुं) यावत् दीक्षानो वरघोडो

निकळ्यो अने सहस्राम्बवन नामना उद्यानमां अशोकवृक्ष नीचे शिबिका उतारी, अरहामल्लीए सर्वे अलंकार उतार्या अने पंचमुष्टि लोच कर्यो यावत् णमोत्थुणं सिद्धाणं कही सर्वसामायिकने उच्चर्युं. (अत्र पण वीरप्रभुनी जेम जाणवुं) आ समये तेओने चोथुं मनःपर्याय-ज्ञान उत्पन्न थयुं, मल्लीअरहाए जे हेमन्तऋतुनो बीजो मास चोथुं पखवाडीयुं एटले पोषसुदिमां अगीआरसना दीने अश्विनी नक्षत्रनो योग आव्ये छते पूर्वाण्हकालना समये दीक्षा ग्रहण करी, त्रणसो स्त्रीओनी अभ्यन्तरपर्षदा, अने त्रणसो पुरुषोनी बाह्यपर्षदाए तेमनी साथे दीक्षा लीधी हती, त्यारबाद आठ राजकुमारोए दीक्षा लीधी, अरहामल्लीने तेज दिवसे पूर्वापरण्यकालसमये अनंत एवुं केवलज्ञान-दर्शन उत्पन्न थयुं. त्यारबाद जितशत्रू वगेरे छए राजाए संयम ग्रहण कर्युं, कुम्भराजाए श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. अरहामल्लीने भिषग् वगेरे अठ्ठावीस गणधरो, चोत्रीसहजार श्रमणो, बंधुमति वगेरे पंचावनहजार साध्वीओ, एकलाखचोरासीहजार श्रमणोपासको, त्रणलाखपांसठहजार श्रमणोपासिका, सोलसो चौदपुर्वीओ, बेहजार अवधिज्ञानीओ अने बत्रीसो केवलज्ञानीओनी संपदा हती.

अरहामल्ली समेतशैलशिखरविषे पादोपगमनयुक्त, सो वर्ष गृहस्थावस्था अने चोपनहजारनवसो वर्षनो केवलिपर्याय एम करी पंचावनहजारनुं संपूर्ण आयुष्य करी उनाळानो प्रथममास बीजुं पखवाडीउं एटले चैत्रसुदिनी चोथनी रात्रिविषे भरणिनक्षत्र आव्ये छते मध्यरात्रिए पांचसो स्त्रीओनी अभ्यन्तरपर्षदा अने पांचसो अणगारोनी बाह्यपर्षदा सहित मासना उपवास करी मोक्षे सीधाव्या (अत्र निर्वाण महिमा वीरप्रभुनी जेम जाणवो) श्रमणभगवन्तमहावीरे कहेल ज्ञातासूत्रना आठमा अध्ययननो सारांश परम पूज्य आचार्यदेव श्रीचन्द्रसागरसूरिजीनी पुण्यनिश्राए शुभ आशीर्वाद पामी वेरावळबन्दरे मुनिश्रीचन्दनसागरे वि. सं. २००८ पोषवदी द्वितीयावासरे समाप्त कर्यो.

॥ एवं ज्ञातासूत्र धर्मकथाङ्गे प्रथमविभागस्य अष्टाध्ययनस्य सारांश समाप्तः ॥

ॐ

। शाश्वतानन्ददायक-सकलमन्त्रतन्त्रयन्त्राधिराजराजेश्वर-श्रीसिद्धचक्रेभ्यो नमो नमः ।

सकलसमीहितपूरक-श्रीशङ्खेश्वरपार्श्वनाथो विजयतेतमाम् ।

। सूत्रकृद्गणधरेभ्यो नमः ।

॥ ज्ञाताधर्मकथाङ्ग-प्रस्तावना ॥



मानवजीवननी महत्ता—

अनादि अनंतकालथी परिभ्रमण करनारा जीवोने जन्म-जरा-मरण-दुःख-दरिद्रता-दौर्भाग्य-आधि-व्याधि-उपाधि आदि अनेकविध दुःखदायि-भवचक्रनी परंपरामां मानवजीवन मलवुं ते दुर्लभ छे. आ दुर्लभताने दशदृष्टान्तोथी शास्त्रकारोए ठाम ठाम दृढीभूत करेली छे, ते दशदृष्टान्तो श्रीउपदेशपदादिग्रन्थोद्वारा अभ्यासकोने वधु स्पष्ट थाय छे. जुगारखानामां जुगारीओना दावनी जेम अनेक जीवोने अनेक दाव प्रसंगो निष्फल जाय छे, तेवी रीते आ जीवने चारे गतिमां चोराशी लाख जीवायोनीमां भटकतां मनुष्यजीवनने अनुसरतुं आयुष्य बांधवानो दाव अनेक वखत निष्फल गयो छे, अने जाय छे. अत्र याद राखवुं जोइए के तथाभव्यता-पुरुषार्थ-पुण्यादिनी अनुकूलताना प्रभावे कषायोनी मन्दता, दान देवानी रुची अने मध्यम गुणोनी प्राप्ति करीने

कदाच कोई जीव मनुष्यना आयुष्यनो बन्ध विगेरे बांधीने मनुष्य थाय छे, परन्तु मानवजीवनने सफल करवानां साधन-सामग्री-संयोगो प्राप्त करवां ते अतीव दुर्लभ छे, आथी शास्त्रकारो जणावे छे के-सानुकूल साधन-सामग्री-संयोगो प्राप्त थया छतां ते सर्वेने सफलीभूत बनावीने शासनमान्यरीतिए मानवजीवन सफल करवुं एज मानवजीवन पाम्यानी महत्ता छे.

पवित्र पुण्यनो प्रवाह अस्खलित जेना जीवनमां वह्या करे छे तेज महानुभावो आर्यदेश, उत्तमकुल, उत्तमज्ञाति, दीर्घआयुष्य, निरोगिशरीर, इन्द्रियोनी पूर्णता-पटुता, देवगुरुधर्मनी जोगवाई, वीतरागवाणीनुं श्रवण, विवेक अने विनयादि गुणगण संपदाओने प्राप्त करी शके छे, अन्यथा नहिं, एटलुं ज नहिं पण प्राप्त थयेल सानुकूल संयोग-साधन-सामग्रीओद्वारा मोक्षमार्गनुं गमन अस्खलित थयां करे तेवी रीते तेने सफलीभूत बनाववी तेमां ज मानवजीवननी महत्ता साथे विशिष्ट बुद्धिमत्ता छे.

श्रवणनी आवश्यकता—

मानवजीवननी महत्ता समजनारे अफर निर्णय करवो घटे छे के—" वीर्योल्लासपूर्वक संयममार्गे कूच कर्या विना अने विविध तपोधर्मने सेव्या विना मनुष्यजीवनना अंतिमसाध्यनी सिद्धि कोई पण जीवे करी नथी, करतो नथी; अने करशे पण नहींज. " संयममार्गे कूच करनारने तथा विविध तपो धर्मनुं सेवन करनारने सम्यक्ज्ञाननी अनिवार्य जरूर छे. कारणके ए त्रणेना (सम्यक्ज्ञान संयम-तपोधर्मना) सिवाय शासनकथित-मोक्ष थतोज नथी, जे माटे चौदपूर्वधर-श्रुतकेवलि-भगवान्-श्रीभद्रबाहुस्वामिजी जणावे छे—

नाणं पयासगं सोहओ, तवो संजमो अगुत्तिघरो । तिण्हंपि समायोगे मुक्खो, जिनशासणे भणिओ ॥ आ० नि० गाथा ॥

भावार्थः—शासनमान्यमार्गने प्रकाश करनारुं ज्ञान, अनादि अनंतकालथी संचित करेलां कर्मने शोधक-कर्ममलने दूरनारो

तपोधर्म, अने संवरभावने धारण करवावाळो संजम ए त्रण जे जीवने शासनमान्य मर्यादापूर्वक प्राप्त थाय छे त्यारे जिनेश्वरभगवंतना शासनमां कथन करेलो मोक्ष थयो एम कहेवाय छे. अंतिम साध्यनी सिद्धि करनारने संयम–तपोधर्मने स्वीकार्या छतां सम्यग्ज्ञान वगर अथवा तो सम्यग्ज्ञानी भगवन्तनी निश्रा स्वीकार्या विना इष्टफलनी प्राप्ति थतीज नथी. " आश्रवना अनेक द्वारोथी आवतां कर्मोने रोकवा माटे संवररूप संयमनी सेवना अने अनादि अनंतकालथी भेगां करेलां क्लिष्टकर्मोने निर्मूलन करवा माटे अमोघसाधनरूप तपोधर्मनी आराधना वगरनुं जीवन निरर्थक छे, निरर्थक नहिं पण अनर्थकारी छे. " आ श्रद्धा थवी, आ प्रतीति थवी अने आवीज रुचीना रंगमां रंगाइ जवुं–ओतप्रोत थवुं ते वीतराग वाणीना श्रवण उपर आधार राखे छे. अत एव मनुष्यमां वास्तविक–मनुष्यपणा तरीकेनी माणसाई आविर्भाव करवा माटे अने श्रद्धादि गुणोने विकस्वर करवा माटे वीतरागप्रणीत श्रवणनी अनिवार्य जरुर छे.

" चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहाणि इह जंतुणो माणुसत्तं० इति उत्तराध्ययने "–चउरङ्गाध्ययने ।

भावार्थः–आ पद्यनो भावार्थ आ प्रमाणे छे–आ संसारमां परिभ्रमण करनारा जीवोने आ चार उत्कृष्ट साधनो प्राप्त करवां ते दुर्लभ छे. १ मनुष्यपणुं, २ श्रवण, ३ श्रद्धा अने ४ वीर्योल्लासनी वृद्धिपूर्वक संयमनुं सेवन. आथी मनुष्यपणामां उच्च–उच्चतर–उच्चतम पदनी प्राप्ति अर्थे आत्महितकर संस्कारशून्यआत्माने संयमादिनी सौरभथी सुवासित राखवामां सर्वज्ञकथित वाणीना श्रवण–मनन–परिशीलननी अवश्यमेव जरूर छे.

समर्थवक्तानो योग—

अनेक पत्थर साथे मिश्रित थयेल हीरानी खाणमांथी नीकळेल हीरो मुगटमां जडी शकातो नथी, सोनानी खाणमांथी नीकळेल

माटी साथेनुं सुवर्ण अलंकारने योग्य बनी शकतुं नथी, बजारमांथी वेचातां लावेल शाक-अनाजनो भोज्य तरीके भोगवटो करी शकातो नथी, तेवी रीते माताना गर्भमांथी जन्मेलो बालक स्व-पर जीवन माटेनी योग्यता धरावी शकतो नथी. स्वच्छ हीरा साथे मिश्रित पत्थरा माटी विगेरेने विवेकपूर्वक दूर कर्या विना, शाकादिना सडेला भागो अने दींटा वगेरेने विवेकपूर्वक दूर कर्या सिवाय, अने अनाज साथेना माटी-कांकरा-तणखलां-फोतरां-सडेल दाणा विगेरेने विवेकपूर्वक दूर कर्या विना क्रमशः शोभाववा तरीकेनो अने भोगववा माटेनो उपयोग थवो ए लगभग नकामो छे, तेवी रीते जन्मेला बालकने समर्थ वक्ताना योग साथे वीतरागनी वाणीना श्रवण-मनन-परिशीलनथी हेय-उपादेयरूप पवित्र संस्कारोथी संस्कारिक थवानी साथे विशिष्ट विवेकने वर्तनमां मूक्या वगर मलिन संस्कारो दूर थतां नथी, अने जीवनमां स्वपर हितकर संस्कारो आविर्भाव थतां नथी. समर्थवक्ताना समागममां आव्या सिवाय श्रद्धालु श्रोताओ कल्याणकारी मार्गमां अविरत कूच करी शकतोज नथी. व्यवहारमां पण जेवी रीते हुंशियार कारीगरना हाथमां आवेल निर्माल्य वस्तु अमोघ मूल्यवाळी बने छे, तेवीरीते समर्थ वक्ता तीर्थंकर-गणधर-पूर्वधर श्रमणादि भगवंतो पण नीच-नीचतर-नीचतम उत्थानमां रहेला जीवोने उच्च-उच्चतर-उच्चतम स्थान प्राप्त करावे छे. आथीज " श्राद्धश्रोता० " वीतरागस्तोत्रना आ पद्यनो परमार्थ अत्र सफलभूत बने छे. सर्वज्ञकथित उपदेशामृतनुं आस्वादन करावनार शासनमान्य श्रमणभगवन्तोनो योग मले छे त्यारे आत्मा अनादिकालनी रखडपट्टीना प्रभावे करेला अनेकानेक जन्म-मरणरूप अनंतभवोनी परंपरानुं नियमन करवाने भाग्यशाली बने छे.

अनंतानन्त जन्ममरणनी परंपराने भोगवनारा तीर्थंकरोने पण मर्यादित भवोनुं नियमन करावनार पण श्रमणभगवन्तोना योगनो-समागमनो प्रभाव छे.

नयसारने अने धनासार्थवाहने अनुक्रमे २७–१३ तेरभवनी नियमित मर्यादा पर लावनारा श्रमणभगवंतरूप समर्थवक्तानो योग लाभदायी नीवड्यो छे, समर्थवक्तास्वरूप श्रमणभगवन्तोनी अने श्रद्धालु एवा श्रोताओनी परंपरा पण अनादिकालनी छे, ते मान्या वगर छूटको नथी. ते माटे सूत्रकृताङ्ग भा. १ लानी प्रस्तावनामां १ उपदेशक प्रथम के उपदेश प्रथम !, २ उपदेशकपणानी योग्यतावाला तीर्थंकर, अने ३ उपदेशक तथा उपदेश पण अनादिना, आ त्रण पेरेग्राफ पृ. ६–७ वांचकोए वांचवा-विचारवानी जरुर छे. आथी शासनसंस्थापक श्रीवर्द्धमानस्वामीजीनुं जीवन स्मृतिपथमां स्थिर थाय छे.

आद्यसदुपदेशक—

शासनमान्यप्रणालिका प्रमाणे अनन्तानन्त चोवीशीओ थयेली छे अने भाविमां थशे, तेथी दरेक दरेक चोवीशीमां ते ते शासनना आद्यसदुपदेशक तरीके ते ते तीर्थंकरोनेज मानी शकाय. शासननी स्थापनामां अर्थात् गणधरभगवन्तोनी गणधरपदे स्थापनामां अने चतुर्विधसंघनी स्थापनामां विश्ववन्द्य तीर्थंकरोनो महान् हिस्सो छे. " हुं पाम्यो ते रीतिए जगत्‌ना जीवो म्हारी विद्यमानतामां अने म्हारो मोक्ष थया पछी पण तेज रीतिने अनुसरवावाळा जीवो पामता रहे ते माटे आ शासननी स्थापना तेओश्री करे छे. तीर्थंकरनामकर्मनो वास्तविक पुण्योदय तो गर्भथी शरु छे, पण तीर्थंकरनामकर्मनी वास्तविक प्रवृति तो केवलज्ञाननी प्राप्ति थया पछी शरु थाय छे.

जगत्‌ना जीवोने सदुपदेशद्वाराए तारवानी अने शासनरसिक बनाववानी भावनाथी जे तीर्थंकरनामकर्म बांध्युं छे, तेनी वास्तविक प्रवृत्ति २८ वर्ष समय उपरांतनी लगभग छे. साथे साथे शासनमर्यादा पण समजी लेवानी जरुर छे के-ज्हाय जेटलो

सदुपदेशथी लाभ थवानो होय परन्तु तीर्थंकरो कैवल्यज्ञान पामीनेज उपदेश दई शके छे, अन्यथा सदुपदेशक तरीके सदुपदेश देवानुं पारमार्थिक कार्य पण करताज नथी. आ प्रसंगने सूत्रकृतांगना प्रथम भागनी प्रस्तावनामां विस्तारपूर्वक आलेखेल छे.

आद्यसंचालक—

वर्तमानशासननी स्थापना करनार श्रीवर्द्धमानस्वामीने वैशाखसुद १० ना दिवसे ऋजुवालिकानदीना किनारे केवलज्ञान थयुं. केवलज्ञानी श्रीवर्द्धमानस्वामीए तीर्थंकरनामकर्मनी वास्तविकप्रवृत्तिरूप देशना दीधी, अने ते देशनानुं शासनमान्य फल बेसवुं जोईए ते न बेठुं तेथी ते देशना निष्फल गई. बीजे दिवसे एटले वैशाखसुदि ११ ना दिवसे प्रभु विहार करीने महसेन वनमां गया, समवसरणनी रचना थया बाद चौदशो चुम्मालीश साथे अग्रेसर अगीआर ब्राह्मणो(इन्द्रभूति विगेरे ब्राह्मणो)नुं आववुं थयुं, वेदना पारंगत ते ब्राह्मणोने रही गयेली शंकानुं समाधान थतां तेओ बधा विश्ववन्द्यप्रभु पासे अनुक्रमे दीक्षा ग्रहण करे छे. दीक्षित थयेला अगीआर अग्रेसरो शासनमान्य विधि प्रमाणे अनुक्रमे तेओ “ उपन्नेइ वा, विगमेइ वा, धुवेइ वा; ” आ त्रिपदी पामीने अन्तर्मुहूर्तमां द्वादशाङ्गीनी रचना करे छे, अने प्रभु चतुर्विधसंघनी स्थापना करे छे. शासननुं संचालन कार्य श्रुतज्ञानने अवलंबीने छे, अने तेथी शासन संचालनमां पंचमगणधरभगवंत तथा तेओश्रीनी द्वादशांगी मुख्य भाग भजवे छे ते भूलवा जेवुं नथी.

वर्तमान–शासनपति–श्रीमहावीरमहाराजाना समयमां नवगणधरो केवलज्ञान पामीने मोक्षे जवानी तैयारीमां हता त्यारे ते बधाए पोताना सघलाए परिवारने दीर्घायुषी–पञ्चमगणधर भगवन्त श्रीसुधर्मास्वामीने सुपरत कर्यो, अने शासनपतिना कालधर्म पछी (मोक्षे गया पछी) प्रथम गणधर श्रीइन्द्रभूतिए(गौतमे) पण कालधर्म पामीने पोताना सघळाए परिवारने पण पञ्चमगणधरने सुपरत कर्यो.

आथी श्रीमहावीरमहाराजाना समयथी अने कालधर्म पाम्या पछी पण सर्व साधु–साध्वीओ तेओश्रीना सन्तानीयापणे वर्ते छे ए शास्त्रप्रसिद्ध वात छे. एटलुं ज नहिं पण दशगणधरो मोक्षे गया पछी शासनमां तेओश्रीनी (पञ्चमगणधर श्रीसुधर्मास्वामीनी) द्वादशाङ्गी प्रवर्ती छे–के जेना प्रभावे २४७८ वर्षना व्हाणां वही गयां अने लगभग हजु बीजां अढार हजार उपरान्तना व्हाणां वावां बाकी छे, छतां पण पू. आचार्य भगवन्तो वर्तमानमां स्वपरकल्याणार्थे ते द्वादशांगीना सूत्रादिनी अमोघ वर्षा वर्षावी रह्या छे अने वर्षावशे ते बधो प्रताप पंचमगणधरभगवंतनी द्वादशांगीनो छे. मोक्षमार्गना अभिलाषी साधु–साध्वी–श्रावक–श्राविकाए स्वपरहितकर मोक्षमार्गनी आराधनामां अस्खलितगमन करीने इष्ट रिद्धिसिद्धि साधवी होय तेओने आ द्वादशाङ्गी अने द्वादशाङ्गीने अनुसरनारा जैनागमो एज परमाधार छे. आ भलामणथी सदा सजाग रहेवानी अनिवार्य जरुर छे. आथीज शासनना संचालनना मुख्य हेतुरूप पंचमगणधरनी द्वादशांगी छे, अने तेथीज शासनना आद्यसंचालक तरीके तेओश्रीनुं आदरसत्कार–बहुमानादि करीए तेटलां ओछांज छे.

सुधर्मास्वामीजीनुं जीवन.

आसन्नोपकारी–अन्तिम–श्रीवीरविभुना सुशिष्य–पंचमगणधर–भगवान् श्रीसुधर्मास्वामीजी छे, अने आ ग्रन्थमां आवेला सर्व सूत्रोना रचयिता पण तेओ छे, एटले तेओश्रीना जीवननी संक्षिप्त नोंधने स्मृतिपथमां लईने वीर्योल्लासनो वेग वधारवापूर्वक आगळ वधीए. प्रभुश्रीमहावीर–महाराजानी पाटपरम्परामां ते पांचमी पाटे छे, अने तेओश्रीनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे, कुल्लागनामना एक गाममां अग्निवैश्यायन गोत्रवाळा धम्मिल ब्राह्मण रहेता हता, अने तेमने भद्दिला नामनी स्त्री हती. आ बन्नेने संसारनी लीलाना अनुभवमां आगळ वधतां भद्दिलाए एक पुत्रने जन्म आप्यो, अने तेओए ते पुत्रने विद्याभ्यासादिमां अति कुशलता प्राप्त करवा माटे

विद्यागुरुने सुपरत कर्यो. पितानी आज्ञाथी पोते विद्यागुरु पासे रहीने विवेक–विनयपूर्वक चौद विद्यानो पारंगत बन्यो एटलुंज नहिं पण तेओनी (आर्यसुधर्मानी) निश्रामां रहीने विद्या संपादनना अर्थी–पांचसो शिष्यो अध्ययन करता हता. पचास वर्ष लगभग पठनपाठन, वादविवाद अने ब्राह्मणकुळने अनुसरती क्रियाकाण्डमां व्यतीत कर्यां. एक अवसरे अपापा नामनी नगरीमां सोमिल ब्राह्मणने घेर यज्ञहोमनी क्रिया करवा–करावचा माटे देशपरदेशथी ब्राह्मणो आवेला छे, ते सर्व ब्राह्मणोमां आर्यइन्द्रभूति, आर्यअग्निभूति, आर्यवायुभूति, आर्यव्यक्त अने आर्यसुधर्मादि अगीआर ब्राह्मणो आदि मोटी संख्यामां अनेक जातिना ब्राह्मणो एकठा मल्या छे, आ अवसरे केवलज्ञानी विभु–श्रीमहावीर–महाराजा ऋजुवालिकानदी पासेना क्षेत्रमांथी विहार करीने महसेनवनमां पधार्या छे,–एटले देवोए प्रभुश्रीवीर पधारे छे माटे समवसरणनी रचना करी छे. आकाशमार्गे आवता जता विमानोने अने देवदेवीओना परिवारने निहाळीने यज्ञनी महत्ता माननारा आगेवान ब्राह्मणो अने तेमनो सघलोए परिवार आश्चर्य–चकित थाय छे, एटलुं ज नहिं पण आ बधां विमानो, देवेन्द्रो, देवो, देवीओ अने सघलोए जनसमुदाय अमारा यज्ञमां नहिं आवतां भगवान श्रीमहावीरमहाराजाने वन्दन करवाने अने वाणी श्रवण करवाने जाय छे, आ वातनो निर्णय करीने आगेवान ब्राह्मणगौतमगोत्रवाळा आर्यइन्द्रभूति सर्वज्ञपणाना अहंभाव साथे भगवान् श्रीमहावीरमहाराजा साथे वाद करीने जीतवा माटे जाय छे, अने छेवटे केवी रीते जीताइ जाय छे तेनुं संक्षिप्तवर्णन श्रीकल्पसूत्रना गणधरवाद नामना प्रसिद्ध व्याख्यानावसरे चतुर्विधसंघ नियमित श्रवण करे छे. गणधरवाद–विवाद सम्बन्धी शंका समाधान विस्तारथी जाणवानी अभिलाषावाळाए श्रीआवश्यकसूत्र, श्रीविशेषावश्यकादि प्रौढग्रन्थोनुं वांचन, मनन, परिशीलन करवुं जरूरी छे, आर्यइन्द्रभूति पोतानी घणा वर्षोनी जूनी शंकानुं समाधान पामीने

जीताइ गया पछी पोताना पांचसो शिष्योनी साथे दीक्षित थाय छे, अने प्रथम गणधर तरीके प्रसिद्ध थाय छे. त्यारपछी अनुक्रमे पोताना भाइ अग्निभूति पोताना ज्येष्ठ बान्धवने पाछो लइ जवाने जीतवानी मुरादथी भगवान् श्रीमहावीर पासे आवे छे. अने तुरत पोतानी शङ्काना समाधान साथे ते पण जीताइ जाय छे. पोताना पांचसो शिष्य साथे दीक्षा लइने बीजा गणधर तरीके प्रसिद्ध थाय छे, ते पछी अमारा वडील भाइ आर्य–इन्द्रभूति अने आर्य अग्निभूतिए " जेओने मुरब्बी तरीके स्वीकार्या तेओश्री म्हारा पण मुरब्बी छे " ए भावथी अनुक्रमे आर्यवायुभूति, आर्यव्यक्त अने आर्यसुधर्मा विगेरे आगेवान ब्राह्मणो आवे छे, तेओना हृदयना खूणामां छुपाइ रहेली शंकाओने प्रभु महावीर जणावे छे, अने सर्वेनी शङ्काना समाधान तेओना वेदना ते ते शंकितपदोद्वारा वास्तविक अर्थनुं अनुस्यूत सम्बन्ध साथे निवेदन करीने शंकाना निरसनपूर्वक समजावे छे, अन्ते आगेवान अगीआर ब्राह्मणो पोताना शिष्यादि ४४००) ना परिवार साथे दीक्षित थाय छे; ए वात शासनमान्य–शास्त्र सुप्रसिद्ध छे. आ अवसरे अनुक्रमे चार गणधरोनी जेम सकल अंगादिना रचयिता आ पञ्चमगणधर भगवान् श्रीसुधर्मास्वामीजी छे तेओनी उम्मर पचास वर्षनी छे. दीक्षा लीधा पछी तेओए त्रीस वर्ष पर्यन्त श्रीवीरविभुना चरणकमलनी उपासना करी छे, अने श्रीमहावीरमहाराजाना निर्वाण पछी बाणुं वर्षे एटले बाणुं वर्षनी उम्मरे विशुद्ध भावनाथी भावित थयेला ते पञ्चमगणधर भगवानने चारघनघातीकर्म तूटवाथी केवलज्ञान प्रगट थाय छे, केवलज्ञानना पर्यायथी विभूषित थयेला भगवान् श्री सुधर्मास्वामीजीए ग्रामानुग्राम विहार करीने अनेक भव्योनो उद्धार कर्यो, अने आठ वर्ष सुधी केवली पर्याय पूर्ण करीने एक महिनाना चोविहार उपवासनी घोर तपश्चर्या तपीने, पादपोपगमन नामना अनशनने अनुसरीने, अने सकल कर्मनो क्षय करीने भगवान् श्रीसुधर्मास्वामीजी मोक्षे गया, अने भगवान् श्रीमहावीरमहाराजना

मोक्षगमन पछी बे गणधरो जीवता हता, जेमां १ आर्य श्रीइन्द्रभूति प्रथम गणधर अने २ आर्य श्रीसुधर्मास्वामीजी पंचमगणधर हता. पूर्वना नवगणधरोए जेम पोतानो शिष्य–परिवारादि श्रीसुधर्मास्वामीजीने भळाव्यो हतो, तेम प्रथमगणधरभगवन्ते पण पोताना सघला परिवारने श्री सुधर्मास्वामीजीने भळावीने पोते मोक्षे गया, एटले ते अवसरनी शरूआतथी अद्यापि पर्यन्तना जे साधु–साध्वीओ छे ते बधाए श्रीआर्यसुधर्मास्वामिजीना शिष्य–संतानो छे. जुओ–स्थविरावलिमां आ प्रमाणे उल्लेख छे–" जे इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरंति। एएणं सव्वे अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स आवच्चिज्जा ॥ "

श्रीद्वादशाङ्गीना रचनावसरे–स्थले स्थले भगवान् श्रीसुधर्माजी पोताना शिष्य श्रीजंबूस्वामीने उद्देशीने कथन करे छे, माटे तेओश्रीना जीवनने वांचीने, विचारीने अने परिशीलन करीने अनुमोदनरूप अमृतनुं आस्वादन करीए !!!

अंतिमकेवलीनी जीवनचर्या—

पञ्चमगणधर भगवान् श्री सुधर्मास्वामीजीना प्रथम सुशिष्य के जे वर्तमान शासनमां अंतिम केवली श्री जम्बूस्वामीजी कहेवाय छे, सूत्रकार श्रीपञ्चमगणधर छे, अने सूत्रथी अनन्तर आगमने प्राप्त करनार श्रीजम्बूस्वामीजी होवाथी तेओश्रीनुं जीवन जाणवुं जरूरी जाणीने अत्र विचाराय छे. लगभग २४७७ वर्षोना व्हाणां वीती गयां, छतां पण आ महापुरुषोनी जीवन गाथाओना यशोगान गाइए छीए, त्यारे भूतकालने भूली जवाय छे, अने तेओनुं भूतकालनुं जीवन वर्तमानकालना साक्षात्कारोनो अनुभव करावे छे. आ जम्बूद्वीपना दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रमां मगधनामनो देश छे, अने तेनी राज्यधानी राजगृहनामना नगरमां हती ते नगरमां अति धनवान अने ओट वगरनी संपत्तिना भव्यतरंगोना अनुभवो श्रेष्ठिश्रीऋषभ अने धारिणी करतां हतां. संसारनी लीलानो अनुभव

करतां धारिणीनी कुक्षिमां देवलोकमांथी च्यवीने एक देव गर्भपणे उत्पन्न थयो, अने ते गर्भनो परिपक्वकाले पुत्रपणे जन्म थयो. स्वप्ना अने दोहदना भावने अनुसरतुं श्रेष्ठिना सगांवहालांए मळी जम्बू एवुं नाम स्थान कर्युं.

अने ते जम्बूकुमारे श्रीसुधर्मास्वामिजीनी प्रथमतः देशना श्रवण करीने सम्यक्त्वसहित शीलव्रत अंगीकार कर्युं. श्रीजम्बूस्वामिने परणवानी इच्छा नहोती, छतां मातपिताना अतिआग्रहथी तेओ आठ कन्याओने परण्या, परन्तु ते नवोढा स्त्रीओनी स्नेहवर्धक वाणीथी लेशभर व्यामोहित थया नहिं, कारण के–संसारसमुद्रनो पार पामवा माटे जेणे सम्यक्त्व अने शील नामना बे तुंबडा ग्रहण कर्यां छे, ते श्रीजम्बूस्वामीजी स्त्रीरूपसरिताओमां डूबी शकता ज नथी. हवे रात्रिमां ते स्त्रीओ साथे संसार छोडवा नहिं छोडवा सम्बन्धनी अनेक प्रकारनी शंकाओना समाधान आपीने, अने सुन्दर विचारविनिमय करीने ते आठे स्त्रीओने प्रतिबोध पमाडीने दीक्षानी अर्थिनी बनावी, एटलुंज नहिं पण तेज अवसरे पोताना मकानमां रात्रिमां प्रभवनामनो चोर बीजा पांचसो चोरो साथे चोरी करवा माटे आव्यो हतो, ते बधाए स्त्रीओ साथे थतो विनिमय श्रवण करीने अने स्त्रीओसहित ९९ नवाणुं क्रोडनी संपत्तिने छोडी जनार छे ते ए वातने विवेकपूर्वक जाणीने हृदयमां ते संबंधी विवेकपूर्वकनो विचार करीने चोरी करवा आवेला ते चोरे विनाशिसंपत्तिओनो मोहमूकीने अविनाशि–महामूल्यवालां त्रण रत्नोरूपी संपत्तिनी चोरी करवानो निर्णय कर्यो. सवारमां पांचसो चोर, आठ स्त्रीओ, आठे स्त्रीओना मातपिता, पोतानाये मातपिता अने पोते मळीने कुले ५२७ पांचसो सत्तावीसनी संख्यामां दीक्षित थया. भगवान् सुधर्मास्वामीजीनी पासे श्रीजम्बूस्वामी प्रथम शिष्य थया, अने तेमनी (जम्बूस्वामीजीनी) पाटे श्रीप्रभवस्वामीजी आव्या. श्रीजंबूस्वामीजी सोल वर्ष गृहस्थाश्रममां रहीने, ते पछी दीक्षा लईने, वीश वर्ष सुधी श्रीसुधर्मास्वामीजीना चरणकमलनी उपासना करीने

चुम्मालीश वर्ष केवलिपर्याय पालीने, समग्र एंशी वर्षनु आयुष्य पूर्ण करीने परमपदने पाम्या, श्रीजम्बूस्वामीजी मोक्षे गया पछी कोई पण केवलज्ञान पाम्युं नथी, अर्थात् केवलज्ञान पामीने मोक्षे गयुं नथी, माटे तेओश्रीने शासनमां अन्तिमकेवलीना नामथी पिछाणे छे.

सूत्ररचनानी मर्यादा.

मानवजीवननी महत्ता समजनारने ज्यारे शासनमान्य-समर्थवक्ता समान महापुरुषोनो समागम थाय छे, अने ते समागममां तेओश्रीना मुखमांथी नीकलती वीतरागनी वाणीनुं वास्तविक रीतिए पान थाय छे, त्यारे ते ते योग्य भव्यात्माओना विवेकनेत्रो विकसित थाय छे; साथे साथे शासनना संस्थापक प्रत्ये आदर-बहुमानपूर्वक सर्वस्वसमर्पणनी सुन्दर भावनाओ जागृत थाय छे. आ शासननी संस्थापना शी रीते थई ?, केवा संजोगोमां थई ?, कोणे करी ?, केवी रीते करी ?, अने ते रीतिने प्रथम अनुसरनाराओनो सुमेल केवी रीते सधायो ?; विगेरे अनेकविध प्रश्नोना खुलासा थइ जाय छे, छतां पण श्रद्धाना डगमगता पायाने अतीव दृढीभूत बनावनारा होय तो शासनमान्य महापुरुषोना जीवनप्रसंगो छे. सघलाए महापुरुषोना जीवनप्रसंगोरूप पवित्र प्रासादना सुवर्णकलश समान शासनमान्य-शासनसंस्थापक-श्रीमहावीरप्रभु छे, शासनसंचालक श्रीसुधर्मास्वामी छे, अने शासनना परमरहस्योने झीलनार श्रीजम्बूस्वामीजी छे; आ त्रण व्यक्तिओ अग्रगण्य छे, अने तेथी त्रण पुरुषोना जीवनने संक्षिप्तथी समजीने ते पछी आ त्रण पैकि आ महापुरुष पञ्चमगणधरे एकवीस हजार वर्षना शासननी संचालना माटे सूत्रोनी रचनानो प्रारम्भ केवी रीतिए कर्यो ते विचारीए.

आसन्नोपकारी अन्तिम तीर्थंकर श्रीमहावीरमहाराजा पासे सुधर्मास्वामीनुं आववुं थयुं, अने भगवाने नामगोत्रथी सम्बोधीने हृदयगतवेदना परस्पर विसंवादिपदोथी थयेल शङ्काओ जणावीने तेज पदोना वास्तविक अर्थोथी शङ्कानुं निरसन करवा साथे ते

अग्रेसर ब्राह्मण पोताना परिवार साथे दीक्षित थयेला ते सुधर्मास्वामिजी गणधरपदे स्थित थाय छे, गणधरपदे स्थित थयेला गणधर भगवन्त पूछे छे के–हे भयवं ! किं तत्तं ? (आ प्रश्नने प्रदक्षिणा दई वन्दन नमस्कार करीने नतमस्तके पूछे छे) अने त्रण वखत आ प्रश्न उपरनी रीतिए पूछे छे अने भगवान् श्रीमुखे अनुक्रमे उपन्नेइ वा, विगमेइ वा, धुवेइ वा प्रत्युत्तररूपे कथन करे छे.

सर्वज्ञ पासेथी समाधानना सुधास्वरूपे आ त्रण पदो बीजरूपे पामीने बीजबुद्धि अने कोष्ठबुद्धिना धणी द्वादशाङ्गीनी रचना करे छे. रचनानी आदिमां " सुयं मे आउसंतेण भगवया एवमक्खायं " अने अन्तमां " त्तिबेत्ति " ए पदो मूकीने गणधर-भगवन्तो पोतानी लघुताने प्रतिपादन करे छे, कारणके–ज्यारे पोताना शिष्यने सूत्रसंदर्भने आपे छे त्यारे हुं तने जणावुं छुं एम कहेता नथी परन्तु भगवान् महावीर पासेथी म्हें सांभळ्युं छे तेज तने हुं अनुवादरूप जणावुं छुं. आथी हुं कहेतो नथी, म्हारा घरनुं कहेतो नथी, तेम मनोघडन्त कल्पनाओ पण ठालवतो नथी; ए उपरना प्रथम जणावेला " सुयंमे० " इत्यादि पदोथी ध्वनित थाय छे, अने " त्तिबेमि " पदोथी स्वमनीषिकानो भारपूर्वक परिहार सूचवे छे. अध्ययनो आदिमां अगर सूत्रोनी समाप्तिमां उपर जणावेलां पदो न होय तो पण अवश्यमेव उपर जणावेलां ते ते पदो छेज, एम वांचकोए अने विचारकोए तेम अभ्यासकोए अवश्यमेव समजी लेवुंज जोइए एवी आ शासननी मर्यादा छे. आ मर्यादा अनुसरनाराओने प्रातःस्मरणीय पूज्य श्रीतीर्थंकरोए कथन करेला अर्थनुं अमृतास्वादन अने पूज्य गणधर भगवन्तना सूत्रोनुं सुधास्वादन स्पष्टपणे निरंतर थयुं छे थाय छे, अने थशे ए निःशंक बीना छे.

श्रुतसंपदाना मालीक—

वर्तमान जैनशासनमां नर्तती द्वादशाङ्गीना रचयिता पञ्चम गणधर भगवन्त श्रीसुधर्मास्वामीजी हता, अने छे. पू. गणधरभगवन्तो

द्वादशांगी रचवानो प्रारम्भ कइ रीते करे छे ? ते पूर्वे विचारी गया छीए. अने तेथी त्रिपदी पामीने तेओश्री अंगोनी रचना करवाना अवसरे अनुक्रमे आचारांग–सूत्रकृताङ्ग–स्थानाङ्ग–समवायाङ्ग–भगवतीजी अने छट्ठं अंग श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गनी रचना करे छे. शासननी मर्यादा समजनारे समजवुं जोइए के सूत्र सिवायना भाष्य–निर्युक्ति–चूर्णि–वृत्ति विगेरे वर्तती सकलश्रुतसंपदाना मालीक तेओश्री (पञ्चम गणधर भगवन्त) हता अने छे, कारणके अर्थथी अने सूत्रथी–आत्मागम, अनन्तरागम अने परम्परागमना भेदोने विवेक-पूर्वक समजनारने उपरनी बीना समजाववी पडे तेम नथी. " सर्व श्रुतसम्पदाना मालीक पञ्चम गणधर भगवन् श्री सुधर्मास्वामी हता, अने छे " आ वातने स्मृतिपथमांथी कोई विसरी जाय नहीं अने ते स्मरण जागतुं, जीवतुं रहे ते माटे चौमासी–सांवत्सरिक प्रति-क्रमणमां त्रीजा खामणा प्रसङ्गे, चतुर्विधसंघ ते प्रसंगने अवश्यमेव याद करे छे. एटले अक्खरं वा, पयं वा, गाहं वा, सिलोगं वा इत्यादि पदोद्वारा स्पष्टपणे सूचवाय छे. आ शासननी परम्परामां हमने अक्षर के पद, गाथा के श्लोक विगेरे जे मळ्युं छे, ते तमने अपाय छे, अने अपाती चीजमां अमारी मालीकी नथी पण ते पूर्व पुण्य पुरुषोनी छे. आथी समजनारने हवे स्पष्ट थशे के चौदपूर्वधरनी के दशपूर्वधरनी रचनाओ होय, निर्युक्तिकारनी के भाष्यकारनी रचनाओ होय, चूर्णिकारनी के वृत्तिकारोनी रचनाओ होय, सूरिपुन्दरोनी के वाचकवर्योनी रचनाओ होय, प्रकरणकारोनी के संग्रहकारोनी रचनाओ होय तो पण दरेके दरेक रचनाओनी परम्पराना उंडाणने तपासीए तो शासनमान्य–सर्वश्रुत सम्पदाना मालीक श्रीसुधर्मास्वामी हता, छे, अने आ शासननी परिसमाप्ति पर्यन्त तेओश्रीज रहेशे.

अंगोनो अनुस्यूत सम्बन्ध—

शासनमान्य श्रीआचाराङ्गमां अर्थिओ माटे पांच आचारोनुं, तेना भेदोनुं, अने श्रमणपणुं पामेला श्रमणभगवन्तोने श्रमणजीवन

जीववाना आचारोनुं सुन्दर रीतिए दिग्दर्शन कराव्युं छे. शासनमान्य–आचारोथी वासित थयेलो आत्मा बांधेला कर्मना स्वरूपने जाणीने ते कर्मोने जडमूलथी तोडवा कटिबद्ध थाय तेथीज सूत्रकार, श्री सूत्रकृतांगना प्रथम अध्ययनना प्रथम उद्देशानुं प्रथम सूत्र आ प्रमाणे जणावे छे. 'बुज्झिज्जइ' 'तिउट्टिज्जइ' इत्यादि पदोद्वारा कर्मबंधनना स्वरूपने, नवा आवतां कर्मोना स्वरूपने, अने तोडवाना स्वरूपने जाणीने नाश करवा उद्यमवन्त थाय, छतां विविध–इतरदर्शनकारोनी विविध–मान्यताओथी व्यामोहित न थाय ते माटे स्वसमयना सिद्धान्तोथी आत्माने केवो लाभ छे ?, अने परसमयना सिद्धान्तोने तथा आचारोने मानवाथी–आचरवाथी केटलुं नुकशान छे ?, ते सम्बन्धमां विस्तारथी समजावीने आ सूत्रकृतांगमां ठाम–ठाम शासनमान्य–श्रद्धा–प्रतीति–रुचिने अतीव द्रढीभूत बनाववा माटेना बे श्रुतस्कन्धो २३ अध्ययनो अनेकभावथी भरपूर भरेला छे. श्री आचाराङ्गना सूत्रोनुं सुधास्वादन करीने, आचारथी वास्तविकरीतिए वासित थइने, अने श्री सूत्रकृताङ्गना अध्ययनोना सूत्रोनुं अमृतपान करीने श्रद्धा द्रढीभूत बनेली होय तेवाओने पण शासनमान्य पदार्थोना वर्गीकरण समजवानी अवश्यमेव जरुर छे. वर्गीकरण एटले एकत्ववाची, द्वित्ववाची विगेरे पदार्थो केटला छे ?, अने कया कया छे ?, ते समजवाथी बुद्धिवैभव विशालताने पामे छे. कोई पुस्तकालयमां जाओ, परन्तु वर्गीकरणरूपे ते ग्रन्थोनी नोंध मले तो आर्थीओना उत्साहमां वृद्धि थाय छे. जेम कोई अर्थि पूछे के–न्यायविभागना प्राथमिककक्षाना, मध्यमकक्षाना अने अन्तिमकक्षाना ग्रन्थो तमारा पुस्तकालयमां केटला छे ?, जो वर्गीकरणरीतिए नोंध राखी होय तो (विषयवार ग्रन्थोनी नोंध राखी होय तो) तुरत नोंधपोथी आगल धरे छे, अने ते अवसरे मागनारने संतोष थाय छे; तेवी रीते आ शासनमां विषयवार एक संख्यावाचक बे, त्रण एम अनुक्रमे दश संख्या सुधीना पदार्थोना समुच्चय तरीके त्रीजुं अंग स्थानांग=ठाणांग नामना अंगमां अने वधु संख्याना वर्गीकरणरूपे

आ चार अंगनो निष्णात थया पछी साथे दश वर्षनो दीक्षापर्याय थयो होय अने करेली नोंध चोथा श्रीसमवायांगसूत्रमां आवे छे. आ चार अंगनो निष्णात थया पछी साथे दश वर्षनो दीक्षापर्याय थयो होय अने योगोद्वहन कर्या होय तेने विवाहपन्नत्ति (पू. सुधर्मास्वामीजीए आपेल नाम) के जेनुं नाम चतुर्विधसंघे श्रीभगवतीजी राखेल छे, तेने अंगने भणवा-भणाववानी योग्यता प्राप्त थाय छे. कारण के चारे अनुयोगने अनुसरता अनेकविध प्रसंगो प्रश्नोत्तररूपे आ पंचम (अंगमां) भर्या छे, अने आ पांचमा अंगना विधि विधान साथे योगोद्वहनपूर्वक अभ्यासी बननारने सर्व श्रुत भणवा-भणाववानी आज्ञा अपाय छे, तेथी तेनुं (भगवतीजीनुं) अतीव महार्द्धिकपणुं छे. आ रीतिए अंगोनी अनुक्रम रचना अने तेओनो अनुस्यूत-सम्बन्ध विचारवाथी समजाशे के-पांचमा अंगने भण्या पछी जैनशासनना सिद्धान्तो जेना जीवनमां पची गया होय तेवा महापुरुषोने लाभ केवो थाय छे ? अने तेनो विरोध करवाथी केवुं नुकशान थाय छे ?, ते जाणवानी जरुर छे. आ शासनना वास्तविक—ऐतिहासिक-प्रसंगोने जणावनार होय तो आ छट्ठुं अंग-श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्ग मुख्य छे. आ रीतिए प्रथम श्री आचारांगथी छट्ठा श्रीज्ञाताधर्मकथांग सुधीना अनुस्यूत-संबंधने अत्र प्रासंगिक जणाव्यो.

आ ग्रन्थनुं नाम अने सामग्रीओ—

पञ्चमगणधर भगवन्त श्रीसुधर्मास्वामीजीए पांचे अंगनां नामो ते ते अंगमां भरेला भव्य भावने अनुसरीने यथार्थ आपेलां छे, तेवी रीते तेओश्रीए आ छट्ठा अंगनुं नाम श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्ग तरीके आपेलुं छे. ज्ञाताशब्दनी वृत्ति लखतां श्रीहरिभद्रसूरीश्वरजी श्रीदशवैकालिकमां जणावे छे-' ज्ञायतेऽस्मिन् अतिदार्ष्टान्तिकोऽर्थ ' इति आथी तेनुं नाम यथार्थ गुणनिष्पन्न छे.

श्रीजम्बूस्वामी पंचमगणधर भगवन्तने पूछे छे के-हे भगवंत ! ज्ञाताधर्मकथाङ्गमां क्या भावो छे ?, एटले ते ज्ञाताधर्मकथाङ्गमां

भगवान् श्रीमहावीरप्रभुए क्या भावो वर्णव्या छे ?; आ प्रश्नना समाधानमां. श्रीसुधर्मास्वामीजी जणावे छे के-हे जम्बू ! भगवान् श्रीमहावीरे आ छट्ठा अंगना बे श्रुतस्कंध-"णायाणि-ज्ञातानि" एटले दार्ष्टान्तिक अर्थनी सिद्धि माटे आपेला दृष्टान्तोना उदाहरणोना, नामथी, अने बीजो श्रुतस्कंध बनेला बनाववानी नोंधरूप धर्मकथाओना नामथी शास्त्रमां सुप्रसिद्ध छे, ज्ञाता नामना प्रथम श्रुतस्कंधना १९ ओगणीस अध्ययनो छे, अने धर्मकथा नामनो बीजो श्रुतस्कंध छे तेना १० वर्गो छे, अने बीजा श्रुतस्कंधना २०६ अध्ययनो छे. प्रथम श्रुतस्कंधना १९ अध्ययनोना नाम अनुक्रमे आ प्रमाणे छे. अनुक्रमे ज्ञात शब्दथी १ उत्क्षिप्त, २ संघाटक, ३ अण्डक, ४ कूर्म, ५ शैलक, ६ तुम्ब, ७ रोहिणी, ८ मल्ली, ९ माकन्दी, १० चन्द्र, ११ दावद्रव, १२ उदक, १३ दर्दुर, १४ तेतलीपुत्र, १५ नन्दीफल, १६ अपरकङ्का, १७ आकीर्ण, १८ सुसुमा; अने १९ पुण्डरीक आ नामना ओगणीस अध्ययनो छे.

अत्र आ ग्रन्थना प्रथम विभागमां प्रथम उत्क्षिप्त नामना अध्ययनथी मल्ली अध्ययन सुधीना आठे अध्ययनो लीधेला छे, तेथी अत्र आठ अध्ययनोनो सारांश आपेलो छे. अने ते सिवायना प्रथम श्रुतस्कंधना अगीआर अध्ययनो तथा बीजा श्रुतस्कंधना दशवर्गो अने तेना सर्व अध्ययनोनो सारांश आ ग्रन्थना बीजा विभागमां आवशे.

आ प्रथम-विभागरूप ग्रन्थनी सामग्रीओमां लगभग जैनशासननो झलकतो इतिहास छे, धर्मनी सन्मुख थनाराओने माटे अने पूर्वे धर्म पामेलाओने वधु स्थिर करवा माटे आ सामग्रीओ अमोघ साधनरूप छे; अने द्वितीय विभाग जे हवे पछी प्रकाशन करवामां आवशे ते पण पूर्वे जणावेल बीना माटे मशहूर छे, अने रहशे.

आ ग्रन्थना वृत्तिकार—

आ श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गना वृत्तिकार श्रीअभयदेवसूरिजी छे. अगीआर अंगो पैकी-श्रीआचारांगनी अने श्री सूत्रकृताङ्गनी (पूर्वे जणावेला आ बे अंगोनी) वृत्ति करनार श्रीशीलांकसूरिजी छे. आ बे अंगनी वृत्ति करेली होवाथी श्रीअभयदेवसूरिजीए त्रीजा श्रीस्थानाङ्गसूत्रनी वृत्ति करवानो प्रारम्भ कर्यो, अने ते पछी अनुक्रमे श्रीसमावायाङ्गसूत्रथी अगीआरमा श्रीविपाक सुधीना नवे अंगोनी वृत्ति तेओश्रीए करी; आथी तेओश्रीने नवाङ्गीवृत्तिकार तरीके चतुर्विध संघ सारी रीते पीछाणे छे. शासनमान्य सूत्रोनी वृत्ति करतां वृत्तिकारोना हृदय विशाल होय छे, अने तेवी विशालताने श्रीअभयदेवसूरिजी अनुसर्या छे. अंग-उपांग-सूत्रादि पर पूर्वाचार्योए निर्युक्ति-भाष्य-चूर्णि विगेरे जे जे रचनाओ करी होय ते ते रचनाओना भावो स्मृतिपथमां स्थिर करीने-वृत्ति आलेखन अवसरे बन्धवेसता ते पूर्वाचार्यप्रणीत-भावोने आलेखवामां लेशभर संकोच राखताज नथी, ते हार्दिक-विशालतानुं प्रतीक छे. " पूर्वाचार्योए जे कह्युं ते ज कहे छे, पूर्वाचार्यप्रणीत केटलीक पङ्क्तिओ एक सरखी छे. लखाणना भावो लगभग सरखा छे तेम नवीन आलेखन घणुंज ओछुं छे. विगेरे " कहेवुं अने उपरथी वधु पडतुं कहेवुं के पूर्व आलेखनमांथी चोरी करी छे, आवी रीते कहेवानी अने समजवानी उतावल कोई पण वांचके, विचारके के अभ्यासके करवीज नहिं. तत्त्वदृष्टिए विचारीए तो पूर्वपुरुषो प्रत्येनुं आ बहुमान सूचवे छे. मार्गानुसारिना गुणोनुं वर्णन करतां कलिकालसर्वज्ञे पूर्वाचार्यना आलेखननुं अनुकरण कर्युं छे. आथीज विशालहृदयना वृत्तिकारोनो ए स्पष्ट निर्णय हतो के-" पूर्वपुरुषोए जे बाबतनो खूलासो न कर्यो होय ते सम्बन्धमां खूलासो करवानो होय, परन्तु जे विषयमां पहेलांनुं मले त्यां सुधी म्हारी बुद्धिनुं कहेवुंज नहिं आ हृदय-विशालतानुं वास्तविक प्रतीक छे.

पूर्वना वृद्धपुरुषो प्रत्ये नवाङ्गीवृत्तिकारने अतिशय बहुमान हतुं, अने तेथीज पंचमाङ्ग–श्रीविवाहपन्नत्तिनी वृत्तिना प्रारम्भमां हृदयना भाव ध्वनित करे छे–" एतट्टीकाचूर्णि जीवाभिगमादिवृत्तिलेशां च संयोज्य पञ्चमाङ्गं विवृणोमि विशेषतः किञ्चित्० " इत्यादि। आ रीतिए ग्रंथना वृत्तिकारने ओळखवाथी ग्रंथस्थित–भावोने जाणतां हृदयना हार्दिक बहुमान वृद्धि पामे छे.

ग्रन्थसामग्रीना प्रकारो—

आ ग्रन्थनी सर्व सामग्रीओ कथास्वरूपे छे, तेथी कथाना प्रकारो समजवानी अत्र आवश्यकता छे; माटे ते प्रकारोने अत्र विचारीए। आ चराचर विश्वमां मुख्यतः कथाओ बे प्रकारनी प्रवर्ते छे, एक बनेला बनावोरूप कथाओ प्रवर्त्ते छे, अने बीजी कल्पनाओनी जमावटरूपे कथाओ प्रवर्त्ते छे. आथीज–अनुक्रमे चरित अने कल्पित ए बे विभागमां कथाओ वहेंचायली होय छे; तेवी रीते शास्त्रोमां पण ते बे विभागरूपे कथाओ आवे छे. कल्पित कथाओ रमूज साथे बोध आपे छे. जेम–श्री उत्तराध्ययनना द्रुमपत्रीय–अध्ययननो भाव विचारीए तो साक्षररत्न–डाह्याभाइ धोळशाजीना वचनोमां जणावाय छे के " पीपल पान खरंत हसती कुंपलीयां मुज वीती तुज वीतशे धीरी बापुडीयां " आज भावने अनुसरतां उत्तराध्ययनना ते अध्ययनना पद्यमां " जह तुब्भे " विगेरे पदो छे ते तेने पुष्ट करे छे. आवी घटनाओ द्वारा उपदेश अपाय छे, छतां ते कथा कल्पित छे, कारण के–पांदडुं शीखामण आपे अने कुंपलोनुं हसवुं थाय ए बुद्धिने असंगत छे, छतां कथाना भावने समजीए तो घटना युक्तियुक्त छे. आवां आवां अनेक कल्पित दृष्टान्तो शास्त्रोमां आवे छे. आ प्रसिद्ध थता ग्रंथमां प्रथम श्रुतस्कन्धना ओगणीस अध्ययनोमां चरितो अने कल्पितोने अनुरूप ज्ञातानि–दृष्टान्तो आवे छे. चरित्रो बनेला बनावो उपर आधार राखे छे. बनेलो बनाव वांचनकाले अगर श्रवणकाले चमत्कारिक लागे अगर

न लागे ते चरित आलेखन करनारने जोवानुं होतुंज नथी. श्रीत्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित्रमां बनेला बनावोने स्थान छे, पण आश्चर्य उत्पन्न करवा माटे रमूजने स्थान नथी, अवसर्पिणी कालमां वर्ण–गन्ध–रस–स्पर्शना घसारा अनुभवीए छीए तेवा विषमकालमां बनेला बनावोनी नोंध राखवी ए भावी प्रजा माटे अतीव हितकर कार्य छे. पूर्वपुरुषना सम्बन्धमां बनेला बनावोनी कथाओरूप साहित्य ए जैनोनो झलकतो इतिहास छे, ते उपरथी घणुं घणुं शीखवानुं, घणुं घणुं विचारवानुं, अने घणुं घणुं समजवानुं, बोध लेवानुं, अने अनुकरण करवानुं तेमांथी मळी आवे छे. शासनमान्य सिद्धान्तो अने कथनो कोणे कोणे पचाव्यां ?, शासननी मान्यतामां कोण द्रढ रह्युं ?, तेमां द्रढ रहेवाथी शो लाभ मळ्यो ?, मान्यता विरुद्ध वर्तन करवाथी क्यो गेरलाभ मळ्यो ?; आ विगेरे शासनमान्य अनेक सिद्धान्तो–वर्तनोने जीवनमां ओतप्रोत बनावनार अने डामाडोल चित्तवालाने द्रढ बनावनार होय तो धर्मकथानुयोग छे. आ ज्ञाताधर्म-कथाना बन्ने श्रुतस्कंधोना अध्ययनोने सांगोपांग वांचवाथी, विचारवाथी अने परिशीलन करवाथी मार्गाभिमुखादि आराधकोने नवनवीन मार्गदर्शन मले छे. आ अंगना अध्ययनोनी अंदर ठांसी ठांसीने चरितविभागीय चरितो अने कल्पनामय कल्पितोने वांचवाथी सारभूत रहस्य पचावनाराओ इष्टमार्गनी सिद्धि करी शके छे, ते निःशंक सत्य सर्वदा आदरणीय छे.

आ ग्रन्थना प्रथम विभागमां एकथी आठ अध्ययनो एटले श्रीउत्क्षिप्त–अध्ययनथी श्रीमल्लीअध्ययन सुधीना आठ अध्ययनोनो सारांश पूर्वे जणाव्यो छे, एटली प्रासंगिक नोंध जणावीने अध्ययनोनो सारांश ते स्थळेथी वांचवानी भलामण अत्र कराय छे. आ प्रस्तावनानो प्रारंभ " मानवजीवननी महत्ता " ए नामना पेरेग्राफथी शरू करीने क्रमशः " श्रवणनी आवश्यकता, समर्थ वक्तानो योग, आद्य–सदुपदेशक, आद्य–संचालक, सुधर्मास्वामिजीनुं जीवन, अंतिम केवलीनी जीवनचर्या, सूत्ररचनानी मर्यादा, श्रुतसंपदाना मालीक,

अंगोनो अनुस्यूत-संबंध, आ ग्रंथनुं नाम अने सामग्रीओ, आ ग्रन्थना वृत्तिकार; अने अंतमां ग्रन्थसामग्रीना प्रकारो " ए पेरेग्राफोथी आ प्रस्तावनाना उपसंहार साथे परिसमाप्ति थाय छे.

आ प्रस्तावनानी परिसमाप्ति साथे अभ्यासकोए वांचकोए, अने विचारकोए एक प्रसंग हृदयपट स्थिर करवा जेवो छे. अने ते प्रसंग ज्ञानाचारना आठ आचारो पैकी उपधान एटले योगोद्वहन वगर सूत्रना पठन-पाठन करावनार बन्नेने ते पठन-पाठनादि नुकशानकारक नीवडे छे. आ संबंधमां बृहद्योगविधि नामना ग्रंथनी प्रस्तावना वांचवानी आग्रहपूर्वक भलामण छे. सूत्रना रहस्य पचाववानी योग्यता योगोद्वहन वगर नथी, अने ज्ञानाचारना ते आचार प्रत्ये आंखमींचामणा निन्दादि करवामां, कराववामां, करनार-करावनाराओए अद्यापि पर्यंत नुकशान अनुभव्युं छे. अने श्रुतधर्मनी आशातनानुं भारी पाप प्राप्त कर्युं छे ते भूलवा जेवुं नथी, माटे जे पुण्यात्माओ ज्ञानाचारना आठे आचारनुं सेवन करीने सूत्रादि लेवा-मेलवानो खप करशे ते आत्माओ जरूर श्रेय साधीने उत्तरोत्तर सुंदर साधन-सामग्री-संयोगो पामीने भाविमां कल्याणमंगलनी मालाओ प्राप्त करशे एवी शुभेच्छापूर्वक अत्र विरमुं छुं.

श्रीचन्द्रप्रभासपत्तनतीर्थ, जैनउपाश्रय, (वेरावल समीपे.)
श्रीचन्द्रप्रभस्वामिप्रासादस्य प्रतिष्ठापनादिने
ता. १-२-५२ माह सुद ६ शुक्रवार.

लि० स्व० आगमोद्धारक-श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरचरणारविंद-
चञ्चरीक-चन्द्रसागरसूरि.

श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गे प्रथमविभागस्य

अनुक्रमणिका.

॥। सकलमन्त्रतन्त्रयन्त्राधिराजराजेश्वर-श्रीसिद्धचक्रेभ्यो नमो नमः ॥।

॥ सकलसमीहितपूरक-श्रीशङ्खेश्वरपार्श्वनाथो विजयतेतमाम् ॥

। शासनप्रभावक-श्रीगणधराय नमः ।

नवाङ्गीवृत्तिकारकश्रीमदभयदेवसूरिवरविहितवृत्तियुते, पञ्चमगणधरगुम्फिते;

श्रीज्ञाताधर्मकथाङ्गे—



१—श्रीउत्क्षिप्ताख्यं प्रथममध्ययनम् ।

॥ [1]नत्वा श्रीमन्महावीरं, प्रायोऽन्यग्रन्थवीक्षितः । ज्ञाताधर्मकथाङ्गस्यानुयोगः कश्चिदुच्यते ॥ १ ॥ तत्र च फलमङ्गला-[2]दिचर्चः स्थानान्तरादवसेयः । केवलमनुयोगद्वारविशेषस्योपक्रमस्य प्रतिभेदरूपक्रान्तशास्त्रस्य [3]वीरजिनवरेन्द्रापेक्षयाऽर्थतः[4] आत्मागमत्वं, तच्छिष्यं तु पञ्चमगणधरं सुधर्मस्वामिनमाश्रित्यानन्तरागमत्वं, तच्छिष्यं च जम्बूस्वामिनमपेक्ष्य परम्परागमतां प्रतिपिपादयिषुः; अथवा—अनुगमाख्यस्य तृतीयस्यानुयोगद्वारस्य भेदभूताया उपोद्घातनिर्युक्तेः प्रतिभेदभूतनिर्गमद्वारस्व-भावं प्रस्तुतग्रन्थस्यार्थतो महावीरनिर्गतत्वमभिधित्सुः सूत्रकारः—'ते णं कालेण 'मित्यादिकमुपोद्घातग्रन्थं तावदादावाह—

१ एर्दं०। । ऐँ नमः नत्वा० अ । २ ०दिवचः अ । ३ ०वीरजिनेXXन्द्रा० अ । ४ ०र्थत आ० अ ।

ॐ नमः सर्वज्ञाय । ते णं काले णं, ते णं समए णं, चंपानामं नयरी होत्था; वंण्णओ ॥ सूत्रम्-१ ॥

तत्र योऽयं णंशब्दः स वाक्यालङ्कारार्थः, ते इत्यत्र च य एकारः प्राकृतशैलीप्रभवो, यथा-'करेमि भंते !' इत्यादिषु; ततोऽयं वाक्यार्थो जातः-तस्मिन् काले, तस्मिन् समये, यस्मिन्नसौ नगरी बभूवेति, अधिकरणे चेयं सप्तमी। अथ कालसमययोः कः प्रतिविशेषः ?, उच्यते-काल इति सामान्यकालः, अवसर्पिण्याश्चतुर्थविभागलक्षणः, समयस्तु तद्विशेषो; यत्र सा नगरी, स राजा, सुधर्म्मस्वामी च बभूव; अथवा-तृतीयैवेयं, ततस्तेन कालेन-अवसर्पिणीचतुर्थारकलक्षणेन हेतुभूतेन तेन समयेन, तद्विशेषभूतेन हेतुना 'चंपा नाम नयरी होत्थ'त्ति अभवत्-आसीदित्यर्थः। ननु चेदानीमपि साऽस्ति किं पुनरधिकृतग्रन्थकरणकाले ?, तत्कथमुक्तमासीदिति ?;उच्यते-अवसर्पिणीत्वात् कालस्य वर्णकग्रन्थवर्णितविभूतियुक्ता तदानीमासीद् ,इदानीं नास्तीति । 'वण्णओ'त्ति-चम्पानगर्या वर्णकग्रन्थोऽत्रावसरे वाच्यः, स चायं-'रिद्धत्थिमियसमिद्धा'-ऋद्धा-भवनादिभिर्वृद्धिमुपगता, स्तिमिता-भयवर्जितत्वेन स्थिरा, समृद्धा-धनधान्यादियुक्ता; ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः। 'पमुइयजणजाणवया'-प्रमुदिताः प्रमोदकारणवस्तूनां सद्भावाज्जनाः-नगरीवास्तव्यलोकाः, जानपदाश्च-जनपदभवास्तत्रायाताः सन्तो यस्यां सा प्रमुदितजनजानपदा; 'आइण्णजणमणुस्सा'-मनुष्यजनेनाकीर्णा-संकीर्णा, मनुष्यजनाकीर्णेति वाच्ये राजदन्तादिदर्शनादाकीर्णजनमनुष्येत्युक्तं; 'हलसयसहस्ससंकिट्ठविकिट्ठलट्ठपन्नत्तसेउसीमा'-हलानां-लाङ्गलानां शतैः सहस्रैश्च शतसहस्रैर्वा-

१ वण्णउ अ । २ विभूतेति० अ। ३ ०ष ? उ० अ । ४ ०तेनxxस० अ । ५ वर्णxग्र° अ । ६ ऋद्धित्थिमियास०, अ । ७ ०मुपागता० अ । ८ ०विकिट्ठ० अ ।

लक्षैः संकृष्टा–विलिखिता विकृष्टं–दूरं यावदविकृष्टा वा–आसन्ना लष्टा, मनोज्ञा कर्पकाभिमतफलसाधनसमर्थत्वात्, 'पण्णत्ते'ति-योग्या कृता बीजवपनस्य सेतुसीमा–मार्गसीमा यस्याः सा तथा; अथवा–संकृष्टादिविशेषणानि सेतूनि–कुल्याजलसेक्यक्षेत्राणि सीमासु यस्याः सा, तथा–अनेन तज्जनपदस्य लोकबाहुल्यं क्षेत्रबाहुल्यं चोक्तं, 'कुक्कुडसंडेयगामपउरा'-कुक्कुटाः–ताम्रचूडा षाण्ढेयाः–पण्ढपुत्रकाः षण्ढा एव तेषां ग्रामाः–समूहास्ते प्रचुराः–प्रभूता यस्यां सा, तथा–अनेन लोकप्रमुदितत्वं व्यक्तीकृतं, प्रमुदितो हि लोकः क्रीडार्थं कुक्कुटान् पोषयति, षण्डांश्च करोतीति; 'उच्छुजवसालिकलिया'–अनेन च जनप्रमोदकारणमुक्तं, न ह्येवंप्रकारवस्त्वभावेन[1] प्रमोदो जनस्य स्यादिति। 'गोमहिसगवेलगप्पभूया'–गवादयः प्रभूताः–प्रचुरा यस्यामिति वाक्यं, गवेलका–उरभ्राः। 'आयारवंतचेइयजुवइविविहसण्णिविट्ठबहुला'[2]–आकारवन्ति-सुन्दराकाराणि यानि, चैत्यानि–देवतायतनानि, युवतीनां च–तरुणीनां पण्यतरुणीनामिति हृदयं यानि विविधानि संनिविष्टानि–संनिवेशनानि पाटकास्तानि बहुलानि–बहूनि यस्यां सा, तथा–'उक्कोडियगायगंठिभेयभडतक्करखंडरक्खरहिया'–उक्कोडा–उत्कोटा–लञ्चेत्यर्थः, तया ये व्यवहरन्ति ते उत्कोटिकाः,गात्रान्–मनुष्यशरीरावयवविशेषान् कट्यादेः सकाशाद्ग्रन्थिकार्षापणादिपोट्टलिकां, भिन्दन्ति–आच्छिन्दन्तीति गात्रग्रन्थिभेदाः,भटाः-चारभटा बलात्कारप्रवृत्तयः,तस्कराः–तदेव–चौर्यं कुर्वन्तीत्येवंशीलास्तस्कराः,खण्डरक्षा–दण्डपाशिकाः शुल्कपाला वा एभी रहिता या सा। तथा–अनेन तत्रोपद्रवकारिणामभावमाह–'खेमा'[3]–अशिवाभावात्'निरुवद्दुवा'–निरुपद्रुता अविद्यमानराजादिकृतोपद्रवेत्यर्थः। 'सुभिक्खा'–सुष्ठु–मनोज्ञा प्रचुरा भिक्षा, भिक्षुकाणां[4] यस्यां सा सुभिक्षा, अत एव

१ ० कारवस्त्वभावे×प्र० अ। २ आयारवत्तचे० अ। ३ खेमा क्षेमा अ० अ। ४ त्रि आ। ४ भिक्षाकाणां य० अ।

पाखण्डिकानां गृहस्थानां च 'वीसत्थसुहावासा'-विश्वस्तानां निर्भयानामनुत्सुकानां वा सुखः-सुखस्वरूपः शुभो वा आवासो यस्यां सा । तथा-'अणेगकोडीकोडुंबियाइण्णनिव्वुयसुहा'-अनेकाः कोटयो द्रव्यसंख्यायां स्वरूपपरिमाणे वा येषां ते अनेककोटयः, तैः कौटुम्बिकैः-कुटुम्बिभिराकीर्णा-संकुला या सा, तथा-सा चासौ निर्वृता च-संतुष्टजनयोगात् संतोषवतीति कर्मधारयोऽत एव सा चासौ सुखा च शुभा च वेति कर्मधारयः। 'नड-नट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहक-पवक-लासक-आइक्खय-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-अणेगतालाचराणुचरिया'-नटा-नाटकानां नाटयितारो, नर्त्तका-ये नृत्यन्ति, अंकोल्ला-इत्येके; जल्ला-वरत्राखेलकाः,राज्ञः स्तोत्रपाठका इत्यन्ये; मल्लाः-प्रतीताः,मौष्टिका-मल्ला एव ये मुष्टिभिः प्रहरन्ति, विडम्बका-विदूषकाः, कथकाः-प्रतीताः, प्लवका-ये उत्प्लवन्ते नद्यादिकं वा तरन्ति, लासका ये रासकान् गायन्ति, जयशब्दप्रयोक्तारो वा भाण्डा इत्यर्थः; आख्यायिका-ये शुभाशुभमाख्यान्ति,लङ्खा-महावंशाग्रखेलका, मङ्खाः-चित्रफलकहस्ता भिक्षाकाः, तूणइल्ला-तूणाभिधानवाद्यविशेषवन्तः, तुम्बवीणिका-वीणावादका, अनेके च ये तालाचराः-तालादानेन प्रेक्षाकारिणस्तैरनुचरिता-आसेविता या सा। तथा-'आरामुज्जाण-अगड-तलाय-दीहिय-वप्पिणण-गुणोववेया'-आरमन्ति येषु माधवीलतागृहादिषु दम्पत्यादीनि ते आरामाः,उद्यानानि-पुष्पादिमद्वृक्षसंकुलान्युत्सवादौ बहुजनभोग्यानि, 'अगड'त्ति-अवटाः-कूपास्तडागानि-प्रतीतानि, दीर्घिकाः-सारण्यः;'वप्पिण'त्ति-केदाराः, एतेषां ये गुणा-रम्यतादयस्तैरुपपेता-युक्ता या सा; तथा-उप-अप-इत-इत्येतस्य शब्दत्रयस्य स्थाने शकन्ध्वादिदर्शनादकारलोपे उपपेतेति भवतीति । 'उव्विद्धविपुलगंभीरखाय-

१ ०ण्णनिव्वुहसु० अ । २ ०भिराकीर्णा० अ । ३ ०प्रलंखका:० अ ।

फलिहा'—उद्विद्धं—उण्डं, विपुलं—विस्तीर्णं, गम्भीरम्—अलब्धमध्यं, खातम्—उपरि विस्तीर्णं अधः संकटं, परिखा च—अध उपरि च समखातरूपा यस्याः सा; तथा—'चक्क-गय-मुसुंढि-ओरोह-सयग्घि-जमलकवाडघणदुप्पवेसा'-चक्राणि-अरघट्टयन्त्रिकाचक्राणि, गदाः—प्रहरणविशेषाः, मुसुण्ढ्योऽप्येवं, अवरोधः—प्रतोलीद्वारेष्ववान्तरप्राकारः संभाव्यते, शतघ्न्यो—महायष्ट्यो महाशिलामय्यः याः पातिताः शतानि पुरुषाणां घ्नन्ति, यमलानि—समसंस्थितद्वयरूपाणि यानि कपाटानि, घनानि च—निश्छिद्राणि तैर्दुष्प्रवेशा या सा। तथा—'धणुकुडिलवंकपागारपरिक्खित्ता'—धनुः कुटिलं—कुटिलधनुः, ततोऽपि वक्रेण प्राकारेण परिक्षिप्ता या सा; तथा—'कविसीसयवट्टरइयसंठियविरायमाणा'-कपिशीर्षकैर्वृत्तरचितैः—वर्तुलकृतैः संस्थितैः—विशिष्टसंस्थानवद्भिर्विराजमाना-शोभमाना या सा, तथा—'अट्टालय-चरिय-दार-गोपुर-तोरण-उन्नयसुविभत्तरायमग्गा'-अट्टालकाः—प्राकारोपरिवर्त्याश्रयविशेषाः, चरिका-अष्टहस्तप्रमाणो नगरप्राकारान्तरालमार्गः, द्वाराणि-भवनदेवकुलादीनां, गोपुराणि—प्राकारद्वाराणि, तोरणानि—प्रतीतानि, उन्नतानि—गुणवन्ति उच्चानि च यस्यां सा; तथा—सुविभक्ता—विविक्ता राजमार्गा यस्यां सा, तथा ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः। 'छेयायरियरइयदढफलिहइंदकीला'—छेकेन—निपुणेनाचार्येण—शिल्पिना रचितो दृढो—बलवान् परिघः—अर्गला इन्द्रकीलश्च—गोपुरावयवविशेषो यस्यां सा। तथा—'विवणिवणिछेत्तसिप्पियाइण्णनिव्वुयसुहा'—विपणीनां—वणिक्पथानां हट्टमार्गाणां वणिजां च—वाणिजकानां क्षेत्रं—स्थानं या सा, तथा शिल्पिभिः—कुम्भकारादिभिराकीर्णा सुनिर्वृतैः सुखैश्च—सुखिभिर्या राजदन्तादिदर्शनात् सा। तथा—'सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चरपणियावण-विविहवत्थुपरि-

---

१ °द्दर्गच्छि० अ । २ रागश्चिस्त० अ । ३ °भिःकी० ग ।

संडिया'–शृङ्गाटकं–त्रिकोणं स्थानं, त्रिकं–यत्र रथ्यात्रयं मिलति, चतुष्कं–रथ्याचतुष्कमीलकः, चत्वरं–बहुरथ्यापातस्थानम्, पणितानि–भाण्डानि, तत्प्रधाना आपणा-हट्टाः, विविधवस्तूनि-अनेकविधद्रव्याणि, एभिः परिमण्डिता या सा। तथा-'सुरम्मा'-अतिरमणीया, 'नरवइपविइन्नमहिवइपहा'–नरपतिना–राज्ञा, प्रविकीर्णो–गमनागमनाभ्यां व्याप्तः, महीपतिपथो–राजमार्गो यस्यां सा। तथा–अथवा–नरपतिना प्रविकीर्णा–विक्षिप्ता निरस्ता शेषमहीपतीनां प्रभा यस्यां सा। तथा–'अणेगवरतुरगमत्तकुंजररहपहकरसीयसंदमाणीआइन्नजाणजुग्गा'–अनेकैर्वरतुरगैर्मत्तकुञ्जरैः, 'रहपहयर'त्ति–रथनिकरैः शिबिकाभिः स्यन्दमानाभिराकीर्णा–व्याप्ता यानैर्युग्यैश्च या सा; तथा–तत्र शिबिकाः–कूटाकारेण छादिता जम्पानविशेषा स्यन्दमानिकाः–पुरुषप्रमाणजम्पानविशेषाः, यानानि–शकटादीनि, युग्यानि–गोल्लविषयप्रसिद्धानि द्विहस्तप्रमाणानि वेदिकोपशोभितानि जम्पानान्येवेति; 'विमउलनवनलिणिसोभियजला'–विमुकुलाभिः–विकसितकमलाभिर्नवाभिर्नलिनीभिः–पद्मिनीभिः शोभितानि जलानि यस्यां सा, तथा–'पंडुरवरभवणसन्निमहिया'–पाण्डुरैः–सुधाधवलैर्वरभवनैः–प्रासादैः सम्यक् नितरां महितेव महिता–पूजिता या सा, तथा–'उत्ताणनयपेच्छणिज्जा'-सौभाग्यातिशयादुत्तानैः–अनिमिषैर्नयनैः–लोचनैः प्रेक्षणीया या सा, तथा–'पासाईया'–चित्तप्रसत्तिकारिणी, 'दरिसणिज्जा'–यां पश्यच्चक्षुः श्रमं न गच्छति, 'अभिरूपा'–मनोज्ञरूपा, 'पडिरूवा'–प्रतिरूपा द्रष्टारं द्रष्टारं प्रति रूपं यस्याः सा तथेति।

तीसे णं चंपाए नयरीए, बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए, पुण्णभद्दे नामं चेइए; होत्था। वण्णओ ॥सूत्रम्–२॥

---

१ ०तुरगमम० अ। २ ०तुरगमैः अ।

तत्थ णं चंपाए नयरीए, कोणिको नामं राया होत्था; वण्णओ ॥ सूत्रम्–३ ॥

तस्या णमित्यलङ्कारे, चम्पाया नगर्या, 'उत्तरपुरत्थिमे'त्ति–उत्तरपौरस्त्ये उत्तरपूर्वायामित्यर्थः; 'दिसीभाए'त्ति–दिग्भागे पूर्णभद्रं नाम चैत्यं–व्यन्तरायतनम्। 'वण्णओ'त्ति–चैत्यवर्णको वाच्यः, स चायं–'चिराइए पुव्वपुरिसपन्नत्ते'–चिरः–चिरकाल आदिः–निवेशो यस्य तच्चिरादिकं, अत एव पूर्वपुरुषैः–अतीतनरैः प्रज्ञप्तं–उपादेयतया प्रकाशितं–पूर्वपुरुषप्रज्ञप्तं। 'पुराणे'त्ति–चिरादिकत्वात् पुऽरातनं, 'सद्दिए'–शब्दः–प्रसिद्धिः स संजातो यस्य तच्छब्दितं, 'वित्तए'–वित्तं–द्रव्यं तदस्ति यस्य तद्वित्तिकं वृत्तिं वा आश्रितलोकानां ददाति यत्तद्वृत्तिदं, 'नाए'–न्यायनिर्णायकत्वात् न्यायः ज्ञातं वा–ज्ञातसामर्थ्यमनुभूततत्प्रसादेन लोकेनेति। 'सच्छत्ते–सज्झए–सघंटे–सपडागाइपडागमंडिए'–सह पताकया वर्तत इति सपताकं एकां पताकामतिक्रम्य या पताका सातिपताका तया मण्डितं यत्तत्तथा§तच्च तच्चेति कर्मधारयः, 'सलोमहत्थे'–लोममयप्रमार्जनकयुक्तं, 'कयवेयय(द्दि)ए'–कृतं वितर्दिकं–रचितवेदिकं, 'लाउल्लोइयमहिए'–लाइयं यद्भूमेश्छगणादिनोपलेपनं उल्लोइयं–कुड्यमालानां सेटिकादिभिः संमृष्टीकरणं ततस्ताभ्यां महितमिव महितं–पूजितं यत्तत्तथा§ 'गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितले'–गोशीर्षेण–सरसरक्तचन्दनेन च दर्दरेण–बहलेन चपेटाकारेण वा दत्ताः पंचाङ्गुलास्तला[2]–हस्तकाः यत्र तत्तथा; 'उवचियचंदणकलसे'–उपचिता–निवेशिताः चन्दनकलशा–मङ्गल्यघटा[3] यत्र तत्तथा, 'चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागे'–चन्दनघटाश्च सुष्ठु कृतास्तोरणानि च द्वारदेशभागं प्रति यस्मिंस्तचन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेश-

१ ०त्तिये० अ। § § एतदंतरगतः पाठः 'अ' प्रतौ नास्ति। २ ङ्गुलयः त° अ। ३ °माङ्ग° ग।

भागं, देशभागाश्च देशा एव। 'आसत्तोसत्तविपुलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावे'—आसक्तो—भूमौ संबद्धः, उत्सक्त—उपरि संबद्धः, विपुलो—विस्तीर्णः, वृत्तो—वर्तुलः; 'वग्घारिय'त्ति—प्रलम्बमानः माल्यदामकलापः—पुष्पमालासमूहो यत्र तत्तथेति। 'पंचवण्णसुरभिमुक्कपुप्फपुञ्जोवयारकलिए' पंचवर्णेन सुरभिणा मुक्तेन—क्षिप्तेन, पुष्पपुञ्जलक्षणेनोपचारेण—पूजया कलितं यत्तत्तथा; 'कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे'—कालागरुप्रभृतीनां धूपानां यो मघमघायमानो गन्ध उद्धूत—उद्धूतस्तेनाभिरामं यत्तत्तथा, तत्र कुंदुरुक्कं—चीडा, तुरुक्कं—सिल्हकं, 'सुगंधवरगंधगंधिए'—सद्गन्धा ये वरगन्धा—वासास्तेषां गन्धो यत्रास्ति तत्तथा, 'गंधवट्टिभूए'—सौरभ्यातिशयात् गन्धद्रव्यगुटिकाकल्पमित्यर्थः, 'नड-नट्टक-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-पवक-कहक-लासक-आइक्खय-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिय-भुयग-मागह-परिगए'-पूर्ववन्नवरं भुजगा—भोगिन इत्यर्थः, भोजका वा, तदर्चकाः; मागधा—भट्टाः। 'बहुजणजाणवयस्स विस्सुयकित्तिए'—बहोर्जनस्य पौरस्य जानपदस्य च—जनपदभवलोकस्य विश्रुतकीर्त्तिकं, प्रतीतख्यातिकं। 'बहुजणस्स आहुस्स आहुणिज्जे'—आहोतुः—दातुः आहवनीयं-संप्रदानभूतं, 'पाहुणिज्जे'—प्रकर्षेण आहवनीयमिति गमनिका, 'अच्चणिज्जे'—चन्दनगन्धादिभिः, 'वंदणिज्जे'-स्तुतिभिः, 'पूयणिज्जे'—पुष्पैः, 'सक्कारणिज्जे'—वस्त्रैः, 'सम्माणणिज्जे'—बहुमानविषयतया, 'कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे'-कल्याणमित्यादिधिया विनयेन पर्युपासनीयं; 'दिव्वे'—दिव्यं प्रधानं, 'सच्चे'—सत्यं सत्यादेशत्वात्, 'सच्चोवाए'—सत्यावपातं, 'सत्यसेवं'-सेवायाः सफलीकरणात्, 'सन्निहियपाडिहेरे'—विहितदेवताप्रातिहार्यं, 'जागसहस्सभागपडिच्छए'—यागाः—पूजाविशेषा ब्राह्मणप्रसिद्धास्तत्सहस्राणां भागम्—अंशं प्रतीच्छति, आभाव्यत्वात् यत्तत्तथा, 'बहुजणो

अच्चेइ आगम्म पुण्णभद्दं चेइअं। से णं पुण्णभद्दे चेइए, एक्केणं महया वणसंडेण, सव्वओ समंता संपरि-खित्ते'–सर्वतः--सर्वदिक्षु, समन्तात्--विदिक्षु च; 'से णं वणसंडे किण्हे किण्होभासे'–कृष्णावभासः--कृष्णप्रभः--कृष्ण एव वाऽवभासत इति कृष्णावभासः, 'नीले नीलोभासे'–प्रदेशान्तरे, 'हरिए हरिओभासे'–प्रदेशान्तर एव, तत्र नीलो मयूरगलवत्, हरितस्तु शुकपिच्छवत्, हरितालाभ इति वृद्धाः; 'सीए सीओभासे'–शीतः स्पर्शापेक्षया वल्ल्याद्याक्रान्तत्वा-दिति वृद्धः, 'निद्धे निद्धोभासे'–स्निग्धो न तु रूक्षः, 'तिव्वे तिव्वोभासे'–तीव्रो वर्णादिगुणप्रकर्षवान्, 'किण्हे किण्हच्छाए'–इह कृष्णशब्दः कृष्णच्छाय इत्यस्य विशेषणमिति न पुनरुक्तता, तथाहि--कृष्णः सन् कृष्णच्छायः, छाया चादित्यावरणजन्यो वस्तुविशेषः; एवं 'नीले नीलच्छाए, हरिए हरियच्छाए, सीए सीयच्छाए, निद्धे निद्धच्छाए, तिव्वे तिव्वच्छाए, घणकडियकडिच्छाए';–अन्योऽन्यं शाखानुप्रवेशाद्बहलनिरन्तरच्छायः, 'रम्मे महामेहनिकुरंबभूए'–महा-मेघवृन्दककल्पे इत्यर्थः, 'ते णं पायवा मूलमंतो कंदमंतो'–कन्दो--मूलानामुपरि, 'खंधमंतो'–स्कन्धः--स्थुडं, 'तयामंतो' 'सालमंतो'–शाला--शाखा, 'पवालमंतो'–प्रवालः--पल्लवाङ्कुरः, 'पत्तमंतो पुप्फमंतो फलमंतो बीयमंतो'; 'अणुपुव्व-सुजायरुइलवट्टभावपरिणया'–आनुपूर्व्येण--मूलादिपरिपाट्या सुष्ठु जाता रुचिराः वृत्तभावं च परिणता ये ते तथा, 'एक्कखंधा अणेगसाला अणेगसाहप्पसाहविडिमा'–अनेकशाखाप्रशाखो विटपस्तन्मध्यभागो वृक्षविस्तारो येषां ते। तथा–'अणेगणरवामसुप्पसारियअगेज्झघणविपुलवट्टखंधा'–अनेकाभिर्नरवामाभिः सुप्रसारिताभिरग्राह्यो घनो–निबिडो

---

१ °एऽवावभास° अ। २ °स्तारो वा येषां° अ।

विपुलो-विस्तीर्णो वृत्तश्च स्कन्धो येषां ते, तथा 卐-'अच्छिद्दपत्ता'-नीरन्ध्रपर्णा卐, 'अविरलपत्ता'-निरन्तरदलाः, 'अवाईणपत्ता'-अवाचीनपत्राः-अधोमुखपलाशाः, अवातीनपत्रा वा-अवातोपहतबर्हाः; 'अणईइपत्ता'-ईतिविरहितच्छदाः, 'निद्धुयजरठपंडुरयपत्ता'-अपगतपुराणपाण्डुरपत्राः, 'नवहरियभिसंतपत्तभारंधकारगंभीरदरिसणिज्जा'-नवेन हरितेन, 'भिसन्त'त्ति-दीप्यमानेन पत्रभारेण--दलसंचयेनान्धकारा--अन्धकारवन्तः, अत एव गम्भीराश्च दृश्यन्ते ये ते; तथा-'उवनिग्गयनवतरुणपत्तपल्लवकोमलउज्जलचलंतकिसलयसुकुमालपवालसोहियवरंकुरग्गसिहरा'-उपनिर्गतैर्नवतरुणपत्रपल्लवैरिति--अभिनवपत्रगुच्छैः, तथा कोमलोज्ज्वलैश्चलद्भिः किशलयैः--पत्रविशेषैस्तथा सुकुमालप्रवालैः शोभितानि वराङ्कुराण्यग्रशिखराणि येषां ते, तथा-इह चाङ्कुरप्रवालकिशलयपत्राणां अल्पबहुबहुतरादिकालकृतावस्थाविशेषाद् विशेषः संभाव्यत इति, 'निच्चं कुसुमिया निच्चं माइया'-मयूरिताः, 'निच्चं लवइया'-पल्लविताः, 'निच्चं थवइया'-स्तबकवन्तः, 'निच्चं गुलइया'-गुल्मवन्तः, 'निच्चं गोच्छिया'-जातगुच्छाः, यद्यपि स्तबकगुच्छयोरविशेषो नामकोशेऽधीतस्तथाऽपीह विशेषो भावनीयः, 'निच्चं जमलिया'-यमलतया समश्रेणितया व्यवस्थिताः, 'निच्चं जुयलिया'-युगलतया स्थिताः, 'निच्चं विणमिया'-विशेषेण फलपुष्पभारेण नताः, 'निच्चं पणमिया'-तथैव नन्तुमारब्धाः, 'निच्चं कुसुमियमाइयलवइयथवइयगुलइयगोच्छियजमलियजुवलियविणमियपणमियसुविभत्तपिंडिमंजरिवडेंसगधरा'—केचित् कुसुमिताद्येकैकगुणयुक्ताः, अपरे तु समस्तगुणयुक्तास्ततः कुसुमिताश्च ते इत्येवं कर्मधारयः, नवरं सुविभक्ताः-विविक्ताः सुनिष्प-

१ °वृत:स्कं० अ । 卐 卐 एतदन्तर्गत. पाठः 'अ' प्रतौ नास्ति । २ °वडिंस० अ ।

न्नतया पिण्ड्यो--लुम्ब्यः मञ्जर्यश्च प्रतीतास्ता एवात्रतंसकाः--शेखरकास्तान् धारयन्ति ये ते; तथा--'सुयबरहिणमयणसाल-कोइलको[1]भंडकभिंगारककोमलकजीवंजीवकनंदीमुहकविलपिंगलक्खगकारंडचक्कवायकलहंससारसअणेग--सउणगणमिहुणविरइयसद्दुण्णइयमहुरसरनाइए'--शुकादीनां सारसान्तानां अनेकेषां शकुनगणानां मिथुनैर्विरचितं शब्दोन्नतिकं च उन्नतशब्दकं मधुरस्वरं च नादितं--लपितं--यस्मिन् स, तथा--वनखण्ड इति प्रकृतं; 'सुरम्मे संपिंडियद-रियभमरमहुकरिपहकरपरिलिंतमत्तछप्पयकुसुमासवलोलमहुरगुमगुमिंतगुंजंतदेसभागे'-संपिण्डिता दृप्तभ्रम-रमधुकरीणां वनसत्कानामेव, 'पहकर'त्ति--निकरा यत्र स तथा, तथा--परिलीयमाना--अन्यत आगत्य लयं यान्तो मत्तषट्-पदाः कुसुमासवलोलाः--किञ्जल्कलम्पटाः, मधुरं गुमगुमायमानाः, गुञ्जन्तश्च--शब्दविशेषं विदधानाः, देशभागेषु यस्य स तथा, ततः कर्मधारयः; '[3]अब्भिंतरपुप्फफला बाहिरपत्तुच्छन्ना पत्तेहि य पुप्फेहि य उच्छन्न पलिच्छन्ना'--अत्यंतमाच्छा-दिता इत्यर्थः, एतानि पुनर्वृक्षाणां विशेषणानि; 'साउफले मिट्ठफले' इत्यतो वनषण्डस्य भूयो विशेषणानि, 'निरोयए'--रोग-वर्जितः, 'नाणाविहगुच्छगुम्ममंडवगसोहिए विचित्तसुहकेउभूए'--विचित्रान्--शुभान्, केतून्--ध्वजान्, भूतः--प्राप्तः, 'वाविपुक्खरिणीदीहियासुनिवेसियरम्मजालहरए'--वापीषु--चतुरस्रासु,पुष्करिणीषु--वृत्तासु पुष्करवतीषु वा, दीर्घिका-सु--ऋजुसारणीषु, सुष्ठु निवेशितानि रम्याणि जालगृहकाणि यत्र स, तथा--'पिंडिमनीहारिमसुगंधिसुहसुरभिमणहरं च महया गंधद्धणिं'--मुयंता पिंडिमनिर्हारिमां पुद्गलसमूहरूपां दूरदेशगामिनीं च सद्दंन्धि[5]--सुगन्धिकां शुभसुरभिभ्यो गन्धा-

१ °कोभंगकभिंगारककोडलकजीवं° अ। २ °तथा××रि° अ। ३ °अब्भतर° अ। ४ °याडुयनिवे° अ। ५ °सुगन्धिकां--सद्गन्धिं° अ।

न्तरेभ्यः सकाशान्मनोहरा या सा, तथा तां-च महता मोचनप्रकारेण विभक्तिव्यत्ययात् महतीं वा गन्ध एव घ्राणहेतुत्वात्-तृप्तिकारित्वाद्गन्धघ्राणिस्तां मुञ्चन्त इति, वृक्षविशेषणमेवमितोऽन्यान्यपि; 'नाणाविहगुच्छगुम्ममंडवकघरकसुहसेउकेउबहुला'-नानाविधाः गुच्छा गुल्मानि मण्डपका गृहकाणि च येषां सन्ति ते तथा, तथा-शुभाः सेतवो-मार्गा आलवालपाल्यो वा केतवश्च-ध्वजा-बहुला-बहवो येषां ते तथा, ततः कर्मधारयः; 'अणेगरहजाणजोग्गसिबियपविमोयणा'-अनेकेषां रथादीनामधोऽतिविस्तीर्णत्वात् प्रविमोचनं येषु ते, तथा-'सुरम्मा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महं एक्के असोगवरपायवे पण्णत्ते, कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूले'-कुशा-दर्भा, विकुशा-वल्वजादयस्तैर्विशुद्धं-विरहितं वृक्षानुरूपं मूलं-समीपं यस्य स, तथा-'मूलमंते' इत्यादिविशेषणानि पूर्ववद्वाच्यानि यावत् पडिरूवे, 'से णं असोगवरपायवे अन्नेहिं बहूहिं तिलएहिं, लउएहिं, छत्तोएहिं, सिरिसेहिं, सत्तवण्णेहिं, दहिवण्णेहिं, लोद्धेहिं, धवेहिं, चंदणेहिं, अज्जुणेहिं, निंबेहिं, कुडएहिं, कलंबेहिं, सव्वेहिं, फणसेहिं, दाडिमेहिं, सालेहिं, तालेहिं, तमालेहिं, पिएहिं, पियंगूहिं, पुरोवएहिं, रायरुक्खेहिं, नंदिरुक्खेहिं; सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, ते णं तिलया लउया जाव नंदिरुक्खा, कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला मूलमंतो' इत्यादि पूर्ववत्, यावत्, पडिरूवा, 'ते णं तिलया जाव नंदिरुक्खा, अन्नाहिं बहूहिं पउमलयाहिं, नागलयाहिं, असोगलयाहिं, चंपयलयाहिं, चूयलयाहिं, वणलयाहिं, वासंतियलयाहिं,

१ °तथा××शु० अ। २ °×रहितं° अ। ३ °पियएहिं° अ। ४ लवइया औ।

कुंदलयाहिं, सामलयाहिं; सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, ताओ णं पउमलयाओ निच्चं कुसुमियाओ जाव पडिरूवाओ, तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा ईसिंखंधसमल्लीणे'–स्कन्धासन्नमित्यर्थः, 'एत्थ णं महं एक्के पुढविसिलापट्टए पण्णत्ते'–'एत्थ णं'तिशब्दोऽशोकवरपादपस्य यदधोऽत्रेत्येवं संबन्धनीयः; 'विक्खंभायामसुप्पमाणे किण्हे अंजणकवाणकुवलयहलहरकोसेज्जआगासकेसकज्जलंगीखंजणसिंगभेयरिट्ठयजंबूफलअसणकसणबंधणनीलुप्पलपत्तनिकरअयसिकुसुमप्पयासे'–नील–इत्यर्थः; अञ्जनको–वनस्पतिः, हलधरकोशेयं–बलदेववस्त्रं, कज्जलाङ्गी–कज्जलगृहं, शृङ्गभेदो–महिषादिविषाणच्छेदः, रिष्ठकं–रत्नं, असनको–बियकाभिधानो वनस्पतिः, मनबन्धनं–सनपुष्पवृन्तं; 'मरकतमसारकलित्तनयणकीयरासिवन्ने'–मरकतं–रत्नं, मसारो–मसृणीकारकः–पाषाणविशेषः, 'कडित्तं'ति–कडित्रं–कृत्तिविशेषः, नयनकीका–'नेत्रमध्यतारा तद्राशिवर्णः काल इत्यर्थः; 'निद्धघणे'–स्निग्धघनः, 'अट्ठसिरे'–अष्टशिराः–अष्टकोण इत्यर्थः, 'आयंसतलोवमे सुरम्मे इहामिग–उसभ–तुरग–नर–मगर–वालग–किन्नररुरुसरभचमरवणलयपउमलयभत्तिचित्ते'–ईहामृगाः–वृकाः, व्यालकाः–श्वापदाः भुजगा वा; 'आईणग–रूय–बूरणवणीय–तूलफासे'–आजिनकं–चर्म्ममयं वस्त्रं, रूतं–प्रतीतं, बूरो–वनस्पतिविशेषः, तूलम्–अर्कतूलं; 'सीहासणसंठिए पासाईए जाव पडिरूवे'त्ति। इह ग्रन्थे वाचनाद्वयमस्ति, तत्रैकां बृहत्तरां व्याख्यास्यामो, द्वितीया तु प्रायः सुगमैव; यच्च तत्र दुखगमं तदितरव्याख्यानतोऽवबोद्धव्यमिति। 'कूणिए नामं राय'त्ति–कुणिकनाम–श्रेणिकराजपुत्रो राजा, 'होत्थ'-

१ मध्यनेत्र मध्यतारा तद्भासिवण्णकालः कालः° अ।

त्ति—अभवत् । 'वन्नओ'त्ति—तद्वर्णको वाच्यः, स च 'महया हिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे' इत्यादि; 'पसंत-डिंबडमरं रज्जं पसासेमाणे विहरति' इत्येतदन्तः; तत्र महाहिमवानिव महान् शेषराजापेक्षया, तथा—मलयः—पर्वत-विशेषो, मन्दरो—मेरुर्महेन्द्रः—शक्रादिदेवराजस्तद्वत्सारः—प्रधानो यः स तथा, तथा प्रशान्तानि डिम्बानि—विघ्नाः डमराणि—राजकुमारादिकृतविड्वरा यस्मिंस्तत्तथा 'प्रसाधयन्'—पालयन् 'विहरति'—आस्ते स्मेति, समग्रं पुनरग्रे व्याख्यास्यामः ।

ते णं काले णं, ते णं समए णं, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं थेरे, जाति-संपन्ने, कुलसंपण्णे, बलरूवविणयणाणदंसणचरित्तलाघवसंपण्णे; ओयंसी, तेयंसी, वच्चंसी, जसंसी; जियकोहे, जियमाणे, जियमाए, जियलोहे, जियइंदिए, जियनिद्दे, जियपरिसहे; जीवियासमरणभय-विप्पमुक्के, तवप्पहाणे, गुणप्पहाणे; एवं करणचरणनिग्गहणिच्छयअज्जवमद्दवलाघवखंतिगुत्तिमुत्ति १०, विज्जामंतबंभवयनयनियमसच्चसोयणाणदंसण २०, चारित्त०; ओराले, घोरे, घोरव्वए, घोरतवस्सी, घोरबंभचेरवासी[1]; उच्छूढशरीरे, संखित्तविउलतेयल्लेसे[2], चोदसपुव्वी, चउणाणोवगते, पंचहिं अणगार-सएहिं सद्धिं संपरिवुडे, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूतिज्जमाणे, सुहंसुहेणं विहरमाणे; जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेतिए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता; अहापडिरूवं उग्गहं, उग्गि-ण्हित्ता, संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ॥ सूत्रम्–४ ॥

---

१ बंभचेर नय० अ । २ तेउलसे अ ।

'थेरे'त्ति—श्रुतादिभिर्वृद्धत्वात् स्थविरः, 'जातिसंपन्न' इति—उत्तममातृकपक्षयुक्त इति प्रतिपत्तव्यमन्यथा मातृकपक्षसंपन्नत्वं पुरुषमात्रस्यापि स्यादिति नास्योत्कर्षः कश्चिदुक्तो भवेद्, उत्कर्षाभिधानार्थं चास्य विशेषणकलापोपादानं चिकीर्षितमिति, एवं कुलसंपन्नोऽपि, नवरं कुलं—पैतृकः पक्षः; तथा—बलं—संहननविशेषसमुत्थः—प्राणः, रूपम्—अनुत्तरसुररूपादनंतगुणं शरीरसौन्दर्यं, विनयादीनि प्रतीतानि; नवरं लाघवं—द्रव्यतोऽल्पोपधित्वं, भावतो गौरवत्रयत्यागः, एभिः संपन्नो यः स तथा; 'ओयंसि' त्ति—ओजो—मानसोऽवष्टम्भस्तद्वानोजस्वी, तथा—तेजस्वी तेजः—शरीरप्रभा तद्वांस्तेजस्वी, वचो—वचनं सौभाग्याद्युपेतं यस्यास्ति स वचस्वी; अथवा—वर्चः—तेजः—प्रभाव इत्यर्थस्तद्वान् वर्चस्वी, यशस्वी—ख्यातिमान्, इह विशेषणचतुष्टयेऽपि अनुस्वारः प्राकृतत्वात्; जितक्रोध इत्यादि तु विशेषणसप्तकं प्रतीतं, नवरं क्रोधादिजय उदयप्राप्तक्रोधादिविफलीकरणतोऽवसेयः; तथा—जीवितस्य—प्राणधारणस्याशा—वाञ्छा मरणाच्च यद्भयं ताभ्यां विप्रमुक्तः; जीविताशामरणभयविप्रमुक्तस्तदुभयोपेक्षक इत्यर्थः; तथा—तपसा प्रधानः—उत्तमः शेषमुनिजनापेक्षया तपो वा प्रधानं यस्य स तपःप्रधानः, एवं गुणप्रधानोऽपि, नवरं गुणाः—संयमगुणाः, एतेन च विशेषणद्वयेन तपःसंयमौ पूर्वबद्धाभिनवयोः कर्मणोर्निर्जरणानुपादानहेतू मोक्षसाधने मुमुक्षूणामुपादेयावुपदर्शितौ; गुणप्राधान्ये प्रपञ्चार्थमेवाह—'एवं करणे'त्यादि, यथा—गुणशब्देन प्रधानशब्दोत्तरपदेन तस्य विशेषणमुक्तमेवं करणादिभिरेकविंशत्या शब्दैरेकविंशतिविशेषणान्यध्येयानि, तद्यथा—करणप्रधानश्चरणप्रधानो यावच्चरित्रप्रधान तत्र करणं—पिण्डविशुद्ध्यादिः, यदाह—"पिंडविसोही समिई भावण" इत्यादि, चरणं—महाव्रतादि, आह च—'वयसमणधम्मसंजमवेयावच्चं च' इत्यादि, निग्रहः—अनाचारप्रवृत्तेर्निषेधनं, निश्चयः—तत्त्वानां निर्णयः, विहितानु-

स्थानेषु वाऽवश्यंकरणाभ्युपगमः; आर्जवं–मायानिग्रहो, मार्दवं–माननिग्रहो, लाघवं–क्रियासु दक्षत्वं, क्षान्तिः–क्रोधनिग्रहः, गुप्तिर्मनोगुप्त्यादिका, मुक्तिर्निर्लोभता, विद्याः–प्रज्ञप्त्यादिदेवताधिष्ठिता वर्णानुपूर्व्यः, मन्त्राः–हरिणेगमेष्यादिदेवताधिष्ठितास्ता एव, अथवा–विद्याः ससाधनाः, साधनरहिताः मन्त्राः, ब्रह्म–ब्रह्मचर्यं सर्वमेव वा कुशलानुष्ठानं, वेदः–आगमो लौकिकलोकोत्तरकुप्रावचनिकभेदः, नयाः–नैगमादयः सप्त प्रत्येकं शतविधाः, नियमाः–विचित्रा अभिग्रहविशेषाः, सत्यं–वचनविशेषं, शौचं–द्रव्यतो निर्लेपता, भावतोऽनवद्यसमाचारता; ज्ञानं–मत्यादि, दर्शनं–चक्षुर्दर्शनादि सम्यक्त्वं वा, चारित्रं–बाह्यं सदनुष्ठानं, यच्चेह करणचरणग्रहणेऽपि आर्जवादिग्रहणं तदार्जवादीनां प्राधान्यख्यापनार्थम् ननु जितक्रोधत्वादीनां आर्जवादीनां च को विशेषः ?, उच्यते–जितक्रोधादिविशेषणेषु तदुदयविफलीकरणमुक्तं, मार्दवप्रधानादिषु तु उदयनिरोधः; अथवा–यत एव जितक्रोधादिरत एव क्षमादिप्रधान इत्येवं हेतुहेतुमद्भावात् विशेषः; तथा–ज्ञानसंपन्न इत्यादौ ज्ञानादिमत्त्वमात्रमुक्तं ज्ञानप्रधान इत्यादौ तु तद्वतां मध्ये तस्य प्राधान्यमित्येवमन्यत्राप्यपौनरुक्त्यं भावनीयं, तथा–'ओराले' त्ति–भीमो भयानकः, कथम् ?–अतिकष्टं तपः कुर्वन् पार्श्ववर्त्तिनामल्पसत्त्वानां भयानको भवति, अपरस्त्वाह 'उराले'त्ति–उदारः–प्रधानः, 'घोरे'त्ति–घोरो निर्घृणः परिषहेन्द्रियकषायाख्यानां रिपूणां विनाशे कर्तव्ये, अन्ये त्वात्मनिरपेक्षं घोरमाहुः, तथा–'घोरव्वए'त्ति–घोराणि–अन्यैर्दुरनुचराणि व्रतानि–महाव्रतानि यस्य स तथा, घोरैस्तपोभिस्तपस्वी च, तथा–घोरं च तद्ब्रह्मचर्यं चाल्पसत्त्वैर्दुःखं यदनुचर्यते तस्मिन् घोरब्रह्मचर्ये वस्तुं शीलमस्येति घोरब्रह्मचर्यवासी; 'उच्छूढ-

१ °दिदेव्याध° अ।

शरीरे'-'उच्छूढं'ति-उज्झितमिवोज्झितं शरीरं येन स तत्[1]सत्कारं प्रति निःस्पृहत्वात् , तथा-'संखित्त'त्ति-संक्षिप्ता शरीरा[2]न्तर्वर्त्तिनी विपुला अनेकयोजनप्रमाणक्षेत्राश्रितवस्तुदहनसमर्था तेजोलेश्या-विशिष्टतपोजन्यलब्धि[3]विशेषप्रभवा तेजोज्वाला यस्य स संक्षिप्तविपुलतेजोलेश्यः, तथा-चतुर्दशपूर्वीति वेदप्रधान [4]इत्येतस्यैव विशेषाभिधानं, चतुर्ज्ञानोपगतः केवलवर्जज्ञानयुक्त इत्यर्थः, अनेन च ज्ञानप्रधान इत्येतस्य विशेषोऽभिहितः; पञ्चभिरनगारशतैः-साधुशतैः 'सार्द्धं'[5]-सह समन्तात् परिकरित इत्यर्थः, तथा-'पुव्वाणुपुव्विं'न्ति-पूर्वानुपूर्व्या न[6] पश्चानुपूर्व्या अनानुपूर्व्या वेत्यर्थः, क्रमेणेति हृदयं, 'चरन्'-संचरन्; एतदेवाह-'गामाणुगामं दूइज्जमाणे'त्ति ग्रामश्चानुग्रामश्च विवक्षितग्रामानन्तरग्रामो ग्रामानुग्रामं तत् द्रवन्-गच्छन् एकस्माद्ग्रामादनन्तरं ग्राममनुल्लङ्घयन्तीत्यर्थः, अनेनाप्यप्रतिबद्धविहारमाह, तत्राप्यौत्सुक्यमात्रमाह-तथा सुहंसुहेणं विहरमाणे'त्ति-अत एव सुखंसुखेन शरीरखेदाभावेन संयमबाधाऽभावेन च विहरन्-स्थानात् स्थानान्तरं गच्छन् ग्रामादिषु वा तिष्ठन्, 'जेणेव'त्ति-यस्मिन्नेव देशे चम्पा नगरी, यस्मिन्नेव च प्रदेशे पूर्णभद्रं चैत्यं; 'तेणामेवे'ति-तस्मिन्नेव देशे उपागच्छति। क्वचिद्राजगृहे गुणसिलके इति दृश्यते, स चापपाठ इति मन्यते। उपागत्य च यथाप्रतिरूपं-यथोचितं मुनिजनस्य अवग्रहम्-आवासमवगृह्य-अनुज्ञापनापूर्वकं गृहीत्वा ॥ १२ ॥ संयमेन तपसा चात्मानं भावयन् विहरति-आस्ते स्म।

तएणं चंपानयरीए परिसा निग्गया, कोणिओ निग्गओ, धम्मो कहिओ; परिसा जामेव दिसं

१ ससत्कारं अ। २ °रान्तर्निलीना वि° अ। ३ °विधिविशेष प्र० अ। ४ इत्येतस्य × वि० अ। ५ सहसंपरिवृतः-सम० अ। ६ न तु प° अ।

पाउब्भूया, तामेव दिसिं पडिगया। तेणं कालेणं; तेणं समयेणं, अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स जेट्ठे अंतेवासी, अज्जजंबू णामं अणगारे, कासवगोत्तेणं, सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू, अहोसिरे झाणकोट्ठोवगते, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति; तते णं से अज्जजंबूणामे जायसड्ढे, जायसंसए, जायकोउहल्ले; °संजातसड्ढे, संजातसंसए, संजायकोउहल्ले;° उप्पन्नसड्ढे, उप्पन्नसंसए, उप्पन्नकोउहल्ले; समुप्पन्नसड्ढे, समुप्पन्नसंसए, समुप्पन्नकोउहल्ले; उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठाए उट्ठित्ता, जेणामेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणामेव उवागच्छति २; अज्जसुहम्मे थेरे तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २; वंदति, नमंसति; वंदित्ता, नमंसित्ता; अज्जसुहम्मस्स थेरस्स णच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे, णमंसमाणे, अभिमुहं पंजलिउडे, विणएणं पज्जुवासमाणे; एवं वयासी–जति णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं, तित्थग०, सयंसंबु० °पुरिसु०, पुरिससी०, पुरिसव०, पुरिसवरगं०, लोगु०, लोगनाहे०, लोगहिएणं, लोगप०, लोगपज्जोय०, अभयंद०, सरणद०, चक्खुद०, मग्गद०, बोहिद०, धम्मद०, धम्मदे०, धम्मना०, धम्मसा०, धम्मवरचा०, अप्पडिह०, दंसणध० वियट्ट०, जिणेणं जाणएणं, तिन्नेणं तार०, बुद्धेणं बोहएणं, मुत्तेणं मोअगेणं; सव्वण्णेणं, सव्वद,० सिवमयलमरुतमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावि-

१ तएणं० । २ ०जवुणामो जा० अ । ००एतदन्तर्गतः पाठः अ० प्रतौ नास्ति । ३ ०मुहे पं० अ। ००एतदन्तर्गतः पाठः अ० प्रतौ नास्ति ।
४ ०हे० × × × × × लो० अ । ५ ०द० × × × × च० अ । ६ ०द० × × × ध० अ । ७ ०दे० × × × ० × × × धं० अ । ८ ०णं × ×.×.× × × × ०.सि० अ । १५ जबुइ. अ. ।

त्तियं सासयं ठाणमुवगतेणं, पंचमस्स अंगस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, छट्ठस्स णं अंगस्स णं भंते! णाया-धम्मकहाणं के अट्ठे पं० ?, जंबूत्ति, तए णं अज्जसुहम्मे थेरे अज्जजंबूणामं अणगारं एवं व०—एवं खलु जंबू! समणेणं भगवता महावीरेणं जाव संपत्तेणं, छट्ठस्स अंगस्स दो सुयक्खंधा पन्नत्ता; तंजहा—णायाणि य धम्मकहाओ य। जति णं भंते! समणेणं भगवता महावीरेणं जाव संपत्तेणं, छट्ठस्स अंगस्स दो सुयखंधा प०, तं०—णायाणि य। धम्मकहाओ य। पढमस्स णं भंते! सुयक्खंधस्स समणेणं जाव संपत्तेणं, णायाणं कति अज्झयणा पन्नत्ता ?, एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं, णायाणं एगूणवीसं अज्झयणा पं०, तं०—उक्खित्तणाए १, संघाडे २, अंडे ३, कुम्मे य ४, सेलगे ५। तुंबे य ६, रोहिणी ७, मल्ली ८, मायंदी ९, चंदिमा इय १० ॥ १ ॥ दावद्दवे ११, उदगणाए १२, मंडुक्के १३, तेयलीविय १४। नंदीफले १५, अवरकंका १६, अतिन्ने १७, सुंसुमा इय १८ ॥ २ ॥ अवरे य पुंडरीयणायए १९ एगुणवीसतिमे ॥ सूत्रम्–५ ॥

'तए णं'ति—ततोऽनन्तरं, णमित्यलंकारे, चम्पाया नगर्याः परिषत्—कूणिकराजादिका निर्गता—निःसृता, सुधर्मस्वामिवन्दनार्थं, 'जामेव दिसिं पाउब्भूया, तामेव दिसिं पडिगए'ति—यस्या दिशः सकाशात् प्रादुर्भूता—आविर्भूता आगता इत्यर्थः; तामेव दिशं प्रतिगतेति। तस्मिन् काले, तस्मिन् समये, आर्यसुधर्मणोऽन्तेवासी आर्यजम्बूनामानगारः;

---

१ ०जादिलोका० र्श

काश्यपगोत्रेण 'सत्तुस्सेहे'त्ति-सप्तहस्तोच्छ्रयो यावत्करणादिदं दृश्यं, 'समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहनाराय-संघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे-' कनकस्य-सुवर्णस्य, 'पुलग'त्ति-यः पुलको लवस्तस्य यो निकषः-कषपट्टे रेखालक्षणः, तथा-'पम्ह'त्ति-पद्मगर्भस्तद्वत् गौरो यः स तथा, वृद्धव्याख्या तु-कनकस्य, न लोहादेर्यः पुलकः-सारो वर्णातिशयः, तत्प्रधानो यो निकषो-रेखा तस्य यत्पक्ष्मबहुलत्वं, तद्वद्यो गौरः स कनकपुलकनिकषपक्ष्मगौरः, तथा-'उग्रतपा'-उग्रम्-अप्रधृष्यं तपोऽस्येतिकृत्वा, तथा-'तत्ततवे'-तप्तं-तापितं तपो येन स तप्ततपाः, एवं तेन तत्तपस्तप्तं येन कर्म्माणि संताप्य तेन तपसा स्वात्मापि तपोरूपः संतापितो यतोऽन्यस्यास्पृश्यमिव जातमिति, तथा-महातपाः-प्रशस्ततपा बृहत्तपा वा, तथा-दीप्तं तपो यस्य स दीप्ततपाः, दीप्तं तु हुताशन इव ज्वलत्तेजः कर्म्मेन्धनदाहकत्वात्; तथा-'उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेयलेसे' इति पूर्ववत्; एवंगुणविशिष्टो जम्बूस्वामी भगवान्, आर्यसुधर्म्मणः स्थविरस्य 'अदूरसामंते'त्ति-दूरं-विप्रकर्षः, सामन्तं-समीपं, उभयोरभावोऽदूरसामन्तं, तस्मिन्नातिदूरे नातिसमीपे उचिते देशे स्थित इत्यर्थः; कथं ?-'उड्ढंजाणू' इत्यादि, शुद्धपृथिव्यासनवर्जनात्, औपग्रहिकनिषद्याभावाच्च, उत्कटुकासनः सन्नपदिश्यते, ऊर्ध्वं जानुनी यस्य स ऊर्ध्वजानुः; 'अधःशिराः'-अधोमुखो नोर्द्ध्वं तिर्यग् वा विक्षिप्तदृष्टिः, किं तु नियतभूभागनियमितदृष्टिरिति भावना। 'झाणकोट्ठोवगए'त्ति-ध्यानमेव कोष्ठो ध्यानकोष्ठस्तमुपगतो ध्यानकोष्ठोपगतः, यथा हि कोष्ठके धान्यं प्रक्षिप्तमविप्रकीर्णं भवत्येवं, स भगवान् धर्मध्यानकोष्ठकमनुप्रविश्येन्द्रियमनांस्यधिकृत्य संवृतात्मा भवतीति भावः; संयमेन-संवरेण, तपसा-ध्यानेनात्मानं भावयन्-वासयन्

१-उत्क्षिप्ताध्य० आर्य-जम्बूस्वामि-वर्णनम्।

विहरति–तिष्ठति । 'तए णं से' इत्यादि, तत इत्यानन्तर्ये, तस्मात् ध्यानादनन्तरं, णमित्यलंकारे, 'स' इति पूर्वप्रस्तुतपरामर्शार्थः, तस्य तु सामान्योक्तस्य विशेषावधारणार्थं आर्यजम्बूनामेति, स च उत्तिष्ठतीति संबन्धः; किम्भूतः सन्नित्याह–'जायसड्ढे' इत्यादि, जाता–प्रवृत्ता श्रद्धा–इच्छाऽस्येति जातश्रद्धः, क ?,–वक्ष्यमाणानां पदार्थानां तत्त्वपरिज्ञाने स तथा, जातः संशयोऽस्येति जातसंशयः; संशयस्त्वनिर्द्धारितार्थं ज्ञानमुभयवस्त्वंशावलम्बितया प्रवृत्तं, स त्वेवं तस्य भगवतो जातः–यथा–भगवता श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिना त्रिभुवनभवनप्रकाशप्रदीपकल्पेन पञ्चमस्यांगस्य समस्तवस्तुस्तोमव्यतिकराविर्भावनेनार्थोऽभिहित एवं षष्ठस्याप्युक्तोऽन्यथा वेति; तथा 'जातकुतूहलो'–जातं कुतूहलं यस्य स तथा, जातौत्सुक्य इत्यर्थः; विश्वस्यापि विश्वव्यतिकरस्य पञ्चमाङ्गे प्रतिपादितत्वात् षष्ठाङ्गस्य कोऽन्योऽर्थो भगवताऽभिहितो भविष्यतीति, संजातश्रद्ध इत्यादौ समुत्पन्न श्रद्धा इत्यादौ च संशब्दः प्रकर्षादिवचनः, तथा–उत्पन्न श्रद्धः प्रागभूता उत्पन्ना श्रद्धा यस्येत्युत्पन्नश्रद्धः । अथोत्पन्नश्रद्धत्वस्य जातश्रद्धत्वस्य च कोऽर्थभेदो ?, न कश्चिदेव, किमर्थं तत्प्रयोगः ?, हेतुत्वप्रदर्शनार्थं, तथाहि–उत्पन्नश्रद्धत्वाज्जातश्रद्धः प्रवृत्तश्रद्ध इत्यर्थः; अपरस्त्वाह–जाता श्रद्धा यस्य प्रष्टुं स जातश्रद्धः, कथं जातश्रद्धो ?, यस्माज्जातसंशयः, षष्ठाङ्गार्थः पञ्चमाङ्गार्थवत् प्रज्ञप्तः उतान्यथेति, कथं संशयोऽजनि ?, यस्मात् जातकुतूहलः, कीदृशो नाम षष्ठाङ्गस्यार्थो भविष्यति ?, कथं च तमहमवभोत्स्ये इति ?; तावदवग्रहः, एवं संजातोत्पन्नसमुत्पन्नश्रद्धादय ईहापायधारणाभेदेन वाच्या इति । 'उट्ठाए उट्ठेइ'त्ति–उत्थानमुत्था–ऊर्द्ध्वं वर्तनं तया उत्थया उत्तिष्ठति उत्थाय च, 'जेणे'त्यादि प्रकटं, 'अज्जसुहम्मे थेरे' इत्यत्र षष्ठ्यर्थे सप्तमीति, 'तिखुत्तो' त्ति–त्रिकृत्वस्त्रीन् वारान्, 'आदक्षिण-

प्रदक्षिणां'-दक्षिणपार्श्वादारभ्य परिभ्रमणतो दक्षिणपार्श्वप्राप्तिरादक्षिणप्रदक्षिणा तां, 'अज्जसुहम्मं थेरं'-इत्यत्र पाठान्तरे आदक्षिणात्प्रदक्षिणो-दक्षिणपार्श्ववर्ती यः स, तथा-तं 'करोति'-विदधाति, वन्दते-वाचा स्तौति, नमस्यति-कायेन प्रणमति, नात्यासन्ने नातिदूरे उचिते देशे इत्यर्थः; 'सुस्सूसमाणे'त्ति-श्रोतुमिच्छन्, 'नमंसमाणे'त्ति-नमस्यन् प्रणमन् अभिमुखः, 'पंजलिउडे'त्ति-कृतप्राञ्जलिः विनयेन प्रणमति-उक्तलक्षणेन, 'पज्जुवासमाणे'त्ति-पर्युपासनां विदधानः, 'एव'मिति-वक्ष्यमाणप्रकारं, 'वदासि'त्ति-अवादीत्; यदवादीत् तदाह-'जई'त्यादि प्रकटं, नवरं यदि भदन्त ! श्रमणेन पञ्चमाङ्गस्यायमर्थः-अनन्तरोदितत्वेन प्रत्यक्षः प्रज्ञप्तस्ततः षष्ठाङ्गस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्त इति प्रश्नवाक्यार्थः ?, अथोत्तरदानार्थं 'जम्बूनामे'त्ति हे जम्बू !: इति-एवंप्रकारेणामन्त्रणवचसाऽऽमन्त्र्य आर्यसुधर्मा स्थविरः आर्यजम्बूनामानं अनगारमेवमवादीत्-'नायाणि'त्ति-ज्ञातानि-उदाहरणानीति प्रथमः श्रुतस्कन्धः, 'धम्मकहाओ'त्ति-धर्म्मप्रधानाः कथाः धर्मकथा इति द्वितीयः।

१-उत्क्षिप्ताध्य० शिष्य-प्रश्नपृच्छा-विधि-वर्णनम् ।

'उक्खित्ते'त्यादि श्लोकद्वयं सार्द्धं, तत्र मेघकुमारजीवेन हस्तिभवे वर्तमानेन यः पाद उत्क्षिप्तस्तेनोत्क्षिप्तेनोपलक्षितं मेघकुमारचरितमुत्क्षिप्तमेवोच्यते, उत्क्षिप्तमेव ज्ञातम्-उदाहरणं विवक्षितार्थसाधनमुत्क्षिप्तज्ञातं, ज्ञातता चास्यैवं भावनीया, दयादिगुणवन्तः सहन्त एव देहकष्टं, उत्क्षिप्तैकपादो मेघकुमारजीवहस्तीवेति; एतदर्थाभिधायकं सूत्रमधीयमानत्वादध्ययनमुक्तमेवं सर्वत्र ॥ १ ॥ तथा-संघाटकः-श्रेष्ठिचौरयोरेकबन्धनबद्धत्वमिदमप्यभीष्टार्थज्ञापकत्वात् ज्ञातमेव, एवमौचित्येन

१ °मन् अभिमुहे त्ति अभि° अ।

सर्वत्र ज्ञातशब्दो योज्यः, यथायथं च ज्ञातत्वं प्रत्यध्ययनं तदर्थावगमादवसेयमिति ॥ २ ॥ नवरं अण्डकं—मयूराण्डं ॥ ३ ॥ कूर्मश्च—कच्छपः ॥ ४ ॥ शैलको—राजर्षिः ॥ ५ ॥ तुम्बं च—अलाबुः ॥ ६ ॥ रोहिणी—श्रेष्ठिवधूः ॥ ७ ॥ मल्ली—एकोनविंशतितमजिनस्थानोत्पन्ना तीर्थकरी ॥ ८ ॥ माकन्दी नाम वणिक्, तत्पुत्रो माकन्दीशब्देनेह गृहीतः ॥ ९ ॥ चन्द्रमा इति च ॥ १० ॥ 'दावद्दवे'त्ति—समुद्रतटे वृक्षविशेषाः ॥ ११ ॥ उदकं—नगरपरिखाजलं, तदेव ज्ञातम्—उदाहरणं—उदकज्ञातम् ॥ १२ ॥ मण्डूकः—नन्दमणिकारश्रेष्ठिजीवः ॥ १३ ॥ 'तेयली इय'त्ति—तेतलिसुताभिधानोऽमात्य इति च ॥ १४ ॥ 'नंदीफल'त्ति—नन्दिवृक्षाभिधानतरुफलानि ॥ १५ ॥ 'अवरकंका'—धातकीखण्डभरतक्षेत्रराजधानी ॥ १६ ॥ 'आइण्णो'—त्ति—आकीर्णा—जात्याः समुद्रमध्यवर्त्तिनोऽश्वाः ॥ १७ ॥ 'सुंसुमा इय' त्ति—सुंसुमाभिधाना श्रेष्ठिदुहिता ॥ १८ ॥ अपरं च पुण्डरीकज्ञातमेकोनविंशतितममिति ॥ १९ ॥

जति णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं, णायाणं एगूणवीसा अज्झयणा पं०, तं—उक्खित्तणाए जाव पुंडरीएत्ति य। पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं २, इहेव जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे, दाहिणड्ढभरहे, रायगिहे णामं नयरे होत्था, वण्णओ; चेतिए वन्नओ। तत्थ णं रायगिहे नगरे, सेणिए नामं राया होत्था, महताहिमवंत० वन्नओ; तस्स णं सेणियस्स रन्नो नंदा नामं देवी होत्था, सुकुमालपाणिपाया वण्णओ ॥ सूत्रम्–६ ॥

१ गुणसिलए चे० अ।

तस्स णं सेणियस्स पुत्ते नंदाए देवीए, अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था, अहीण जाव सुरूवे, साम-
दंडभेयउवप्पयाणणीतिसुप्पउत्तणयविहिन्नू, ईहावूहमग्गणगवेसणअत्थसत्थमइविसारए, उप्पत्तियाए-
वेणइयाए-कम्मियाए-पारिणामिआए-चउव्विहाए-बुद्धिए उववेए, सेणियस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य,
कुडुंबेसु य, मंतेसु य, गुज्झेसु य, रहस्सेसु य, निच्छएसु य, आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे; मेढी पमाणं,
आहारे, आलंबणं, चक्खू, मेढीभूए, पमाणभूए, आहारभूए, आलंबणभूए, चक्खूभूए, सव्वकज्जेसु, सव्व-
भूमियासु लद्धपच्चए, विइण्णवियारे, रज्जधुरचिंतए यावि होत्था; सेणियस्स रन्नो रज्जं च, रट्ठं च, कोसं च,
कोट्ठागारं च, बलं च, वाहणं च, पुरं च, अंतउरं च; सयमेव समुवेक्खमाणे २ विहरति ॥ सूत्रम्-७ ॥

यदि प्रथमश्रुतस्कन्धस्यैतान्यध्ययनानि भगवतोक्तानि, ततः प्रथमाध्ययनस्य कोऽर्थो भगवता प्रज्ञप्तः ?, इति
शास्त्रार्थप्रस्तावना । अथैवं पृष्टवन्तं जम्बूस्वामिनं प्रति सुधर्मस्वामी यथाश्रुतमर्थं वक्तुमुपक्रमते स्मेति । 'एव'मित्यादि
सुगमं, नवरं 'एव'मिति वक्ष्यमाणप्रकारार्थः प्रज्ञप्त इति प्रक्रमः, खलुर्वाक्यालङ्कारे, जम्बूरिति शिष्यामन्त्रणे, 'इहेवे'ति
देशतः प्रत्यक्षासन्ने, न पुनरसंख्येयत्वात् ; जम्बूद्वीपानामन्यत्रेतिभावः भारते वर्षे-क्षेत्रे, 'दाहिणड्ढभरहे'त्ति-दक्षिणार्ध-
भरते, नोत्तरार्द्धभरते । 'देवी'ति-राजभार्या, 'वण्णओ'त्ति-वर्णको वाच्यः, स च वक्ष्यमाणधारिण्या इव दृश्यः ।
'अत्तए'त्ति-आत्मजः-अङ्गज इत्यर्थः, 'अहीण जाव सुरूवे'त्ति-इह यावत्करणादिदं द्रष्टव्यं, 'अहीणपंचिंदिय-

१ विहन्नु० अ । २ °ज्जे xxxxxx भे° अ । ३ °xxxxxआ° अ । ४ भारतव० अ ।

सरीरे'-अहीनानि-अन्यूनानि लक्षणतः स्वरूपतो वा, पञ्चापीन्द्रियाणि यस्मिंस्तत्तथाविधं शरीरं यस्य स तथा; 'लक्खणवंजणगुणोववेए'-लक्षणानि-स्वस्तिकचक्रादीनि, व्यञ्जनानि-मषतिलकादीनि, तेषां यो गुणः-प्रशस्तता तेनोपपेतो-युक्तो यः स तथा, उप-अप-इत-इति शब्दत्रयस्य स्थाने शकन्ध्वादिदर्शनादुपपेत इति स्यात्; 'माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगे'-तत्र मानं-जलद्रोणप्रमाणता, कथं?,-जलस्यातिभृते कुण्डे पुरुषे निवेशिते यज्जलं निस्सरति, तद्यदि द्रोणमानं भवति, तदा स पुरुषो मानप्राप्त उच्यते; तथा उन्मानं-अर्द्धभारप्रमाणता, कथं?-तुलारोपितः पुरुषो यद्यर्द्धभारं तुलति, तदा स उन्मानप्राप्त इत्युच्यते; प्रमाणं-स्वाङ्गुलेनाष्टोत्तरशतोच्छ्रयता, ततश्च मनोन्मानप्रमाणैः प्रतिपूर्णानि-अन्यूनानि, सुजातानि-सुनिष्पन्नानि, सर्वाणि अङ्गानि-शिरःप्रभृतीनि, यस्मिन् तत्तथाविधं सुन्दरमंगं-शरीरं यस्य स तथा; 'ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे'-शशिवत् सौम्याकारं, कान्तं-कमनीयमत एव प्रियं द्रष्टृणां दर्शनं-रूपं यस्य स तथा; अत एव 'सुरूवे'त्ति-सुरूप इति, तथा-सामदण्डभेदउपप्रदानलक्षणा या राजनीतयः, तासां सुष्ठु प्रयुक्तं-प्रयोगो व्यापारणं यस्य स तथा; नयानां-नैगमादीनां उक्तलक्षणनीतीनां च या विधा-विधयः प्रकारास्तान् जानाति यः स तथा, पश्चात्पदद्वयस्य कर्मधारयः; तत्र परस्परोपकारप्रदर्शनगुणकीर्तनादिना शत्रोरात्मवशीकरणं साम, तथाविधपरिक्लेशे धनहरणादिको दण्डः, विजिगीषितशत्रुपरिवर्गस्य स्वाम्यादिस्नेहापनयनादिको भेदः, गृहीतधनप्रतिदानादिकमुपप्रदानं; नयविधयस्तु सप्त नैगमादयो नयाः प्रत्येकं शतभेदा, नीतिभेदास्तु सामनीतेः पञ्च, दण्डस्य त्रयः, भेदस्य उपप्रदानस्य च पञ्च कामन्दकादिप्रसिद्धा इति। तथा ईहा च-स्थाणुरयं पुरुषो वेत्येवं सदर्थालोचनाभिमुखा मतिचेष्टा, अपोहश्च-स्थाणुरेवायमित्यादिरूपो निश्चयः,

मार्गणं च-इह बल्ल्युत्सर्प्पणादयः स्थाणुधर्मा एव प्रायो घटन्ते इत्याद्यन्वयधर्मालोचनरूपं, गवेषणं च-इह शरीरकण्डूयनादयः पुरुषधर्माः प्रायो न घटन्त इति व्यतिरेकधर्मालोचनरूपं; ईहाव्यूहमार्गणागवेषणानि; तैरर्थशास्त्रे-अर्थोपायव्युत्पादग्रन्थे कौटिल्यराज[धा]नीत्यादौ या मतिर्बोधस्तया विशारदः-पण्डितो यः स ईहाव्यूहमार्गणगवेषणार्थशास्त्रमतिविशारदः। तथौत्पत्तिक्यादिकया बुद्ध्या उपपेतो-युक्तः, तत्रौत्पत्तिकी-अदृष्टाश्रुताननुभूतार्थविषयाऽऽकस्मिकी, वैनयिकी-गुरुविनयलभ्यशास्त्रार्थसंस्कारजन्या, कर्म्मजा-कृषिवाणिज्यादिकर्माभ्यासप्रभवा; पारिणामिकी-प्रायो वयोविपाकजन्या। तथा-श्रेणिकस्य राज्ञः बहुषु कार्येषु च-भक्तसेवकराज्यादिदानलक्षणकृत्येषु विषयभूतेषु, तथा-कुटुम्बेषु च-स्वकीयपरकीयेषु विषयभूतेषु ये मन्त्रादयो निश्चयान्तास्तेषु आप्रच्छनीयः, तत्र मन्त्रा-मन्त्रणानि पर्यालोचनानि, तेषु च गुह्यानीव गुह्यानि-लज्जनीयव्यवहारगोपितानि, तेषु च रहस्यानि-एकान्तयोग्यानि; तेषु निश्चयेषु वा-इत्थमेवेदं विधेयमित्येवंरूपनिर्णयेषु। अथवा-स्वतन्त्रेषु कार्यादिषु षट्सु विषयेषु चकाराः समुच्चयार्थाः, आप्रच्छनीयः-सकृत् प्रतिप्रच्छनीयो द्वित्रिकृत्वः, किमिति ?-यतोऽसौ 'मेढि'त्ति-खलकमध्यवर्त्तिनी स्थूणा, यस्यां नियमिता गोपङ्क्तिर्धान्यं गाहयति, तद्वद्यमालम्ब्य सकलमन्त्रिमण्डलं मन्त्रणीयार्थान् धान्यमिव विवेचयति स मेढी; तथा-प्रमाणं-प्रत्यक्षादि, तद्वद्यः तद्दृष्टार्थानामव्यभिचारित्वेन तथैव प्रवृत्तिनिवृत्तिगोचरत्वात् स प्रमाणं; तथा-'आधारे'-आधारस्येव सर्वकार्येषु लोकानामुपकारित्वात्, तथा-'आलंबनं' रज्ज्वादि, तद्वदापद्गर्त्तादिनिस्तारकत्वादालम्बनं; तथा-चक्षुः-लोचनं तद्वल्लोकस्य मन्त्र्यमात्यादिविविधकार्येषु प्रवृत्तिनिवृत्तिविषयप्रदर्शकत्वाच्चक्षुरिति। एतदेव प्रपञ्चयति-'मेढिभूए' इत्यादि, भूतशब्द उपमार्थः, सर्वकार्येषु-सन्धिविग्रहादिषु सर्वभूमिकासु-मन्त्रिअमात्यादि-

स्थानकेषु लब्धः–उपलब्धः, प्रत्ययः–प्रतीतिरविसंवादिवचनं च यस्य स, तथा–'विइण्णवियारे'त्ति वितीर्णो–राज्ञाऽनुज्ञातो विचारः–अवकाशो यस्य विश्वसनीयत्वात् असौ वितीर्णविचारः सर्वकार्यादिष्विति प्रकृतं; अथवा–'विण्णवियारे' विज्ञापिता राज्ञो लोकप्रयोजनानां निवेदयिता, किं बहुना ?,–राज्यधुरश्चिन्तकोऽपि–राज्यनिर्वाहकश्चाप्यभूत्; एतदेवाह–श्रेणिकस्य राज्ञो राज्यं च–राष्ट्रादिसमुदायात्मकं, राष्ट्रं च–जनपदं, कोशं च–भाण्डागारं, कोष्ठागारं च–धान्यगृहं, बलं च–हस्त्यादिसैन्यं, वाहनं च–वेसरादिकं, पुरं च–नगरं, अन्तःपुरं च–अवरोधनं, स्वयमेव–आत्मनैव समुत्प्रेक्षमाणो–निरूपयन् समुत्प्रेक्षमाणो वा–व्यापारयन् इह च द्विर्वचनमाभीक्ष्ण्येऽवसेयं, 'विहरति'–आस्ते स्म ।

तस्स णं सेणियस्स रन्नो धारिणी नामं देवी होत्था, जाव सेणियस्स रन्नो इट्ठा जाव विहरइ ॥सूत्रम्–८॥ तए णं सा धारिणी देवी, अन्नया कयाइ[1] तंसि तारिसगंसि, छक्कट्ठकलट्ठमट्ठसंठियखंभुग्गयपवरसालभंजियउज्जलमणिकणगरयणथूभियविडंकजालद्धचंदणिज्जूहकंतरकणयालिचंदसालियाविभत्तिकलिते, सरसच्छधाऊवलवण्णरइए, बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे, अब्भिंतरओ पत्तसुविलिहियचित्तकम्मे, णाणाविहपंचवण्णमणिरयणकोट्टिमतले, पउमलयाफुल्लवल्लिवरपुप्फजातिउल्लोयचित्तियतले, वंदणवरकणगकलससुविणिम्मियपडिपुंजियसरसपउमसोहंतदारभाए, पयरगालंबंतमणिमुत्तदामसुविरइयदारसोहे, सुगंध-

१ कयाइं अ । २ ०गंसि घठलठमठसठियखंभुग्गतप० अ । ३ °रयणथुभियविडग० अ । ४ ०णीज्जुहतरकणतालि० अ । ५ ० मत्तिकलिये अ ।
६ ० जायि० अ ।

वरकुसुममउयपम्हलसयणोवयारे, मणहिययनिव्वुइयरे, कप्पूरलवंगमलयचंदनकालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतसुरभिमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे, सुगंधवरगंधिए, गंधवट्टिभूते, मणिकिरणपणासियंधकारे; किंबहुणा ?,—जुइगुणेहिं सुरवरविमाणवेलंबियवरघरए, तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि, सालिंगणवट्टिए, उभओ बिब्बोयणे, दुहओ उन्नए, मज्झेणयगंभीरे, गंगापुलिणवालुयाउद्दालसालिसए, उयचियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छण्णे, अच्छरयमलयनयतयकुसत्तलिंबसीहकेसरपच्चुत्थए, सुविरइयरयत्ताणे, रत्तंसुयसंवुए, सुरम्मे, आइणगरूयवूरणवणीयतुल्लफासे; पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ एगं, महं, सत्तुस्सेहं, रययकूडसन्निहं, नहयलंसि सोमं, सोमागारं, लीलायंतं, जंभायमाणं, मुहमतिगयं; गयं पासित्ता णं पडिबुद्धा ॥ ९ ॥

ततेणं सा धारिणी देवी, अयमेयारूवं, उरालं, कल्लाणं, सिवं, धन्नं, मंगल्लं, सस्सिरीयं, महासुमिणं; पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणी, हट्ठतुट्ठा चित्तमाणंदिया, पीइमणा, परमसोमणस्सिया, हरिसवसविसप्पमाणहियया, †धाराहयकलंबपुप्फगंपिव समूससियरोमकूवा, तं सुमिणं ओगिण्हइ २; †सयणिज्जाओ उट्ठेति २; पायपीढातो पच्चोरुहइ, पच्चोरुहइत्ता; अतुरियमचवलमसंभंताए, अविलंबियाए, रायहंससरिसीए गतीए, जेणामेव से सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता; सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं, कंताहिं, पिया-

१ ०भूये° अ । २ ०यारे. अ । ३ °या अवदाल सा° अ । ४ °वरत्तसम० अ । ५ °मइग° अ । § ‡ एतदन्तर्गतः पाठः अप्रतौ नास्ति ।

हिं, मणुन्नाहिं, मणामाहिं, उरालाहिं, कल्लाणाहिं, सिवाहिं, धन्नाहिं, मंगल्लाहिं, सस्सिरियाहिं, हिययगमणिज्जाहिं, हिययपल्हायणिज्जाहिं, मियमहुररिभियगंभीरसस्सिरीयाहिं, गिराहिं संलवमाणी २; पडिबोहेइ, पडिबोहेत्ता सेणिएणं रन्ना अब्भणुन्नाया समाणी णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्तंसि, भद्दासणंसि, निसीयति २ त्ता; आसत्था, विसत्था, सुहासणवरगया, करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु, सेणियं रायं एवं वदासी-एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि, सालिंगणवट्टिए जाव नियगवयणमइवयंतं गयं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तं एयस्स णं देवाणुप्पिया! उरालस्स जाव सुमिणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सति?, ॥ सूत्रम्-१० ॥

'धारणी नामं देवी होत्था जाव सेणियस्स रन्नो इट्ठा जाव विहरइ'-इत्यत्र द्विर्यावच्छब्दकरणादेवं द्रष्टव्यम्। 'सुकुमालपाणिपाया, अहीणपंचेंदियसरीरा, लक्खणवंजणगुणोववेया, माणुम्माणपमाणसुजायसव्वंगसुंदरंगी, ससिसोमाकारा, कंता, पियदंसणा, सुरूवा, करतलपरिमिततिवलियबलियमज्झा;'-करतलपरिमितो-मुष्टिग्राह्यस्त्रिवलीको-रेखात्रयोपेतो बलितो-बलवान् मध्यो-मध्यभागो यस्याः सा तथा। 'कोमुईरयणिकरविमलपडिपुन्नसोमवयणा'-कौमुदीरजनीकरवत्-कार्त्तिकीचन्द्र इव विमलं-प्रतिपूर्णं सौम्यं च वदनं यस्याः सा, तथा-'कुंडलुल्लिहियगंडलेहा'-कुण्डलाभ्यामुल्लिखिता-घृष्टा गण्डलेखाः-कपोलविरचितमृगमदादिरेखा यस्याः सा। तथा-

---

[1] °यदसनह° सि° अ।

'सिंगारागारचारुवेसा'–शृङ्गारस्य-रसविशेषस्यागारमिवागारं, अथवा–शृङ्गारो–मण्डनभूषणाटोपः, तत्प्रधानः आकारः–आकृतिर्यस्याः सा, तथा चारुर्वेषो–नेपथ्यं यस्याः सा, तथा–ततः कर्मधारयः। तथा–'संगयगयहसियभणियविहिय-विलाससललियसंलावणिउणजुत्तोवयारकुसला'–संगता–उचिता गतहसितभणितविहितविलासा यस्याः सा, तथा–तत्र विहितं–चेष्टितं, विलासो–नेत्रचेष्टा, तथा सह ललितेन–प्रसन्नतया ये संलापाः–परस्परभाषणलक्षणास्तेषु निपुणा या सा, तथा–युक्ता–संगता ये उपचारा–लोकव्यवहारास्तेषु कुशला या सा, तथा–ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः। 'पासाईया'–चित्तप्रसादजनिका, 'दरिसणिज्जा'–यां पश्यच्चक्षुर्न श्राम्यति, 'अभिरूपा'–मनोज्ञरूपा, 'पडिरूवा'–द्रष्टारं द्रष्टारं प्रति रूपं यस्याः सा, तथा–'सेणियस्स रन्नो इट्ठा वल्लभा कांता'–काम्यत्वात्, प्रिया–प्रेमविषयत्वात्, मणुन्ना-सुन्दरत्वात्; 'नामधेज्जा'–नामधेयवती प्रशस्तनामधेयवतीत्यर्थः, नाम वा धार्यं–हृदि धरणीयं यस्याः सा; तथा–'वेसासिया'–विश्वसनीयत्वात्, 'सम्मया'–तत्कृतकार्यस्य सम्मतत्वाद्बहुमता–बहुशो बहुभ्यो वाऽन्येभ्यः सकाशान्मता, बहुमता, बहुमानपात्रं वा; 'अणुमया'–विप्रियकरणस्यापि पश्चात्मता अनुमता, 'भंडकरंडगसमाणा'–आभरणकरण्ड-कसमानोपादेयत्वात्, 'तेल्लकेला इव सुसंगोविया'–तैल्लकेला–सौराष्ट्रप्रसिद्धो मृन्मयस्तैलस्य भाजनविशेषः, स च भङ्गभयाल्लोच(ठ)नभयाच्च सुष्ठु संगोप्यते एवं साऽपि; तथोच्यते 'चेलपेडा इव सुसंपरिगिहीया' वस्त्रमञ्जूषेवेत्यर्थः, 'रयणकरंडगोविव सुसारविया'–सुसंरक्षितेत्यर्थः, कुत इत्याह–'मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं दंसा, मा णं

१ द्रष्टार × × × प्रति० अ। २ प्रिया सदाप्रे० अ।

१–उत्क्षिप्ताध्य० धारिण्याः शृङ्गारादिवर्णनम्।

मसगा, मा णं वाला, मा णं चोरा, मा णं वाइयपित्तियसंभियसन्निवाइयविविहरोगायंका, फुसंतुत्तिकट्टु; सेणिएणं रन्ना सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरति'। माशब्दा निषेधार्थाः, णंकारा वाक्यालङ्कारार्थाः; अथवा–'माणं'ति–मैनामिति प्राकृतत्वात्, व्यालाः–श्वापदभुजगाः, रोगाः–कालसहाः, आतङ्काः–सद्योघातिनः; इतिकट्टु–इतिकृत्वा इतिहेतोर्भोगभोगान्–अतिशयवद्भोगानिति। 'तए णं'ति–ततोऽनन्तरं, 'तंसि तारिसयंसि'त्ति–यदिदं वक्ष्यमाणगुणं तस्मिंस्तादृशके, यादृशमुपचितपुण्यस्कन्धानामङ्गिनामुचितं, 'वरघरए'त्ति–संबन्धः वासभवने इत्यर्थः; कथंभूते ?,–'षट्काष्ठकं'–गृहस्य बाह्यालन्दकं षड्दारुकमिति यदागमप्रसिद्धं, द्वारमित्यन्ये; स्तम्भविशेषणमिदमित्यन्ये तथा–लष्टा–मनोज्ञा, मृष्टा–मसृणाः, संस्थिता–विशिष्टसंस्थानवन्तो ये स्तम्भास्तथा उद्गता–ऊर्ध्वंगता स्तम्भेषु वा उद्गता–व्यवस्थिताः स्तम्भोद्गताः, प्रवराणां वराः–प्रवरवराः–अतिप्रधाना याः शालभञ्जिकाः–पुत्रिकास्तथा उज्ज्वलानां मणीनां–चन्द्रकान्तादीनां कनकस्य रत्नानां–कर्केतनादीनां या स्तूपिका–शिखरं; तथा–विटङ्कः–कपोतपाली वरण्डिकाधोवर्त्ती अस्तरविशेषः, जालं–सच्छिद्रो गवाक्षविशेषः, अर्द्धचन्द्रः–अर्द्धचन्द्राकारं सोपानं निर्यूहकं–द्वारपार्श्वविनिर्गतदारु अंतरं–अस्तरविशेष एव पानीयान्तरमिति सूत्रधारैर्यद् व्यपदिश्यते निर्यूहकद्वयस्य यान्यन्तराणि तानि वा निर्यूहकान्तराणि कणकाली–अस्तरविशेषश्चन्द्रसालिका च–गृहोपरि शाला एतेषां गृहांशानां या विभक्तिः–विभजनं विविक्तता तया कलितं–युक्तं यत्तत्तथा तस्मिन्; 'सरसच्छवाडवडंबसरइए'त्ति–स्थाप्यं, कैश्चित् पुनरेवं संभावितमिदं–'सरसच्छधाउवलवन्नरइए'त्ति–तत्र

१ गदेव व० अ। २ °ष एव तथा चन्द° अ। ३ वाऽवलवत्तरए त्ति अ।

सरसेन—अच्छेन धातूपलेन—पाषाणधातुना गैरिकविशेषेणेत्यर्थः वर्णो रचितो यत्र तत्तथा, 'बाहिरओ दूमियघट्ठमट्ठे'त्ति—दूमितं—धवलितं घृष्टं—कोमलपाषाणादिना अत एव मृष्टं—मसृणं यत्तत्तथा तस्मिन्, तथा अभ्यन्तरतः प्रशस्तं—स्वकीय २ कर्मण्यापृतं शुचि—पवित्रं लिखितं चित्रकर्म यत्र तत्तथा—तस्मिन्; तथा—नानाविधानां जातिभेदेन पञ्चवर्णानां मणिरत्नानां सत्कं कुट्टिमतलं—मणिभूमिका यस्मिंस्तत्तथा तत्र, तथा—पद्मैः—पद्माकारैरेवं लताभिरशोकलताभिः पद्मलताभिर्वा मृणालिकाभिः पुष्पवल्लीभिः—पुष्पप्रधानाभिः पत्रवल्लिभिः, तथा—वराभिः पुष्पजातिभिः—मालतीप्रभृतिभिश्चित्रितमुल्लोकतलं—उपरितनभागो यस्मिन् तत्तथा तत्र, इह च प्राकृतत्वेन 'उल्लोयचित्तियनले' इत्येवं विपर्ययनिर्देशो द्रष्टव्य इतिः अथवा—पद्मादिभिरुल्लोकस्य चित्रितं तलं-अधोभागो यस्मिन्निति, तथा-वन्द्यन्त इति वन्दना-मङ्गल्याः, ये वरकनकस्य कलशाः, सुष्ठु—'निम्मिय'त्ति—न्यस्ताः प्रतिपूजिता—चन्दनादिचर्चिताः, सरसपद्माः—सरसमुखस्थगनकमलाः शोभमाना द्वारभागेषु यस्य, पाठान्तरापेक्षया चन्दनवरकनककलशैः सुन्यस्तैस्तथा प्रतिपुञ्जितैः—पुञ्जीकृतैः सरसपद्मैः शोभमाना द्वारभागा यस्य तत्तथा तस्मिन्; तथा—प्रतरकाणि—स्वर्णादिमया आभरणविशेषास्तत्प्रधानैर्मणिमुक्तानां दामभिः—स्रग्भिः सुष्ठु विरचिता द्वारशोभा यस्य तत्तथा तस्मिन्, तथा—सुगन्धिवरकुसुमैर्मृदुकस्य—मृदोः पक्ष्मलस्य च—पक्ष्मवतः शयनस्य—तूल्यादिशयनीस्य यः उपचारः—पूजा उपचारो वा स विद्यते यस्मिन् मण इत्यस्य मत्वर्थीयत्वात्, तत् सुगन्धिवरकुसुममृदुपक्ष्मलशयनीयोपचारवत्तच्च, यद् हृदयनिर्वृतिकरं च—मनःस्वास्थ्यकरं तत्तथा तस्मिन्; तथा—कर्पूरश्च लवङ्गानि च—फलविशेषाः, मलयचन्दनं च—पर्वत-

१ °नैर्लैंबमानैः म° अ।

१—श्री उत्क्षिप्ताध्य० धारिण्याः भोग—सामग्र्यादि-वर्णनम्।

विशेषप्रभवं श्रीखण्डं, कालागुरुश्च—कृष्णागरुः, प्रवरकुन्दुरुक्कं च—चीडाभिधानो गन्धद्रव्यविशेषः, तुरुष्कं च—सिल्हकं, धूपश्च—गन्धद्रव्यसंयोगज इति द्वन्द्वः, एतेषां वा संबन्धी यो धूपः, तस्य दह्यमानस्य सुरभिर्यो मघमघायमानः—अतिशयवान् गन्धः उद्धूतः—उद्भूतः—तेनाभिरामम्—अभिरमणीयं यत्तथा तस्मिन्; तथा—सुष्ठु गन्धवराणां—प्रधानचूर्णानां गन्धो यस्मिन् अस्ति तत् सुगन्धवरगन्धिकं तस्मिन्, तथा—गन्धवर्त्तिः—गन्धद्रव्यगुटिका कस्तूरिका वा गन्धस्तद्गुटिका गन्धवर्त्तिस्तद्भूते—सौरभ्यातिशयात्तत्कल्पे, तथा—मणिकिरणप्रणाशितान्धकारे; किं बहुना वर्णकेन ?,—वर्णकसर्वस्वमिदं द्युत्या गुणैश्च सुरवरविमानं विडम्बयति—जयति यद्वरगृहकं तत्तथा तत्र, तथा—तस्मिन् तादृशे शयनीये सहालिङ्गनवर्त्या—शरीरप्रमाणोपधानेन यत्तत्सालिङ्गनवर्त्तिकं तत्र, 'उभओ विव्वोयणे'त्ति—उभयतः उभौ—शिरोऽन्तपादान्तावाश्रित्य, 'विव्वोयणे'त्ति—उपधाने यत्र तत्तथा तस्मिन्; 'दुहओ'त्ति—उभयतः उन्नते मध्ये नतं च तन्निम्नत्वाद्गभीरं च महत्त्वान्नतगम्भीरं, अथवा—मध्येन च भागेन तु गम्भीरे—अवनते गङ्गापुलिनवालुकायाः अवदातः—अवदलनं पादादिन्यासेऽधोगमनमित्यर्थः तेन 'सालिसए'त्ति सदृशकमतिनम्रत्वाद्यत्तत्तथा तत्र, दृश्यते च हंसतूल्यादिष्वयं न्याय इति। तथा—'उयचिय'त्ति—परिकर्मितं यत् क्षौमं दूकूलं—कार्पासिकमतसीमयं वा वस्त्रं तस्य युगलापेक्षया यः पट्टः—एकः शाटकः स प्रतिच्छादनम्—आच्छादनं यस्य तत्तथा तत्र, तथा—आस्तरको मलको नवतः कुशक्तो लिम्बः सिंहकेसरश्चैते आस्तरणविशेषास्तैः प्रत्यवस्तृतम्—आच्छादितं यत्तत्तथा, इह चास्तरको लोकप्रतीत एव, मलककुशक्तौ तु रूढिगम्यौ, नवतस्तु ऊर्णाविशेषमयो जीनमिति लोके यदुच्यते, लिम्बो—बालोरभ्रस्योर्णायुक्ता कृतिः, सिंहकेसरो—जटिलकम्बलः, तथा—सुष्ठु विरचितं शुचि वा रचितं रजस्त्राणं—आच्छादनविशेषोऽपरि-

भोगावस्थायां यस्मिंस्तत्तथा तत्र, रक्तांशुकसंवृते-मशकगृहाभिधानवस्त्रावृते सुरम्ये, तथा-आजिनकं-चर्ममयो वस्त्रविशेषः; स च स्वभावादतिकोमलो भवति। तथा-रूतं-कर्पासपक्ष्म, बूरो-वनस्पतिविशेषः, नवनीतं-म्रक्षणं, एभिस्तुल्यः स्पर्शो यस्य; तूलं वा-अर्कतूलं, तत्र पक्षे एतेषामिव स्पर्शो यस्य तत्तथा तत्र, पूर्वरात्रश्चासावपररात्रश्च-पूर्वरात्रापररात्रः, स एव काललक्षणः समयः, न तु सामाचारादिलक्षणः पूर्वरात्रापररात्रकालसमयस्तत्र, मध्यरात्रे इत्यर्थः; इह चार्षत्वादेकरेफलोपेन-'पुव्वरत्तावरत्ते'त्युक्तं, अप[र]रात्रशब्दो वाऽयमिति। सुप्तजागरा-नातिसुप्ता नातिजाग्रती, अत एवाह-'ओहीर-माणी २'त्ति-वारं वारमीषन्निद्रां गच्छन्तीत्यर्थः; एकं महान्तं सप्तोत्सेधमित्यादिविशेषणं मुखमतिगतं गजं दृष्ट्वा, प्रतिबुद्धेति योगः; तत्र सप्तोत्सेधं सप्तसु-कुम्भादिषु स्थानेषून्नतं सप्तहस्तोच्छ्रितं वा 'रययं'ति-रूप्यं, 'नहयलंसि'त्ति-नभस्तलान्मुख-मतिगतमिति योगः। वाचनान्तरे त्वेवं दृश्यते-'जाव सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिवुद्धा'-तत्र यावत्करणादिदं द्रष्टव्यम्। 'एक्कं च णं महंतं पंडुरं धवलयं सेयं'-एकार्थशब्दत्रयोपादानं चात्यन्तशुक्लताख्यापनार्थं, एतदेवोपमाने-नाह-'संखउलविमलदहिघणगोखीर(विमल)फेणरयणिकरपगासं'-शंखकुलस्येव विमलदध्न इव घनगोक्षीरस्येव विमलफेनस्येव रजनीकरस्येव प्रकाशः-प्रभा यस्य स तथा तं, अथवा-'हाररजतखीरसागरदगरयमहासेलपंडुरतरोरु-रमणिज्जदरिसणिज्जं'-हारादिभ्यः पाण्डुरतरो यः स तथा, इह च महाशैलो-महाहिमवान्, तथा उरुः-विस्तीर्णः, रमणीयो-रम्योऽत एव दर्शनीय इति पदचतुष्टयस्य कर्मधारयोऽतस्तं, तथा-'थिरलट्ठपउट्ठपीवरसुसिलिट्ठविसिट्ठ-तिक्खदाढाविडंबियमुहं'-स्थिरौ-अप्रकम्पौ, लष्टौ-मनोज्ञौ, प्रकोष्ठौ-कूर्पराग्रेतनभागौ यस्य स तथा; तथा-पीवराः-

स्थूलाः, सुश्लिष्टाः-अविसर्वरा विशिष्टा-मनोहरास्तीक्ष्णा या दंष्ट्रास्ताभिः कृत्वा, 'विडंबियं'ति-विवृतं मुखं यस्य स तथा, ततः कर्मधारयस्तं; तथा-'परिकम्मियजच्चकमलकोमलमाईयसोहंतलट्ठउट्ठं'-परिकर्म्मितं-कृतपरिकर्मा, 'माइय'त्ति-मात्रावान् परिमित इत्यर्थः, शेषं प्रतीतं; तथा-'रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालुनिल्लालियग्गजीहं'-रक्तोत्पलपत्रमिव मृदुकेभ्यः सुकुमारमतिकोमलं तालु च निर्लालिताग्रा-प्रसादिताग्रा जिह्वा च यस्य स तथा तं, तथा-'महुरगुलियभिसंतपिंगलच्छं'-मधुगुटिकेव-क्षौद्रवर्त्तिरिव, 'भिसंत'त्ति-दीप्यमाने पिङ्गले-कपिले अक्षिणी यस्य स तथा तं; तथा-'मूसागयपवरकणयताविय आवत्तायंतवट्टतडियविमलसरिसनयणं'-मूषागतं मृन्मयभाजनविशेषस्थं यत्प्रवरकनकं तापितमग्निधमनात्, 'आवत्तायंत'त्ति-आवर्त्तं कुर्वत् तद्वत् तथा वृत्ते च तडिते-विवृत्ते विमले च सदृशे च-समाने नयने यस्य स तथा तं; अत्र च 'वट्टतट्ट'-इत्येतावदेव पुस्तके दृष्टं संभावनया तु वृत्ततडित इति व्याख्यातमिति, पाठान्तरेण तु 'वट्टपडिपुण्णपसत्थनिद्धमहुगुलियपिंगलच्छं' स्फुटश्चायं पाठः । तथा-'विसालपीवरभमरोरूपडिपुण्णविमलखंधं'-विशालो-विस्तीर्णः, पीवरो-मांसलः, 'भमरोरू'-भ्रमरा-रोमावर्त्ता उरवो-विस्तीर्णा यत्र स तथा, परिपूर्णो विमलश्च स्कन्धो यस्य स तथा तं; अथवा-'पडिपुण्णसुजायखंधं', तथा-'मिदुविसदसुहुमलक्खणपसत्थविच्छिन्नकेसरसडं'-मृद्व्यो विशदा-अविमूढाः सूक्ष्मा लक्षणप्रशस्ताः-प्रशस्तलक्षणा विस्तीर्णाः, केसरसटाः-स्कन्धकेशरजटा यस्य स तथा तं; अथवा-'निम्मलवरकेसरधरं', तथा-'ऊसियसुनिम्मियसुजायअप्फोडियलंगूलं'-उच्छ्रितम्-ऊर्द्धं नीतं सुनिर्मितं सुष्ठु भंगुरतया न्यस्तं सुजातं सद्गुणोपपेततया आस्फोटितं भुवि लाङ्गुलं-पुच्छं येन स तथा तं, सौम्यं-

उपशान्तं सौम्याकारं–शान्ताकृतिं, 'लीलायंतं'ति–लीलां कुर्वन्तं, 'जंभायंतं'–विजृम्भमाणं शरीरचेष्टाविशेषं विदधानं; 'गगणतलाओ ओवयमाणं सीहं अभिमुहं मुहे पविसमाणं पासित्ता पडिबुद्ध'त्ति'–'अयमेयारूवं'ति इमं महास्वप्नमिति संबंधः, एतदेव–वर्णितस्वरूपं रूपं यस्य स्वप्नस्य, न कंविकृतमूनमधिकं वा स तथा तं; 'उरालं'ति–उदारं। प्रधानं, कल्याणं–कल्याणानां शुभसमृद्धिविशेषाणां कारणत्वात् कल्ये वा–नीरोगत्वमणति–गमयति कल्याणं तद्धेतुत्वात्, शिवम्–उपद्रवोपशमहेतुत्वात्, धन्यं धनावहत्वात्, 'मंगल्यं'–मङ्गले दुरितोपशमे साधुत्वात् सश्रीकं–सशोभनमिति, 'समाणी'त्ति–सती हृष्टतुष्टा–अत्यर्थं तुष्टा; अथवा–हृष्टा–विस्मिता, तुष्टा–तोषवती; 'चित्तमाणंदिय'त्ति–चित्तेनानन्दिता आनन्दितं वा चित्तं यस्याः सा चित्तानन्दिता, मकारः प्राकृतत्वात्, प्रीतिर्मनसि यस्या सा प्रीतिमनाः; 'परमसोमणस्सिया'–परमं सौमनस्यं संजातं यस्याः सा परमसौमनस्यिता, हर्षवशेन विसर्पद्–विस्तारयायि हृदयं यस्याः सा तथा, सर्वाणि प्राय एकार्थिकान्येतानि पदानि प्रमोदप्रकर्षप्रतिपादनार्थत्वात् स्तुतिरूपत्वाच्च न दुष्टानि; आह च–"वक्ता हर्षभयादिभिराक्षिप्तमनास्तथा स्तुवन्निन्दन्। यत्पदमसकृद्ब्रूयात्तत्पुनरुक्तं न दोषाय ॥ १ ॥ इति, 'पचोरुहइ'त्ति–प्रत्यवरोहति, अत्वरितं–मानसौत्सुक्याभावेनाचपलं, कायतः–असंभ्रान्त्याऽस्खलन्त्या अविलम्बितया–अविच्छिन्नतया, 'रायहंससरिसीए'त्ति–राजहंसगमनसदृश्या गत्या, 'ताहिं'ति–या विशिष्टगुणोपेतास्ताभिर्गीर्भिरिति संबन्धः; इष्टाभिः–तस्य वल्लभाभिः, कान्ताभिः–अभिलषिताभिः, सदैव तेन प्रियाभिः–अद्वेष्याभिः, सर्वेषामपि मनोज्ञाभिः–मनोरमाभिः,

१ किं विकृत० अ। २ °क्याभावात् न च° अ। ३ °असंभ्रांतया० अ। ४ रायहं० अ।

मनःप्रियाभिश्चिन्तयापि; उदाराभिः–उदारनादवर्णोच्चारादियुक्ताभिः, कल्याणाभिः–समृद्धिकारिकाभिः–शिवाभिः–गीर्दोषानुपद्रुताभिः, धन्याभिः–धनलम्भिकाभिः, मङ्गल्याभिः–मङ्गलसाध्वीभिः, सश्रीकाभिः–अलङ्कारादिशोभावद्भिः, हृदयगमनीयाभिः–हृदये या गच्छन्ति कोमलत्वात् सुबोधत्वाच्च तास्तथा ताभिः, हृदयप्रह्लादिकाभिः–हृदयप्रह्लादनीयाभिः, आह्लादजनकाभिः; 'मितमधुररिभितगंभीरसश्रीकाभिः'–मिताः–वर्णपदवाक्यापेक्षया परिमिताः, मधुराः–स्वरतः, रिभिताः–स्वरघोलनाप्रकारवत्यः, गम्भीराः–अर्थतः शब्दतश्च, सह श्रिया–उक्तगुणलक्ष्म्या यास्तास्तथा, ततः पदपञ्चकस्य कर्मधारयस्ततस्ताभिः; गीर्भिः वाग्भिः, संलपन्ती–पुनः पुनर्जल्पन्तीत्यर्थः, नानामणिकनकरत्नानां भक्तिभिः–विच्छित्तिभिश्चित्रं–विचित्रं यत्तत्तथा, तत्र भद्रासने–सिंहासने, आश्वस्ता गतिजनितश्रमापगमात्, विश्वस्ता संक्षोभाभावात् अनुत्सुका वा; 'सुहासणवरगय'त्ति–सुखेन शुभे वा आसनवरे गता–स्थिता या सा तथा, करतलाभ्यां परिगृहीतः–आत्तः करतलपरिगृहीतस्तं शिरस्यावर्त्त आवर्त्तनं–परिभ्रमणं यस्य स, तथा–शिरसावर्त्त इत्येके, शिरसा अप्राप्त इत्यन्ये; तमञ्जलिं मस्तके कृत्वा, एवमवादीत्–'किं मन्ने' इत्यादि, को मन्ये–कः कल्याणफलवृत्तिविशेषो भविष्यति ?,–इह मन्ये वितर्कार्थो निपातः, 'सोच्च'त्ति–श्रुत्वा श्रवणतः, निशम्य–अवधार्य हृष्टतुष्टो यावद्विसर्पद्धृदयः। तथा–वाचनान्तरे पुनरिह राज्ञीवर्णके चेदमुपलभ्यते ॥ ९ ॥

ततेणं सेणिए राया, धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म, हट्ठ जाव हियये[2], †धाराहयनीवसुरभिकुसुमचुं(चं)चुमालइयतणुऊससियरोमकूवे†, तं सुमिणं उग्गिण्हइ, उग्गिण्हइत्ता; ईहं पविसति २,

१ ०वतीभिः. अ। २ हियर्यसि. अ। † † एतदन्तर्गतः पाठः 'अ' प्रतौ नास्ति।

अप्पणो साभाविएणं, मइपुव्वएणं, बुद्धिविन्नाणेणं, तस्स सुमिणस्स अत्थोग्गहं करेति २, धारणिं देवीं ताहिं जाव हिययपल्हायणिज्जाहिं, मिउमहुररिभियगंभीरसस्सिरियाहिं, वग्गूहिं, अणुवूहेमाणे २; एवं वयासी-उराले णं तुमे देवाणुप्पिए !, सुमिणे दिट्ठे कल्लाणा; णं तुमे देवाणुप्पिए !, सुमिणे दिट्ठे, सिवे, धन्ने, मंगल्ले, सस्सिरीए; णं तुमे देवाणुप्पिए !, सुमिणे दिट्ठे, आरोग्गतुट्ठिदीहाउयकल्लाणमंगल्लकारए; णं तुमे देवी सुमिणे दिट्ठे, अत्थलाभो ते देवाणुप्पिए !, पुत्तलाभो ते देवा०, रज्जलाभो०, भोगसोक्खलाभो ते देवाणुप्पिए !; एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए !, नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं, अद्धट्ठमाण य राइंदि(इं)याणं विइक्कंताणं; अम्हं कुलकेउं, कुलदीवं, कुलपव्वयं, कुलवडिंसयं, कुलतिलकं, कुलकित्तिकरं, कुलवित्तिकरं, कुलणंदिकरं, कुलजसकरं, कुलाधारं, कुलपायवं, कुलविवद्धणकरं; सुकुमालपाणिपायं जाव दारयं पयाहिसि। से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे, विन्नायपरिणयमेत्ते, जोव्वणगमणुपत्ते, सूरे, वीरे, विक्कंते, विच्छिन्नविपुलबलवाहणे, रज्जवंती राया भविस्सइ; तं उराले णं तुमे देवीए !, सुमिणे दिट्ठे जाव, आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्लाणकारए, णं तुमे देवी !, सुमिणे दिट्ठेत्तिकट्टु भुज्जो २ अणुवूहेइ ॥ सूत्रम्-१० ॥ तते णं सा धारणी देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी, हट्ठतुट्ठा जाव हियया करतलपरिग्गहियं जाव अंजलिं कट्टु; एवं वदासी-एवमेयं देवाणुप्पिया !, तहमेयं, अवितहमेयं, असंदिद्धमेयं, इच्छियमेयं दे०, पडिच्छियमेयं, इच्छियपडिच्छियमेयं,

१-देवि। २ देवाणुपिए सु॰-अ। ३ ०माण×राइ० अ। ४ ०वईरा० अ।

१-उत्क्षिप्ताध्य० स्वप्नफल-सूत्रप्रदर्शनम्।

सच्चे णं एसमट्ठे, जं णं तुज्झे वदहत्तिकट्टु; तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छइत्ता; सेणिएणं रन्ना अब्भ- णुण्णाया समाणी णाणामणिकणगरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता; जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, सयंसि सयणिज्जंसि निसीयइ, निसीयइत्ता; एवं वदासी-मा मे से उत्तमे, पहाणे, मंगल्ले, सुमिणे; अन्नेहिं पावसुमिणेहिं पडिहमिहित्ति कट्टु, देवयगुरुजणसंबद्धाहिं, पसत्थाहिं, धम्मियाहिं-कहाहिं सुमिणजागरियं; पडिजागरमाणी विहरइ ॥ सूत्रम्-११ ॥

'धाराहयनीय(व)सुरभिकुसुमचंचुमालइयतणुऊसवियरोमकूवे'त्ति-तत्र नीयः-कदम्बः, धाराहतनीय(प)- सुरभिकुसुममिव; 'चंचुमालइय'त्ति-पुलकिता तनुर्यस्य स तथा, किमुक्तं भवति ?,-'ऊसविय'त्ति-उत्सृता रोमकूपा- रोम-रन्ध्राणि यस्य स तथा, तं स्वप्नमवगृह्णाति अर्थावग्रहतः, ईहामनुप्रविशति-सदर्थप्रर्या(पर्याय)लोचनलक्षणां, ततः 'अप्पणो'त्ति-आत्मसंबन्धिना स्वाभाविकेन-सहजेन, मतिपूर्वेण-आभिनिबोधिकप्रभवेन, बुद्धिज्ञानेन-मतिविशेषभूतौ- त्पत्तिक्यादिबुद्धिरूपपरिच्छेदेन, अर्थावग्रहं-स्वप्नफलनिश्चयं करोति, ततोऽवादीत् 'उराले ण'मित्यादि; अर्थलाभ इत्यादिषु भविष्यतीति शेषो दृश्यः, एवं उपबृंहयन्-अनुमोदयन्; 'एवं खलु'त्ति-एवंरूपादुक्तफलसाधनसमर्थात् स्वप्नात् दारकं प्रजनिष्यसीति संबन्धः । 'बहुपडिपुण्णाणं'त्ति-अतिपूर्णेषु षष्ठ्याः सप्तम्यर्थत्वात्, अर्द्धमष्टमं येषु तान्यर्द्धाष्टमानि तेषु रात्रिन्दिवेषु-अहोरात्रेषु व्यतिक्रान्तेषु । कुलकेत्वादीन्येकादश पदानि,-तत्र केतु-चिह्नं-ध्वज इत्यर्थः, केतुरिव केतुरद्भुतत्वात्

१ "ंX तुज्झे" अ ।

कुलस्य केतुः-कुलकेतुः; पाठान्तरेण-'कुलहेउं'-कुलकारणं, एवं दीप इव दीपः प्रकाशकत्वात्, पर्वतोऽनभिभवनीयस्थिरा-श्रयसाधर्म्यात्; अवतंसः-शेखरः, उत्तमत्वात्तिलको-विशेषकः भूषकत्वात्; कीर्तिकरः-ख्यातिकरः, क्वचिद्वृत्तिकरमित्यपि दृश्यते, वृत्तिश्च-निर्वाहः; नन्दिकरो-वृद्धिकरः, यशः-सर्वदिग्गामिप्रसिद्धिविशेषस्तत्करः, पादपो-वृक्ष आश्रयणीयच्छा-यत्वात्; विवर्द्धनं-विविधैः प्रकारैर्वृद्धिरेव तत्करम्। 'विण्णायपरिणयमेत्ते'त्ति-विज्ञकः परिणतमात्रश्च कलादिष्विति गम्यते, तथा-शूरो दानतोऽभ्युपेतनिर्वाहणतो वा, वीरः-संग्रामतः, विक्रान्तो भूमण्डलाक्रमणतः; विस्तीर्णे विपुले-अतिवि-स्तीर्णे बलवाहने-सैन्यगवादिके यस्य स तथा, राज्यपती राजा स्वतन्त्र इत्यर्थः। 'त'मिति यस्मादेवं तस्मादुदारादि-विशेषणः स्वप्नः, 'तुमे'त्ति-त्वया दृष्ट इति निगमनम्। 'एवमेत'दिति-राजवचने प्रत्ययाविष्करणम्, एतदेव स्फुटयति-'तहमेयं'ति-तथैव तद्यथा भवन्तः प्रतिपादयन्ति, अनेनान्वयतस्तद्वचनसत्यतोक्ता, 'अवितहमेयं'ति-अनेन व्यतिरेक-भावतः, 'असंदिद्धमेय'मित्यनेन संदेहाभावतः, 'इच्छियं'ति-इष्टं ईप्सितं वा, 'पडिच्छियं'ति-प्रतीष्टं प्रतीप्सितं वा, अभ्युपगतमित्यर्थः; इष्टप्रतीष्टम् ईप्सितप्रतीप्सितं वा धर्मद्वययोगात्;-अत्यन्तादरख्यापनाय चैवं निर्देशः 'इति कट्टु'त्ति-इति भणित्वा, 'उत्तमे'त्ति-स्वरूपतः, 'पहाणे'त्ति-फलतः, एतदेवाह-'मंगल्ले'त्ति-मंगले साधुः स्वप्न इति, 'सुमिण-जागरियं'ति-स्वप्नसंरक्षणार्थं जागरिका तां 'प्रतिजागती'-प्रतिविदधती ॥ १०-११ ॥

तए णं सेणिए राया पच्चूसकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावइत्ता; एवं वदासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया!, बाहिरियं उवट्ठाणसालं अज्ज सविसेसं, परमरम्मं, गंधोदगसित्तसुइयसंमज्जि-

ओवलित्तं, पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं, कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतमघमघंतगं-
धुद्धुयाभिरामं, सुगंधवरगंधियं, गंधवट्टिभूतं, करेह य, कारवेह य २, एवमाणत्तियं पच्चप्पिणह; तेते[1] णं
ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता, समाणा, हट्ठा-तुट्ठा जाव पच्चप्पिणंति; तते णं सेणिए राया
कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए, फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियंमि, अहापंडुरे पभाए, रत्तासोगपगास-
किंसुयसुयमुहगुंजद्धरागबंधुजीवगपारावयचलणनयणपरहुयसुरत्तलोयण[2]जासुयणकुसुमजलियजलणतव-
णिज्जकलसहिंगुलयनिगररूवाइरेगरेहन्तसस्सिरीए दिवागरे, अहक्कमेण उदिए, तस्स दिण[कर]-कर-
[3]परपरावयारपारद्धंमि अंधयारे बालातवकुंकुमेण खइयव्व जीवलोए, लोयणविसआणुआसविगसंत-
विसददंसियंमि लोए, कमलागरसंडबोहए, उट्ठियंमि सूरे, सहस्सरस्सिंमि दिणयरे, तेयसा जलंते,
सयणिज्जाओ उट्ठेति २; जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ २, अट्टणसालं अणुपविसति २; अणेगवा-
यामजोगवग्गणवामद्दणमल्लजुद्धकरणेहिं संते, परिस्संते; सयपागेहिं, सहस्सपागेहिं, सुगंधवरतेल्लमादि-[4]
एहिं, पीणणिज्जेहिं, दीवणिज्जेहिं, दप्पणिज्जेहिं, मदणिज्जेहिं,[5] विंहणिज्जेहिं, सव्विंदियगायपल्हायणिज्जेहिं;
अब्भंगएहिं अब्भंगिए, समाणे तेल्लचम्मंसि; पडिपुण्णपाणिपायसुकुमालकोमलतलेहिं, पुरिसेहिं—छेएहिं,
दक्खेहिं, पट्ठेहिं,[6] कुसलेहिं, मेहावीहिं, निउणेहिं, निउणसिप्पोवगतेहिं, जियपरिस्समेहिं, अब्भंगण-

---

१ °तए णं° अ। २ °जासुमण° अ। ३ °परपरा° अ। ४ ०माइएहिं अ। ५ °मद्दणिज्जेहिं° अ। ६ पत्तट्ठेहिं अ।

परिमद्दणुव्वलणकरणगुणनिऊमाएहिं; अट्ठिसुहाए, मंससुहाए, तयासुहाए, रोमसुहाए, चउव्विहाए, संबाहणाए; संबाहिए, समाणे; अवगयपरिस्समे, नरिंदे अट्टणसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमइत्ता; जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता; मज्जणघरं अणुपविसति, अणुपविसित्ता; समंत-(मुत्त)जालाभिरामे, विचित्तमणिरयणकोट्टिमतले, रमणिज्जे—ण्हाणमंडवंसि, णाणामणिरयणभत्ति-चित्तंसि, ण्हाणपीढंसि, सुहनिसन्ने; सुहोदगेहिं, पुप्फोदएहिं, गंधोदएहिं; सुद्धोदएहि य पुणो पुणो कल्लाणगपवरमज्जणविहीए मज्जिए; तत्थ—कोउयसएहिं, बहुविहेहिं, कल्लाणगपवरमज्जणावसाणे, पम्हलसुकुमालगंधकासाईयलूहियंगे, अहतसुमहग्घदूसरयणसुसंवुए, सरससुरभिगोसीसचंदणाणुलित्तगत्ते, सुइमालावन्नगविलेवणे, आविद्धमणिसुवन्ने, कप्पियहारद्धहारतिसरयपालंबपलंबमाणकडिसुत्तसुकयसोहे, पिणद्धगेवज्जे, अंगुलेज्जगललियंगललियकयाभरणे, णाणामणिकडगतुडियथंभियभुए, अहियरूवसस्सिरीए, कुंडलुज्जोइयाणणे, मउडदित्तसिरए, हारोत्थयसुकतरइयवच्छे, पालंबपलंबमाणसुकयपडउत्तरिज्जे, मुद्दियापिंगलंगुलीए, णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहनिउणोवियमिसिमिसंतविरइयसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठियपसत्थआविद्धवीरवलए; किं बहुणा ?,—कप्परूक्खए चेव सुअलंकियविभूसिए नरिंदे, सकोरिंटमल्लदामेणं, छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, उभओ चउचामरवालवीइयंगे, मंगलजयसद्दकयालोए, अणेगगणनायगदंडणायगराईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियमंतिमहामंतिगणगदोवारियअमच्चचेडपीढमद्दनगरणिगमसेट्ठिसे-

णावइसत्थवाहदूयसंधिवाल-सद्धिं संपरिवुडे, धवलमहामेहनिग्गएविव, गहगणदिप्पंतरिक्खतारागणाण मज्झे ससिव्व पियदंसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता; जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता, सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने। तते णं से सेणिए राया अप्पणो अदूरसामंते, उत्तरपुरच्छिमे दिसिभागे, अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चुत्थुयातिं सिद्धत्थमंगलोवयारकतसंतिकम्माइं रयावेइ, रयावित्ता; णाणामणिरयणमंडियं, अहियपेच्छणिज्जरूवं, महग्घवरपट्टणुग्गयं, सण्हबहुभत्तिसयचित्तट्ठाणं; ईहामियउसभतुरयणरमगरविहगवालगाकिंनररुरुसर-भचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं, सुखचियवरकणगपवरपेरंतदेसभागं, अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेइ, अंछावइत्ता; अच्छरगमउअमसूरगउच्छइयं, धवलवत्थपच्चत्थुयं, विसिट्ठं अंगसुहफासयं सुमउयं धारिणीए देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावइत्ता; कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता; एवं वदासी-"खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !, अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थपाढए, विविहसत्थकुसले, सुमिणपाढए सद्दावेह, सद्दावइत्ता; एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह"। तते णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव हियया, करयलपरिग्गहियं दसनहं, सिरसावत्तं, मत्थए अंजलिं कट्टु; एवं देवो तहत्ति आणाए, विणएणं वयणं पडिसुणेंति २, सेणियस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमंति २, रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुमिणपाढगगिहाणि तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता; सुमिणपाढए सद्दावेंति। तते णं ते

सुमिणपाढगा सेणियस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा, हट्ठ २ जाव हियया ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता, अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा, हरियालियसिद्धत्थयकयमुद्धाणा, सतेहिं सतेहिं गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति २, रायगिहस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सेणियस्स रन्नो भवणवडेंसगदुवारे तेणेव उवागच्छंति २, एगतओ मिलयंति २; सेणियस्स रन्नो भवणवडेंसगदुवारेणं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता; जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव सेणिए राया, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता; सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, सेणिएणं रन्ना अच्चिय, वंदिय, पूलिय, माणिय, सक्कारिया, सम्माणिया, समाणा, पत्तेयं २, पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति; तते णं सेणिए राया जवणियंतरियं धारणीं देवीं[1] ठवेइ, ठवेत्ता; पुप्फफलपडिपुण्णहत्थे, परेणं विणएणं ते सुमिणपाढए; एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया!, धारिणीदेवी अज्ज तंसि तारिसयंसि सयणिज्जंसि जाव महासुमिणं पासित्ता, णं पडिबुद्धा, तं एयस्स णं देवाणुप्पिया!, उरालस्स जाव सस्सिरीयस्स महासुमिणस्स, के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सति?, तते णं ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, णिसम्म, हट्ठ जाव हियया, तं सुमिणं सम्मं ओगिण्हंति २, ईहं अणुपविसंति २, अन्नमन्नेण सद्धिं संचालेंति, संचालित्ता; तस्स सुमिणस्स लद्धट्ठा, गहियट्ठा, पुच्छियट्ठा, विणिच्छियट्ठा, अभिगयट्ठा; सेणियस्स रन्नो

१ देविं अ।

पुरओ सुमिणसत्थाइं उच्चारेमाणा २, एवं वदासी–एवं खलु अम्हं सामी !, सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा, तीसं महासुमिणा, बावत्तरिं सव्वसुमिणा दिट्ठा; तत्थ णं सामी !, अरिहंतमायरो वा, चक्कवट्टि· मातरो वा, अरहंतंसि वा, चक्कवट्टिंसि वा, गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुमिणाणं, इमे चोद्दस महासुमिणे पासित्ताणं, पडिबुज्झंति; तंजहा–“ गयउसभसीहअभिसेयदामससिदिणयरं झयं कुंभं। पउमसरसागरविमाणभवणरयणुच्चय सिंहिं च ॥ १ ॥ ” वासुदेवमातरो वा, वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि, एएसिं चोद्दसण्हं महासुमिणाणं, अन्नतरे सत्त महासुमिणे पासित्ता, णं पडिबुज्झंति; बलदेवमातरो वा, बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि, एएसिं चोद्दसण्हं महासुमिणाणं, अण्णतरे चत्तारि महासुविणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति; मंडलियमायरो वा, मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि, एएसिं चोद्दसण्हं महासुमिणाणं, अन्नतरं एगं महासुमिणं पासित्ताणं, पडिबुज्झंति; इमे य णं सामी !, धारणीए देवीए एग महासुमिणे दिट्ठे, तं उराले णं सामी !, धारणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे, जाव आरोग्गतुट्ठिदीहाउकल्ला-णमंगल्लकारए णं सामी !, धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे; अत्थलाभो सामी !, सोक्खलाभो सामी !, भोगलाभो सामी !, पुत्तलाभो, रज्जलाभो, एवं खलु सामी !; धारिणीदेवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं जाव दारग पयाहिसि, सेवि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते, जोव्वणगमणुपत्ते, सूरे, वीरे, विक्कंते, विच्छिन्नविउलबलवाहण रज्जवती राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा; तं उराले णं सामी !

धारिणीए देवीए सुमीण दिट्ठे, जाव आरोग्गतुट्ठिजायदिट्ठेत्तिकट्टु भुज्जो २ अणुवूहेति । तते णं सेणीए राया तेसिं सुमिणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा, णिसम्म, हट्ठ जाव हियए करयल जाव; एवं वयासी-एवमेयं देवाणुप्पिया !, जाव जन्नं तुब्भे वदह त्ति कट्टु, तं सुमिणं सम्मं पडिच्छति २, ते सुमिणपाढए विपुलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेण य सक्कारेति, सम्माणेति २, विपुलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलयति २; पडिविसज्जेइ । तते णं से सेणिए राया सीहासणाओ अब्भुट्ठेति २, जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता; धारिणीदेवीं एवं वदासी-एवं खलु देवाणुप्पिए !, सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा जाव एगं महासुमिणं जाव भुज्जो २, अणुवूहति; तते णं धारिणिदेवी सेणियस्स रन्नो अंतिए एयमट्ठं सोचा, णीसम्म, हट्ठ जाव हियया, तं सुमिणं सम्मं पडिच्छति २, जेणेव सए वासघरे तेणेव उवागच्छति २, ण्हाया कयबलिकम्मा जाव विपुलाहिं जाव विहरति ॥ सूत्रम्-१२ ॥

'पच्चूसे'त्यादि, प्रत्यूषकाललक्षणो यः समयः-अवसरः स तथा, तत्र कौटुम्बिकपुरुषान्-आदेशकारिणः, 'सद्दावेइ'त्ति-शब्दं करोति-शब्दयति, 'उपस्थानशालां'-आस्थानमण्डपं; 'गन्धोदकेने'त्यादि-गन्धोदकेन सिक्ता, शुचिका-पवित्रा, संमार्जिता-कचवरापनयनेन, उपलिप्ता-छगणादिना या सा तथा तां, इदं च विशेषणं गन्धोदकसिक्तसंमार्जितोपलिप्तशुचिकामित्येवं दृश्यं, सिक्ताद्यनन्तरभावित्वाच्छुचिकत्वस्य; तथा-पञ्चवर्णः सरसः सुरभिश्च मुक्तः-क्षिप्तः पुष्पपुञ्जलक्षणो यः उपचारः-पूजा तेन कलिता या सा तथा तां, 'काले'त्यादि-पूर्ववत्; 'आणत्तियं पच्चप्पिणह'त्ति-आज्ञप्तिम्-आदेशं

प्रत्यर्पयत-कृतां सतीं निवेदयत । 'कल्लं'मित्यादि,-'कल्ल'मिति-श्वः प्रादुः-प्रकाश्ये, ततः प्रकाशप्रभातायां रजन्यां; 'फुल्लोप्पल(त्पल)कमलकोमलोन्मीलितं' फुल्लं-विकसितं, तच्च तदुत्पलं च-पद्मं, फुल्लोत्पलं, तच्च कमलश्च-हरिणविशेषः; फुल्लोत्पलकमलौ, तयोः कोमलम्-अकठोरमुन्मीलितं-दलानां नयनयोश्चोन्मीलनं यस्मिंस्तत्तथा तस्मिन् । अथ रजनीविभातानन्तरं पाण्डुरे-शुक्ले, प्रभाते-उषसि, 'रत्तासोगे'त्यादि; रक्ताशोकस्य प्रकाशः-प्रभा, स च किंशुकं च-पलाशपुष्पं, शुकमुखं च, गुञ्जा-फलविशेषो रक्तकृष्णस्तदर्धं, बंधुजीवकं च-बन्धूकं, पारापतः-पक्षिविशेषः, तच्चलननयने च; परभृतः-कोकिलः, तस्य सुरक्तं लोचनं च; 'जासुमिण'[1] इति-जपा वनस्पतिविशेषः, तस्याः कुसुमं च, ज्वलितज्वलनश्च, तपनीयकलशश्च, हिङ्गुलको-वर्णकविशेषस्तन्निकरश्च-राशिरिति द्वन्द्वः,तत एतेषां यद्रूपं ततोऽतिरेकेण-आधिक्येन,'रेहंत'त्ति-शोभमाना स्वा स्वकीया,श्रीः-वर्णलक्ष्मीर्यस्य स तथा तस्मिन्, 'दिवाकरे'-आदित्ये; अथ-अनन्तरं क्रमेण-रजनीक्षयपाण्डुरप्रभातकरणलक्षणेन 'उदिते'-उद्गते, 'तस्स दिण[कर]करपरंपरावयारपारद्धंमि अंधकारे'त्ति-तस्य-दिवाकरस्य, दिने-दिवसे, अधिकरणभूते, दिनाय वा यः करपरम्परायाः-किरणप्रवाहस्यावतारः-अवतरणं तेन प्रारब्धम्-आरब्धमभिभवितुमिति गम्यते, अपराद्धं वा-विनाशितं दिनकरपरम्परावतारप्रारब्धं तस्मिन् सति, इह च तस्येति सापेक्षत्वेऽपि समासः; तथा-दर्शनादन्धकारे-तमसि, तथा-बालातप एव कुङ्कुमं तेन खचिते इव जीवलोके सति; तथा लोचनविषयस्य-दृष्टिगोचरस्य योऽणुयासोत्ति-अनुकाशो विकाशः प्रसर इत्यर्थस्तेन विकसंश्चासौ वर्द्धमानो विशदश्च-स्पष्टः स चासौ दर्शितश्चेति लोचनविषयानुकाशविशददर्शित-

[1] जासुमण अ ।

स्तस्मिन्, कस्मिन्नित्याह-लोके अयमभिप्रायः-अन्धकारस्य क्रमेण हानौ लोचनविषयविकाशः क्रमेणैव भवति, स च विकसन्तं लोकं दर्शयत्येव; अंधकारसद्भावे दृष्टेरप्रसरणे लोकस्य संकीर्णस्येव प्रतिभासनादिति, तथा-कमलाकरा-ह्रदादय-स्तेषु षण्डानि-नलिनीषण्डानि तेषां बोधको यः तस्मिन् उत्थिते-उदयानन्तरावस्थावाप्ते[2] 'सूरे'-आदित्ये, किंभूते ?,-सहस्ररश्मौ, तथा-'दिनकरे'-दिनकरणशीले; तेजसा ज्वलति सतीति । 'अट्टणसाल'त्ति-अट्टनशाला-व्यायामशाले-त्यर्थः, अनेकानि यानि [3]व्यायामानि योग्या च-गुणनिका वल्गनं च-उल्ललनं, व्यामर्दनं च-परस्परेण बाह्वाद्यङ्गमोटनं, मल्लयुद्धं च-प्रतीतं, करणानि च-बाहु[4]भङ्गविशेषा मल्लशास्त्रप्रसिद्धानि, तैः श्रान्तः सामान्येन, परिश्रान्तो अङ्गप्रत्यङ्गापेक्षया सर्वतः; शतकृत्वो यत्पक्वं शतेन वा कार्षापणानां यत्पक्वं तच्छतपक्वमेवमितरदपि, सुगन्धिवरतैलादिभिरभ्यंगैरिति योगः; आदिशब्दात् घृतकर्पूरपानीयादिग्रहः । किम्भूतैः ?,—'प्रीणनीयैः'-रसरुधिरादिधातुसमताकारिभिर्दीपनीयैः-अग्निजननैः, दर्पणीयैः-बलकरैः, मदनीयैः-[5]मन्मथबृंहणीयैर्मांसोपचयकारिभिः, सर्वेन्द्रियगात्रप्रह्लादनीयैः, अभ्यंगैः-स्नेहनैः, अभ्यंगः [6]क्रियते यस्य सोऽभ्यङ्गितः सन्, ततस्तैलचर्मणि-तैलाभ्यक्तस्य संबाधनाकरणाय यच्चर्म तत्तैलचर्म तस्मिन् संबाहिते 'समाणे'त्ति-योगः, कैरित्याह ?,-पुरुषैः, कथम्भूतैः ?,-प्रतिपूर्णानां पाणिपादानां सुकुमालकोमलानि-अतिकोमलानि, तलानि-अधोभागा येषां ते तथा तैः, छेकैः-अवसरज्ञैर्द्विसप्ततिकलापण्डितैरिति च वृद्धाः, दक्षैः-कार्याणामविलम्बितकारिभिः, प्रष्ठैः-वाग्मिभिरिति वृद्धव्याख्या, अथवा-प्रष्ठैः-अग्रगामिभिः, कुशलैः-साधुभिः, संबाधनाकर्मणि मेधाविभिः-

१. लौचनxxxविकाशैः अ-आ । २ °स्थाप्राप्ते अ । ३ °व्यायामयो° अ । ४ °हुxxअंगमंग० अ । ५ °मन्मथवर्धनैः वृ० अ । ६ °क्रियते स्म य० अ ।

अपूर्वविज्ञानग्रहणशक्तिनिष्ठैः, निपुणैः—क्रीडाकुशलैर्निपुणशिल्पोपगतैः—निपुणानि—सूक्ष्माणि यानि शिल्पानि—अङ्गमर्दनादीनि तान्युपगतानि—अधिगतानि यैस्ते तथा तैर्जितपरिश्रमैः, व्याख्यान्तरं तु छेकैः—प्रयोगज्ञैर्दक्षैः—शीघ्रकारिभिः; 'पत्तट्ठेहिं 'ति—प्राप्तार्थैरधिकृतकर्मणि निष्ठां गतैः कुशलैः—आलोचितकारिभिः, मेधाविभिः—सकृच्छ्रुतदृष्टकर्मज्ञैः, निपुणैः—उपायारम्भिभिः, निपुणशिल्पोपगतैः—सूक्ष्मशिल्पसमन्वितैरिति, अभ्यङ्गनपरिमर्दनोद्वलनानां करणे ये गुणास्तेषु निर्मातैः, अस्थ्नां सुखहेतुत्वादस्थिसुखा तया; 'संवाहनये'ति—विश्रामणया अपगतपरिश्रमः, 'समंत-जालाभिरामे'त्ति—समन्तात्—सर्वतो जालकैर्विच्छित्तिभिः छिद्रवद्गृहावयवविशेषैरभिरामो—रम्यो यः स्नानमण्डपः स तथा, पाठान्तरे 'समत्त-जालाभिरामे'त्ति—तत्र समस्तैर्जालकैरभिरामो यः स तथा, पाठान्तरेण 'समुत्तजालाभिरामे'—सह मुक्ताजालैर्यो वर्ततेऽभिरामश्च स तथा तत्र। शुभोदकैः—पवित्रस्थानाहृतैः, गन्धोदकैः—श्रीखण्डादिमिश्रैः, पुष्पोदकैः—पुष्परसमिश्रैः, शुद्धोदकैश्च स्वाभाविकैः, कथं मज्जितः ?, इत्याह—'तत्र'—स्नानावसरे यानि कौतुकशतानि रक्षादीनि तैः, 'पक्ष्मले'त्यादि,—पक्ष्मला—पक्ष्मवती, अत एव सुकुमाला गन्धप्रधाना काषायिका—कषायरक्ता शाटिका तया लूषितमङ्गं यस्य स तथा, अहतं—मलमूषिकादिभिरनुपद्रुतं प्रत्यग्रमित्यर्थः, सुमहार्घं दूष्यरत्नं—प्रधानवस्त्रं तेन सुसंवृतः—परिगतस्तद्वा सुष्ठु संवृतं—परिहितं येन स तथा, शुचिनी—पवित्रे माला च—पुष्पमाला वर्णकविलेपनं च—मण्डनकारि कुङ्कुमादि विलेपनं यस्य स तथा, आविद्धानि—परिहितानि मणिसुवर्णानि [1]येन स तथा, कल्पितो—विन्यस्तो हारः—अष्टादशसरिकः, अर्द्धहारो—नवसरिकः, त्रिसरिकं च

१ यस्य स० अ आ.।

प्रतीतमेव यस्य स तथा, प्रालम्बो-झुम्बनकं प्रलम्बमानो यस्य स तथा, कटिसूत्रेण-कट्याभरणविशेषेण सुष्ठु कृता शोभा यस्य स तथा, ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः; अथवा-कल्पितहारादिभिः सुकृता शोभा यस्य स तथा, तथा पिनद्धानि-परिहितानि ग्रैवेयकाङ्गुलीयकानि येन स तथा, तथा-ललिताङ्गके अन्यान्यपि ललितानि कृतानि-न्यस्तानि आभरणानि यस्य स तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः; तथा-नानामणीनां कटकत्रुटिकैः-हस्तबाह्वाभरणविशेषैर्बहुत्वात्[1] स्तम्भिताविव स्तम्भितौ भुजौ यस्य स तथा, अधिकरूपेण सश्रीकः-सशोभो यः स तथा, कुण्डलोद्योतिताननः मुकुटदीप्तशिरस्कः हारेणावस्तृतम्-आच्छादितं तेनैव सुष्ठु कृतरतिकं वक्षः-उरो यस्यासौ हारावस्तृतसुकृतरतिकवक्षाः, मुद्रिकापिङ्गलाङ्गुलीकः-मुद्रिका-अङ्गुल्याभरणानि ताभिः पिङ्गलाः-कपिला अङ्गुलयो यस्य स तथा, प्रलम्बेन-दीर्घेण प्रलम्बमानेन च सुष्ठु कृतं पटेनोत्तरीयम्-उत्तरासङ्गो येन स तथा, नानामणिकनकरत्नैर्विमलानि महार्हाणि-महार्घाणि, निपुणेन शिल्पिना; 'उविय'त्ति-परिकर्मितानि, 'मिसिमिसंत'त्ति-दीप्यमानानि यानि विरचितानि-निर्मितानि, सुश्लिष्टानि सुगन्धीनि विशिष्टानि-विशेषवन्त्यन्येभ्यो लष्टानि-मनोहराणि, संस्थितानि प्रशस्तानि च आविद्धानि-परिहितानि, वीरवलयानि येन स तथा; सुभटो हि यदि कश्चिदन्योऽप्यस्ति वीरव्रतधारी तदाऽसौ मां विजित्य मोचयत्वेतानि वलयानीति स्पर्द्धयन् यानि परिदधाति तानि वीरवलयानीत्युच्यन्ते। किं बहुना?,-वर्णितेनेति शेषः, कल्पवृक्ष इव सुष्ठु अलङ्कृतो विभूषितश्च फलपुष्पादिभिः कल्पवृक्षो, राजा तु मुकुटादिभिरलङ्कृतो विभूषितस्तु वस्त्रादिभिरिति, सह कोरण्टकप्रधानैर्माल्यदामभिर्यच्छत्रं तेन ध्रियमाणेन, कोरण्टकः-

[1] °हुलत्वात्° आ।

पुष्पजातिः, तत्पुष्पाणि मालान्तेषु शोभार्थं दीयन्ते, मालायै हितानि–माल्यानि–पुष्पाणि दामानि–माला इति, चतुर्णां चामराणां प्रकीर्णकानां वालैर्वीजितमङ्गं यस्येति वाक्यं, मङ्गलभूतो जयशब्दः कृत आलोके–दर्शने लोकेन यस्य स तथा, तथा–अनेके ये गणनायकाः–प्रकृतिमहत्तराः, दण्डनायकाः–तन्त्रपालाः, राजानो–माण्डलिकाः, ईश्वराः–युवराजानो मतान्तरेणाणिमाद्यैश्वर्ययुक्ताः, तलवराः–परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धविभूषिताः राजस्थानीयाः, माडम्बिकाः–छिन्नमडम्बाधिपाः, कौटुम्बिकाः–कतिपयकुटुम्बप्रभवोऽवलगकाः, मन्त्रिणः–प्रतीताः, महामन्त्रिणो–मन्त्रिमण्डलप्रधानाः, हस्तिसाधनोपरिका इति वृद्धाः; गणकाः–गणितज्ञाः, भाण्डागारिका इति वृद्धाः; दौवारिकाः–प्रतीहाराः राजद्वारिका वा, अमात्या–राज्याधिष्ठायकाः, चेटाः–पादमूलिकाः, पीठमर्दाः–आस्थाने आसनासीनसेवकाः, वयस्या इत्यर्थः; 'नगर'–नगरवासिप्रकृतयो, निगमाः–कारणिकाः, श्रेष्ठिनः–श्रीदेवताध्यासितसौवर्णपट्टविभूपितोत्तमाङ्गाः, सेनापतयः–नृपतिनिरूपिताश्चतुरङ्गसैन्यनायकाः, सार्थवाहाः–सार्थनायकाः, दूताः–अन्येषां गत्वा राजादेशनिवेदकाः, सन्धिपाला–राज्यसन्धिरक्षकाः, एषां द्वन्द्वः ततस्तैः, इह तृतीयाबहुवचनलोपो द्रष्टव्यः; सार्द्धं–सह, न केवलं तत्सहितत्वमेवापि तु तैः समिति–समन्तात् परिवृतः–परिकरित इति, नरपतिर्मज्जनगृहात् प्रतिनिष्क्रामतीति संबन्धः; किंभूतः ?,–प्रियदर्शनः, क इव ?;–धवलमहामेघनिर्गत इव शशी, तथा–'ससिव्व'त्ति–वत्करणस्यान्यत्र संबन्धस्ततो ग्रहगणदीप्यमानऋक्षतारागणानां मध्ये इव वर्तमान इति। सिद्धार्थकप्रधानो यो मङ्गलोपचारस्तेन कृतं शान्तिकर्म–विघ्नोपशमकर्म येषु तानि तथा। 'णाणामणी'-त्यादि–यवनिकामाञ्छयतीति संबन्धः, अधिकं प्रेक्षणीयं रूपं यस्यां रूपाणि वा यस्यां सा तथा तां, महार्घा चासौ वरपत्तने–

वरवज्रोत्पत्तिस्थाने उद्गता च–च्यूता तां श्लक्ष्णानि बहुभक्तिशतानि यानि चित्राणि तेषां स्थानं, तदेवाह–ईहामृगाः–वृकाः, ऋषभाः–वृषभाः, तुरगनरमगरविहगाः प्रतीताः, व्यालाः–श्वापदभुजगाः, किन्नराः–व्यन्तरविशेषाः, रुरवो–मृगविशेषाः, सरभाः–आटव्याः महाकायपशवः, पराशरेतिपर्यायाः; चमराः–आटव्या गावः, कुञ्जराः–दन्तिनः, वनलताः–अशोकादिलताः, पद्मलताः–पद्मिन्यः एतासां यका भक्तयो–विच्छित्तयस्ताभिश्चित्रा या सा तथा तां, सुष्ठु खचिता–मण्डिता वरकनकेन प्रवरपर्यन्तानाम्–अञ्चलकर्णवर्त्तिलक्षणानां देशभागा–अवयवा यस्यां सा तथा तां, आभ्यन्तरिकीं–आस्थानशालाया अभ्यन्तरभागवर्त्तिनीं–यवनिकां–काण्डपटं, 'अंछावेइ'त्ति–आयतां कारयति, आस्तरकेण प्रतीतेन मृदुकमसूरकेण च प्रतीतेनावस्तृतं यत्तत्तथा, धवलवस्त्रेण प्रत्यवस्तृतम्–आच्छादितं विशिष्टं–शोभनं अङ्गस्य सुखः स्पर्शो यस्य तत्तथा, अष्टाङ्गम्–अष्टभेदं दिव्योत्पातान्तरिक्षादिभेदं यन्महानिमित्तं–शास्त्रविशेषः तस्य सूत्रार्थपाठका ये ते तथा तान्, 'विणयेण वयणं पडिसुणेंति'त्ति–प्रतिशृण्वन्ति–अभ्युपगच्छन्ति वचनं, विनयेन किम्भूतेनेत्याह–'एव'मिति, यथैव यूयं भणथ, तथैव 'देवो'त्ति; हे देव !, 'तहत्ति'त्ति–नान्यथा आज्ञया–भवदादेशेन करिष्याम इत्येवमभ्युपगमसूचक-पदचतुष्टयभणनरूपेणेति, जाव हिययत्ति–'हरिसवसविसप्पमाणहियया'–स्नानानन्तरं कृतं बलिकर्म यैः स्वगृहदेवतानां ते, तथा–'जाव पायच्छित्त'त्ति, 'कयकोउयमंगलपायच्छित्ता;'–तत्र कृतानि कौतुकमंगलान्येवेति प्रायश्चित्तानि दुःस्वप्नादिविघातार्थमवश्यकरणीयत्वाद्यैस्ते तथा, तत्र कौतुकानि–मषीतिलकादीनि, मंगलानि तु–सिद्धार्थकदध्यक्षतदूर्वाङ्कुरादीनि, हरितालिका–दूर्वा, सिद्धार्थका अक्षताश्च कृता मूर्द्धनि यैस्ते, तथा–क्वचित् 'सिद्धत्थयहरियालियाकयमंगल-

१–श्री-उत्क्षिप्ताध्य० दर्शनीय-यवनिकादि-वर्णनम्।

मुद्धाणा' एवं पाठः, स्वकेभ्य आत्मीयेभ्य इत्यर्थः । 'जएणं विजएणं वद्धावेन्ति'–जयेन विजयेन च वर्द्धस्व त्वमित्याचक्षत इत्यर्थः, तत्र जयः–परैरनभिभूयमानता प्रतापवृद्धिश्च, विजयस्तु–परेषामभिभव इति, अर्चिताः–चर्चिताश्चन्दनादिना, वन्दिताः–सद्गुणोत्कीर्तनेन, पूजिताः–पुष्पैर्मानिता–दृष्टिप्रणामतः, सत्कारिताः–फलवस्त्रादिदानतः, सन्मानितास्तथाविधया प्रतिपत्त्या 'समाण'त्ति–सन्तः; 'अण्णमण्णेण सद्धिं'ति–अन्योऽन्येन सह इत्येवं 'संचालेंति'त्ति–संचालयन्ति–संचारयन्तीति, पर्यालोचयन्तीत्यर्थः; लब्धार्थाः स्वतः पृष्टार्थाः, परस्परतः गृहीतार्थाः, पराभिप्रायग्रहणतः, तत एव विनिश्चितार्थाः, अत एव अभिगतार्था अवधारितार्था इत्यर्थः; 'गब्भं वक्कममाणंसि'त्ति–गर्भे 'व्युत्क्रामति'–उत्पद्यमाने, अभिषेक इति–श्रियाः संबन्धी । विमानं यो देवलोकादवतरति तन्माता पश्यति, यस्तु नरकादुद्धृत्योत्पद्यते तन्माता भवनमिति चतुर्दशैव स्वप्नाः; विमानभवनयोरेकतरदर्शनादिति । 'विण्णायपरिणयमेत्ते'–विज्ञातं–विज्ञानं परिणतमात्रं यस्य स तथा, क्वचि'द्विण्णय'त्ति पाठः स च व्याख्यात एव, 'जीवियारिहं'ति–आजन्मनिर्वाहयोग्यम् ॥ १२ ॥

तते णं तीसे धारिणीए देवीए दोसु मासेसु वीतिक्कंतेसु, ततिए मासे वट्टमाणे, तस्स गब्भस्स दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भवित्था–धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ,§ सपुन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ कयत्थाओ णं ताओ,§ कयपुन्नाओ, कयलक्खणाओ, कयविहवाओ; सुलद्धे णं तासिं माणुस्सए जम्मजीवियफले, जाओ णं मेहेसु, अब्भुग्गतेसु, अब्भुज्जुएसु, अब्भुन्नतेसु, अब्भुट्ठिएसु, सग-

§ § एतदन्तर्गतः पाठः 'अ'प्रतौ नास्ति ।

ज्जिएसु,सविज्जुएसु,सफुसिएसु,सथणिएसु धंतधोतरूप्पपट्टअंकसंखचंदकुंदसालिपिट्ठरासिसमप्पभेसु,चिउ-
रहरियालभेयचंपगसणकोरंटसरिसयपउमरयसमप्पभेसु, लक्खारससरसरत्तकिंसुयजासुमणरत्तबंधुजीव-
गजातिहिंगुलयसरसकुंकुमउरब्भससरुहिरइंदगोवगसमप्पभेसु, बरहिणनीलगुलियसुगचासपिच्छभिंग-
पत्तसासगनीलुप्पलनियरनवसिरीसकुसुमणवसद्दलसमप्पभेसु,जच्चंजणभिंगभेयरिट्ठगभमरावलिगवलगु-
लियकज्जलसमप्पभेसु, फुरंतविज्जुतसगज्जिएसु, वायवसविपुलगगणचवलपरिसक्किरेसु,निम्मलवरवारिधा-
रापगलियपयंडमारुयसमाहयसमोत्थरंतउवरिउवरितुरियवासं पवासिएसु, धारापहकरणिवायनिव्वाविय
मेइणितले, हरियगणकंचुए, पल्लविय पायवगणेसु, वल्लिवियाणेसु, पसरिएसु, उन्नएसु, सोभग्गमुवागएसु
नगेसु, नएसु वा, वेभारगिरिप्पवायतडकडगविमुक्केसु, उज्झरेसु; तुरियपहावियपलोट्टफेणाउलं सकलुसं
जलं वहंतीसु गिरिनदीसु, सज्जज्जुणनीवकुडयकंदलसिलिंधकलिएसु, उववणेसु मेहरसियहट्ठतुट्ठचिट्ठिय
हरिसवसपमुक्ककंठकेकारवं मुयंतेसु बरहिणेसु, उउवसमयजणियतरुणसहयरिपणच्चितेसु, नवसुरभिसि-
लिंधकुडयकंदलकलंबगंधद्धणिं मुयंतेसु उववणेसु, परहुयरुयरिभितसंकुलेसु, उद्दायंतरत्तइंदगोवयथोवय-
कारुन्नविलवितेसु, ओणयतणमंडिएसु, दद्दुरपयंपिएसु, संपिंडियदरियभमरमहुकरिपहकरपरिलिंतमत्त-
छप्पयकुसुमासवलोलमधुरगुंजंतदेसभाएसु उववणेसु, परिसामियचंदसूरगहगणपणट्ठनक्खत्ततारगपहे
इंदाउहबद्धचिंधपट्टंसि अंबरतले, उड्डीणबलागपंतिसोभंतमेहविंदे, कारंडगचक्कवायकलहंससउस्सुयकरे संपत्ते

पाउसंमि काले; ण्हाया कयबलिकम्मा, कयकोउयमंगलपायच्छित्ताओ, किं ते वरपायपत्तणेउरमणिमेहल-हाररइयकडगखुड्डयविचित्तवरवलयथंभियभुयाओ, कुंडलउज्जोवियाणणाओ, रयणभूसियंगाओ, नासानीसासवायवोज्झं, चक्खुहरं, वण्णफरिससंजुत्तं, हयलालापेलवाइरेयं, धवलकणयखचियन्तकम्मं, आगासफलिहसरिसप्पभं, अंसुयं पवर परिहियाओ, दुगूल्लसुकुमालउत्तरिज्जाओ सव्वोउयसुरभिकुसुमपवरमल्लसोभितसिराओ, कालागरूधूवधूवियाओ, सिरिसमाणवेसाओ, सेयणयगंधहत्थिरयणं दुरूढाओ समाणीओ; सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, चंदप्पभवइरवेरुलियविमलदंडसंखकुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगासचउचामरवालवीजितंगीओ सेणिएणं रन्ना सद्धिं, हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठओ समणुगच्छमाणीओ चाउरंगिणीए सेणाए, महता हयाणीएणं, गयाणिएणं, रहाणिएणं, पायत्ताणीएणं, सव्वड्ढीए सव्वज्जुइए जाव निग्घोसणादियरवेणं; रायगिहं नगरं सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु आसित्तसित्तसुचियसंमज्जिओवलित्तं जाव सुगंधवरगंधियं गंधवट्टीभूयं अवलोएमाणीओ नागरजणेणं, अभिणंदिज्जमाणीओ गुच्छलयारुक्खगुम्मवल्लिगुच्छओच्छाइयं सुरम्मं वेभारगिरिकडगपायमूलं सव्वओ समंता आहिंडेमाणीओ २, दोहलं विणियंति; तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुवगएसु जाव दोहलं विणिज्जामि ॥ सूत्रम्-१३ ॥

'दोहले पाउब्भवित्थ'त्ति-दोहदो-मनोरथः प्रादुर्भूतवान्, तथाहि-धनं लब्धारो धन्यास्ता या अकालमेघदोहदं

विनयन्तीति योगः; 'अम्मयाओ'त्ति–अम्बाः पुत्रमातरः, स्त्रिय इत्यर्थः; संपूर्णाः–परिपूर्णाः आदेयवस्तुभिः (सपुण्याः), कृतार्थाः–कृतप्रयोजनाः, कृतपुण्याः–जन्मान्तरोपात्तसुकृताः; कृतलक्षणाः–कृतफलवच्छरीरलक्षणाः, कृतविभवाः–कृतसफलसंपदः, सुलब्धं तासां, मानुष्यकं–मनुष्यसंबन्धि जन्मनि भवे; जीवितफलं–जीवितव्यप्रयोजनं जन्मजीवितफलं, सापेक्षत्वेऽपि च समासः छान्दसत्वात्, या मेघेषु अभ्युद्गतेषु–अङ्कुरवदुत्पन्नेषु सत्सु, एवं सर्वत्र सप्तमी योज्या; अभ्युद्यतेषु–वर्द्धितुं प्रवृत्तेषु, अभ्युन्नतेषु–गगनमण्डलव्यापनेनोन्नतिमत्सु, अभ्युत्थितेषु–प्रवर्षणाय कृतोद्योगेषु, सगर्जितेषु–मुक्तमहाध्वनिषु, सविद्युत्केषु–प्रतीतं, 'सफुसिएसु'त्ति–प्रवृत्तप्रवर्षणबिन्दुषु, सस्तनितेषु–कृतमन्दमन्दध्वनिषु, ध्मातेन–अग्नियोगेन यो धौतः–शोधितो रूप्यपट्टो–रजतपत्रकं स तथा; अङ्को–रत्नविशेषः, शङ्खचन्द्रौ–प्रतीतौ, कुन्दः–पुष्पविशेषः, शालिपिष्टराशिः–व्रीहिविशेषचूर्णपुञ्जः, एतत्समा प्रभा येषां ते तथा तेषु, शुक्लेष्वित्यर्थः; तथा–चिकुरो–रागद्रव्यविशेष एव, हरितालो–वर्णकद्रव्यं भेदस्तद्‌त्रुटिकाखण्डं, चम्पकसनकोरण्टकसर्षपग्रहणात्तत्पुष्पाणि गृह्यन्ते, पद्मरजः–प्रतीतं तत्समप्रभेषु, वाचनान्तरे–" सेनस्थाने काञ्चनं सर्षपस्थाने सरिसगोत्ति पठ्यते "। तत्र–चिकुरादिभिः सदृशाश्च ते पद्मरजःसमप्रभाश्चेति विग्रहोऽतस्तेषु पीतेष्वित्यर्थः, तथा–लाक्षारसेन सरसेन सरसरक्तकिंशुकेन जपासुमनोभिः रक्तबन्धुजीवकेन, बन्धुजीवकं हि पञ्चवर्णं भवतीति रक्तत्वेन विशिष्यते; जातिहिङ्गुलकेन–वर्णकद्रव्येण, स कृत्रिमोऽपि भवतीति जात्या विशेषितः, सरसकुङ्कुमेन,–नीरसं हि विवक्षितवर्णोपेतं न भवतीति सरसमुक्तं; तथा–उरभ्रः–ऊरणः, शशः–शशकस्तयो

१ समस्या० अ।

रुधिरेण—रक्तेन, इन्द्रगोपको—वर्षासु कीटकविशेषस्तेन च समा प्रभा येषां ते तथा तेषु रक्तेष्वित्यर्थः; तथा—बर्हिणो—मयूराः, नीलं—रत्नविशेषः, गुलिका—वर्णकद्रव्यं शुकचाषयोः पक्षिविशेषयोः, पिच्छं—पत्रं, भृङ्गः—कीटविशेषस्तस्य पत्रं—पक्षः, सासको—बीयकनामा वृक्षविशेषः; अथवा—"सामत्ति पाठः, तत्र श्यामा—प्रियङ्गुः;" नीलोत्पलनिकरः—प्रतीतः, नवशिरीषकुसुमानि च नवशाड्वलं—प्रत्यग्रहरितं एतत्समप्रभेषु नीलप्रभेषु नीलवर्णेष्वित्यर्थः; तथा—जात्यं—प्रधानं यदञ्जनं—सौवीरकं, भृङ्गभेदः- भृङ्गाभिधानः कीटविशेषः, विदलिताङ्गारो वा; रिष्ठकं—रत्नविशेषः, भ्रमरावली—प्रतीता, गवलगुलीका—महिषशृङ्गगोलिका, कज्जलं—मषी, तत्समप्रभेषु कृष्णेष्वित्यर्थः; स्फुरद्विद्युत्काश्च सगर्जिताश्च ये तेषु, तथा वातवशेन विपुले गगने चपलं यथा भवत्येवं, 'परिसक्किरेसु'त्ति—परिष्वष्कितुं शीलं येषां ते तथा तेषु, तथा निर्मलवरवारिधाराभिः प्रगलितः—क्षरितः प्रचण्डमारुतसमाहतः सन्, 'समोत्थरंत'त्ति—समवस्तृणंश्च—महीपीठमाक्रामन् उपर्युपरि च सातत्येन त्वरितश्च शीघ्रो यो वर्षो-जलसमूहः स, तथा-तं प्रवृष्टेषु—वर्षितुमारब्धेषु मेघेष्विति प्रक्रमः, धाराणां 'पहकरो'त्ति—निकरस्तस्य निपातः—पतनं तेन निर्वापितं—शीतलीकृतं यत्तत्तथा तस्मिन्, निर्वापितशब्दाच्च सप्तम्येकवचनलोपो दृश्यः, कस्मिन्नित्याह—मेदिनीतले—भूतले, तथा हरितकानां—ह्रस्वतृणानां यो गणः, स एव कञ्चुको यत्राच्छादकत्वात् तत्तथा तत्र, 'पल्लविय'त्ति—इह सप्तमीबहुवचनलोपो दृश्यः, ततः पल्लवितेषु पादपगणेषु तथा वल्लीवितानेषु प्रसृतेषु—जातप्रसरेष्वित्यर्थः, तथोन्नतेषु भूप्रदेशेष्विति गम्यते सौभाग्यमुपगतेषु अनवस्थितजलत्वेनाकर्दमत्वात् पाठान्तरे नगेषु—पर्वतेषु, नदेषु वा—ह्रदेषु, तथा वैभाराभिधानस्य गिरेः ये प्रपाततटाः—भृगुतटाः, कटकाश्च—पर्वतैकदेशास्तेभ्यो ये, विमुक्ताः—

प्रवृत्तास्ते तथा तेषु; केषु ?,–'उज्झरेसु'त्ति–निर्झरेषु त्वरितप्रधावितेन यः, 'पल्लोट्ट'त्तिः–प्रवृत्तः-उत्पन्नः फेनस्तेन आकुलं–व्याप्तम् । 'सकलुसं'ति–सकालुष्यं जलं वहन्तीषु गिरिनदीषु सर्जार्जुननीपकुटजानां वृक्षविशेषाणां यानि कन्दलानि–प्ररोहाः, शिलन्ध्राश्च–छत्रकाणि, तैः कलितानि यानि तानि तथा तेषु उपवनेषु; तथा–मेघरसितेन हृष्टतुष्टाः–अतिहृष्टाश्चेष्टिताश्च–कृतचेष्टा ये ते तथा तेषु, इदं च सप्तमीलोपात्, हर्षवशात् प्रमुक्तो–मुत्कलीकृतः कण्ठो–गलो यस्मिन् स तथा स चासौ केकारवश्च तं मुञ्चत्सु बर्हिणेषु–मयूरेषु, तथा–ऋतुवशेन–कालविशेषबलेन यो मदस्तेन जनितं तरुणसहचरीभिः–युवतिमयूरीभिः सह प्रनृत्तं–प्रनर्तनं येषां ते तथा तेषु, बर्हिणेष्वित्यन्वयः, नवः सुरभिश्च यः शिलीन्ध्रकुटजकन्दलकदम्बलक्षणानां पुष्पाणां गन्धस्तेन या घ्राणिः–तृप्तिस्तां मुञ्चत्सु गन्धोत्कर्षतां विदधानेष्वित्यर्थः उपवनेषु–भवनासन्नवनेषु, तथा–परभृतानां–कोकिलानां यद्रुतं–रवो रिभितं–स्वरघोलनावत्तेन संकुलानि यान्युपवनानि तानि तथा तेषु, 'उद्दाइंत'त्ति–शोभमाना रक्ता इन्द्रगोपकाः–कीटविशेषाः, स्तोककानां–चातकानां कारुण्यप्रधानं विलपितं च येषु तानि तथा तेषूपवनेष्वित्यन्वयः, तथा–अवनततृणैर्मण्डितानि यानि तानि तथा तेषु, दर्दुराणां प्रकृष्टं जल्पितं येषु तानि तथा तेषु; संपिण्डिता–मिलिताः, दृप्ता–दर्पिताः, भ्रमराणां मधुकरीणां च; 'पहकर'त्ति–निकरा येषु तानि तथा, 'परिलिंत'त्ति-परिलीयमानाः संश्लिष्यन्तो मत्ताः षट्पदाः, कुसुमासवलोलाः–मकरन्दलम्पटाः, मधुरं–कलं, गुञ्जन्तः–शब्दायमानाः देशभागेषु येषां तानि तथा ततः कर्मधारयः ततस्तेषु उपवनेषु; तथा–परिश्यामिताः–कृष्णीकृताः सान्द्र-

मेघाच्छादनात्, पाठान्तरेण परिभ्रामिताः—कृतप्रभाभ्रंशाः, चन्द्रसूर्यग्रहाणां यस्मिन् प्रनष्टा च नक्षत्रतारकप्रभा यस्मिंस्तत्तथा, तस्मिन्नम्बरतले इति योगः, इन्द्रायुधलक्षणो बद्ध इव बद्धः; चिह्नपट्टो—ध्वजपटो यस्मिंस्तत्तथा तत्राम्बरतले—गगने उड्डीनबलाकापङ्क्तिशोभमानमेघवृन्देऽम्बरतले इति योगः, तथा—कारण्डकादीनां पक्षिणां मानससरोगमनादि प्रत्यौत्सुक्यकरे, संप्राप्ते—उक्तलक्षणयोगेन समागते प्रावृषि काले; किंभूता अम्मयाओ ?;—इत्याह—'पहाया्ओ'इत्यादि, किं ते इति किमपरमित्यर्थः, वरौ पादप्राप्तनूपुरौ मणिमेखला—रत्नकाञ्ची हारश्च यासां तास्तथा रचितानि—न्यस्तानि, उचितानि-योग्यानि, कटकानि—प्रतीतानि, खुड्डकानि च—अङ्गुलीयकानि यासां तास्तथा विचित्रैर्वरवलयैः स्तम्भिताविव स्तम्भितौ भुजौ यासां तास्तथा, ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः। तथा—"कुंडलोज्जोतिताणणा वरपायपत्तनेउरमणिमेहलाहाररइयउचियकडगखुड्डयएगावलिकंठमुरयतिसरयवरवलयहेमसुत्तकुंडलुज्जोवियाणणाओत्ति—पाठान्तरं तत्र वरपादप्राप्तनूपुरमणिमेखलाहारास्तथा रचितान्युचितानि कटकानि च खुड्डकानि च एकावली च-विचित्रमणिकृता एकसरिका कण्ठमुरजश्च—आभरणविशेषः त्रिसरकं च वरवलयानि च हेमसूत्रकं च—संकलकं यासां तास्तथा, तथा—कुण्डलोद्योतितानना्स्ततो वरपादप्राप्तनूपुरादीनां कर्मधारयः, रत्नविभूषिताङ्ग्यः नासानिःश्वासवातेनोह्यते यल्लघुत्वात्तत्तथा चक्षुर्हरं दृष्ट्याक्षेपकत्वात्, अथवा—प्रच्छादनीयाङ्गदर्शनाच्चक्षुर्हरति धरति वा निवर्तयति यद्घनत्वात्तत्तथा, वर्णस्पर्शसंयुक्तं वर्णस्पर्शातिशायीत्यर्थः; हयलालाया—अश्वलालायाः सकाशात्, 'पेलव'त्ति—पेलवत्वेन मृदुत्वलघुत्वलक्षणेनातिरेकः—अतिरिक्तत्वं यस्य

१ परिध्यासिताः अ। २ तत्र तु प०। ३ °न्युपचितकटकानि अ।

तत् तथा धवलं, च तत् कनकेन खचितं-मंडितमन्तयोः-अञ्चलयोः कर्म वानलक्षणं यस्य तत्तथा तच्चेति वाक्यं, आकाश-स्फटिकस्य सदृशी प्रभा यस्य धवलत्वात्तत्तथा, अंशुकं-वस्त्रविशेषं प्रवरमिहानुस्वारलोपो दृश्यः, परिहिताः-निवसिताः, दुकूलं च वस्त्रं, अथवा-दुकूलो वृक्षविशेषः, तद्वल्कलाज्जातं दुकूलं-वस्त्रविशेष एव तत् सुकुमालमुत्तरीयम्-उपरिकायाच्छादनं यासां तास्तथा, सर्वर्तुकसुरभिकुसुमैः प्रवरैर्माल्यैश्च-ग्रथितकुसुमैः शोभितं शिरो यासां तास्तथा, पाठान्तरे "सर्वर्तुकसुरभिकुसुमैः सुरचिता प्रलम्बमाना शोभमाना कान्ता विकसन्ती चित्रा माला यासां तास्तथा, एवमन्यान्यपि पदानि बहुवचनान्तानि संस्करणीयानि; इह वर्णके बृहत्तरो वाचनाभेदः"। तथा चन्द्रप्रभवज्रवैडूर्यविमलदण्डाः शङ्ख-कुन्ददकरजोऽमृतमथितफेनपुञ्जसन्निकाशाश्च ये चत्वारश्चामराः-चामराणि तद्वालैर्वीजितमङ्गं यासां तास्तथा, अयमेवार्थो वाचनान्तरे इत्थमधीतः-'सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं' २, 'सव्विड्ढीए'त्ति-छत्रादिराजचिह्नरूपया, इह यावत्करणादेवं द्रष्टव्यं-'सव्वज्जुइए'-सर्वद्युत्या-आभरणादिसंबन्धिन्या, सर्वयुक्त्या वा-उचितेष्टवस्तुघटनालक्षणया, 'सर्वबलेन'-सर्वसैन्येन, 'सर्वसमुदायेन'-पौरादिमीलनेन, 'सर्वादरेण'-सर्वोचितकृत्यकरणरूपेण, 'सर्वविभूत्या'-सर्वसंपदा, 'सर्वविभूषया'-समस्तशोभया, 'सर्वसंभ्रमेण'-प्रमोदकृतौत्सुक्येन, सर्वपुष्पगन्धमाल्यालङ्कारेण, 'सर्वतूर्यशब्दसंनिनादेन'-तूर्यशब्दानां मीलनेन यः संगतो नितरां नादो-महान् घोषस्तेनेत्यर्थः; अल्पेष्वपि ऋद्ध्यादिषु सर्वशब्दप्रवृत्तिर्दृष्टा अत आह-'महया इड्ढीए, महया जुईए, जुत्तीए वा; महया बलेणं, महया समुदएणं, महया वरतुडियजमगसमगप्पवाइएणं;'-'यमकसमकं'-युगपत् एतदेव विशेषेणाह-'संखपणवपडहभेरिझल्लरिखरमुहिहु-

डुक्कमुरवमुइंगदुंदुहिनिग्घोसनाइयरइवेणं'–तत्र शङ्खादीनां नितरां घोषो निर्घोषो–महाप्रयत्नोत्पादितः शब्दो नादितं–ध्वनिमात्रमेतद्द्वयलक्षणो यो रवः स तथा तेन, 'सिंघाडे'त्यादि,–सिंघाडकादीनामयं विशेषः; सिंघाडकं–जलजबीजं फलविशेषः, तदाकृतिपथयुक्तं स्थानं सिंघाटकं; त्रिपथयुक्तं स्थानं–त्रिकं, चतुष्पथयुक्तं–चतुष्कं, त्रिपथभेदि चत्वरं–चतुर्मुखं–देवकुलादि, महापथो–राजमार्गः, पथः–पथमात्रं, तथा आसिक्तं–गन्धोदकेनेषत्सिक्तं सकृद्वा सिक्तं सिक्तं त्वन्यथा शुचिकं–पवित्रं, संमार्जितम्–अपहृतकचवरं, उपलिप्तं च गोमयादिना यत्तत्तथा यावत्करणादुपस्थानशालावर्णकः पूर्वोक्त एव वाच्यः, एवंभूतं नगरमवलोकयन्त्यो गुच्छा वृन्ताकीप्रभृतीनां लताः, सहकारादिलता वृक्षाः–सहकारादयः, गुल्मा वंशीप्रभृतयः, वल्लयः–त्रपुष्यादिकाः एतासां ये, गुच्छाः–पल्लवसमूहास्तै र्यत्, 'ओच्छवियं'ति–अवच्छादितं वैभारगिरेर्ये कटकाः–देशास्तेषां ये पादा–अधोभागास्तेषां यन्मूलं–समीपं तत्तथा तत्सर्वतः समन्तात्, 'आहिंडन्ति'त्ति–आहिण्डन्ते, अनेन चैवमुक्तव्यतिकरभाजां सामान्येन स्त्रीणां प्रशंसाद्वारेणात्मविषयोऽकालमेघदोहदो धारिण्याः प्रादुरभूदित्युक्तम्, वाचनान्तरे तु–'ओलोएमाणीओ २, आहिंडेमाणीओ २, डोहलं विणिंति'–विनयन्त्यपनयन्तीत्यर्थः; 'तं जति णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव डोहलं विणेज्जामि'–विनयेयमित्यर्थः, संगतश्चायं पाठ इति ॥ १२ ॥

उक्तदोहदाप्राप्तौ यत्तस्याः संपन्नं, तदाह—

तए णं सा धारिणी देवी, तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि; असंपन्नदोहला, असंपुन्नदोहला, असं-

साणियदोहला; सुक्का, भुक्खा, णिम्मंसा, ओलुग्गा, ओलुग्गसरीरा, पमइलदुब्बला, किलंता, ओमंथिय-वयणनयणकमला, पंडुइयमुही करयलमलियव्व, चंपगमाला णित्तेया, दीणविवण्णवयणा, जहोचियपुप्फ-गंधमल्लालंकारहारं अणभिलसमाणी, कीडारमणकिरियं च परिहावेमाणी, दीणा, दुम्मणा, निराणंदा, भूमिगयदिट्ठीया, ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ; तते णं तीसे धारिणीए देवीए अंगपडियारियाओ, अब्भिंतरियाओ; दासचेडीयाओ; धारिणीं देवीं ओलुग्गं जाव झियायमाणिं पासंति, पासित्ता; एवं वदासी–किण्णं तुमे देवाणुप्पिए !, ओलुग्गा, ओलुग्गसरीरा जाव झियायसि ?; तते णं सा धारणी देवी ताहिं अंगपडियारियाहिं अब्भिंतरियाहिं दासचेडियाहिं एवं वुत्ता समाणी नो आढाति, णो य परिया-णाति; अणाढायमाणी, अपरियाणमाणी, तुसिणिया संचिट्ठति; तते णं ताओ अंगपडियारियाओ अब्भिं-तरियाओ दासचेडियाओ धारिणीं देवीं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–"किन्नं तुमे देवाणुप्पिए !, ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव झियायसि ?;" तते णं सा धारिणीदेवी ताहिं अंगपडियारियाहिं अब्भिंतरियाहिं दासचेडियाहिं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ता समाणी णो आढाति, णो परियाणति; अणाढायमाणा, अपरि-यायमाणा, तुसिणिया संचिट्ठति; तते णं ताओ अंगपडियारियाओ, दासचेडियाओ; धारिणीए देवीए अणाढातिज्जमाणीओ, अपरिजाणिज्जमाणिओ, तहेव संभंताओ समाणीओ धारणीए देवीए अंतियाओ पडि-

१ °ओलुग्गा° । अ ।

निक्खमंति २; जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति २, करतलपरिग्गहियं जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावइत्ता; एवं व०—एवं खलु सामी !, किंपि अज्ज धारिणीदेवी ओलुग्गा, ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायति; तते णं से सेणिए राया, तासिं अंगपाडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, णिसम्म, तहेव संभंते समाणे सिग्घं, तुरियं, चवलं, वेइयं जेणेव धारिणीदेवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता; धारणीं देवीं ओलुग्गं ओलुग्गसरीरं जाव अट्टज्झाणोवगयं झियायमाणिं पासइ, पासित्ता; एवं वदासी—"किन्नं तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायसि" ?, तते णं सा धारणी देवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी नो आढाइ जाव तुसिणीया संचिट्ठति, तते णं से सेणिए राया धारिणीं देवीं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदासी—"किन्नं तुमे देवाणुप्पिए ओलुग्गा जाव झियायसि ?," तते णं सा धारिणीदेवी सेणिएणं रन्ना दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ता समाणी णो आढाति; णो परिजाणाति, तुसिणीया संचिट्ठइ; तते णं सेणिए राया, धारणिं देविं सवहसावियं करेइ २ त्ता; एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिए !, अहमेयस्स अट्ठस्स अणरिहे सवणयाए ?, ता णं तुमं ममं अयमेयारूवं मणोमाणसियं दुक्खं रहस्सी करेसि, तते णं सा धारिणीदेवी, सेणिएणं रन्ना सवहसाविया समाणी सेणियं रायं, एवं वदासी—एवं खलु सामी !, मम तस्स उरालस्स जाव महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अय-

१ °णं से से° अ।

मेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए—धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ
जाव वेभारगिरिपायमूलं आहिंडमाणीओ डोहलं विणिंति, तं जइ णं अहमवि जाव डोहलं विणिज्जामि;
तते णं हं सामी!, अयमेयारूवंसि, अकालदोहलंसि, अविणिज्जमाणंसि, ओलुग्गा जाव अट्टज्झाणोवगया
झियायामि; एएणं अहं कारणेणं सामी!, ओलुग्गा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायामि, तते णं से सेणिए
राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोचा, णिसम्म धारिणिं देविं; एवं वदासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिए!,
ओलुग्गा जाव झियाहि, अहं णं तहा करिस्सामि, जहा णं तुब्भं अयमेवारूवस्स अकालदोहलस्स मणो-
रहसंपत्ती भविस्सइ त्ति कट्टु; धारिणीं देवीं इट्ठाहिं, कंताहिं, पियाहिं, मणुन्नाहिं, मणामाहिं, वग्गूहिं
समासासेइ २; जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता; सीहासणवरगते,
पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने, धारिणीए देवीए एयं अकालदोहलं बहूहिं आएहि य, उवाएहि य, उप्पत्तियाहि
य, वेणइयाहि य, कम्मियाहि य, परिणामियाहि य, चउव्विहाहिं बुद्धीहिं अणुचिंतेमाणे २; तस्स
दोहलस्स आयं वा, उवायं वा, ठिइं वा, उप्पत्तिं वा, अविंदमाणे; ओहयमणसंकप्पे जाव झियायति
॥ सूत्रम्-१४ ॥ तदाणंतरं[1] अभए कुमारे ण्हाते कयबलिकम्मे जाव सव्वालंकारविभूसिए पायवंदते, पहा-
रेत्थ गमणाए; तते णं से अभयकुमारे जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता; सेणियं

१ तयाणंतरं च° अ।

१—उत्क्षि-
प्ताध्य०
श्रेणिक-
समीपे
धारिण्याः
कथनम्।

रायं ओहयमणसंकप्पं जाव पासइ २ त्ता, अयमेयारूवे अब्भत्थिए, [1]चिंतिए, मणोगते संकप्पे, समुप्पज्जित्था;-"अन्नया य ममं सेणिए राया एज्जमाणं पासति, पासइत्ता; आढाति, परिजाणति, सक्कारेइ, सम्माणेइ, आलवति, संलवति, अद्धासणेणं उवणिमंतेति, मत्थयंसि अग्घाति; इयाणिं ममं सेणिए राया णो आढाति, णो परियाणइ, णो सक्कारेइ, णो सम्माणेइ; णो इट्ठाहिं, कंताहिं, पियाहिं, मणुन्नाहिं, ओरालाहिं, वग्गूहिं आलवति, संलवति, नो अद्धासणेणं उवणिमंतेति, णो मत्थयंसि अग्घाति; य किंपि ओहयमणसंकप्पे झियायति; तं भवियव्व णं एत्थ कारणेणं, तं सेयं खलु मे सेणियं रायं एयमट्ठं पुच्छित्तए," एवं संपेहेइ २, जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ २, करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु, जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावइत्ता; एवं वदासी-"तुब्भे णं ताओ!, अन्नया ममं एज्जमाणं पासित्ता, आढाह, परिजाणह जाव मत्थयंसि अग्घायह, आसणेणं उवणिमंतेह; इयाणिं ताओ!, तुब्भे ममं नो आढाह, जाव नो आसणेणं उवणिमंतेह; किंपि ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह, तं भवियव्वं ताओ!, एत्थ कारणेणं, तओ तुब्भे मम ताओ!, एयं कारणं अगूहेमाणा, असंकेमाणा, अनिण्हवेमाणा, अप्पच्छाएमाणा, जहाभूतमवितहमसंदिद्धं एयमट्ठमाइक्खह; तते णं हं तस्स कारणस्स अंतगमणं गमिस्सामि;" तते णं से सेणिए राया अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे, अभयकुमारं एवं वदासी-एवं खलु

१ °संकप्पं झियायमाण जा° अ। २ °चिंतिते पत्थिते म० अ।

पुत्ता !, तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए, तस्स गब्भस्स दोसु मासेसु अइक्कंतेसु, तइयमासे वट्टमाणे दोहलकालसमयंसि, अयमेयारूवे दोहले पाउब्भवित्था–धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव विणिंति, तते णं अहं पुत्ता; धारिणीए देवीए तस्स अकालदोहलस्स बहूहिं आएहि य, उवाएहिं जाव उप्पत्तिं अविंदमाणे, ओहयमणसंकप्पे जाव झियायामि तुमं आगयंपि न याणामि तं एतेणं कारणेणं अहं पुत्ता !, ओहय जाव झियामि; तते णं से अभयकुमारे सेणियस्स रन्नो अंतिए एयम‌ट्ठं सोच्चा, णिसम्म, हट्ठ जाव हियए सेणियं रायं; एवं वदासी–मा णं तुब्भे ताओ !, ओहयमण० जाव झियायह, अहण्णं तहा करिस्सामि, जहा णं मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवस्स अकालडोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ त्तिकट्टु; सेणियं रायं, ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं जाव समासासेइ; तते णं सेणिए राया अभयेणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे, हट्ठतुट्ठे जाव अभयकुमारं सक्कारेति, संमाणेति २; पडिविसज्जेति ॥सूत्रम्–१५॥ तते णं से अभयकुमारे सक्कारियसम्माणिए पडिविसज्जिए समाणे सेणियस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ २, जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छति २, सीहासणे निसन्ने; तते णं तस्स अभयकुमारस्स अयमेयारूवे अब्भतिथए जाव समुप्पज्जित्था–नो खलु सक्का माणुस्सएणं उवाएणं मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अकालडोहलमणोरहसंपत्तिं करेत्तए, णन्नत्थ दिव्वेणं उवाएणं; अत्थि

१ °भवेत्था अ० ।

१–उत्क्षिप्ताध्य० श्रेणिकसमीपे अभयकुमारागमनम् ।

णं मज्झ सोहम्मकप्पवासी, पुव्वसंगतिए देवे महिड्ढीए जाव महासोक्खे; तं सेयं खलु मम पोसहसालाए पोसहियस्स, बंभचारिस्स, उम्मुक्कमणिसुवन्नस्स, ववगयमालावन्नगविलेवणस्स, निक्खित्तसत्थमुसलस्स, एगस्स अबीयस्स, दब्भसंथारोवगयस्स, अट्ठमभत्तं परिगिण्हित्ता, पुव्वसंगतियं देवं मणसि करेमाणस्स विहरित्तए; तते णं पुव्वसंगतिए देवे मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालमेहेसु डोहलं विणेहिति, एवं संपेहेति २, जेणेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छति २, पोसहसालं पमज्जति २, उच्चारपासवण-भूमिं पडिलेहेइ २, दब्भसंथारगं पडिलेहेइ २, डब्भसंथारगं दुरूहइ २, अट्ठमभत्तं परिगिण्हइ २, पोसहसा-लाए पोसहिए बंभयारी जाव पुव्वसंगतियं देवं मणसि करेमाणे २, चिट्ठइ; तते णं तस्स अभयकुमारस्स अट्ठमभत्ते परिणममाणे पुव्वसंगतिअस्स देवस्स आसणं चलति, तते णं पुव्वसंगतिए सोहम्मकप्पवासी देवे आसणं चलियं पासति २, ओहिं पउंजति; तते णं तस्स पुव्वसंगतियस्स देवस्स अयमेयारूवे अब्भतिथए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु मम पुव्वसंगतिए जंबूदीवे २, भारहे[1] वासे, दाहिणड्ढभरहे वासे, रायगिहे नयरे; पोसहसालाए पोसहिए अभए नामं कुमारे अट्ठमभत्तं परिगिण्हित्ता णं मम मणसि करेमाणे २, चिट्ठति; तं सेयं खलु मम अभयस्स कुमारस्स अंतिए पाउब्भवित्तए, एवं संपेहेइ २, उत्तरपुरच्छिमं[2] दिसीभागं अवक्कमति २, वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति २, संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरति; तंजहा-रयणाणं

१ भरहे° अ। २ °पुरत्थिम अ।

१, वइराणं २, वेरुलियाणं ३, लोहियक्खाणं ४, मसारगल्लाणं ५, हंसगब्भाणं ६, पुलगाणं ७, सोगंधियाणं ८, जोइरसाणं ९, अंकाणं १०, अंजणाणं ११, रयणाणं १२, जायरूवाणं १३, अंजणपुलगाणं १४, फलिहाणं १५. रिट्ठाणं १६; अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ २, अहासुहुमे पोग्गले परिगिण्हति, परिगिण्हइत्ता; अभयकुमारमणुकंपमाणे देवे पुव्वभवजणियनेहपीइबहुमाणजायसोगे तओ विमाणवरपुंडरीयाओ, रयणुत्तमाओ, धरणियलगमणतुरितसंजणितगमणपयारो, वाघुण्णितविमलकणगपयरगवडिंसगमउडुक्कडाडोवदंसणिज्जो, अणेगमणिकणगरतणपहकरपरिमंडितभत्तिचित्तविणिउत्तगमणगजणियहरिसे पेंखोलमाणवरललितकुंडलुज्जलियवयणगुणजनितसोमरूवे उदितोविव कोमुदीनिसाए, सणिच्छरंगारउज्जलियमज्झभागत्थे, णयणाणंदो, सरयचंदो, दिव्वोसहिपज्जलुज्जलियदंसणाभिरामो, उउलच्छिसमत्तजायसोहे पइट्ठगंधुद्धुयाभिरामो, मेरुरिव[2] नगवरो, विगुव्वियविचित्तवेसे दीवसमुद्दाणं, असंखपरिमाणनामधेज्जाणं, मज्झंकारेणं वीइवयमाणो उज्जोयंतो पभाए विमलाते जीवलोगं, रायगिहं पुरवरं च अभयस्स य तस्स पासं उवयति दिव्वरूवधारी ॥ सूत्रम्-१६ ॥ तते णं से देवे अंतलिक्खपडिवन्ने दसद्धवन्नाइं, सखिंखिणियाइं पवरवत्थाइं परिहिए, एक्को ताव एसो गमो; अण्णोऽवि गमो-ताए उक्किट्ठाए, तुरियाए, चवलाए, चंडाए, सीहाए, उद्धुयाए, जतिणाए, छेयाए, दिव्वाए, देवगतीए; जेणामेव जंबुद्दीवे २, भारहे वासे जेणामेव

१ °सोहग्गरुवो अ । २ मेरु विव° अ ।

१–उत्क्षिप्ताध्य० अभयकुमारसमीपे देवागमनम् ।

दाहिणद्धभरहे, रायगिहे नगरे, पोसहसालाए, अभयए[1] कुमारे; तेणामेव उवागच्छइ २, अंतरिक्खपडिवन्ने दसद्धवन्नाइं सखिंखिणिथाइं पवरवत्थाइं परिहिए, अभयं कुमारं; एवं वयासी–"अहन्नं देवाणुप्पिया !, पुव्वसंगतिए सोहम्मकप्पवासी देवे महड्ढिए जण्णं तुमं पोसहसालाए अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता णं ममं मणसि करेमाणे चिट्ठसि [2]तं एस णं देवाणुप्पिया ! अहं इहं हव्वमागए, संदिसाहि णं देवाणुप्पिया !, किं करेमि ?, किं दलामि ?, किं पयच्छामि ?, किं वा तं हियइच्छितं ?;" तते णं से अभए कुमारे तं पुव्वसंगतियं देवं अंतलिक्खपडिवन्नं पासइ, पासित्ता, हट्ठतुट्ठे पोसहं पारेइ २, करयल० अंजलिं कट्टु एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया !, मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालडोहले पाउब्भूते–धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ तहेव पुव्वगमेणं जाव विणिज्जामि, तन्नं तुमं देवाणुप्पि० मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए, अयमेयारूवं अकालडोहलं विणेहि; तते णं से देवे अभएणं कुमारेणं, एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ अभयकुमारं; एवं वदासी–तुमण्णं देवाणुप्पिया ! सुणिव्वुयवीसत्थे अच्छाहि, अहण्णं तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेया[3]रूवं डोहलं विणेमीति कट्टु, अभयस्स कुमारस्स अंतियाओ पडिणिक्खमति २, उत्तरपुरच्छिमे णं वेभारपव्वए वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणणाति २, संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सरति जाव दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणणाति २, खिप्पामेव सगज्जतियं, सविज्जुयं, सफुसियं,

१ °भयकु° अ। २ तए से ण० अ। ३ °रुव अकालडो० अ।

तं पंचवन्नमेहणिणाओवसोहियं दिव्वं पाउससिरिं विउव्वेइ २, जेणेव अभए कुमारे तेणामेव उवागच्छइ २, अभयं कुमारं एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! मए तव पियट्ठयाए सगज्जिया, सफुसिया, सविज्जुया, दिव्वा पाउससिरी विउव्विया; तं विणेउ णं देवाणुप्पिया!, तव चुल्लमाउया धारिणीदेवी, अयमेयारूवं अकालडोहलं; तते णं से अभयकुमारे तस्स पुव्वसंगतियस्स देवस्स सोहम्मकप्पवासिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, णिसम्म, हट्ठतुट्ठे सयातो भवणाओ पडिनिक्खमति २, जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छति, करयल० अंजलिं कट्टु; एवं–वदासी–एवं खलु ताओ!, मम पुव्वसंगतिएणं सोहम्मकप्पवासिणा देवेणं खिप्पामेव सगज्जिता, सविज्जुता, पंचवन्नमेहनिनाओवसोभिता, दिव्वा पाउससिरी विउव्विया; तं विणेउ णं मम चुल्लमाउया धारिणी देवी अकालदोहलं। तते णं से सेणिए राया अभयस्स कुमारस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा, णिसम्म, हट्ठतुट्ठ० कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २, सद्दावइत्ता; एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया!, रायगिहं नयरं, सिंघाडग–तिय–चउक्क–चच्चर० आसित्तसित्त जाव सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेह य २, मम एतमाणत्तियं पच्चप्पिणह; तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से सेणिए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे २ वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया!, हयगयरहजोहपवरकलितं, चाउरंगिणिं सेन्नं सन्नाहेह, सेयणयं च गंधहत्थिं परिकप्पेह, तेवि तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से सेणिए राया जेणेव धारिणीदेवी तेणामेव उवागच्छति २, धारिणीं देवीं; एवं वदासी–एवं खलु

१–उत्क्षिप्ताध्य० अभयकुमारं प्रति देवकथनम्।

देवाणुप्पिए !, सगज्जिया जाव पाउससिरी पाउब्भूता, तण्णं तुमं देवाणुप्पिए !; एयं अकालदोहलं विणेहि। तते णं सा धारणीदेवी सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा जेणामेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति २, मज्जणघरं अणुपविसति २, अंतो अंतेउरंसि ण्हाता कतबलिकम्मा कतकोउयमंगलपायच्छित्ता किं ते वरपायपत्तणेउर जाव आगासफालियसमप्पभं अंसुयं नियत्था सेयणयं गंधहत्थिं दूरूढा समाणी, अमयमहियफेणपुंजसण्णिगासाहिं सेयचामरवालवीयणीहिं वीइज्जमाणी २, संपत्थिता; तते णं सेणिए राया ण्हाए कयबलिकम्मे जाव ससिसरीए, हत्थिखंधवरगए, सकोरंटमल्लदामेणं, छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, चउचामराहिं वीइज्जमाणेणं, धारिणीदेवीं पिट्ठतो अणुगच्छति; तते णं सा धारिणीदेवी, सेणिएणं रन्ना हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठतो पिट्ठतो समणुगम्ममाणमग्गा हयगयरहजोहकलियाए, चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा, महता भडचडगरवंदपरिखित्ता सव्विड्ढीए सव्वजुइए जाव दुंदुभिनिग्घोसनादितरवेणं; रायगिहे नगरे, सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर जाव महापहेसु, नागरजणेणं अभिनंदिज्जमाणा २, जेणामेव वेभारगिरिपव्वए तेणामेव उवागच्छति २; वेभारगिरिकडगतडपायमूले आरामेसु य, उज्जाणेसु य, काणणेसु य, वणेसु-वणसंडेसु य, रुक्खेसु य, गुच्छेसु य, गुम्मेसु य, लयासु य, वल्लीसु य, कंदरासु य, दरीसु य, चुण्ढीसु य, दहेसु य, कच्छेसु य, नदीसु य, संगमेसु य, विवरतेसु य; अच्छमाणी य, पेच्छ-

१ °परिवुडा. अ।

माणी य, मज्जमाणी य; पत्ताणि य, पुप्फाणि य, फलाणि य, पल्लवाणि य, गिण्हमाणी य, माणेमाणी य, अग्घायमाणी य, परिभुंजमाणी य, परिभाएमाणी, य; वेब्भारगिरिपायमूले दोहलं विणेमाणी सव्वतो समंता आहिंडति; तते णं धारिणी देवी विणीतदोहला, संपुन्नदोहला, संपन्नडोहला जाया यावि होत्था; तते णं से धारिणीदेवी सेयणयगंधहत्थिं दूरूढा समाणी सेणिएणं हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठओ २, समणुगम्ममाणमग्गा हयगय जाव रहेणं जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छइ २, रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छति २ त्ता; विउलाइं माणुस्साइं भोगभोगाइं जाव विहरति ॥ सूत्रम्-१७ ॥ तते णं से अभए कुमारे जेणामेव पोसहसाला, तेणामेव उवागच्छइ २; पुव्वसंगतियं देवं सक्कारेइ, सम्माणेइ २, पडिविसज्जेति २; तते णं से देवे सगज्जियं, पंचवन्नं मेहोवसोहियं दिव्वं पाउससिरिं, पडिसाहरति २; जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगते ॥ सूत्रम्-१८ ॥ तते णं सा धारिणीदेवी, तंसि अकालदोहलंसि विणीयंसि सम्माणियडोहला, तस्स गब्भस्स अणुकंपणट्ठाए जयं चिट्ठति, जयं आसयति, जयं सुवति; आहारंपिय णं आहारेमाणी णाइतित्तं, णातिकडुयं, णातिकसायं, णातिअंबिलं, णातिमहुरं; जं तस्स गब्भस्स हियं, मियं, पत्थयं, देसे य काले य आहारं आहारेमाणी; णाइचिन्तं, णाइसोगं, णाइदेण्णं, णाइमोहं, णाइभयं[1], णाइपरितासं, भोयणच्छायणगंधमल्लालंकारेहिं तं गब्भं;

[1] °भयं ववगयचिंतासोयमोहभयपरितास अ।

सुहंसुहेणं परिवहति ॥ सूत्रम्-१९ ॥

'तए णं'मित्यादि, 'अविणिज्जमाणंसि'त्ति-दोहदे अविनीयमाने-अनपनीयमाने सति, असंप्राप्तदोहदा मेघादीनामजातत्वात् असंपूर्णदोहदाः, तेषामजातत्वेनैवासंपूर्णत्वात्, अत एव असन्मानितदोहदा तेषामननुभवनादिति; ततः शुष्का मनस्तापेन शोणितशोषात्, 'भुक्ख'त्ति-बुभुक्षाक्रान्तेव अत एव निर्मांसा, 'ओलुग्ग'त्ति-अवरुग्णा-जीर्णेव कथमित्याह-'ओलुग्गं'ति अवरुग्णमिव-जीर्णमिव शरीरं यस्याः सा तथा, अथवा-अवरुग्णा चेतसा अवरुग्णशरीरा तथैव प्रमलित-दुर्बला-स्नानभोजनत्यागात्, क्लान्ता-ग्लानीभूता, 'ओमंथिय'त्ति-अधोमुखीकृतं वदनं च नयनकमले च यया सा तथा, पांडुकितमुखी-दीनास्येव विवर्णं वदनं यस्याः सा तथा, क्रीडा-जलक्रीडादिका, रमणमक्षादिभिः तत्क्रियां च परिहापयन्ती, दीना-दुःस्था दुःस्थं मनो यस्याः सा तथा, यतो निरानन्दा उपहतो मनसः संकल्पः-युक्तायुक्तविवेचनं यस्याः सा तथा, यावत्करणात् 'करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियाइ'त्ति-आर्त्तध्यानं ध्यायतीति, 'नो आढाइ'त्ति-नाद्रियते-नादरं करोति, नो परिजानाति-न प्रत्यभिजानाति विचित्तत्वात्, 'संभंताउ'त्ति-आकुलीभूताः, शीघ्रमित्यादीनि चत्वार्येकार्थिकानि अतिसंभ्रमोपदर्शनार्थं; 'जेणेवे'त्यादि, यत्र धारिणी देवी तत्रोपागच्छति, समागत्य[1] चावरुग्णादि-विशेषणां धारणीं देवीं पश्यति। वाचनान्तरे तु-' जेणेव धारणीदेवी तेणेवेत्यतः पहारेत्थ गमणाए' इत्येतद्दृश्यते। तत्र-' पहारेत्थ '-संप्रधारितवान्-विकल्पितवानित्यर्थः, गमनाय-गमनार्थं; तथा-' तए णं से सेणिए राया जेणेव

1 °समोपागत्य' अ।

धारणीदेवी तेणेव उवागच्छति २, पासइ'त्ति-पश्यति सामान्येन ततोऽवरुग्णादिविशेषणां पश्यतीति; 'दोच्चंपि'त्ति-
द्वितीयामपि वारामिति गम्यते, 'सवहसाविय'त्ति-शपथान्-देवगुरुद्रोहिका भविष्यसि, त्वं यदि विकल्पं नाख्यासी-
त्यादिकान् वाक्यविशेषान् श्राविता-श्रोत्रेणोपलम्भिता शपथैर्वा श्राविताः शपथश्राविता शपथशापिता वा तां करोति ।
'किण्हं किन्न'मिति वा पाठो देवानुप्रिये ! एतस्यार्थस्यानर्हः श्रावणतायां, 'मणोमाणसियं'ति-मनसि जातं मानसिकं,
मनस्येव यद्वर्तते मानसिकं-दुःखं, वचनेनाप्रकाशितत्वान्मनो मानसिकं रहस्यीकरोषि-गोपयसीत्यर्थः; 'तिण्ह'मित्यादि,
त्रिषु मासेषु, 'बहुपडिपुन्नाणं'ति-ईषदूनेषु 'जत्तिहामि'त्ति-यतिष्ये । 'क्वचित्करिष्यामीति' पाठः । 'अयमेया-
रूवस्स'त्ति-अस्यैवंरूपस्य, 'मणोरहसंपत्ती'ति मनोरथप्रधाना प्राप्तिर्यथा विचिन्तितेत्यर्थः, आयैः-लाभैरीप्सितार्थहेतूना-
मुपायैः-अप्रतिहतलाभकारणैः, आयं वा उवायं वा ठियं वा-स्थितं वा क्रमं वा स्थिरहेतुदोहदानां वेप्सितार्थस्य; पाठान्तरे
उत्पत्तिं वा तस्यैवेत्यर्थः । 'अविंदमाणे'त्ति-अलभमानः, 'अयमेयारूवे'त्ति-अयमेतद्रूपः, आध्यात्मिकः-आत्माश्रयः,
चिन्तितः-स्मरणरूपः, प्रार्थितो-लब्धुमाशंसितः, मनोगतः-अबहिः प्रकाशितः, संकल्पो-विकल्पः, 'संपेहेति'त्ति-
संप्रेक्षते-पर्यालोचयति, 'ताओ'त्ति-हे तात !, इत्यामन्त्रणं, 'एयं कारणं'ति-अपध्यानहेतुं दोहदापूर्त्तिलक्षणमितिभावः-
कारणमिति, क्वचिन्नाधीयत इति; एवं 'अगूहमाणे'ति-अगोपायन्तः आकारसंवरेण, अशङ्कमानाः-विवक्षितप्राप्तौ संदे-
हमविदधतः, अनिह्नुवाना-अनपलपन्तः, किमुक्तं भवति ?,-अप्रच्छादयन्तः यथाभूतं-यथावृत्तं अवितथं नत्वन्यथाभूतं,

१ श्रवण० अ०।

असंदिग्धम्–असंदेहं, 'एयमट्ठं'ति–प्रयोजनं दोहदपूरणलक्षणमिति भावः। 'अंतगमणं गमिस्सामि'त्ति–पारगमनं गमिष्यामीति, 'चुल्लमाउयाए'त्ति–लघुमातुः, 'पुव्वसंगइय'त्ति–पूर्वं–पूर्वकाले संगतिः–मित्रत्वं येन सह स पूर्वसंगतिकः, महर्द्धिको–विमानपरिवारादिसंपदुपेतत्वाद्यावत्करणादिदं दृश्यं, महाद्युतिकः–शरीराभरणादिदीप्तियोगात्, महानुभागो–वैक्रियादिकरणशक्तियुक्तत्वात्, महायशाः–सत्कीर्त्तियोगात्, महाबलः–पर्वताद्युत्पाटनसामर्थ्योपेतत्वात्, महासौख्यो–विशिष्टसुखयोगादिति, 'पोसहसालाए'त्ति–पौषधं–पर्वदिनानुष्ठानमुपवासादि तस्य शाला–गृहविशेषः–पौषधशाला तस्यां, पौषधिकस्य–कृतोपवासादेः व्यपगतमालावर्णकविलेपनस्य, वर्णकं–चन्दनं, तथा–निक्षिप्तं–विमुक्तं, शस्त्रं–क्षुरिकादि मुशलं च येन स तथा, तस्य एकस्य–आन्तरव्यक्तरागादिसहायवियोगात्, अद्वितीयस्य तथाविधपदात्यादिसहायविरहात्, 'अट्ठमभत्तं'ति–समयभाषयोपवासत्रयमुच्यते, 'अट्ठमभत्ते परिणममाणे'त्ति–पूर्यमाणे परिपूर्णप्राय इत्यर्थः, 'वेउव्वियसमुग्घाएण'मित्यादि, वैक्रियसमुद्घातो वैक्रियकरणार्थो जीवव्यापारविशेषः, तेन समुपहन्यते–समुपहतो भवति, समुपहन्ति वा–क्षिपति प्रदेशानिति गम्यते, व्यापारविशेषपरिणतो भवतीति भावः; तत्स्वरूपमेवाह–'संखेज्जाइं' इत्यादि, दण्ड इव दण्डः–ऊर्द्धाध आयतः शरीरबाहल्यो जीवप्रदेशकर्मपुद्गलसमूहः, तत्र च विविधपुद्गलानादत्ते इति दर्शयन्नाह–तद्यथा–रत्नानां–कर्केतनादीनां संबन्धिनः १, तथा वैराणां २, वैडूर्याणां ३, लोहिताक्षाणां ४, मसारगल्लाणां ५, हंसगर्भाणां ६, पुलकानां ७, सौगन्धिकानां ८, ज्योतीरसानां ९, अङ्कानां १०, अञ्जनानां ११, रजतानां १२, जातरूपाणां १३, अञ्जनपुलकानां १४, स्फटिकानां १५, रिष्ठानां १६; किमत आह–यथा बादरान्–असारान्, यथा सूक्ष्मान्–सारान्, ततो वैक्रियं करोति;

'अभयकुमारमणुकंपमाणे'त्ति-अनुकम्पयन् हा !, तस्याष्टमोपवासरूपं कष्टं वर्त्तते इति विकल्पयन्नित्यर्थः, पूर्वभवे-पूर्वजन्मनि जनिता-जाता या स्नेहात्प्रीतिः-प्रियत्वं न कार्यवशादित्यर्थः, बहुमानश्च-गुणानुरागस्ताभ्यां सकाशात्, जातः शोकः-चित्तखेदो विरहसद्भावेन यस्य स पूर्वजनितस्नेहप्रीतिबहुमानजातशोकः, वाचनान्तरे-'पूर्वभवजनितस्नेहप्रीतिबहुमानजनितशोभ'स्तत्र शोभा-पुलकादिरूपा, तस्मात्स्वकीयात् विमानवरपुण्डरीकात्, पुण्डरीकता च विमानानां मध्ये उत्तमत्वात्, 'रयणुत्तमाउ'त्ति रत्नोत्तमात् रचनोत्तमाद्वा; 'धरणीतलगमनाय'-भूतलप्राप्तये, त्वरितः-शीघ्रं, संजनितः-उत्पादितो, गमनप्रचारो-गतिक्रियाप्रवृत्तिर्येन स तथा; वाचनान्तरे—'धरणीतलगमनसंजनितमनःप्रचार' इति प्रतीतमेव, व्याघूर्णितानि-दोलायमानानि यानि विमलानि कनकस्य, प्रतरकाणि च-प्रतरवृत्तरूपाणि आभरणानि च-कर्णपूरे मुकुटं च-मौलिः, तेषामुत्कटो य आटोपः-स्फारता तेन दर्शनीयः-आदेयदर्शनो यः स तथा, तथा-अनेकेषां मणिकनकरत्नानां 'पहकर'त्ति-निकरस्तेन परिमण्डितो-भक्तिभिश्चित्रो, विनियुक्तकः-कट्यां निवेशितो, 'मणु'त्ति-मकारस्य प्राकृतशैलीप्रभवत्वात्, योऽनुरूपो गुणः-कटिसूत्रं तेन जनितो हर्षो यस्य स तथा, प्रेङ्खोलमानाभ्यां-दोलायमानाभ्यां वरललितकुण्डलाभ्यां यदुज्ज्वलितम्-उज्ज्वलीकृतं वदनं-मुखं तस्य यो गुणः-कान्तिलक्षणः तेन जनितं सौम्यं रूपं यस्य स तथा। वाचनान्तरे-पुनरेवं विशेषणत्रयं दृश्यते। "वाघुन्नियविमलकणगपयरगवडेंसगपकंपमाणचललोलललियपरिलंबमाणनरमगरतुरगमुहसयविणिग्गउग्गिन्नपवरमोत्तियविरायमाणमउडुक्कडाडोवदरिसणिज्जे"-तत्र व्याघूर्णितानि-चञ्चलानि विमलकनकप्रतरकाणि च अवतंसके च प्रकम्पमाने चललोलानि-अतिचपलानि, ललितानि-शोभा-

१-उत्क्षिप्ताध्य० पूर्वसंगतिकदेवगमनप्रवृत्तिवर्णनम्।

वन्ति, परिलम्बमानानि—प्रलम्बमानानि, नरमकरतुरगमुखशतेभ्यो—मुकुटाग्रविनिर्मिततन्मुखाकृतिशतेभ्यो विनिर्गतानि—निःसृतानि, उद्गीर्णानीव—वान्तानीवोद्गीर्णानि यानि प्रवरमौक्तिकानि—वरमुक्ताफलानि, तैर्विराजमानं—शोभमानं यन्मुकुटं तच्चेति द्वन्द्वः, तेषां य उत्कट आटोपस्तेन दर्शनीयो यः स तथा; तथा—'अनेगमणिकणगरयणपहकरपरिमंडियभागभत्तिचित्तविणिउत्तगमणगुणजणियपेंखोलमाणवरललितकुंडलुज्जलियअहियआभरणजणियसोभे'—अनेकमणिकनकरत्ननिकरपरिमण्डितभागे, भक्तिचित्रे—विच्छित्तिविचित्रे, विनियुक्ते—कर्णयोर्निवेशिते गमनगुणेन—गतिसामर्थ्येन जनिते—कृते, प्रेङ्खोलमाने—चञ्चले ये वरललितकुंडले ताभ्यामुज्ज्वलितेन—उद्दीपनेनाधिकाभ्यामाभरणाभ्यामुज्ज्वलिताधिकैर्वाऽऽभरणैश्च कुण्डलव्यतिरिक्तैर्जनिता शोभा यस्य स तथा; तथा—'गयजलमलविमलदंसणविरायमाणरूवे'—गतजलमलं—विगतमालिन्यं विमलं दर्शनम्—आकारो यस्य स तथा, अत एव विराजमानं रूपं यस्य स तथा ततः कर्मधारयः; अयमेवोपमीयते—उदित इव कौमुदीनिशायां—कार्त्तिकपौर्णमास्यां शनीश्चराङ्गारकयोः—प्रतीतयोरुज्ज्वलितः—दीप्यमानः सन् यो मध्यभागे तिष्ठति स तथा, नयनानन्दो—लोचनाह्लादकः शरच्चन्द्र इति, शनीश्चरांगारकवत्कुण्डले चन्द्रवच्च तस्य रूपमिति, तथाऽयमेव मेरुणोपमीयते—दिव्यौषधीनां प्रज्वलेनेव मुकुटादितेजसा उज्ज्वलितं यद्दर्शन—रूपं तेनाभिरामो—रम्यो यः स तथा, ऋतुलक्ष्म्येव—सर्वर्तुककुसुमसंपदा समस्ता—सर्वा समस्तस्य वा जाता शोभा यस्य स तथा, प्रकृष्टेन गन्धेनोद्भूतेन—उद्धतेनाभिरामो यः स तथा, मेरुरिव नगवरः विकुर्विंतविचित्रवेषः सन्नसौ वर्तते इति; 'दीवसमुद्दाणं'ति—द्वीपसमुद्राणां, 'असंखपरिमाणनामधेज्जाणं'ति—असंख्यं परिमाणं नामधेयानि च येषां ते तथा तेषां; 'मध्यकारेण'—मध्यभागेन, 'वीइवयमाणे'

त्ति-व्यतिव्रजन् गच्छन् उद्योतयन् विमलया प्रभया जीवलोकं, 'ओवयइ'त्ति-अवपतति अवतरति, अन्तरिक्षप्रतिपन्नः-आकाशस्थः दशार्द्धवर्णानि सकिङ्किणीकानि-क्षुद्रघण्टिकोपेतानि; एकस्तावदेष गमः-पाठः, अन्योऽपि-द्वितीयो गमो-वाचनाविशेषः पुस्तकान्तरेषु दृश्यते, 'ताए'-तया उत्कृष्टया गत्या, त्वरितया-आकुलया न स्वाभाविकया, आन्तराकूततोऽप्येषा भवत्यत आह-चपलया कायतोऽपि, चण्डया-रौद्रयाऽत्युत्कर्षयोगेन, सिंहया-तदार्ढ्यस्थैर्येण, उद्धतया-दर्पातिशयेन, जयिन्या-विपक्षजेतृत्वेन, छेकया-निपुणया, दिव्यया-देवगत्या; अयं च द्वितीयो गमो जीवाभिगमसूत्रवृत्त्यनुसारेण लिखितः, 'किं करेसि'त्ति-किमहं करोमि भवदभिप्रेतं कार्यं किं वा, 'दलयामि'त्ति-तुभ्यं ददामि, किं वा प्रयच्छामि भवत्संगतायान्यस्मै, किं वा ते हृदयेप्सितं-मनोवाञ्छितं वर्तत इति प्रश्नः, 'सुनिव्वुयवीसत्थे'त्ति-सुष्ठु निर्वृतः-स्वस्थात्मा, विश्वस्तो-विश्वासवान् निरुत्सुको वा यः स तथा, 'तातो'त्ति-हे तात ! । 'परिकप्पेह'त्ति-सन्नाहवन्तं कुरुत, 'अंतोअंतेउरंसि'त्ति-अन्तरन्तःपुरस्य, 'महयाभडचडगरवंदपरिखित्त'त्ति-महाभटानां यच्चटकरप्रधानं विच्छर्दप्रधानं वृन्दं तेन संपरिक्षिप्ता, वैभारगिरेः कटतटानि-तदेकदेशतटानि पादाश्च-तदासन्नलघुपर्वतास्तेषां यन्मूलं तत्र, तथा-आरामेषु च आरमन्ति, येषु माधवीलतागृहादिषु दम्पत्या(दी)नि ते आरामास्तेषु पुष्पादिमद्वृक्षसंकुलानि उत्सवादौ बहुजनभोग्यानि उद्यानानि तेषु च तथा, सामान्यवृक्षवृन्दयुक्तानि नगरासन्नानि काननानि तेषु च; नगरविप्रकृष्टानि वनानि तेषु च तथा, वनखण्डेषु-च-एकजातीयवृक्षसमूहेषु वृक्षेषु चैकैकेषु गुच्छेषु च-वृन्ताकीप्रभृतिषु, गुल्मेषु च-वंशजालीप्रभृतिषु, लतासु-

१ °र्णानि पञ्चवर्णानि स° अ । २ रौद्रयागत्यु० अ ।

१-उत्क्षिप्ताध्य० पूर्वसंगतिकदेवागमनम् ।

च–सहकारलतादिषु, वल्लीषु च–नागवल्ल्यादिषु च, कन्दरासु च–गुहासु, दरीषु च–शृगालादिउत्कीर्णभूमिविशेषेषु, 'चुंढीसु य'त्ति–अखातात्पोदकविदरिकासु यूथेषु च–वानरादिसम्बन्धिषु, पाठान्तरेण–ह्रदेषु च कक्षेषु च गहनेषु च, नदीषु च–सरित्सु, संगमेषु च–नदीमीलकेषु च, विदरेषु च–जलस्थानविशेषेषु; 'अच्छमाणी य'त्ति–तिष्ठन्ती, प्रेक्षमाणा च–पश्यन्ती, दृश्यवस्तूनि मज्जन्ती च–स्नान्ती, 'पल्लवाणि य'त्ति–पल्लवान् किशलयानि, 'माणेमाणी य'त्ति–मानयन्ती स्पर्शनद्वारेण, 'विणेमाण'त्ति–दोहलं विनयन्ती, 'तंसि अकालदोहलंसि विणीयंसि'त्ति–अकालमेघदोहदे विनीते सति सम्मानितदोहदा पूर्णदोहदेत्यर्थः, 'जयं चिट्ठइ'त्ति–यतनया यथा गर्भबाधा न भवति, तथा तिष्ठति ऊर्द्धवस्थानेन; 'आसयइ'त्ति–आस्ते आश्रयति वा आसनं स्वपिति चेति, हितं–मेधायुरादिवृद्धिकारणत्वान्मितमिन्द्रियानुकूलत्वात्, पथ्यमरोगकारणत्वात्; 'नाइचिंतं'ति–अतीव चिन्ता यस्मिंस्तदतिचिन्तं तथा, यथा न भवतीत्येवं गर्भं परिवहतीति संबन्धः; नातिशोकं, नातिदैन्यं, नातिमोहं–नातिकामासक्तिं, नातिभयमेतदेव संग्रहवचनेनाह–'व्यपगते'त्यादि, तत्र भयं–भीतिमात्रं, परित्रासोऽकस्मात्; ऋतुषु यथायथं भज्यमानाः सुखायेति ऋतुभज्यमानसुखाः तैः ।

ततेणं सा धारिणीदेवी, नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं, अद्धट्ठमाणरातिंदियाणं, वीतिक्कंताणं, अद्धरत्तकालसमयंसि सुकुमालपाणिपादं जाव सव्वंगसुंदरंगं दारगं पयाया; तएणं ताओ अंगपडियारिआओ धारिणीं देवीं नवण्हं मासाणं जाव दारगं पयायं पासन्ति २; सिग्घं, तुरियं, चवलं, वेतियं; जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छति २, सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति २, करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं

मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया !, धारिणीदेवी णवण्हं मासाणं जाव दारगं पयाया; तन्नं अम्हे देवाणुप्पियाणं पियं णिवेदेमो, पियं भे भवउ; तते णं से सेणिए राया तासिं अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा, णिसम्म, हट्ठतुट्ठ० ताओ अंगपडियारियाओ महुरेहिं वयणेहिं विपुलेण य पुप्फगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति, सम्माणेति २, मत्थयधोयाओ करेति, पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेति २; पडिविसज्जेति। तते णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २, एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !, रायगिहं नगरं आसिय जाव परिगयं करेह २, चारगपरिसोहणं करेह २ त्ता, माणुम्माणवद्धणं करेह २, एतमाणत्तियं पचप्पिणह जाव पचप्पिणंति। तते णं से सेणिए राया अट्ठारससेणीप्पसेणीओ सद्दावेति २, एवं वदासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया !, रायगिहे नगरे अब्भिंतरबाहिरिए उस्सुक्कं, उक्करं, अभडप्पवेसं, अदंडिमकुडंडिमं, अधरिमं, अधारणिज्जं, अणुद्धुयमुइंगं, अमिलायमल्लदामं, गणियावरणाडइज्जकलियं, अणेगतालायराणुचरितं, पमुइयपक्कीलियाभिरामं, जहारिहं ठिइवडियं, दसदिवसियं करेह २; एयमाणत्तियं पचप्पिणह तेवि करिंति २, तहेव पचप्पिणंति; तए णं से सेणिए राया बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए, सीहासणवरगए, पुरत्थाभिमुहे, सन्निसन्ने सइएहिं य, साहस्सिएहिं य, सयसाहस्सेहिं य जाएहिं, दाएहिं, भागेहिं दलयमाणे २, पडिच्छेमाणे २, एवं च णं विहरति; तते णं तस्स अम्मापियरो

१ ते भ० अ।

पढमे दिवसे जातकम्मं करेंति, २, बितियदिवसे जागरियं करेंति २, ततिए दिवसे चंदसूरदंसणियं करेंति २, एवामेव निव्वत्ते सुइजातकम्मकरणे संपत्ते बारसाहदिवसे विपुलं असणं, पाणं, खातिमं, सातिमं उवक्खडावेंति २; मित्तणातिणियगसयणसंबंधिपरिजणं बलं च बहवे गणणायग, दंडणायग जाव आमन्तेति; ततो पच्छा ण्हाता कयबलिकम्मा, कयकोउय जाव सव्वालंकारविभूसिया, महतिमहालयंसि भोयणमंडवंसि, तं विपुलं असणं, पाणं, खाइमं, सातिमं मित्तनातिगणणायग जाव सद्धिं आसाएमाणा; विसाएमाणा, परिभाएमाणा, परिभुंजेमाणा, एवं च णं विहरति; जिमितभुत्तुतरागताविय णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया, तं मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरितणगणणायग० विपुलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं, सक्कारेंति, सम्माणेंति २; एवं वदासी–जम्हा णं अम्हं इमस्स दारगस्स गब्भत्थस्स [2]चेव समाणस्स अकालमेहेसु डोहले पाउब्भूते, तं होउ णं अम्हं दारए मेहे नामेणं–'मेहकुमारे'; तस्स दारगस्स, अम्मापियरो अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नाणधेज्जं करेंति। तए णं तते णं से मेहकुमारे पंचधातीपरिग्गहिए, तंजहा–खीरधातीए, मंडणधातीए, मज्जणधातीए, कीलावणधातीए, अंकधातीए, अन्नाहि य बहूहिं खुज्जाहिं, चिलाइयाहिं, वामणिवडभिबव्बरिबउसिजोणियपल्हविणइसिणियाचाधोरुगिणिलासियलउसियदमिलिसिंहलिआरबिपुलिंदिपक्कणिवहलिमरुंडिसबरिपारसीहिं, णाणादेसीहिं, विदेसपरिमंडियाहिं,

१ साक्षम अ। २ चेव वस० अ।

इंगितचिंतियपत्थियवियाणियाहिं, सदेसणेवत्थगहितवेसाहिं, निउणकुसलाहिं, विणीयाहिं; चेडियाचक्कवालवरिसधरकंचुइअमहयरगवंदपरिखित्ते हत्थाओ हत्थं संहरिज्जमाणे, अंकाओ अंकं परिभुज्जमाणे, परिगिज्जमाणे, चालिज्जमाणे, उवलालिज्जमाणे, रम्मंसि मणिकोट्टिमतलंसि परिमिज्जमाणे २; णिव्वायणिव्वाघायंसि गिरिकंदरमल्लीणेव चंपगपायवे सुहं सुहेणं वड्ढइ । तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं नामकरणं च, पजेमणं च; एवं चंकम्मणगं च, चोलोवणयं च महता महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं करिंसु । तते णं तं मेहकुमारं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासजातगं चेव गब्भट्ठमे वासे सोहणंसि तिहिकरणमुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति, तते णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहाइयाओ गणितप्पहाणाओ सउणरुतपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य, अत्थओ य, करणओ य सेहावेति, सिक्खावेति; तं०-लेहं, गणियं, रूवं, नट्टं, गीयं, वाइयं, सरम(ग)यं, पोक्खरगयं, समतालं, जूयं १०; जणवायं, पासयं, अट्ठावयं, पोरेकच्चं, दगमट्टियं, अन्नविहिं, पाणविहिं, वत्थविहिं, विलेवणविहिं, सयणविहिं २०; अज्जं, पहेलियं, मागहियं, गाहं, गीइयं, सिलोयं, हिरण्णजुत्तिं, सुवन्नजुत्तिं, चुन्नजुत्तिं, आभरणविहिं ३०; तरुणीपडिकम्मं, इत्थिलक्खणं, पुरिसलक्खणं, हयलक्खणं, गयलक्खणं, गोणलक्खणं, कुक्कुडलक्खणं, छत्तलक्खणं, डंडलक्खणं, असिलक्खणं ४०; मणिलक्खणं, कागणिलक्खणं, वत्थुविज्जं, खंधारमाणं, नगरमाणं, वूहं, परिवूहं, चारं, परिचारं, चक्कवूहं ५०; गरुलवूहं, सगडवूहं, जुद्धं, निजुद्धं, जुद्धातिजुद्धं, अट्ठियुद्धं,

१-उत्क्षिप्ताध्य०
"मेघकुमार" इति नामस्थापनम् ।

मुट्ठियुद्धं, बाहुयुद्धं, लयाजुद्धं, ईसत्थं ६०; छरुप्पवायं, धणुव्वेयं, हिरन्नपागं, सुवन्नपागं, सुत्तखेडं, वट्टखेडं, नालियाखेडं, पत्तच्छेज्जं, कडच्छेज्जं, सज्जीवं ७०; निज्जीवं सऊणरुयमिति ॥ सूत्रम्-२० ॥ तते णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहादीयाओ, गणियप्पहाणाओ, सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ, सुत्तओ य, अत्थओ य, करणओ य, सिहावेति, सिक्खावेइ; सिहावेत्ता, सिक्खा अम्मापिऊणं उवणेति। तते णं मेहस्स कुमारस्स अम्मापितरो तं कलायरियं, मधुरेहिं-वयणेहिं, विपुलेणं-वत्थगंधमल्लालंकारेणं, सक्कारेंति, सम्माणेंति २ त्ता; विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति २ त्ता; पडिविसज्जेंति ॥ सूत्रम्-२१॥ तते णं से मेहे कुमारे बावत्तरिकलापंडिए, णवंगसुत्तपडिबोहिए, अट्ठारसविहिप्पगारदेसीभासाविसारए, गीइरई, गंधव्वनट्टकुसले, हयजोही, गयजोही, रहजोही, बाहुजोही, बाहुप्पमद्दी; अलं भोगसमत्थे साहसिए वियालचारी जाते यावि होत्था; तते णं तस्स मेहकुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं बावत्तरिकलापंडितं जाव वियालचारी जायं पासंति २ त्ता, अट्ठ पासातवडिंसए करेंति, अब्भुग्गयमुसियपहसिए विव मणिकणगरयणभत्तिचित्ते, वाउद्धूतविजयवेजयंतीपडागाछत्ताइच्छत्तकलिए, तुंगे, गगणतलमभिलंघमाणसिहरे, जालंतररयणपंजरुम्मिल्लियव्व मणिकणगथूभियाए, वियसितसयपत्तपुंडरीए, तिलयरयणद्धयचंदच्चिए, नानामणिमयदामालंकिते, अंतो बहिं च सण्हे, तवणिज्जरुइलवालुयापत्थरे, सुहफासे, सस्सिरीयरूवे, पासादीए जाव पडिरूवे, एगं च णं महं भवणं करेंति; अणेगखंभसयसन्निविट्ठं, लीलट्ठियसालभंजियागं,

अब्भुग्गयसुकयवइरवेतियातोरणवररइयसालभंजियासुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठितपसत्थवेरुलियखंभनाणा-मणिकणगरयणखचितउज्जलं, बहुसमसुविभत्तनिचियरमणिज्जभूमिभागं, ईहामिय जाव भत्तिचित्तं, खंभुग्गयवयरवेइयापरिगयाभिरामं, विज्जाहरजमलजुयलजुत्तंपिव अच्चीसहस्समालणीयं, रूवगसहस्सकलियं, भिसमाणं भिब्भिसमाणं, चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं, सस्सिरीयरूवं, कंचणमणिरयणथूभियागं, नाणाविहपंचवन्नघंटापडागपरिमंडियग्गसिरं[1], धवलमिरीचिकवयं, विणिम्मुयंतं, लाउल्लोइयमहियं जाव गंधवट्टिभूयं, पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं ॥ सूत्रम्-२२ ॥ तते णं तस्स मेहकुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं, सोहणंसि-तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तंसि सरिसियाणं, सरिसव्वयाणं, सरित्तयाणं, सरिसलावन्नरूवजोव्वणगुणोववेयाणं; सरिसएहिंतो रायकुलेहिंतो आणिअल्लियाणं, पसाहणट्ठंगअविहवबहुओवयणमंगलसुजंपियाहिं अट्ठहिं रायवरकण्णाहिं सद्धिं; एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु। तते णं तस्स मेहस्स अम्मापितरो इमं एतारूवं पीतिदाणं दलयइ[2] अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ सुवण्णकोडीओ गाहाणुसारेण भाविय[3]व्व जाव पेसणकारियाओ, अन्नं च विपुलं धणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालरत्तरयणसंतसारसावतेज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं, पकामं परिभाएउं; तते णं से मेहे कुमारे एगमेगाए भारियाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयति, एगमेगं सुवन्नकोडिं

१ °सिहरं अ। २ दलयंति अ। ३ माणिअ० अ।

दलयति, जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयति, अन्नं च विपुलं धणकणग जाव परिभाएउं दलयति; तते णं से मेहे कुमारे उप्पिं पासातवरगते फुट्टमाणेहिं, मुइंगमत्थएहिं, वरतरुणिसंपउत्तेहिं, बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं, उवगिज्जमाणे उ० २, उवलालिज्जमाणे २, सद्दफरिसरसरूवगंधविउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरति ॥ सूत्रम्-२३ ॥ तेणं कालेणं २, समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे, जेणामेव रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेतिए जाव विहरति; तते णं से रायगिहे नगरे सिंघाडग० महया बहुजणसद्देति वा जाव बहवे उग्गा भोगा, जाव रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं, एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति, इमं च णं मेहे कुमारे उप्पिं पासातवरगते फुट्टमाणेहिं मुयंगमत्थएहिं जाव माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे रायमग्गं च ओलोएमाणे २, एवं च णं विहरति। तए णं से मेहे कुमारे ते बहवे उग्गे भोगे जाव एगदिसाभिमुहे निग्गच्छमाणे पासति, पासित्ता; कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेति, एवं वदासी-किन्नं भो देवाणुप्पिया !, अज्ज रायगिहे नगरे इंदमहेति वा, खंद-महेति वा, एवं रुद्दसिववेसमणनागजक्खभूयनईतलायरुक्खचेतियपव्वयउज्जाणगिरिजत्ताइ वा; जओ णं बहवे उग्गा भोगा जाव एगदिसिं एगाभिमुहा णिग्गच्छंति, तते णं से कंचुइज्जपुरिसे समणस्स भग० महावीरस्स गहियागमणपवत्तीए मेहं कुमारं, एवं वदासी-नो खलु देवाणुप्पिया !, अज्ज रायगिहे नयरे इंदमहेति वा, जाव गिरिजत्ताओ वा, जन्नं एए उग्गा जाव एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छन्ति; एवं खलु

देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे, आइकरे, तित्थकरे, इहमागते इह संपत्ते, इह समोसढे; इह चेव रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए; अहापडि जाव विहरति ॥ सूत्रम्–२४ ॥

'मत्थयधोयाउ'त्ति–धौतमस्तकाः करोति अपनीतदासत्वा इत्यर्थः, पौत्रानुपुत्रिकां पुत्रपौत्रादियोग्यामित्यर्थः, 'वृत्तिं'–जीविकां कल्पयतीति। 'रायगिहं नगरं आसिय'–इह यावत्करणादेवं दृश्यं, 'आसियसंमज्जिओवलित्तं'–आसिक्तमुदकच्छटेन संमार्जितं कचवरशोधनेन उपलिप्तं गोमयादिना, केषु ?,–'सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु;' तथा–सित्तसुइयसंमट्ठरत्थंतरावणवीहियं'–सिक्तानि जलेनात एव शुचीनि–पवित्राणि संमृष्टानि कचवरापनयनेन रथ्यान्तराणि आपणवीथयश्च हट्टमार्गा यस्मिन् तत्तथा, 'मंचातिमंचकलितं'–मञ्चा–मालकाः प्रेक्षणकद्रष्टृजनोपवेशननिमित्तं अतिमञ्चाः–तेषामप्युपरि ये तैः कलितं, 'णाणाविहरागभूसियज्झयपडागमंडियं'–नानाविधरागैः कुसुम्भादिभिर्भूषिता ये ध्वजाः सिंहगरुडादिरूपकोपलक्षितबृहत्पटरूपाः पताकाश्च तदितरास्ताभिर्मंडितं, 'लाउल्लोइयमहियं'–लाइयं–छगणादिना भूमौ लेपनं उल्लोइयं–सेटिकादिना कुड्यादिषु धवलनं ताभ्यां महितं–पूजितं ते एव वा महितं–पूजनं यत्र तत्तथा, 'गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितलं'–गोशीर्षस्य–चन्दनविशेषस्य सरसस्य च–रक्तचन्दनविशेषस्यैव दर्दरेण–चपेटारूवेण दत्ता–न्यस्ताः, पञ्चाङ्गुलयस्तला–हस्तका यस्मिन् कुड्यादिषु तत्तथा, 'उवचियचंदणकलसं'–उपचिता–उपनिहिता, गृहान्तःकृतचतुष्केषु चन्दनकलशाः–मङ्गल्यघटाः, यत्र तत्तथा; 'चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागं'–चंदनघटाः सुष्ठुकृताः तोरणानि च प्रतिद्वारं द्वारस्य २, देशभागेषु यत्र तत्तथा; 'आसत्तोसत्तविपुल-

वद्दवग्घारियमल्लदामकलावं'–आसक्तो–भूमिलग्नः, उत्सक्तश्च–उपरिलग्नो विपुलो वृत्तो; 'वग्घारिय'त्ति–प्रलम्बो माल्यदाम्नां–पुष्पमालानां, कलापः–समूहो यत्र तत्तथा; 'पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं'–पञ्चवर्णाः सरसाः सुरभयो ये मुक्ताः–करप्रेरिताः पुष्पपुञ्जास्तैर्य उपचारः–पूजा भूमेः तेन कलितं, 'कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामं'–कुंदुरुक्कं–चीडा तुरुक्कं–सिल्हकं, 'सुगन्धवरगन्धियं गंधवट्टिभूयं नडनट्टगजल्लमल्लमुट्ठियवेलंबगकहकहगपवगलासगआइक्खगलंखमंखतूणइल्लतुंबवीणियअणेगतालायरपरिगीयं'–तत्र नटा–नाटकानां नाटयितारः, नर्त्तका–ये नृत्यन्ति, अंकिला इत्येके; जल्ला–वरत्राखेलका, राज्ञः स्तोत्रपाठका इत्यन्ये; मल्लाः–प्रतीताः, मौष्टिका–मल्ला एव ये मुष्टिभिः प्रहरन्ति, विडम्बकाः–विदूषकाः, कथाकथकाः–प्रतीताः, प्लवका ये उत्प्लवन्ते नद्यादिकं वा तरन्ति, लासकाः–ये रासकान् गायन्ति, जयशब्दप्रयोक्तारो वा भाण्डा इत्यर्थः; आख्यायका–ये शुभाशुभमाख्यान्ति, लङ्खा–वंशखेलकाः, मङ्खाः–चित्रफलकहस्ता भिक्षाटाः, तूणइल्लाः–तूणाभिधानवाद्यविशेषवन्तः, तुम्बवीणका–वीणावादकाः, अनेके ये तालाचराः–तालाप्रदानेन प्रेक्षाकारिणः, तेषां परि–समन्ताद्गीतं–ध्वनितं यत्र तत्तथा कुरुत, स्वयं कारयतान्यैस्तथा चारगशोधनं कुरुत, कृत्वा च, मानोन्मानवर्द्धनं कुरुत; तत्र–मानं–धान्यमानं सेतिकादि, उन्मानं–तुलामानं कर्षादिकं, श्रेणयः–कुम्भकारादिजातयः, प्रश्रेणयः–तत्प्रभेदरूपाः । 'उस्सुक्क'मित्यादि,–उच्छुल्कां–उन्मुक्तशुल्कां स्थितिपतितां कुरुतेति संबन्धः, शुल्कं तु विक्रेतव्यं भाण्डं प्रति राजदेयं द्रव्यं, उत्करां–उन्मुक्तकरां, करस्तु गवादीनां प्रति प्रतिवर्षं राजदेयं द्रव्यं, अविद्यमानो भटानां–राजपुरुषाणां आज्ञादायिनां प्रवेशः कुटुम्बिमन्दिरेषु यस्यां सा तथा

तामभटप्रवेशां, दण्डेन निर्वृत्तं दण्डिमं, कुदण्डेन निर्वृत्तं कुदण्डिमं-राजद्रव्यं, तन्नास्ति यस्यां सा तथा तामदंडिमकुदंडिमां; तत्र-दण्डोऽपराधानुसारेण राजग्राह्यं द्रव्यं, कुदण्डस्तु कारणिकानां प्रज्ञाद्यपराधान्महत्यप्यपराधिनोऽपराधे अल्पं राजग्राह्यं द्रव्यम्, अविद्यमानं 'धरिमं'ति-ऋणद्रव्यं यस्यां सा तथा तां, अविद्यमानो धारणीयः-अधमर्णो यस्यां सा तथा तां; अणुद्धुयमुइंग'त्ति-अनुद्धूता-आनुरूप्येण वादनार्थमुत्क्षिप्ता अनुद्धता वा-वादनार्थमेव वादकैरत्यक्ता मृदङ्गा-मर्दला यस्यां सा तथा तां, 'अ[म्मा]यमिलायमल्लदाम'न्ति-अम्लानपुष्पमालां गणिकावरैः-विलासिनीप्रधानैर्नाटकीयैः-नाटकप्रतिबद्धपात्रैः कलिता या सा तथा तां, अनेकतालाचरानुचरितां-प्रेक्षाकारिविशेषैः सेवितां प्रमुदितैः-हृष्टैः प्रक्रीडितैश्च-क्रीडितुमारब्धैर्जनैरभिरामा या सा तथा तां, 'यथार्हां'-यथोचितां, 'स्थितिपतितां'-स्थितौ-कुलमर्यादायां पतिता-अन्तर्भूता या प्रक्रिया पुत्रजन्मोत्सवसंबन्धिनी सा स्थितिपतिता तां; वाचनान्तरे-'दसदिवसियं ठियपडिय'न्ति-दशाहिकमहिमानमित्यर्थः,कुरुत कारयत वा ।'सएहिं'ति-शतपरिमाणैः,'दायेहिं'ति-दानैः,वाचनान्तरे-शतिकांश्चेत्यादि; यागान्-देवपूजाः, दायान्-दानानि, भागान्-लब्धद्रव्यविभागानिति, प्रथमे दिवसे जातकर्म-प्रसवकर्म्म, नालच्छेदननिखननादिकं, द्वितीयदिने जागरिकां-रात्रिजागरणं, तृतीये दिवसे चन्द्रसूर्यदर्शनं उत्सवविशेष एतं इति, पाठान्तरे-तु प्रथमदिवसे स्थितिपतितां, तृतीये चन्द्रसूर्यदर्शनिकां, षष्ठे जागरिकां; 'निव्वत्ते असुइजायकम्म-करणे'त्ति-निवृत्ते-अतिक्रान्ते-अशुचीनां जातकर्म्मणां करणे, 'निव्वत्ते सुइजायकम्मकरणे'त्ति, वा पाठान्तरं, तत्र

१ न्ति तंत्र द० अ । २ एव अ ।

निर्वृत्ते-कृते शुचीनां जातकर्मणां करणे; 'बारसाहे दिवसे'त्ति-द्वादशाख्ये दिवसे इत्यर्थः, अथवा-द्वादशानामह्नां समाहारो द्वादशाहं तस्य दिवसो येन द्वादशाहः पूर्यते तत्र तथा, मित्राणि-सुहृदः, ज्ञातयो-मातापितृभ्रात्रादयः, निजकाः-स्वकीयाः पुत्रादयः, स्वजनाः-पितृव्यादयः, संबन्धिनः-श्वशुरपुत्रश्वशुरादयः, परिजनो-दासीदासादिः, बलं च-सैन्यं च, गणनायकादयस्तु प्रागभिहिताः, 'महइमहालइ'त्ति-अतिमहति, आस्नादयन्तावास्वादनीयं, परिभाजयन्तौ अन्येभ्यो यच्छन्तौ मातापितराविति प्रक्रमः, 'जेमिय'त्ति-जेमितौ भुक्तवन्तौ, 'भुत्तुत्तर'त्ति-भुक्तोत्तरं-भुक्तोत्तरकालं, 'आगय'त्ति-आगतावुपवेशनस्थाने इति गम्यते, 'समाणे'त्ति-सन्तौ, किंभूतौ भूत्वेत्याह ?, आचान्तौ शुद्धोदकयोगेन चोक्षौ लेपसिक्थाद्यपनयनेन अत एव परमशुचिभूताविति, 'अयमेयारूवे'त्ति-इदमेतद्रूपं गौणं, कोऽर्थो ?,-गुणनिष्पन्नं नामधेयं-प्रशस्तं नाम मेघ इति । क्षीरधात्र्या-स्तन्यदायिन्या, मण्डनधात्र्या-मण्डिकया, मज्जनधात्र्या-स्नापिकया, क्रीडनधात्र्या-क्रीडनकारिण्या, अङ्कधात्र्या-उत्सङ्गस्थापिकया, कुब्जिकाभिः-वक्रजङ्घाभिः, चिलातीभिः-अनार्यदेशोत्पन्नाभिः, वामनाभिः-ह्रस्वशरीराभिः, वटभाभिः-महत्कोष्ठाभिः, बर्बरीभिः-बर्बरदेशसंभवाभिः, बकुसिकाभिर्योनकाभिः, पल्हविकाभिः, ईसिनिकाभिः, धोरुकिनिकाभिः, लासिकाभिः, लकुसिकाभिर्द्राविडीभिः, सिंहलीभिः, आरबीभिः, पुलिन्द्रीभिः, पक्कणीभिः, बहलीभिः, मुरुंडीभिः, शबरीभिः, पारसीभिः, 'नानादेशीभिः'-बहुविधाभिः अनार्यप्रायदेशोत्पन्नाभिरित्यर्थः; विदेशः-स्वकीयदेशापेक्षया राजगृहनगरदेशस्तस्य परिमण्डिकाभिः, इङ्गितेन-नयनादिचेष्टाविशेषेण,

१ महतिमहालए ।

च्चिन्तितं च-अपरेण हृदि स्थापितं, प्रार्थितं च-अभिलषितं विजानन्ति यास्ताः तथा ताभिः, स्वदेशे यन्नेपथ्यं-परिधानादिरचना तद्गृहीतो वेषो यकाभिस्तास्तथा ताभिः, निपुणानां मध्ये कुशलायास्तास्तथा ताभिः, अत एव विनीताभिर्युक्त इति गम्यते, तथा चेटिकाचक्रवालेन अर्थात् स्वदेशसंभवेन वर्षधराणां-वर्द्धितकरिंथनरुन्धनप्रयोगेण नपुंसकीकृतानामन्तःपुरमहल्लकानां, 'कंचुइज्ज'त्ति-कंचुकिनामन्तःपुरप्रयोजननिवेदकानां प्रतीहाराणां वा, महत्तरकाणां च-अन्तःपुरकार्यचिन्तकानां वृन्देन परिक्षिप्तो यः स तथा, हस्ताद्धस्तं-हस्तान्तरं संहियमाणः, अङ्कादङ्कं-उत्सङ्गादुत्सङ्गान्तरं, परिभोज्यमानः, परिगीयमानः, तथाविधबालोचितगीतविशेषैः उपलाल्यमानः, क्रीडादिलालनया, पाठान्तरे तु 'उवणचिज्जमाणे २, उवगाइज्जमाणे २, उवलालिज्जमाणे २, अवगूहिज्जमाणे' २, आलिङ्ग्यमान इत्यर्थः; 'अवयासिज्जमाणे' २, कथञ्चिदालिङ्ग्यमान एव, 'परिवंदिज्जमाणे' २, स्तूयमान इत्यर्थः; 'परिचुंबिज्जमाणे' २ इति प्रचुम्ब्यमानः, चंक्रम्यमाणः; निर्वाते-निर्व्याघाते, 'गिरिकन्दरे'त्ति-गिरिनिकुञ्जे आलीन इव चम्पकपादपः सुखंसुखेन वर्द्धते स्मेति, प्रचङ्क्रमणकं-भ्रमणं, चूडापनयनं-मुण्डनं 'महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं'ति-महत्या ऋद्ध्या एवं सत्कारेण पूजया समुदयेन च जनानामित्यर्थः, 'अर्थत' इति व्याख्यानतः, 'करणतः'-प्रयोगतः, 'सेहावए'त्ति-सेधयति-निष्पादयति, शिक्षयति-अभ्यासं कारयति; 'नवंगसुत्तपडिबोहिए'त्ति-नवाङ्गानि द्वे द्वे श्रोत्रे नयने नासिके जिह्वैका त्वगेका मनश्चैकं सुप्तानीव सुप्तानि-बाल्यादव्यक्तचेतनानि प्रतिबोधितानि-यौवनेन व्यक्तचेतनावन्ति कृतानि यस्य स तथा, आह च व्यवहारभाष्ये-'सोत्ताई नव सुत्ता' इत्यादि, अष्टादश विधिप्रकाराः-प्रवृत्तिप्रकाराः अष्टादशभिर्वा

१-श्री-
उत्क्षि-
प्ताध्य०
'मेघकुमार'
इति
नामस्था-
पनम्।

विधिभिः—भेदैः प्रचारः—प्रवृत्तिर्यस्याः सा तथा तस्यां, देशीभाषायां—देशभेदेन वर्णावलीरूपायां, विशारदः—पण्डितो यः स तथा, गीतिरतिर्गंधर्वे—गीते नाट्ये च कुशलः, हयेन युध्यत इति हययोधी, एवं रथयोधी, बाहुयोधी, बाहुभ्यां प्रमृद्गातीति बाहुप्रमर्दी; साहसिकत्वाद्विकाले चरतीति—विकालचारी। 'पासायवडिंसए'त्ति—अवतंसका इवावतंसकाः शेखराः प्रासादाश्च तेऽवतंसकाश्च प्रासादावतंसका प्रधानप्रासादा इत्यर्थः, 'अब्भुग्गयमूसिय'त्ति—अभ्युद्गतोच्छ्रितान् अत्युच्चानित्यर्थः, अत्र च द्वितीयाबहुवचनलोपो दृश्यः, 'पहसिएविव'त्ति—प्रहसितानिव श्वेतप्रभाप्रबलपटलतया हसन्त इवेत्यर्थः,—तथा—मणिकनकरत्नानां भक्तिभिः—विच्छित्तिभिश्चित्रा ये ते तथा वातोद्धूता याः विजयसूचिका वैजयन्त्यभिधानाः पताकाः छत्रातिच्छत्राणि च तैः कलिता ये ते तथा, ततः कर्मधारयस्ततस्तान्; तुङ्गान् कथमिव ?,—गगनतलमभिलङ्घयच्छिखरान्, 'जालंतररयणपंजरुम्मिल्लियव्व'त्ति—जालान्तेषु—मत्तालम्बपर्यन्तेषु जालान्तरेषु वा—जालकमध्येषु रत्नानि येषां ते तथा, ततो द्वितीयाबहुवचनलोपो दृश्यः पञ्जरोन्मीलितानि च—पृथक्कृतपञ्जराणि च प्रत्यग्रच्छायानित्यर्थः; अथवा—जालान्तररत्नपञ्जरैः—तत्समुदायविशेषैरुन्मीलितानीवोन्मीलितानि चोन्मीषितलोचनानि चेत्यर्थः, मणिकनकस्तूपिकानिति—प्रतीतं, विकसितानि शतपत्राणि पुण्डरीकाणि च प्रतिरूपापेक्षया साक्षाद्वा येषु ते तथा तान्, तिलकैः पुण्ड्रैः, रत्नैः—कर्केतनादिभिः, अर्द्धचन्द्रैः—सोपानविशेषैः, भित्तिषु वा—चन्दनादिमयैरालेख्यैः अर्चिता ये ते तथा तान्, पाठान्तरेण—'तिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्रान्'; नानामणिमयदामालङ्कृतान् अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णान्—मसृणान् तपनीयस्य या रुचिरा वालुका तस्याः प्रस्तरः—प्रतरः प्राङ्गणेषु येषां ते तथा तान्, सुखस्पर्शान्, सश्रीकाणि—सशोभनानि रूपाणि—

रूपकाणि येषु ते तथा तान्, प्रसादीयान्–चित्ताह्लादकान्–दर्शनीयान्–यान् पश्यच्चक्षुर्न श्राम्यति, अभिरूपान्–मनो-
ज्ञरूपान् द्रष्टारं द्रष्टारं प्रति रूपं येषां ते तथा तान्; एकं महद्भवनमिति। अथ भवनप्रासादयोः को विशेषः?, उच्यते–
भवनमायामापेक्षया किञ्चिन्न्यूनोच्छ्रायमानं भवति, प्रासादस्तु आयामद्विगुणोच्छ्राय इति। अनेकेषु स्तम्भशतेषु संनिविष्टं
यत्तत्तथा, लीलया स्थिताः शालभञ्जिकाः–पुत्रिका यस्मिन् तत्तथा, अभ्युद्गता–सुकृता वज्रस्य वेदिका–द्वारमुण्डिकोपरि
वेदिका तोरणं च यत्र तत्तथा, वराभिः रचिताभी रतिदाभिर्वा शालभञ्जिकाभिः, सुश्लिष्टाः–संबद्धाः विशिष्टा लष्टाः
संस्थिताः प्रशस्ताः वैडूर्यस्य स्तम्भा यत्र तत्तथा, नानामणिकनकरत्नैः खचितं च उज्ज्वलं च यत्तत्तथा, ततः पदत्रयस्य
कर्मधारयः; 'बहुसम'त्ति–अतिसमः सुविभक्तो निचितो–निबिडो रमणीयश्च भूभागो यत्र तत्तथा, ईहामृगवृषभतुरगनर-
मकरविहगव्यालकिन्नररुरुसरभचमरकुञ्जरवनलतापद्मलताभक्तिचित्रमिति यावत्करणात् दृश्यं; तथा स्तम्भोद्गतया–स्तम्भो-
परिवर्तिन्या वज्रस्य वेदिकया, परिगृहीतं–परिवेष्टितमभिरामं च यत्तत्तथा, 'विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तं'त्ति–विद्याधरयो-
र्यत् यमलं समश्रेणीकं युगलं–द्वयं तेनैव यन्त्रेण–संचरिष्णुपुरुषप्रतिमाद्वयरूपेण युक्तं यत्तत्तथा, आर्षत्वाच्चैवंविधः समास इति, तथा
अर्चिषां–किरणानां सहस्रैर्मालनीयं-परिवारणीयं, 'भिसमाणं'ति-दीप्यमानं, 'भिब्भिसमाणं'ति–अतिशयेन दीप्यमानं चक्षुः-
कर्तृलोकने-अवलोकने दर्शनं सति लिशतीव-दर्शनीयत्वातिशयात् श्लिष्यतीव यत्र तत्तथा, नानाविधाभिः पञ्चवर्णाभिर्घण्टाप्रधा-
नपताकाभिः परिमण्डितमग्रशिखरं यस्य तत्तथा धवलमरीचिलक्षणं, कवचं–कङ्कटं तत्समूहमित्यर्थः, विनिर्मुञ्चन्–विक्षिपन् सदृ-
शीनां शरीरप्रमाणतो मेघकुमारापेक्षया परस्परतो वा सदृग्वयसां-समानकालकृतावस्थाविशेषाणां, सदृक्त्वचां-सदृशच्छवीनां

सदृशशीललावण्यरूपयौवनगुणैरुपपेतानां, तत्र लावण्यं-मनोज्ञता, रूपम्-आकृतिर्यौवनं-युवता, गुणाः-प्रियभाषित्वादयः; तथा-प्रसाधनानि च-मण्डनानि अष्टासु चाङ्गेषु अविधववधूभिः-जीवत्पतिकनारीभिर्यदवपदनं-प्रोञ्छनकं तच्च मङ्गलानि च दध्यक्षतादीनि गानविशेषो वा, सुजल्पितानि च-आशीर्वचनानीति द्वन्द्वस्तैः करणभूतैरिति; इदं चास्मै प्रीतिदानं दत्ते स्म, तद्यथा-अष्टौ हिरण्यकोटीः, हिरण्यं च-रूप्यं, एवं सुवर्णकोटीः, शेषं च प्रीतिदानं गाथाऽनुसारेण भणितव्यं, यावत्प्रेक्षणकारिकाः, गाथाश्चेह नोपलभ्यन्ते; केवलं ग्रन्थान्तरानुसारेण लिख्यन्ते-" अट्ठहिरण्णसुवन्नय कोडीओ, मउडकुंडला हारा। अट्ठहार एकावली उ मुत्तावली अट्ठ ॥ १ ॥ कणगावलिरयणावलिकडगजुगा तुडियजोयखोमजुगा। वडजुगपट्टजुगाइं दुकूलजुगलाइं अट्ठ(वग्ग)ट्ठ ॥ २ ॥ सिरिहिरिधिइकित्तीउ बुद्धी लच्छी य होंति अट्ठट्ठ। नंदा भद्दा य तला झय वय नाडाइं आसेव ॥ ३ ॥ हत्थी जाणा जुग्गा उ सीया तह संदमाणी गिल्लीओ। थिल्लीइ वियडजाणा रह गामा दास दासीओ ॥ ४ ॥ किंकरकंचुइ मयहर वरिसधरे तिविह दीव थाले य। पाई थासग पल्लग कतिविय अवएड अवपक्का ॥ ५ ॥ पावीढ भिसिय करोडियाओ पल्लंकए य पडिसिज्जा। हंसाईहिं विसिट्ठा आसणभेया उ अट्ठट्ठ ॥ ६ ॥ हंसे १ कुंचे २ गरुडे ३ ओणय ४ पणए ५ य दीह ६ भद्दे ७ य। पक्खे ८ मयरे ९ पउमे १० होइ दिसासोत्थिए ११ कारे ॥ ७ ॥ तेल्ले कोट्ठसमुग्गा पत्ते चोए य तगर एला य। हरियाले हिंगुलए मणोसिला सासव समुग्गे ॥ ८ ॥ खुज्जा चिलाइ वामणि वडभीओ बब्बरी उ बउसियाओ। जोणिय पल्हवियाओ ईसिणिया घोरुइणिया य ॥ ९ ॥ लासिय लउसिय दमिणी सिंहलि तह आरबी पुलिंदी य। पक्कणि बहलि मुरुंडी सबरीओ पारसीओ य ॥ १० ॥ छत्तधरी चेडीओ चामरधरतालियंटयधरीओ। सकरोडियाधरीउ

खीराती पंच धावीओ ॥ ११ ॥ अट्ठंगमद्दियाओ उम्मद्दिगविगमंडियाओ य । वण्णयचुण्णय पीसिय कीलाकारी य दवगारी ॥ १२ ॥ उच्छाविया उ तह नाडइल्ल कोडुंबिणी महाणसिणी । भंडारि अज्झधारि पुप्फधरी पाणीयधरी य ॥ १३ ॥ वलकारिय सेज्जाकारियाओ अब्भंतरी उ बाहिरिया । पडिहारी मालारी पेसणकारीउ अड्डड ॥ १४ ॥" अत्र चायं पाठक्रमः, स्वरूपं च-'अट्ठ मउडे मउडप्पवरे अट्ठ कुंडले कुंडलजोयप्पवरे,' एवमौचित्येनाध्येयं, हारार्द्धहारौ-अष्टादशनवसरिकौ, एकावली-विचित्रमणिका, मुक्तावली-मुक्ताफलमयी, कनकावली-कनकमाणिकमयी, कटकानि-कलाचिकाभरणानि, योगो-युगलं, तुटिका-बाहुरक्षिका, क्षौमं-कार्पासिकं, वटकं-त्रिसरीमयं, पट्टं-पट्टसूत्रमयं, दुकूलं-दुकूलाभिधानवृक्षनिष्पन्नं, वल्कं-वृक्षवल्कनिष्पन्नं, श्रीप्रभृतयः षट् देवताप्रतिमाः संभाव्यन्ते, नन्दादीनां लोकतोऽर्थोऽवसेयः, अन्ये त्वाहुः-नंदं-वृत्त लोहासनं, भद्रं-शरासनं, मूढक इति यत्प्रसिद्धं, 'तल'त्ति-अस्यैवं पाठः, "अट्ठ तले तलप्पवरे सव्वरयणामए नियगवरभवणकेऊ" ते च तालवृक्षाः संभाव्यन्ते, ध्वजाः-केतवो 'वए'-त्ति गोकुलानि दशसाहस्रिकेण गोव्रजेनेत्येवं दृश्यं, 'नाडय' त्ति-'बत्तीसइबद्धेणं नाडगेण'मिति दृश्यं, द्वात्रिंशद्बद्धं-द्वात्रिंशत्पात्रबद्धमिति व्याख्यातारः, 'आसे'त्ति-आसे आसप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवे-श्रीगृहं भाण्डागारं, एवं हस्तिनोऽपि, यानानि-शकटादीनि, युग्यानि-गोल्लविषये प्रसिद्धानि, जम्पानानिद्विहस्तप्रमाणानि चतुरस्राणि वेदिकोपशोभितानि शिबिकाः-कूटाकारेणाच्छादिताः,स्यन्दमानिकाः-पुरुषप्रमाणायामा जम्पानविशेषाः, गिल्लयः-हस्तिन उपरि कोल्लररूपा मानुषं गिलन्तीवेति गिल्लयः, लाटानां यानि अड्डपल्ययानानि तान्यन्यविषयेषु थिल्लीओ अभिधीयन्ते, वियडजाणत्ति-अनाच्छादितानि वाहनानि रहत्ति-संग्रामिकाः परियानिकाश्चाष्टाष्ट, तत्र-संग्रामर-

थानां कटीप्रमाणाफलकवेदिका भवन्ति, वाचनान्तरे रथानन्तरमश्वा हस्तिनश्चाभिधीयन्ते, तत्र ते वाहनभूताः ज्ञेयाः। 'गाम'त्ति–दशकुलसाहस्त्रिको ग्रामः, तिविहदीवत्ति–त्रिविधा दीपाः, १ अवलंबनदीपाः शृङ्खलाबद्धा इत्यर्थः, २ उत्कम्पनदीपाः–ऊर्ध्वदण्डवन्तः, ३ पञ्जरदीपा–अभ्रपटलादिपञ्जरयुक्ताः, त्रयोऽप्येते त्रिविधाः सुवर्णरूप्यतदुभयमयत्वादिति; एवं स्थालादीनि सौवर्णादिभेदात् त्रिविधानि वाच्यानि, कइविका–कलाचिका अवएज इति–तापिकाहस्तकः; 'अवपक्क'त्ति–अवपाक्या तापिकेति संभाव्यते, भिसियाओ–आसनविशेषाः; करोटिकाधारिकाः–स्थगिकाधारिकाः, द्रवकारिकाः–परिहासकारिकाः, शेषं रूढितोऽवसेयं; 'अन्नं चे'त्यादि, विपुलं–प्रभूतं धनं–गणिमधरिममेयपरिच्छेद्यभेदेन चतुर्विधं; कनकं च–सुवर्णं, रत्नानि च–कर्केतनादीनि, स्वस्वजातिप्रधानवस्तूनि वा, मणयश्चन्द्रकान्ताद्याः मौक्तिकानि च; शङ्खाश्च प्रतीता एव, शिलाप्रवालानि च–विद्रुमाणि, अथवा–शिलाश्च–राजपट्टा, गन्धपेषणशिलाश्च, प्रवालानि च–विद्रुमाणि, रक्तरत्नानि च–पद्मरागादीनि एतान्येव; 'संत'त्ति–सत् विद्यमानं यत्सारं–प्रधानं स्वापतेयं–द्रव्यं तद्दत्तवन्ताविति प्रक्रमः, किंभूतं ?,–'अलाहि'त्ति–अलं–पर्याप्तं परिपूर्णं भवति, 'याव'त्ति–यावत्परिमाणं आसप्तमात् कुललक्षणे वंशे भवः कुलवंश्यस्तस्मात्सप्तमं पुरुषं यावदित्यर्थः, प्रकामं–अत्यर्थं दातुं–दीनादिभ्यो दाने, एवं भोक्तुं–स्वयं भोगे, परिभाजयितुं–दायादादीनां परिभाजने, तत्परिमाणं दत्तवन्ताविति प्रकृतं; 'उप्पिं'ति–उपरि, 'फुट्टमाणेहिं मुयंगमत्थएहिं'–स्फुटद्भिरिवातिरभसाऽऽस्फालनात् मृदङ्गमस्तकैः–मर्दलमुखपुटैः, 'रायगिहे नगरे सिंघाडग'–इत्यनेनालापकांशेनेदं द्रष्टव्यं–'सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहपहेसु', 'महया जणसद्देइ वा' इह यावत्करणादिदं दृश्यं; 'जणसमूहेइ वा, जणबोलेइ वा, जणकलकलेइ

वा, जणुम्मीइ वा, जणुक्कलियाइ वा, जणसन्निवाएइ वा; बहुजनो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ एवं पन्नवेइ, एवं भासइ, एवं परूवेइ;–एवं खलु देवाणुप्पिया !, समणे ३, आइगरे, तित्थगरे जाव संपाविउकामे, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे, इहमागए, इह संपत्ते, इह समोसढे, इहेव रायगिहे नगरे, गुणसिलए चेइए, अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ,–तं महाफलं खलु भो देवाणुप्पिया !, तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्सवि सवणयाए, किमंग !, पुण अभिगमणवंदणणमंसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए; एगस्सवि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग !, पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ?; तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया !, समणं भगवं महावीरं वंदामो, नमंसामो, सक्कारेमो, सम्माणेमो, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो; एयं नो पेच्चभवे हियाए, सुहाए, खमाए, निस्सेसाए, अणुगामित्ताए भविस्सइ'त्ति कट्टु त्ति, 'बहवे उग्गा'–इह यावत्करणादिदं द्रष्टव्यं–उग्गपुत्ता, भोगा, भोगपुत्ता; एवं राइन्ना, खत्तिया, माहणा, भडा, जोहा, मल्लई, लेच्छई; अन्ने य बहवे राईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहप्पभियओ अप्पेगइया वंदणवत्तियं, अप्पेगइया पूयणवत्तियं, एवं सक्कारवत्तियं, सम्माणवत्तियं, कोउहल्लवत्तियं, असुयाइं सुणिस्सामो, सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो, अप्पे० मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो, अप्पे० पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामो, अप्पेगइया जिणभत्तिरागेणं, अप्पेगइया जीयमेयंति कट्टु, ण्हाया- कयबलिकम्मा, कयकोउयमंगलपायच्छित्ता, सिरसाकंठेमालकडा, आविद्धमणिसुवन्ना, कप्पियहारद्धहारतिसरयपालंबपलंबमाणकडिसुत्तयसुकयसोभाभरणा, पवरवत्थपरिहिया, चंदणोवलित्तगायसरीरा, अप्पेगइया हयगया एवं गयरहसिवियासंद-

माणिगया, अप्पेगइया पायविहारचारिणो पुरिसवग्गुरापरिखित्ता महया उक्किट्ठिसीहणायबोलकलकलरवेणं समुद्दरवभूयंपिव करेमाणा रायगिहस्स नगरस्स मज्झं मज्झेणं'ति। अस्यायमर्थः—शृङ्गाटिकादिषु यत्र महाजनशब्दादयः, तत्र बहुजनोऽन्योऽन्यमेवमाख्यातीति वाक्यार्थः; 'महया जणसद्देइ वा'त्ति—महान् जनशब्दः—परस्परालापादिरूपः, इकारो वाक्यालङ्कारार्थः;—वाशब्दः पदान्तरापेक्षया समुच्चयार्थः; अथवा—सद्देइ वत्ति—इह संधिप्रयोगादितिशब्दो द्रष्टव्यः, स चोपप्रदर्शने, यत्र महान् जनशब्द इति वा, यत्र जनव्यूह इति वा तत्समुदाय इत्यर्थः; जनबोलः—अव्यक्तवर्णो ध्वनिः, कलकलः—स एवोपलभ्यमानवचनविभागः, उर्म्मिः—संबाधः, एवमुत्कलिका—लघुतरः समुदायः, एवं सन्निपातः—अपरापरस्थानेभ्यो जनानामेकत्र मीलनं तत्र, बहुजनोऽन्योऽन्यस्याख्याति सामान्येन, प्रज्ञापयति विशेषेण, एतदेवार्थद्वयं पदद्वयेनाह—भाषते प्ररूपयति चेति; अथवा—आख्याति सामान्यतः, प्रज्ञापयति विशेषतो, बोधयति वा भाषते व्यक्तपर्यायवचनतः प्ररूपयति उपपत्तितः; 'इह आगए'त्ति—राजगृहे, 'इह संपत्ते'त्ति—गुणशिलके, 'इह समोसढे'त्ति—साधूचितावग्रहे। एतदेवाह—'इहेव रायगिहे' इत्यादि, 'अहापडिरूवं'ति—यथाप्रतिरूपमुचितं इत्यर्थः, 'त'मिति—तस्मात्, 'महफलं'ति—महत्फलं—अर्थो भवतीति गम्यं, 'तहारूवाणं'ति—तत्प्रकारस्वभावानां महाफलजननस्वभावानामित्यर्थः, 'नामगोयस्स'त्ति—नाम्नोयादृच्छिकस्याभिधानकस्य गोत्रस्य—गुणनिष्पन्नस्य, 'सवणयाए'त्ति—श्रवणेन, 'किमङ्ग पुण'त्ति—किमङ्ग पुनरिति पूर्वोक्तार्थस्य विशेषद्योतनार्थः, अङ्गेत्यामन्त्रणे, अथवा—परिपूर्ण एवायं शब्दो विशेषणार्थ इति, अभिगमनं—अभिमुखगमनं—वन्दनं—स्तुतिः, नमस्यनं-प्रणमनं, प्रतिप्रच्छनं—शरीरादिवार्ताप्रश्नः, पर्युपासनं—सेवा एतद्भावस्तत्ता तया, तथा एकस्याप्यार्यस्य आर्यप्रणेतृकत्वात्,

धार्मिकस्य-धर्मप्रतिबद्धत्वात् वन्दामोत्ति-स्तुमो, नमस्यामः-प्रणमामः, सत्कारयामः-आदरं कुर्मो, वस्त्राद्यर्चनेन वा; सन्मानयामः-उचितप्रतिपत्तिभिः, कल्याणं-कल्याणहेतुं, मङ्गलं-दुरितोपशमहेतुं, दैवतं-देवं, चैत्यमिव चैत्यं पर्युपासयामः-सेवामहे, एतत् णो-अस्माकं, प्रेत्यभवे-जन्मान्तरे, हिताय पथ्यान्नवत्, सुखाय-शर्मणे, क्षमाय-संगतत्वाय, निःश्रेयसाय-मोक्षाय, आनुगामिकत्वाय-भवपरम्परासुखानुबन्धिसुखाय भविष्यतीतिकृत्वा-इतिहेतोर्बहव उग्रा-आदिदेवावस्थापितारक्ष-वंशजाः, उग्रपुत्राः-त एव कुमाराद्यवस्थाः, एवं भोगाः-आदिदेवेनैवावस्थापितगुरुवंशजाताः, राजन्या-भगवद्वयस्यवंशजाः, क्षत्रियाः-सामान्यराजकुलीनाः, भटाः-शौर्यवन्तो, योधाः-तेभ्यो विशिष्टतराः; मल्लकिनो लेच्छकिनश्च राजविशेषाः, यथा-श्रूयन्ते चेटकराजस्याष्टादशगणराजानो नव मल्लकिनो नव लेच्छकिन इति, लेच्छइत्ति-क्वचिद्वणिजो व्याख्याताः; लिच्छव इति संस्कारेणेति, राजेश्वरादयः प्राग्वद्, 'अप्पेगइय'त्ति-अप्येके केचन, 'वंदणवत्तियं'त्ति-वन्दनप्रत्ययं वन्दनहेतोः शिरसा कण्ठे च कृता-धृता माला यैस्ते शिरसाकण्ठेमालाकृताः, कल्पितानि हारार्द्धहारत्रिसरकाणि प्रालम्बश्च-प्रलम्बमानः कटिसूत्रकं च येषां ते तथा, तथाऽन्यान्यपि सुकृतशोभान्याभरणानि येषां ते तथा, ततः कर्मधारयः; चन्दनावलिप्तानि गात्राणि, यत्र तत्तथाविधं शरीरं येषां ते तथा, पुरिसवग्गुरत्ति-पुरुषाणां वागुरेव वागुरा-परिकरं च महया-महता उत्कृष्टिश्च-आनन्दमहाध्वनिः-गम्भिरध्वनिः-सिंहनादश्च, बोलश्च-वर्णव्यक्तिवर्जितो ध्वनिरेव, कलकलश्च-व्यक्तवचनः, स एव एतल्लक्षणो यो रवस्तेन समुद्ररवभूतमिव-जलधिशब्दप्राप्तमिव तन्मयमिवेत्यर्थो नगरमिति गम्यते कुर्वाणाः; 'एग-दिसिं'ति-एकया दिशा पूर्वोत्तरलक्षणया एकाभिमुखा-एकं भगवन्तं अभि मुखं येषां ते एकाभिमुखा निर्गच्छन्ति, 'इमं

१-उत्क्षिप्ताध्य० श्रीवीरं प्रति जनसमुदायगमनवर्णनम् ।

च णं'ति–इतश्च 'रायमग्गं च ओलोएमाणे एवं च णं विहरइ, तते णं से मेहे कुमारे ते बहवे उग्गे जाव एगदिसाभिमुहे निगच्छमाणे पासइ पासित्ता' इत्यादि स्फुटं, इन्द्रमहः–इन्द्रोत्सवः, एवमन्यान्यपि पदानि; नवरं स्कन्दः–कार्त्तिकेयः, रुद्रः–प्रतीतः, शिवो–महादेवः, वैश्रमणो–यक्षराट्, नागो–भवनपतिविशेषः, यक्षो भूतश्च व्यन्तरविशेषौ, चैत्यं–सामान्येन प्रतिमा, पर्वतः–प्रतीतः, उद्यानयात्रा–उद्यानगमनं, गिरियात्रा–गिरिगमनं; 'गहियागमणपवित्तिए'त्ति–परिगृहीतागमनप्रवृत्तिको गृहीतवार्त्त इत्यर्थः ॥ २४ ॥

तते णं से मेहे[1] कंचुइज्जपुरिसस्स अंतिए एतमट्ठं सोचा, णिसम्म, हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २; एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !, चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह, तहत्ति उवणेंति; तते णं से मेहे ण्हाते जाव सव्वालंकारविभूसिए, चाउग्घंटं आसरहं दूरूढे समाणे, सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, महया भडचडगरविंदपरियालसंपरिवुडे; रायगिहस्स नगरस्स मज्झं मज्झेणं निग्गच्छति २, जेणामेव गुणसिलए चेतिए, तेणामेव उवागच्छति २ त्ता; समणस्स भगवओ महावीरस्स छत्तातिछत्तं, पडागातिपडागं, विज्जाहरचारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासति, पासित्ता; चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरुहति २, समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छति; तंजहा–सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणाए, एगसाडियउत्तरासंगकर-[2]

१ मेहेकुमारे अ। २ एयम० अ।

णेणं, चक्खुप्फासे अंजलिपग्गहेणं, मणसो एगत्तीकरणेणं, जेणामेव समणे भ० महावीरे तेणामेव उवागच्छति २, समणं ३, तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेति २, वंदति, णमंसइ २; समणस्स ३, णच्चासन्ने नातिदूरे; सुस्सूसमाणे, नमंसमाणे अंजलियउडे, अभिमुहे विणएणं पज्जुवासति; तए णं समणे ३, मेहकुमारस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्तं धम्ममातिक्खति जहा जीवा बुज्झंति; मुचंति, जह य संकिलिस्संति, धम्मकहा भाणियव्वा, जाव परिसा पडिगया ॥ सूत्रम्-२९ ॥

'चाउग्घंटं आसरहं'ति-चतस्रो घण्टा अवलम्बमाना यस्मिन् स तथा, अश्वप्रधानो रथोऽश्वरथः, युक्तमेव अश्वादिभिरिति, 'दूरूढे'त्ति-आरूढः; 'महया' इत्यादि, महद् यत् भटानां चटकरं वृन्दं विस्तारवत्समूहस्तल्लक्षणो यः परिवारस्तेन संपरिवृतो यः स तथा। जृम्भकदेवास्तिर्यग्लोकचारिणः, 'ओवयमाणे'त्ति-अवपततो-व्योमाङ्गणादवतरतः, 'उप्पयंते'त्ति-भूतलादुत्पततो दृष्ट्वा; 'सचित्ते'त्यादि, सचित्तानां द्रव्याणां पुष्पताम्बूलादीनां, 'विउसरणयाए'त्ति-व्यवसरणेन-व्युत्सर्जनेनाचित्तानां द्रव्याणामलङ्कारवस्त्रादीनामव्यवसरणेन-अव्युत्सर्जनेन; क्वचिद्वियोसरणयेति पाठः,-तत्र अचेतनद्रव्याणां छत्रादीनां व्युत्सर्जनेन परिहारेण, उक्तं च-"अवणेइ पंच ककुहाणि रायवरवसभचिंधभूयाणि। छत्तं खग्गोवाहण मउडं तह चामराओ य ॥ १ ॥ "त्ति; एका शाटिका यस्मिंस्तत्तथा तच्च तदुत्तरासङ्गकरणं च-उत्तरीयस्य न्यासविशेषस्तेन, चक्षुःस्पर्शे-दर्शने, अञ्जलिप्रग्रहेण-हस्तजोटनेन, मनस एकत्वकरणेन, एकाग्रत्वविधानेनेति भावः; क्वचिदे-

१ अयाहि० अ।

१-उत्क्षिप्ताध्य० श्रीवीरं प्रति मेघकुमारगमनवर्णनम्।

गत्तभावेणंति पाठः, अभिगच्छतीति प्रक्रमः, 'महइमहालयाए'त्ति-महातिमहत्याः, धर्म-श्रुतचारित्रात्मकं आख्याति, स च यथा जीवा बध्यन्ते कर्म्मभिः मिथ्यात्वादिहेतुभिर्यथा मुच्यन्ते तैरेव ज्ञानाद्यासेवनतः, यथा संक्लिश्यन्ते अशुभपरिणामा भवन्ति, तथा-आख्यातीति; इहावसरे धर्म्मकथा उपपातिकोक्ता भणितव्या, अत्र च बहुग्रंन्थ इति न लिखितः ॥२५॥

तते णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा, णिसम्म, हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेति २; वंदति, नमंसइ २; एवं वदासी-सद्दहामि णं भंते !, णिग्गंथं पावयणं; एवं पत्तियामि णं, रोएमि णं, अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं; एवमेयं भंते ! तहमेयं, अवितहमेयं, इच्छितमेयं, पडिच्छियमेयं भंते !, इच्छितपडिच्छियमेयं भंते !; से जहेव तं तुब्भे वदह जं, नवरं देवाणुप्पिया !, अम्मापियरो आपुच्छामि, तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं पव्वइस्सामि; अहासुहं देवाणुप्पिया !, मा पडिबंधं करेह; तते णं से मेहे कुमारे समणं ३, वंदति, नमंसति २; जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणामेव उवागच्छति २ त्ता, चाउग्घंटं आसरहं दूरूहति २, महया भडचडगरपहकरेणं रायगिहस्स नगरस्स मज्झं मज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छति २ त्ता, चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरूहति २, जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छति २ त्ता, अम्मापिऊणं पायवडणं करेति २; एवं वदासी-एवं खलु अम्मयाओ !, मए समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए

१ आयाहि० अ । २ इच्छियगे० अ ।

धम्मे णिसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिते, पडिच्छिते अभिरुइए; तते णं तस्स मेहस्स[1] अम्मापियरो एवं वदासी धन्नेसि तुमं जाया! संपुन्नो०, कयत्थो०, कयलक्खणोऽसि तुमं जाया!, जन्नं तुमे समणस्स ३ अंतिए धम्मे णिसंते, से वि य ते धम्मे इच्छिते, पडिच्छिते, अभिरुइए[2]; तते णं से मेहे कुमारे अम्मापियरो दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदासी एवं खलु अम्मयातो!, मए समणस्स ३ अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे० इच्छियपडिच्छिए, अभिरुइए; तं इच्छामि णं अम्मयाओ!, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ताणं आगारातो अणगारियं पव्वइत्तए, तते णं सा धारिणी देवी तमणिट्ठं, अकंतं, अप्पियं, अमणुन्नं, अमणामं, असुयपुव्वं; फरुसं गिरं सोचा, णिसम्म, इमेणं एतारूवेणं मणोमाणसिएणं महया-पुत्तदुक्खेणं अभिभूता समाणी सेयागयरोमकूवपगलंतविलीण- गाया, सोयभरपवेवियंगी, णित्तेया, दीणविमणवयणा, करयलमलियव्व कमलमाला, तक्खणउलुगदुब्ब- लसरीरा, लावन्नसुन्ननिच्छायगयसिरीया, पसिढिलभूसणपडंतखुम्मियसंचुन्नियधवलवलयपब्भट्ठउत्तरिज्जा, सूमालविकिन्नकेसहत्था, मुच्छावसणट्ठचेयगरुई, परसुनियत्तव्व चंपकलया, निव्वत्तमहिमव्व इंदलट्ठी, विमुक्कसंधिबंधणा कोट्टिमतलंसि, सव्वंगेहिं धसत्ति पडिया; तते णं सा धारिणी देवी ससंभमोवत्तियाए तुरियं कंचणभिंगारमुहविणिग्गयसीयलजलविमलधाराए परिसिंचमाणा, निव्वावियगायलट्ठी उक्खेवण-

[1] मेहस्सकुमा० अ। [2] अभिरुतिते अ।

तालवंटवीयणगजणियवाएणं सफुसिएणं अंतेउरपरिजणेणं आसासिया समाणी मुत्तावलिसन्निगासपव-डंतअंसुधाराहिं सिंचमाणी पओहरे कलुणविमणदीणा रोयमाणी, कंदमाणी, तिप्पमाणी, सोयमाणी, विलवमाणी मेहं कुमारं; एवं वयासी—सूत्रम्-२६ ॥

'सद्दहामी'त्यादि, श्रद्दधे- अस्तीत्येवं प्रतिपद्ये नैर्ग्रन्थं प्रवचनं—जैनं शासनं, एवं 'पत्तियामि'त्ति—प्रत्ययं करोम्यत्रेति भावः, रोचयामि -करणरुचिविषयीकरोमि—चिकीर्षामीत्यर्थः; किमुक्तं भवति ?,—अभ्युत्तिष्ठामि—अभ्युपगच्छामीत्यर्थः; तथा—एवमेवैतत् यद्भवद्भिः प्रतिपादितं तत्तथैवेत्यर्थः, तथैव तद्यथा वस्तु किमुक्तं भवति ?,-अवितथं सत्यमित्यर्थः, अत 'इच्छिए' इत्यादि, प्राग्वत् ; 'इच्छिए'त्ति—इष्टः, 'पडिच्छिए'त्ति—पुनः पुनरिष्टः भावतो वा प्रतिपन्नः, अभिरुचितः—स्वादुभावमिवोपगतः; 'आगाराओ'त्ति—गेहात् निष्क्रम्यानगारितां—साधुतां प्रव्रजितुं मे, 'मणोमाणसिएणं'ति—मनसि भवं यन्मानसिकं, तन्मनोमानसिकं, तेन अबहिर्वृत्तिनेत्यर्थः; तथा—स्वेदागताः—आगतस्वेदा रोमकूपा येषु तानि स्वेदागतरोमकूपाणि, तत एव प्रगलन्ति—क्षरन्ति, विलीनानि च—क्लिन्नानि गात्राणि यस्याः सा, तथा—शोकभरेण प्रवेपिताङ्गी—कम्पितगात्रा या सा तथा, निस्तेजा, दीनस्येव—विमनस इव वदनं वचनं वा यस्याः सा तथा, तत्क्षणमेव—प्रव्रजामीति वचनश्रवणक्षणे एव अवरुग्णं—म्लानं दुर्बलं च शरीरं यस्याः सा तथा, लावण्येन शून्या—लावण्यशून्या, निश्छाया—गतश्रीका च या सा तथेति, पदचतुष्टयस्य कर्मधारयः; दुर्बलत्वात् प्रशिथिलानि भूषणानि यस्याः सा तथा, कृशीभूतबाहुत्वात् पतन्ति—विगलन्ति, खुम्भियत्ति—भूमिपतनात् प्रदेशान्तरेषु नमितानि चूर्णितानि च-भूपातादेव भग्नानि धवलवलयानि

यस्याः सा तथा, प्रभ्रष्टमुत्तरीयं च यस्याः सा तथा, ततः प्रदत्रयस्य कर्मधारयः; सुकुमारो विकीर्णः केशहस्तः–केशपाशो यस्याः सा तथा, मूर्च्छावशान्नष्टे चेतसि सति गुर्वी–अलघुशरीरा या सा तथा, परशुनिकृत्तेव चम्पकलता कुट्टिमतले पतितेति संबन्धः, निवृत्तमहेवेन्द्रयष्टिः–इन्द्रकेतुर्वियुक्तसन्धिबन्धना–श्लथीकृतसन्धाना धसतीत्यनुकरणे ससंभ्रमं व्याकुलचित्ततया, 'उवत्तियाए'त्ति–अपवर्त्तितया क्षिप्तया त्वरितं–शीघ्रं काञ्चनभृङ्गारमुखविनिर्गता या शीतलजलविमलधारा तया परिषिच्यमाना निर्वापिता–शीतलीकृता गात्रयष्टिर्यस्याः सा परिषिच्यमाननिर्वापितगात्रयष्टिः, उत्क्षेपको–वंशदलादिमयो मुष्टिग्राह्यो दण्डमध्यभागः, तालवृन्तं–तालाभिधानवृक्षपत्रवृन्तं पत्तछोटन इत्यर्थः, तदाकारं वा चर्ममयं वीजनकं तु–वंशादिमयमेवान्तर्ग्राह्यदण्डं एतैर्जनितो यो वातस्तेन, 'सफुसिएणं'–सोदकबिन्दुना अन्तःपुरजनेन समाश्वासिता सती मुक्तावलीसन्निकाशा याः प्रपतन्त्योऽश्रुधारास्ताभिः सिञ्चन्ती पयोधरौ, करुणा च विमनाश्च दीना च या सा तथा, रुदन्ती–साश्रुपातं शब्दं विदधाना, क्रन्दन्ती–ध्वनिविशेषेण, तेपमाना–स्वेदलालादि क्षरन्ती; शोचमाना–हृदयेन विलपन्ती–आर्त्तस्वरेण ॥ २६ ॥

तुमं सि णं जाया !, अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे, कंते, पिए, मणुन्ने, मणामे, थेज्जे वेसासिए, सम्मए, बहुमए, अणुमए, भंडकरंडगसमाणे रयणे, रयणभूते, जीवियउस्सासय, हिययाणंदजणणे, उंबरपुप्फं व दुल्लभे सवणयाए, किमंग ! पुण पासणयाए ?; णो खलु जाया !, अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तते,

१. °त्तए अ. ।

तं भुंजाहि ताव जाया !, विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जीवामो, तओ पच्छा अम्हेहिं काल-गतेहिं, परिणयवए वड्डियकुलवंसतंतुकज्जंमि निरावयक्खे, समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता, आगारातो अणगारियं पव्वइस्ससि । तते णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरो, एवं वदासी-तहेव णं तं अम्मतायो !, जहेव णं तुम्हे ममं एवं वदह तुमंसि णं जाया !, अम्हं एगे पुत्ते तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स ३ जाव पव्वइस्ससि, एवं खलु अम्मयाओ ! माणुस्सए भवे अधुवे, अणियए, असासए, वसणसउवद्दवाभिभूते, विज्जुलयाचंचले, अणिच्चे, जलबुब्बुयसमाणे, कुसग्गजलबिंदुसन्निभे, संझब्भरागसरिसे, सुविणदंसणोवमे, सडणपडणविद्धंसणधम्मे, पच्छा पुरं च णं अवस्स विप्पजहणिज्जे, से केणं जाणति अम्मयाओ !, के पुव्विं गमणाए ?, के पच्छा गमणाए ?; तं इच्छामि णं अम्मयाओ !, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे समणस्स भगवतो० जाव पव्वतित्तए; तते णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो एवं वदासी- इमातो ते जाया !, सरिसियाओ, सरिसत्तयाओ, सरिसव्वयाओ, सरिसलावन्नरूवजोव्वणगुणोववेयाओ, सरिसेहिंतो रायकुलेहिंतो आणियल्लियाओ भारियाओ, तं भुंजाहि णं जाया !, एताहिं सद्धिं विपुले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगे समणस्स ३, जाव पव्वस्ससि; तते णं से मेहे कुमारे अम्मापितरं, एवं वदासी--तहेव णं अम्मयाओ !, जन्नं तुब्भे ममं; एवं वदह--इमाओ ते जाया !, सरिसियाओ जाव समणस्स ३ पव्वइस्ससि; एवं खलु अम्मयाओ !, माणुस्सगा

कामभोगा असुई, असासया, वंतासवा, पित्तासवा, खेलासवा, सुक्कासवा, सोणियासवा, दुरुस्सासनीसासा, दुरूयमुत्तपुरिसपूयबहुपडिपुन्ना, उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणगवंतपित्तसुक्कसोणितसंभवा, अधुवा, अणितिया, असासया, सडणपडणविद्धंसणधम्मा, पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जा; से के णं अम्मयाओ ! जाणंति के पुव्विं गमणाए ?, के पच्छा गमणाए ?; तं इच्छामि णं अम्मयाओ !, जाव पव्वतित्तए । तते णं तं मेहं कुमारं अम्मापितरो, एवं वदासी--इमे ते जाया !, अज्जयपज्जयपिउपज्जयागए सुबहु हिरन्ने य, सुवण्णे य, कंसे य, दूसे य, मणिमोत्तिए य, संखसिलप्पवालरत्तरयणसंतसारसावतिज्जे य, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं; पगामं भोत्तुं, पकामं परिभाएउं, तं अणुहोहि ताव जाव जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्ढिसक्कारसमुदयं, तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पव्वइस्ससि; तते णं से मेहे कुमारे अम्मापियरं, एवं वदासी--तहेव णं अम्मयाओ ! जण्णं तं वदह इमे ते जाया !, अज्जगपज्जगपि०, जाव तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे पव्वइस्ससि, एवं खलु अम्मयाओ ! हिरन्ने य, सुवण्णे य, जाव सावतेज्जे अग्गिसाहिए, चोरसाहिए, रायसाहिए, दाइयसाहिए, मच्चुसाहिए; अग्गिसामन्ने जाव मच्चुसामन्ने, सडणपडणविद्धंसणधम्मे; पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे, से के णं जाणइ अम्मयाओ !, के जाव गमणाए तं इच्छामि णं जाव पव्वतित्तए । तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो जाहे नो संचाएइ मेहं कुमारं बहूहिं विसयाणुलोमाहिं आघवणाहि य,

१-उत्क्षिप्ताध्य० दीक्षार्थिमेघकुमारं प्रति प्रश्नोत्तरसूत्रम् ।

पन्नवणाहि य, सन्नवणाहि य, विन्नवणाहि य; आघवित्तए वा, पन्नवित्तए वा, सन्नवित्तए वा, विन्नवित्तए वा, ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभउव्वेयकारियाहिं पन्नवणाहिं पन्नवेमाणा; एवं वदासी--एस णं जाया!, निग्गंथे पावयणे सच्चे, अणुत्तरे, केवलिए, पडिपुन्ने, णेयाउए, संसुद्धे, सल्लगत्तणे, सिद्धिमग्गे, मुत्तिमग्गे, निज्जाणमग्गे, निव्वाणमग्गे, सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगंतदिट्ठीए, खुरो इव एगंतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गंगा इव महानदी पडिसोयगमणाए, महासमुद्दो इव भूयाहिं दुत्तरे, तिक्खं चंकमियव्वं, गरुअं लंबेयव्वं, असिधारव्व संचरियव्वं, णो य खलु कप्पति जाया!, समणाणं निग्गंथाणं आहाकम्मिए वा, उद्देसिए वा, कीयगडे वा, ठवियए वा, रइयए वा, दुब्भिक्खभत्ते वा, कंतारभत्ते वा, वद्दलियाभत्ते वा, गिलाणभत्ते वा, मूलभोयणे वा, कंदभोयणे वा, फलभोयणे वा, बीयभोयणे वा, हरियभोयणे वा, भोत्तए वा, पायए वा; तुमं च णं जाया!, सुहसमुचिए, णो चेव णं दुहसमुचिए; णालं सीयं, णालं उण्हं, णालं खुहं, णालं पिवासं; णालं वाइयपित्तियसिंभियसन्निवाइयविविहे रोगायंके, उच्चावए, गामकंटए, बावीसं परीसहोवसग्गे, उदिन्ने सम्मं अहियासित्तए; भुंजाहि ताव जाया!, माणुस्सए कामभोगे, ततो पच्छा भुत्तभोगी समणस्स ३, जाव पव्वतिस्ससि; तते णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापितरं, एवं वदासी--तहेव णं तं अम्मयाओ!, जन्नं तुब्भे ममं एवं वदह--" एस णं जाया!, निग्गंथे पावयणे सच्चे, अणुत्तरे०; पुणरवि तं चेव जाव तओ

पच्छा भुत्तभोगी समणस्स ३; जाव पव्वइस्ससि;" एवं खलु अम्मयाओ !, णिग्गंथे पावयणे कीवाणं, कायराणं, कापुरिसाणं, इहलोगपडिबद्धाणं, परलोगनिप्पिवासाणं, दुरणुचरे पाययजणस्स; णो चेव णं धीरस्स, निच्छियस्स (च्छया)ववसियस्स; एत्थं किं दुक्करं करणयाए ?, तं इच्छामि णं अम्मयाओ !, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे समणस्स भगवओ० जाव पव्वइत्तए ॥ सूत्रम् ॥ २७ ॥

'जाय'त्ति--हे पुत्र !, इष्टः-इच्छाविषयत्वात्, कान्तः-कमनीयत्वात्, प्रियः-प्रेमनिबन्धनत्वात्, मनसा ज्ञायसे उपादेयतयेति मनोज्ञः, मनसा अम्यसे--गम्यसे इति मनोऽमः, स्थैर्यगुणयोगात् स्थैर्यो वैश्वासिको-विश्वासस्थानं संमतः, कार्यकरणे बहुमतः-बहुष्वपि कार्येषु बहुर्वाऽनल्पतयाऽस्तोकतया मतो बहुमतः, कार्यविधानस्य पश्चादपि मतोऽनुमतः; 'भाण्डकरण्डकसमानो'-भाण्डं--आभरणं, रत्नमिव रत्नं मनुष्यजातावुत्कृष्टत्वात् रञ्जनो वा रञ्जक इत्यर्थः, रत्नभूतः-चिन्तामणिरत्नादिकल्पो, जीवितमस्माकमुच्छ्वासयसि-वर्द्धयसीति जीवितोच्छ्वासः स एव जीवितोच्छ्वासः, स एव जीवितोच्छ्वासिकः; वाचनान्तरे-तु जीविउस्सइएत्ति-जीवितस्योत्सव इव जीवितोत्सवः स एव जीवितोत्सविकः, हृदयानन्दजननः, उदुम्बरपुष्पं ह्यलभ्यं भवति, अतस्तेनोपमानं; 'जाव ताव अम्हेहिं जीवामो'त्ति -इह भुङ्क्ष्व तावद्भोगान् यावद्वयं जीवाम इत्येतावतैव विवक्षितसिद्धौ यत्पुनः तावत्शब्दस्योच्चारणं तद्भाषामात्रमेवेति, परिणतवया 'वड्डियकुलवंसतंतुकज्जंमि'--वर्द्धिते- वृद्धिमुपागते पुत्रपौत्रादिभिः कुलवंश एव-संतान एव तंतुः दीर्घत्वसाधर्म्यात् कुलवंशतन्तुः स एव कार्यं-कृत्यं तस्मिन्, ततो 'निरवएक्खे'त्ति-निरपेक्षः सकलप्रयोजनानां, 'अधुवे'त्ति-न ध्रुवः सूर्योदयवत्, न प्रतिनियतकाले अवश्यंभावी, अनियतः ईश्वरा-

देरपि दरिद्रादिभावात्, अशाश्वतः–क्षणविनश्वरत्वाद्, व्यसनानि–द्यूतचौर्यादीनि तच्छतैरुपद्रवैः स्वपरसंभवैः सदोपद्रवैर्वाऽभिभूतो–व्याप्तः, शटनं–कुष्ठादिना अङ्गुल्यादेः, पतनं–बाह्वादेः, खड्गच्छेदादिना विध्वंसनं–क्षयः, एते एव धम्र्मा यस्य स तथा; पश्चात्–विवक्षितकालात् परतः, 'पुरं च'त्ति–पूर्वतश्च, णमलंकृतौ, 'अवस्सविप्पजहणिज्जे'–अवश्यत्याज्यः। 'से के णं जाणइ'त्ति–अथ को जानाति ?, न कोऽपीत्यर्थः; अंबतातक !, पूर्वं पित्रोः पुत्रस्य चान्योऽन्यतः गमनाय परलोके उत्सहते, कः पश्चाद्गमनाय तत्रैवोत्सहते इति; कः पूर्वं को वा पश्चात्म्रियते इत्यर्थः। वाचनान्तरे–मेघकुमारभार्यावर्णक एवमुपलभ्यते, 'इमाओ ते जायाओ विपुलकुलबालियाओ कलाकुसलसव्वकाललालियसुहोइयाओ मद्दवगुणजुत्तनिउणविणओवयारपंडियवियक्खणाओ'–पण्डितानां मध्ये विचक्षणाः–पण्डितविचक्षणाः, अतिपण्डिता इत्यर्थः; 'मंजुलमियमहुरभणियहसियविप्पेक्खियगइविलासचिट्ठियविसारयाओ'–मञ्जुलं–कोमलं शब्दतः, मितं–परिमितं, मधुरं–अकठोरमर्थतो यद्भणितं तत्तथाऽवस्थितं–विशिष्टस्थितिशेषं कण्ठ्यं; 'अविकलकुलसीलसालिणीओ विसुद्धकुलवंससंताणतंतुवद्धणपगब्भुब्भवप्पभाविणीओ'–विशुद्धकुलवंश एव सन्तानतन्तुः–विस्तारवत्तन्तुः तद्वर्द्धना ये प्रकृष्टा गर्भाः–पुत्रवरगर्भास्तेषां य उद्भवः–संभवस्तल्लक्षणो यः प्रभावो–माहात्म्यं स विद्यते यासां ताः, तथा–'मणोणुकूलहिययइच्छियायो'–मनोऽनुकूलाश्च ता हृदयेनेप्सिताश्चेति कर्म्मधारयः, 'अट्ठ तुज्झगुणवल्लहाओ'–गुणैर्वल्लभा यास्तास्तथा, 'भज्जाओ उत्तमाओ निच्चं भावाणुरत्ता सव्वंगसुंदरीओ'त्ति, 'माणुस्सगा कामभोग'त्ति;–इह कामभोगग्रहणेन तदाधारभूतानि स्त्रीपुरुषशरीराण्यभिप्रेतानि अशुचयः अशुचिकारणत्वात् वान्तं–वमनं, तदाश्रवन्तीति वान्ताश्रवाः एवमन्यान्यपि। नवरं पित्तं प्रतीतं, खेलो–निष्ठीवनं, शुक्रं–सप्तमो धातुः, शोणितं–रक्तं, दूरूपाणि–

विरूपाणि यानि मूत्रपुरीषपूयानि तैर्बहुप्रतिपूर्णाः; उच्चारः-पुरीषं, प्रस्रवणं-मूत्रं, खेलः-प्रतीतः, सिंघानो-नासिकामलः, वान्तादिकानि प्रतीतान्येतेभ्यः संभवः-उत्पत्तिर्येषां ते तथा। 'इमे य ते' इत्यादि, इदं च ते आर्यकः-पितामहः, प्रार्यकः-पितुः पितामहः, पितृप्रार्यकः-पितुः प्रपितामहः, तेभ्यः सकाशादागतं यत्तत्तथा; अथवा-आर्यकप्रार्यकपितॄणां यः पर्यायः परिपाटिरित्यनर्थान्तरं तेनागतं यत्तत्तथा। 'अग्गिसाहिए'त्यादि,-अग्नेः स्वामिनश्च साधारणं, 'दाइय'त्ति--दायादाः पुत्रादयः, एतदेव द्रव्यस्यातिपारवश्यप्रतिपादनार्थं पर्यायान्तरेणाह-'अग्गिसामण्णे'इत्यादि, शटनं वस्त्रादेरतिस्थगितस्य पतनं--वर्णादिविनाशः, विध्वंसनं च प्रकृतेरुच्छेदः धर्म्मो यस्य तत्तथा, 'जाहे नो संचाएति'त्ति--यदा न शक्नुवन्तौ, 'बहूहिं विसए'त्यादि,-बह्वीभिः विषयाणां--शब्दादीनामनुलोमाः--तेषु प्रवृत्तिजनकत्वेन अनुकूला विषयानुलोमास्ताभिः, आख्यापनाभिश्च--सामान्यतः प्रतिपादनैः, प्रज्ञापनाभिश्च--विशेषतः कथनैः, संज्ञापनाभिश्च--संबोधनाभिर्विज्ञापनाभिश्च--विज्ञप्तिकाभिश्च सप्रणयप्रार्थनैः, चकाराः-समुच्चयार्थाः, आख्यातुं वा, प्रज्ञापयितुं वा, संज्ञापयितुं वा; विज्ञापयितुं वा न शक्नुत इति प्रक्रमः। 'ताहे'त्ति- तदा विषयप्रतिकूलाभिः--शब्दादिविषयाणां परिभोगनिषेधकत्वेन प्रतिलोमाभिः संयमाद्भयमुद्वेगं च-चलनं कुर्वन्ति यास्ताः संयमभयोद्वेगकारिकाः-संयमस्य दुष्करत्वप्रतिपादनपरास्ताभिः प्रज्ञापनाभिः प्रज्ञापयन्तौ एवमवादिष्टाम्-'निग्गन्थे'त्यादि,-निर्ग्रन्थाः-साधवस्तेषामिदं नैर्ग्रन्थं प्रवचनमेव प्रावचनं, सद्भ्यो हितं सत्यं, सद्भूतं वा; नास्मादुत्तरं-प्रधानतरं विद्यत इत्यनुत्तरं, अन्यदप्यनुत्तरं भविष्यतीत्याह-कैवलिकं--केवलं--अद्वितीयं, केवलिप्रणीतत्वाद्वा कैवलिकं; प्रतिपूर्णं--अपवर्गप्रापकैर्गुणैर्भृतं, नयनशीलं नैयायिकं, मोक्षगमकमित्यर्थः; न्याये वा भवं-नैयायिकं, मोक्षगमकमित्यर्थः;

संशुद्धं--सामस्त्येन शुद्धमेकान्ताकलङ्कमित्यर्थः, शल्यानि--मायादीनि कृन्ततीति शल्यकर्तनं, सेधनं सिद्धिः--हितार्थप्राप्तिस्तन्मार्गः, सिद्धिमार्गः मुक्तिमार्गः--अहितकर्मविच्युतेरुपायः, यान्ति तदिति यानं, निरुपमं यानं, निर्याणं--सिद्धिक्षेत्रं तन्मार्गो निर्याणमार्गः, एवं निर्वाणमार्गोऽपि, नवरं निर्वाणं--सकलकर्मविरहजं सुखमिति, सर्वदुःखप्रक्षीणमार्गः--सकलाशर्मक्षयोपायः, अहिरिव एकोऽन्तो--निश्चयो यस्याः सा एकान्ता सा दृष्टिः--बुद्धिर्यस्मिन्निर्ग्रन्थे प्रवचने--चारित्रपालनं प्रति तदेकान्तदृष्टिकं, अहिपक्षे--आमिषग्रहणैकतानतालक्षणा एकान्ता--एकनिश्चया दृष्टिः--दृक् यस्य स एकान्तदृष्टिकः, क्षुरप्र इव एकधारा, द्वितीयधाराकल्पाया अपवादक्रियाया अभावात्; पाठान्तरेण--एकान्ता--एकविभागाश्रया धारा यस्य तत्तथा, लोहमया इव यवाः चर्वयितव्याः प्रवचनमिति प्रक्रमः, लोहमययवचर्वणमिव दुष्करं चरणमिति भावः, वालुकाकवल इव निरास्वादं वैषयिकसुखास्वादनापेक्षया प्रवचनं, गङ्गेव महानदी प्रतिश्रोतसा गमनं--प्रतिश्रोतोगमनं तद्भावस्तत्ता तया, प्रतिश्रोतोगमनेन गङ्गेव दुस्तरं प्रवचनमनुपालयितुमिति भावः, एवं समुद्रोपमानं प्रवचनमिति,--तीक्ष्णं खड्गकुन्तादिकं चंक्रमितव्यं--आक्रमणीयं यदेतत्प्रवचनं तदिति, यथा--खड्गादि क्रमितुमशक्यमेवमशक्यं प्रवचनमनुपालयितुमिति भावः, गुरुकं महाशिलादिकं लम्बयितव्यं--अवलम्बनीयं प्रवचनं गुरुकलम्बनमिव दुष्करं तदिति भावः, असिधारायां सञ्चरणीयमित्येवं रूपं यद्व्रतं--नियमस्तदसिधाराव्रतं चरितव्यं--आसेव्यं यदेतत्प्रवचनानुपालनं तद्वदेतद्दुष्करमित्यर्थः, कस्मादेतस्य दुष्करत्वमत उच्यते--'नो य कप्पई' त्यादि, 'रइए व'त्ति--औद्देशिकभेदस्तच्च मोदकचूर्णादि पुनर्मोदकतया रचितं भक्तमिति गम्यते, दुर्भिक्षभक्तं यद्धि-

१ ०लक्रमंक्ष० अ ।

क्षुकार्थं दुर्भिक्षे संस्क्रियते, एवमन्यान्यपि; नवरं कान्तारं–अरण्यं, वर्द्दलिका--वृष्टिः, ग्लानः सन्नारोग्याय यद्ददाति तद् ग्लानभक्तं, मूलानि–पद्मसिन्नाटिकादीनां कन्दाः–सूरणादयः, फलानि–आम्रफलादीनि, बीजानि–शाल्यादीनि, हरितं–मधुरतृणकटुभाण्डादि भोक्तुं वा पातुं वा नालं–न समर्थः, शीताद्यधिसोढुमिति योगः; रोगाः–कुष्ठादयः, आतङ्काः–आशुघातिनः शूलादयः, उच्चावचान्–नानाविधान् ग्रामकण्टकान्--इन्द्रियवर्गप्रतिकूलान् 'एवं खलु अम्मयाओ !' इत्यादि–यथा लोहचर्वणाद्युपमया दुरनुचरं–दुःखासेव्यं नैर्ग्रन्थं प्रवचनं भवद्भिरुक्तमेवं--दुरनुचरमेव, केषां ?–क्लीबानां–मन्दसंहनननानां कातराणां--चित्तावष्टम्भवर्जितानामत एव कापुरुषाणां--कुत्सितनराणां, विशेषणद्वयं तु कण्ठ्यं; पूर्वोक्तमेवार्थमाह--दुरनुचरं--दुःखासेव्यं नैर्ग्रन्थं प्रवचनमिति प्रकृतं, कस्येत्याह--प्राकृतजनस्य, एतदेव व्यतिरेकेणाह--'नो चेव णं' नैव धीरस्य--साहसिकस्य दुरनुचरमिति प्रकृतं, एतदेव वाक्यान्तरेणाह--निश्चितं--निश्चयवद् व्यवसितं--व्यवसायः कर्म्म यस्य स तथा तस्य, 'एत्थ'त्ति--अत्र नैर्ग्रन्थे प्रवचने किं दुष्करं ?,–न किञ्चित् दुरनुचरमित्यर्थः; कस्यामित्याह--'करणतायां' करणानां--संयमव्यापाराणां भावः करणता तस्यां, संयमयोगेषु मध्ये इत्यर्थः, तत्--तस्मादिच्छाम्यम्बतात ! ॥ २७ ॥

तते णं तं मेहं कुमारं, अम्मापियरो जाहे नो संचाइंति बहूहिं विसयाणुलोमाहि य, विसयपडिकूलाहि य, आघवणाहि य, पन्नवणाहि य, सन्नवणाहि य, विन्नवणाहि य; आघवित्तए वा, पन्नवित्तए वा, सन्नवित्तए वा, विन्नवित्तए वा; ताहे अकामए चेव मेहं कुमारं एवं वदासी–इच्छामो ताव जाया !, एगदिवसमवि ते रायसिरिं पासित्तए, तते णं से मेहे कुमारे अम्मापितरमणुवत्तमाणे तुसिणीए संचि-

ट्टति, तते णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ त्ता, एवं वदासी--खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !, मेहस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह, तते णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव तेवि तहेव उवट्ठवेंति; तते णं से सेणिए राया बहूहिं गणणायगदंडणायगेहि य जाव संपरिवुडे मेहं कुमारं अट्ठसएणं सोवन्नियाणं कलसाणं, एवं रुप्पमयाणं कलसाणं, सुवन्नरुप्पमयाणं कलसाणं, मणिमयाणं कलसाणं, सुवन्नमणिमयाणं०, रुप्पमणिमयाणं, सुवन्नरुप्पमणिमयाणं०, भोमेज्जाणं०; सव्वोदएहिं, सव्वमट्टियाहिं, सव्वपुप्फेहिं, सव्वगंधेहिं, सव्वमल्लेहिं, सव्वोसहिहि य, सिद्धत्थएहि य; सव्विड्ढीए, सव्वजुईए, सव्वबलेणं जाव दुंदुभिनिग्घोसणादितरवेणं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचति २, करयल जाव कट्टु; एवं वदासी--जय जय णंदा !, जय २ भद्दा !, जय णंदा० भद्दं ते अजियं जिणेहि, जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि, अजियं जिणेहि, सत्तुपक्खं जियं च पालेहि, मित्तपक्खं जाव भरहो इव मणुयाणं; रायगिहस्स नगरस्स, अन्नेसिं च बहूणं गामागरनगरजाव सन्निवेसाणं आहेवच्चं जाव विहराहित्ति कट्टु, जय २ सद्दं पउंजंति, तते णं से मेहे राया जाते महया जाव विहरति; तते णं तस्स मेहस्स रन्नो अम्मापितरो एवं वदासी--भण जाया !, किं दलयामो, किं पयच्छामो, किं वा ते हियइच्छिए सामत्थे (मन्ते) ?; तते णं से मेहे राया अम्मापितरो एवं वदासी--इच्छामि णं अम्मयाओ !, कुत्तियावणाओ रयहरणं, पडिग्गहगं च उवणेह; कासवयं च सद्दावेह; तते णं से सेणिए

राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति सद्दावेत्ता; एवं वदासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया !, सिरिघरातो तिन्नि सयसहस्साति गहाय, दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहगं च उवणेह, सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेह; ततो णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ता समाणा हट्ठ-तुट्ठा सिरिघराओ तिन्नि सयसहस्साति गहाय, कुत्तियावणातो दोहिं सयसहस्सेहिं रयहरणं पडिग्गहं च उवणेंति; सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेंति; ततो णं से कासवए तेहिं कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठे जाव हयहियए ण्हाते, कतबलिकम्मे, कयकोउयमंगलपायच्छित्ते, सुद्धप्पावेसाति वत्थाइं मंगलाइं पवरपरिहिए, अप्पमहग्घाभरणालंकितसरीरे, जेणेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छति २, सेणियं रायं करयलमंजलिं कट्टु; एवं वयासी–संदिसह णं देवाणुप्पिया !, जं मए करणिज्जं । ततो णं से सेणिए राया कासवयं एवं वदासी--गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया !, सुरभिणा गंधोदएणं णिक्के हत्थपाए पक्खालेह, सेयाए चउप्फालाए पोत्तीए मुहं बंधेत्ता, मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे णिक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेहि; ततो णं से कासवए सेणिएणं रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठ जाव हियए जाव पडिसुणेति २, सुरभिणा गंधोदएणं हत्थ-पाए पक्खालेति २, सुद्धवत्थेणं मुहं बंधति २ त्ता, परेणं जत्तेणं मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे णिक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पति; ततो णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया महरिहेणं हंसलक्खणेणं

१ हट्ठतुट्ठजा० अ । २ कयब० अ । ३ मुहं बधेति वं० अ ।

पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छति २, सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेति २, सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चाओ दलयति २, सेयाए पोतीए बंधेति २, रयणसमुग्गयंसि पक्खिवति २, मंजूसाए पक्खिवति २, हारवारिधारसिंदुवारछिन्नमुत्तावलिपगासाइं अंसूइं विणिम्मुयमाणी २, रोयमाणी २, कंदमाणी २, विलवमाणी २, एवं वदासी-एस णं अम्हं मेहस्स कुमारस्स अब्भुदएसु य, उस्सवेसु य, पव्वेसु य, तिहीसु य, छणेसु य, जन्नेसु य, पव्वणीसु य, अपच्छिमे दरिसणे भविस्सइत्तिकट्टु, उस्सीसामूले ठवेति; तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापितरो उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति, मेहं कुमारं दोच्चंपि तच्चंपि सेयपीयएहिं कलसेहिं ण्हावेंति २, पम्हलसुकुमालाए गंधकासाइयाए गायातिं लूहेंति २, सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायातिं अणुलिंपति २, नासानीसासवायवोज्झं जाव हंसलक्खणं पडगसाडगं नियंसेंति २, हारं पिणद्धंति २, अद्धहारं पिणद्धंति २; एगावलिं, मुत्तावलिं, कणगावलिं, रयणावलिं, पालंबं पायपलंबं, कडगाइं, तुडिगाइं, केउरातिं, अंगयातिं, दसमुद्दियाणंतयं, कडिसुत्तयं, कुंडलातिं, चूडामणिं, रयणुक्कडं मउडं पिणद्धंति२; दिव्वं सुमणदामं पिणद्धंति २, दद्दुरमलयसुगंधिए गंधे पिणद्धंति; तते णं तं मेहं कुमारं गंठिमवेढिमपूरिमसंघाइमेण चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगंपिव अलंकितविभूसियं करेंति। तते णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २, एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !, अणेगखंभसयसन्निविट्ठं, लीलट्ठियसालभंजियागं, ईहामिगउसभतुरयनरमगरविहगवालगकिन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं,

घंटावलिमहुरमणहरसरं, सुभकंतदरिसणिज्जं, निउणोवियमिसिमिसिंतमणिरयणघंटियाजालपरिखित्तं, अब्भुग्गयवइरवेतियापरिगयाभिरामं, विज्जाहरजमलजंतजुत्तंपिव अचीसहस्समालणीयं, रूवगसहस्सकलियं, भिसमाणं भिब्भिसमाणं, चक्खुलोयणलेस्सं, सुहफासं, सस्सिरीयरूवं, सिग्घं, तुरितं, चवलं, वेतियं, पुरिससहस्सवाहिणीं सीयं उवट्ठवेह; तते णं ते कोडुंबियपुरिसा हट्ठ-तुट्ठा जाव उवट्ठवेंति। तते णं से मेहे कुमारे सीयं दूरूहति २ त्ता, सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने; तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया ण्हाता कयबलिकम्मा जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सीयं दूरूहति २, मेहस्स कुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणंसि निसीयति; तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अंबधाती रयहरणं च पडिग्गहगं च गहाय सीयं दूरूहति २, मेहस्स कुमारस्स वामे पासे भद्दासणंसि निसीयति। तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिट्ठतो एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा, संगयगयहसियभणियचेट्ठियविलासंलावुल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसला, आमेलगजमलजुयलवट्टियअब्भुन्नयपीणरतियसंठितपओहरा; हिमरययकुंदेंदुपगासं, सकोरेंटमल्लदामधवलं आयवत्तं गहाय, सलीलं ओहारेमाणी २ चिट्ठति; तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारुवेसाओ जाव कुसलाओ सीयं दूरूहंति २, मेहस्स कुमारस्स उभओ पासिं नाणामणिकणगरयणमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ चिल्लियाओ सुहुमवरदीहवालाओ संखकुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगासाओ चामराओ गहाय सलीलं ओहारेमाणीओ २

चिट्ठंति । तते णं तस्स मेहकुमारस्स एगा वरतरुणी सिंगारा जाव कुसला सीयं जाव दूरूहति २, मेहस्स कुमारस्स पुरतो पुरत्थिमेणं चंदप्पभवइरवेरुलियविमलदंडं तालविंटं गहाय चिट्ठति; तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी जाव सुरूवा सीयं दूरूहति २, मेहस्स कुमारस्स पुव्वदक्खिणेणं सेयं रययामयं विमलसलिलपुन्नं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठति । तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २ त्ता, एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !, सरिसयाणं, सरिसत्तयाणं, सरिव्वयाणं, एगाभरणगहितनिज्जोयाणं, कोडंबियवरतरुणाणं सहस्सं, सद्दावेह जाव सद्दावंति; तए णं कोडुंबियवरतरुणपुरिसा सेणियस्स रन्नो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा, हट्ठा, ण्हाया जाव एगाभरणगहितणिज्जोया; जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छंति २, सेणियं रायं एवं वदासी–संदिसह णं देवाणुप्पिया !, जन्नं अम्हेहिं करणिज्जं; तते णं सेणिए तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं एवं वदासी-गच्छह णं देवाणुप्पिया !, मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं परिवहेह; तते णं तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सेणिएणं रन्ना एवं वुत्तं संतं हट्ठं तुट्ठं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीं सीयं परिवहति, तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीं सीयं दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलया तप्पढमयाए पुरतो अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तं०–सोत्थिय, सिरिवच्छ, णंदियावत्त, वद्धमाणग, भद्दासण, कलस, मच्छ, दप्पण जाव बहवे अत्थत्थिया जाव ताहिं इट्ठाहिं जाव अणवरयं अभिणंदंता य,

अभिथुणंता य; एवं वदासी–जय २ णंदा !, जय २ णंदा, जय २ भद्दा !; भद्दं ते अजियाइं जिणाहि, इंदियाइं जियं च, पालेहि समणधम्मं, जियविग्घोऽविय वसाहि, तं देव !, सिद्धिमज्झे, निहणाहि रागदोसमल्ले, तवेणं धितिधणियबद्धकच्छे, मद्दाहि य अट्ठकम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं अप्पमत्तो, पावय, वितिमिरमणुत्तरं केवलं नाणं, गच्छ य मोक्खं परमपयं सासयं च अयलं, हंता परीसहचमुं णं अभीओ परीसहोवसग्गाणं, धम्मे ते अविग्घं भवउ त्ति कट्टु; पुणो २, मंगलजय २, सद्दं पउंजंति; तते णं से मेहे कुमारे रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २, जेणेव गुलसिलए चेतिए, तेणामेव उवागच्छति २; पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुभति ॥ सूत्रम्–२८ ॥

'महत्थं'ति–महाप्रयोजनं, महार्घं–महामूल्यं, महार्हं–महापूज्यं महतां वा योग्यं; राज्याभिषेकं–राज्याभिषेकसामग्रीं उपस्थापयत–सम्पादयत। सौवर्णादीनां कलशानामष्टौ शतानि चतुःषष्ट्यधिकानि, 'भोमेज्जाणं'ति–भौमानां पार्थिवानामित्यर्थः। सर्वोदकैः–सर्वतीर्थसंभवैः, एवं मृत्तिकाभिरिति। 'जय जये'त्यादि, जय जय त्वं–जयं लभस्व, नन्दति नन्दयतीति वा नन्दः–समृद्धः समृद्धिप्रापको वा तदामन्त्रणं हे नन्द !, एवं भद्र–कल्याणकारिन् !, हे जगन्नन्द !, भद्रं ते भवत्विति शेषः; इह गमे यावत्करणादिदं दृश्यम्–"इन्दो इव देवाणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, चन्दो इव ताराणं"ति। 'गामागर'–इह दण्डके यावत्करणादिदं दृश्यम्–"नगर–खेड–कब्बड–दोणमुह–मडंब–पट्टण–संबाह–सन्निवेसाणं आहेवच्चं, पोरेवच्चं, सामित्तं, भत्तित्तं, महत्तरगत्तं, आणाईसर–सेणावच्चं; कारेमाणे, पालेमाणे; महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडिय-

घणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहराहि"त्ति । तत्र करादिगम्यो ग्रामः, आकरो--लवणाद्युत्पत्तिभूमिः, अविद्यमानकरं--नगरं, धूलीप्राकारं-खेटं, कुनगरं-कर्बटं, यत्र जलस्थलमार्गाभ्यां भाण्डान्यागच्छन्ति तद् द्रोणमुखं, यत्र योजनाभ्यन्तरे सर्वतो ग्रामादि नास्ति तन्मडम्बं, पत्तनं द्विधा--जलपत्तनं स्थलपत्तनं च;--तत्र जलपत्तनं यत्र जलेन भाण्डान्यागच्छन्ति, यत्र तु स्थलेन तत् स्थलपत्तनं; यत्र पर्वतादिदुर्गे लोका धान्यानि संवहन्ति स संवाहः, सार्थादिस्थानं सन्निवेशः, आधिपत्यं अधिपतिकर्म रक्षेत्यर्थः, 'पोरेवच्चं'-पुरोवर्त्तित्वमग्रेसरत्वमित्यर्थः, स्वामित्वं--नायकत्वं, भर्तृत्वं--पोषकत्वं, महत्तरकत्वं--उत्तमत्वं; आज्ञेश्वरस्य--आज्ञाप्रधानस्य सतः तथा सेनापतेर्भावः- आज्ञेश्वरसेनापत्यं कारयन्, अन्यैर्नियुक्तकैः पालयन् स्वयमेव महता- प्रधानेन; 'अहय'त्ति-आख्यानकप्रतिबद्धं नित्यानुबन्धं वा यन्नाट्यं च--नृत्यं, गीतं च--गानं; तथा-वादितानि यानि तन्त्री च--वीणा, तलौ च--हस्तौ, तालश्च--कंसिका, तुडितानि च वादित्राणि; तथा-घनसमानध्वनिर्यो मृदङ्गः पटुना पुरुषेण प्रवादितः स चेति द्वन्द्वः, ततस्तेषां यो रवस्तेनेति, इति कट्टु--इति कृत्वा एवमभिधाय जय २ शब्दं प्रयुङ्क्ते श्रेणिकराज इति प्रकृतं, ततोऽसौ राजा जातः, 'महया'-इह यावत्करणात् एवं वर्णको वाच्यः--"महयाहिमवन्तमहंतमलयमंदरमहिंदसारे, अच्चंतविसुद्धदीहरायकुलवंसप्पसूए, निरंतरं रायलक्खणविराइयंगमंगे, बहुजणबहुमाणपूइए, सव्वगुणसमिद्धे, खत्तिए, मुदिए, मुद्धाभिसित्ते"--पित्रादिभिर्मूर्द्धन्यभिषिक्तत्वात्, "माउपिउसुजाए दयपत्ते"--दयावानित्यर्थः, सीमंकरे मर्यादाकारित्वात्, सीमंधरे कृतमर्यादापालकत्वात् ; एवं-खेमंकरे, खेमंधरे;--क्षेमं--अनुपद्रवता

१ °ध्रुगः सघनमृदङ्गः प° अ

"मणुस्सिदे जणवयपिया"--हितत्वात्, 'जणवयपुरोहिए'--शान्तिकारित्वात्, सेउकरे--मार्गदर्शकः, केउकरे अद्भुतकार्यकारित्वात्, केतुः-चिह्नं; 'नरपवरे'-नराः प्रवराः यस्येतिकृत्वा, 'पुरिसवरे'--पुरुषाणां मध्ये वरत्वात्, 'पुरिससीहे'--शूरत्वात्, 'पुरिसआसीविसे'--शापसमर्थत्वात्, 'पुरिसपुंडरीए'- सेव्यत्वात्, 'पुरिसवरगंधहत्थी'--प्रतिराजगजभञ्जकत्वात्, 'अड्ढे'--आढ्यः, 'दित्ते'--दर्पवान्, 'वित्ते'--प्रतीतः; 'विच्छिन्नविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइन्ने' -विस्तीर्णविपुलानि--अविस्तीर्णानि भवनशयनासनानि यस्य स तथा यानवाहनान्याकीर्णानि-गुणवन्ति यस्य स तथा ततः कर्मधारयः, 'बहुधणबहुजायरूवरयए'-बहु धनं-गणिमादिकं बहुनी च जातरूपरजते यस्य स तथा, 'आयोगपयोगसंपउत्ते'-आयोगस्य अर्थलाभस्य प्रयोगा-उपायाः संप्रयुक्ता-व्यापारिता येन स तथा, 'विच्छड्डियपउरभत्तपाणे'-विच्छर्दिते-त्यक्ते बहुजनभोजनदानेनावशिष्टोच्छिष्टसंभवात् संजातविच्छेदे वा नानाविधभक्तिके भक्तपाने यस्य स तथा, 'बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूए'-बहुदासीदासश्चासौ गोमहिषीगवेलगप्रभूतश्चेति समासः, गवेलका-उरभ्राः, 'पडिपुण्णजंतकोसकोट्ठागाराउहागारे'-यन्त्राणि-पाषाणक्षेपयन्त्रादीनि, कोशो-भाण्डागारं, कोष्ठागारं-धान्यगृहं, आयुधागारं-प्रहरणशाला; 'बलवं दुब्बलपच्चामित्ते'-प्रत्यमित्राः-प्रातिवेशिकाः, 'ओहयकंटयं निहयकंटयं गलियकंटयं उद्धियकंटयं अकंटयं'-कण्टकाः-प्रतिस्पर्द्धिनो गोत्रजाः उपहता विनाशनेन निहताः समृद्ध्यपहारेण गलिताः मानभङ्गेन उद्धृता देशनिर्वासनेन अत एवाकण्टकमिति, एवं 'उवहयसत्तु'मित्यादि, नवरं शत्रवो गोत्रजा इति, 'ववगयदुब्भिक्खमारिभयविप्पमुक्कं खेमं सिवं सुभिक्खं पसंतडिंबडमरं'-अन्वयव्यतिरेकाभिधानस्य शिष्टसंमतत्वात् न पुनरुक्ततादोषोऽत्र 'रज्जं पसाहेमाणे विहरइ'त्ति। 'जाया'

इति–हे जात ! पुत्र 'किं दलयामो'त्ति–भवतोऽनभिमतं किं विघटयामो विनाशयाम इत्यर्थः; अथवा–भवतोऽभिमतेभ्यः किं दद्मः, तथा भवते एव किं प्रयच्छामः ?, 'किं वा ते हियइच्छियसामत्थे'त्ति–को वा तव हृदयवाञ्छितो मन्त्र इति, 'कुत्तियावणाउ'त्ति देवताधिष्ठितत्वेन स्वर्गमर्त्यपाताललक्षणभूत्रितयसंभविवस्तुसंपादक आपणो–हट्टः–कुत्रिकापणः तस्मात् आनीतं काश्यपकं च–नापितं शब्दितुं–आकारितुमिच्छामीति वर्तते, श्रीगृहात्–भाण्डागारात्, 'निक्के'त्ति सर्वथा विगतमलान्, 'पोत्तियाइ'त्ति–वस्त्रेण, 'महरिहे'त्यादि 'महरिहेणं'त्ति–महता योग्येन महापूजेन वा हंसस्येव लक्षणं–स्वरूपं शुक्लता हंसा वा लक्षणं–चिह्नं यस्य स तथा तेन शाटको–वस्त्रमात्रं स च पृथुलः पटोऽभिधीयत इति पटशाटकस्तेन, 'सिंदुवारे'त्ति–वृक्षविशेषो निर्गुण्डीति केचित् तत्कुसुमानि सिन्दुवाराणि तानि च शुक्लानि । 'एस णं'ति–एतत् दर्शनमिति योगः; णमित्यलंकारे; अभ्युदयेषु–राज्यलाभादिषु उत्सवेषु प्रियसमागमादिमहेषु प्रसवेषु–पुत्रजन्मसु तिथिषु–मदनत्रयोदशीप्रभृतिषु क्षणेषु–इन्द्रमहादिषु यज्ञेषु–नागादिपूजासु पर्वणीषु च·कार्त्तिक्यादिषु अपश्चिमं–अकारस्यामङ्गलपरिहारार्थत्वात् पश्चिमं दर्शनं भविष्यति, एतत्केशदर्शनमपनीतकेशावस्थस्य मेघकुमारस्य यद्दर्शनं सर्वदर्शनपाश्चात्यं तद्भविष्यतीति भावः; अथवा न पश्चिममपश्चिमं–पौनःपुन्येन मेघकुमारस्य दर्शनमेतद्दर्शनेन भविष्यतीत्यर्थः । 'उत्तरावक्कमणं'ति–उत्तरस्यां दिश्यपक्रमणं–अवतरणं यस्मात्तदुत्तरापक्रमणं–उत्तराभिमुखं राज्याभिषेककाले पूर्वाभिमुखं तदासीदिति, 'दोच्चंपि'–द्विरपि, 'तच्चंपि'–त्रिरपि, 'श्वेतपीतैः'–रजतसौवर्णैः, 'पायपलंबं'ति–पादौ यावद् यः प्रलम्बतेऽलङ्कारविशेषः स पादप्रलम्बः, 'तुडियाइं'ति–बाहुरक्षकाः, केयूराङ्गदयोर्यद्यपि नामकोशे बाह्वाभरणतया न विशेषः तथापीहाकारभेदेन भेदो दृश्यः,

'दशमुद्रिकानन्तकं'–हस्ताङ्गुलिसंबन्धि मुद्रिकादशकं, 'सुमणदामं'ति–पुष्पमालां पिनद्ध्यतः–परिधत्तः दर्दरः–चीवराव-नद्धकुण्डिकादिभाजनमुखं तेन गालितास्तत्र पक्का वा ये, 'मलय'त्ति–मलयोद्भवं श्रीखण्डं तत्संबन्धिनः सुगन्धयो–गन्धा-स्तान् पिनद्ध्यतः, हारादिस्वरूपं प्राग्वत्, ग्रन्थिमं–यद्ग्रथ्यते सूत्रादिना वेष्टिमं–यद्ग्रथितं सद्वेष्ट्यते यथा पुष्पलम्बूसकः गेन्दुक इत्यर्थः, पूरिमं–येन वंशशलाकामयपञ्जरकादि कूर्चादि वा पूर्यते सांयोगिकं–यत्परस्परतो नालसंघातनेन संघात्यते अलङ्कृत-कृतालङ्कारं, विभूषितं-जातविभूषं। 'सदावेह जाव सदार्त्रिति' 'एगा वरतरुणी'त्यादि शृङ्गारस्यागारमिव शृङ्गारागारं अथवा–शृङ्गारप्रधान आकारो यस्याश्चारुश्च वेषो यस्याः सा तथा, सङ्गतेषु गतादिषु निपुणा युक्तेषूपचारेषु कुशला च या सा तथा, तत्र विलासो–नेत्रविकारो, यदाह–" हावो मुखविकारः स्याद्भावश्चित्तसमुद्भवः। विलासो नेत्रजो ज्ञेयो, विभ्रमो भ्रूसमुद्भवः ॥ १ ॥" संलापो–मिथो भाषा उल्लापः–काकुवर्णनं, आह च–"अनुलापो मुहुर्भाषा, प्रलापोऽनर्थकं वचः। काका वर्णनमुल्लापः, संलापो भाषणं मिथः ॥ १ ॥" इति। 'आमेलग'त्ति–आपीडः–शेखरः स च स्तनः–प्रस्तावाच्चुचुक-स्तत्प्रधानौ आमेलकौ वा–परस्परमीषत्सम्बद्धौ यमलौ–समश्रेणिस्थितौ युगलौ–युगलरूपौ द्वावित्यर्थः वर्त्तितौ–वृत्तौ अभ्युन्नतौ-उच्चौ पीनौ–स्थूलौ रतिदौ–सुखप्रदौ संस्थितौ–विशिष्टसंस्थानवन्तौ पयोधरौ–स्तनौ यस्याः सा तथा, हिमं च रजतं च कुन्द-श्चेन्दुश्चेति द्वन्द्वः, एषामिव प्रकाशो यस्य तत्तथा, सकोरेण्टानि–कोरेण्टकपुष्पगुच्छयुक्तानि माल्यदामानि–पुष्पमाला यत्र तत्तथा, धवलमातपत्रं–छत्रं, नानामणिकनकरत्नानां महार्हस्य महार्घस्य तपनीयस्य च सत्कावुज्ज्वलौ विचित्रौ दण्डौ ययोस्ते तथा, अत्र कनकतपनीययोः को विशेषः?, उच्यते कनकं पीतं तपनीयं रक्तं इति, 'चिल्लियाओ'त्ति–दीप्यमाने लीने इत्येके।

सूक्ष्मवरदीर्घवाले शङ्खकुन्ददकरजसां अमृतस्य मथितस्य सतो यः फेनपुंजस्तस्य च सन्निकाशे–सदृशे ये ते तथा, चामरे चन्द्रप्रभवज्रवैडूर्यविमलदण्डे, इह चन्द्रप्रभः–चन्द्रकान्तमणिः, तालवृन्तं–व्यजनविशेषः मत्तगजमहामुखस्य आकृत्या–आकारेण समानः–सदृशो यः स तथा तं भृङ्गारं, 'एगे' त्यादि, एकः–सदृशः आभरणलक्षणो गृहीतो निर्योगः–परिकरो यैस्ते तथा तेषां कौटुम्बिकवरतरुणानां सहस्रमिति। 'तए णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा सद्दाविय'त्ति–शब्दिताः, 'समाण'त्ति–सन्तः, 'अट्ठट्ठमंगलय'त्ति–अष्टावष्टाविति वीप्सायां द्विर्वचनं मङ्गलकानि–माङ्गल्यवस्तूनि, अन्ये त्वाहुः–अष्टसंख्यानि अष्टमङ्गलसंज्ञानि वस्तूनीति 'तप्पढमयाए'त्ति तेषां विवक्षितानां मध्ये प्रथमता तत्प्रथमता तया; 'वद्धमाणयं'ति–शरावं, पुरुषारूढः पुरुष इत्यन्ये, स्वस्तिकपञ्चकमित्यन्ये, प्रासादविशेष इत्यन्ये। 'दप्पण'त्ति–आदर्शः, इह यावत्करणादिदं दृश्यं–'तयाणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगारा दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसणरइयआलोइयदरिसणिज्जा वाउद्धुयविजयंती य ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्विए संपट्ठिया, तयाणंतरं च वेरुलियभिसंतविमलदंडं पलंबकोरेंटमल्लदामोवसोहियं चंदमंडलनिभं विमलं आयवत्तं पवरं सीहासणं, च मणिरयणपायपीढं सपाउयाजोयसमाउत्तं, बहुकिंकरकम्मकरपुरिसपायत्तपरिखित्तं, पुरओ अहाणुपुव्विए संपट्ठियं; तयाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा, कुंतग्गाहा, चावग्गाहा, धयग्गाहा, चामरग्गाहा, कुमरग्गाहा, पोत्थयग्गाहा, फलयग्गाहा, पीढयग्गाहा, वीणग्गाहा, कूवग्गाहा, हडप्फग्गाहा, पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया; तयाणंतरं च णं बहवे दंडिणो, मुंडिणो, सिहंडिणो, पिंछिणो, हासकहा, डमरकरा, चाडुकरा; कीडंता य, वायंता य, गायंता

२ चणंके० अ। ३ °णमडियपाय° अ।

य, नच्चंता य, हासंता य, सोहिंता य, साविंता य, रक्खंता य, आलोयं च करेमाणा जयजयसद्दं च पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्विए संपट्ठिया; तयाणंतरं च णं जच्चाणं, तरमल्लिहायणाणं, थासगअहिलाणाणं, चामरगंडपरिमंडियकडीणं, अट्ठसयं वरतुरगाणं, पुरओ अहाणुपुव्विए संपट्ठियं; तयाणंतरं च णं ईसिदन्ताणं, ईसिमत्ताणं, ईसिउच्छंगविसालधवलदंताणं, कंचणकोसिपविट्ठदंताणं, अट्ठसयं गयाणं, पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं;-तयाणंतरं च णं सछत्ताणं, सज्झयाणं, सघंटाणं, सपडागाणं, सतोरणवराणं, सनंदिघोसाणं, सखिंखिणीजालपरिखित्ताणं, हेममयचित्ततिणिसकणकनिज्जुत्तदारुयाणं, कालायससुकयनेमिजंतकम्माणं, सुसिलिट्ठवित्तमंडलधुराणं, आइण्णवरतुरगसंपउत्ताणं, कुसलनरछेयसारहिसुसंपरिग्गहियाणं, बत्तीसतोणपरिमंडियाणं, सकंकडवडंसकाणं, सचावसरपहरणावरणभरियजुद्धसज्जाणं, अट्ठसयं रहाणं, पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं; तयाणंतरं च णं असिसत्तिकोंततोमरसूललउडभिंडिमालधणुपाणिसज्जं, पायत्ताणीयं, पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं; तए णं से मेहे कुमारे हारोत्थयसुकयरइयवच्छे, कुंडलुज्जोइयाणणे, मउडदित्तसिरए, अब्भहियरायतेयलच्छीए, दिप्पमाणे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं, हयगयपवरजोहकलियाए, चाउरंगिणीए सेणाए समणुगम्ममाणमग्गे, जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरओ महं आसा, आसधरा, उभओ पासे नागा, नागधरा, करिवरा, पिट्ठओ रहा, रहसंगेल्ली; तए णं से मेहे कुमारे अब्भागयभिंगारे, पग्गहियतालियंटे, ऊसवियसेयच्छत्ते, पवीजियवालवियणीए, सव्विड्ढीए, सव्वजुईए, सव्वबलेणं, सव्वसमुदएणं, सव्वादरेणं, सव्वविभूए, सव्वविभूसाए, सव्वसंभमेणं, सव्वगंध-

१ तेत्ती० अ। २ अब्भुग्ग० अ।

पुप्फमल्लालंकारेणं, सव्वतुडियसद्दसन्निनाएणं, महया इड्ढीए, महया जुईए, महया बलेणं, महया समुदएणं, महया वरतुडियजमगसमगप्पवाइएणं, संखपणवपडहभेरिझल्लरिखरमुहिहुडुक्कमुरवमुइंगदुंदुभिनिग्घोसनाइयरवेणं, रायगिहस्स नगरस्स मज्झमज्झेणं णिग्गच्छइ; तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छमाणस्स बहवे अत्थत्थिया, कामत्थिया, भोगत्थिया, लाभत्थिया, कीब्बिसिया, करोडिया, कारवाहिया, संखिया, चक्किया, लंगलिया, मुहमंगलिया,* पूसमाणवा, वद्धमाणगा; ताहिं इट्ठाहिं, कंताहिं, पियाहिं, मणुन्नाहिं, मणामाहिं, मणाभिरामाहिं, हिययगमणिज्जाहिं वग्गूहिं'ति, अयमस्यार्थःतदनन्तरं च छत्रस्योपरि पताका छत्रपताका सचामरा–चामरोपशोभिता तथा, दर्शनरतिदा–दृष्टिसुखदा आलोके–दृष्टिविषये क्षेत्रे स्थिताऽत्युच्चतया दृश्यते या* सा आलोकदर्शनीया, ततः कर्मधारयः, अथवा-दर्शने–दृष्टिपथे मेघकुमारस्य रचिता–धृता या आलोकदर्शनीया च या सा तथा, वातोद्धूता विजयसूचिका च या वैजयन्ती–पताकाविशेषः सा तथा, सा च ऊसिया–उच्छ्रिताऊर्द्धीकृता पुरतः–अग्रतः यथानुपूर्वी–क्रमेण सम्प्रस्थिता–प्रचलिता, 'भिसंत'त्ति–दीप्यमानः, मणिरत्नानां सम्बन्धि पादपीठं यस्य सिंहासनस्य तत्तथा, स्वेन–स्वकीयेन मेघकुमारसम्बन्धिना पादुकायुगेन समायुक्तं यत्तत्तथा, बहुभिः किङ्करैः–किंकुर्वाणैः कर्मकरपुरुषैः पादातेन च–पदातिसमूहेन शस्त्रपाणिना परिक्षिप्तं यत्तत्तथा 'कूय'त्ति–कुतुपः, 'हडप्फो'त्ति–आभरणकरण्डकं, 'मुंडिणो'–मुण्डिताः, 'छिडिणो'–शिखावन्तः, 'डमरकराः'–परस्परेण कलहविधायकाः, 'चाटुकराः'–प्रियंवदाः, 'सोहंता य'त्ति–शोभां कुर्वन्तः, 'सावंता य'त्ति–श्रावयन्तः आशीर्वचनानि रक्षन्तः न्यायं आलोकं च कुर्वाणाः–

* * एतदन्तर्गतः पाठः अप्रतौ नास्ति ।

मेघकुमारं तत्समृद्धिं च पश्यन्तः, जात्यानां–काम्बोजादिदेशोद्भवानां तरोमल्लिनो–बलाधायिनो वेगाधायिनो वा हायनाः–संवत्सरा येषां ते तथा तेषां, अन्ये तु 'भायल'त्ति मन्यन्ते, तत्र भायला–जात्यविशेषा एवेति गमनिकैवेषा, थासका–दर्प्पणाकाराः अहिलाणानि च–कविकानि येषां सन्ति ते तथा, मतुब्लोपात्, 'चामरगंडा'–चामरदण्डास्तैः परिमण्डिता कटी येषां ते तथा तेषां, ईषाद्दान्तानां–मनाग् ग्राहितशिक्षाणामीषन्मत्तानां,–नातिमत्तानां, ते हि जनमुपद्रवयन्तीति, ईषत्–मनागुत्सङ्गः इवोत्सङ्गः–पृष्ठिदेशस्तत्र विशाला–विस्तीर्णा धवलदन्ताश्च येषां ते तथा तेषां, कोशी–प्रतिमा, नन्दिघोषः–तूर्यनादः, अथवा सुनंदी–सत्समृद्धिको घोषो येषां ते तथा तेषां, सकिङ्किणि–सक्षुद्रघण्टिकं यज्जालं–मुक्ताफलादिमयं तेन परिक्षिप्ता ये ते तथा तेषां, तथा हैमवतानि–हिमवत्पर्वतोद्भवानि चित्राणि तिनिशस्य–वृक्षविशेषस्य सम्बन्धीनि कनकनियुक्तानि–हेमखचितानि दारूणि–काष्ठानि येषां ते तथा तेषां, कालायसेन–लोहविशेषेण सुष्ठु कृतं नेमेः–गण्डमालायाः यन्त्राणां च–रथोपकरणविशेषाणां कर्म्म येषां ते तथा तेषां, सुश्लिष्टे वित्तत्ति–वत्रदण्डवत् मण्डले वृत्ते धुरौ येषां ते तथा तेषां, आकीर्णा–वेगादिगुणयुक्ताः ये वरतुरगास्ते संप्रयुक्ता–योजिता येषु ते तथा तेषां, कुशलनराणां मध्ये ये छेकाः–दक्षाः सारथयस्तैः सुसंप्रगृहीता ये ते तथा तेषां, तोणत्ति–शरभस्त्राः सह कण्टकैः–कवचैर्वंशैश्च वर्तन्ते ये ते तथा तेषां, सचापाः–धनुर्युक्ता ये शराः प्रहरणानि च–खड्गादीनि आवरणानि च–शीर्षकादीनि तैर्ये भृता युद्धसज्जाश्च–युद्धप्रगुणाश्च ये ते तथा तेषां, 'लउड'त्ति–लकुटाः, अस्यादिकानि पाणौ हस्ते यस्य तत्तथा तच्च तत्सज्जं च–प्रगुणं युद्धस्येति गम्यते, पादातानीकं–पदातिकटकं हारावस्तृतं सुकृतरतिकं–विहितसुखं वक्षो यस्य स तथा, मुकुटदीप्तशिरस्कः, 'पहारेत्थ गमणयाए'–त्ति–गमनाय प्रधारितवान्–

१–उत्क्षिप्ताध्य० दीक्षावर्णकव्याख्यानम्।

संप्रधारितवान्, 'मह'त्ति–महान्तः अश्वाः, अश्वधराः ये अश्वान् धारयन्ति, नागा–हस्तिनः, नागधरा ये हस्तिनो धारयन्ति, क्वचिद्वरा इति पाठः; तत्राश्वा नागाश्च किंविधाः ? अश्ववरा अश्वप्रधानाः, एवं नागवराः, तथा रथा रथसंगिणेल्ली–रथमाला क्वचित् रहसंगल्लीति पाठः, तत्ररथसङ्गेल्ली–रथसमूहः। 'तए णं से मेहे कुमारे अब्भागसभिंगारे' इत्यादिव्रर्णकोपसंहारवचनमिति न पुनरुक्तं, 'सव्विड्ढीए'त्यादि, दोहदावसरे व्याख्यातं, शङ्खः–प्रतीतः, पणवो–भाण्डानां पटहः, पटहस्तु प्रतीत एव, भेरी–ढक्काकारा, झल्लरी–वलयाकारा, खरमुही–काहला, हुडुक्का–प्रतीता; महाप्रमाणो मर्द्दलो, मुरजः, स एव लघुर्मृदङ्गो; दुन्दुभिः–भेर्याकारा सङ्कटमुखी एतेषां निर्घोषो–महाध्वानो नादितं च–घण्टायामिव वादनोत्तरकालभावी स तथा तद्ध्वनिस्तल्लक्षणो यो रवस्तेन, अर्थार्थिनो–द्रव्यार्थिनः, कामार्थिनः–शब्दरूपार्थिनः, भोगार्थिनः–गन्धरसस्पर्शार्थिनः लाभार्थिनः–सामान्येन लाभेप्सवः, किल्बिषिकाः–पातकफलवंतो निःस्वान्धपङ्ग्वादयः, कारोटिकाः–कापालिकाः, करो–राजदेयं द्रव्यं तद्वहन्ति ये ते कारवाहिकाः, करेण वा बाधिताः–पीडिता ये ते करबाधिताः; शंखवादनशिल्पमेषामिति शाङ्खिकाः शङ्खो वा विद्यते येषां मङ्गल्यचन्दनाधारभूतः ते शाङ्खिकाः, चक्रं प्रहरणमेषामिति चाक्रिकाः–योद्धारः, चक्रं–वाऽस्ति येषां ते चाक्रिकाः–कुम्भकारतैलिकादयः, चक्रं वोपदर्श्य याचन्ते ये ते चाक्रिकाः–चक्रधरा इत्यर्थः, लाङ्गलिकाः–हालिकाः, लाङ्गलं वा प्रहरणं येषां गले वा लम्बमानं सुवर्णादिमयं तद्येषां ते लाङ्गालिकाः–कार्पटिकविशेषाः, मुखमङ्गलानि–चाटुवचनानि ये कुर्वन्ति ते मुखमङ्गलिकाः, पुष्पमाणवा–नग्नाचार्या, वर्द्धमानकाः–स्कन्धारोपितपुरुषाः, 'इट्ठाही'त्यादि पूर्ववत्, 'जियविग्घोविय

१ अब्भुग्ग० अ।

वसाहि'-त्ति-इहैव सम्बन्धः, अपि च जितविघ्नः त्वं हे देव ! अथवा-देवानां सिद्धेश्च मध्ये वस-आस्व, 'निहणाहि'त्ति विनाशय रागद्वेषौ मल्लौ, केन करणभूतेनेत्याह-तपसा-अनशनादिना, किंभूतः सन् ?-धृत्या-चित्तस्वास्थ्येन । 'धणियं'ति-अत्यर्थं पाठान्तरेण बलिका-दृढा बद्धा कक्षा येन स तथा, मल्लं हि प्रतिमल्लो मुष्ट्यादिना करणेन वस्त्रादिदृढबद्धकक्षः सन्निहन्तीति एवमुक्तमिति, तथा मर्दय अष्टौ कर्मशत्रून् ध्यानेनोत्तमेन-शुक्लेनाप्रमत्तः सन्, तथा 'पावय'त्ति-प्राप्नुहि वितिमिरं-अपगताज्ञानतिमिरपटलं नास्मादुत्तरमस्तीति अनुत्तरं-केवलज्ञानं, गच्छ च मोक्षं परं पदं शाश्वतमचलं चेत्येवं चकारस्य सम्बन्धः, किं कृत्वा ?-हत्वा परीषहचमूं-परीषहसैन्यं, णमित्यलंकारे, अथवा-किंभूतस्त्वं ?-हन्ता-विनाशकः परीषहचमूनाम् ॥२८॥

ततें णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं पुरओ कट्टु, जेणामेव समणे भगवं महावीरे, तेणामेव उवागच्छंति २ त्ता; समणं भगवं महावीरं तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति २ त्ता, वंदंति नमंसंति २ त्ता; एवं वदासी-एस णं देवाणुप्पिया !, मेहे कुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे, कंते जाव जीवियाउसासए, हियय[2]णंदिजणए, उंबर[3]पुप्फंपिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण दरिसणयाए ?; से जहा नामए उप्पलेति वा, पउमेति वा, कुमुदेति वा, पंके जाए जले संवड्ढिए, नोवलिप्पई[4] पंकरएणं, णोवलिप्पइ जलरएणं; एवामेव मेहे कुमारे कामेसु जाए भोगेसु संवुड्ढे नोवलिप्पति, कामरएणं नोवलिप्पति भोगरएणं; एस णं देवाणुप्पिया !, संसारभउव्विग्गे, भीए जम्मणजरमरणाणं, इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ

२ हिययाणंदज० अ । ३ °पुप्फंविव. अ । ४ °प्पए अ ।

अणगारियं पव्वतित्तए; अम्हे णं देवाणुप्पियाणं सिस्सभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया !, सिस्सभिक्खं; तते णं से समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स अम्मापिऊएहिं एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेति, तते णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमति २ त्ता, सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयति; तते णं से मेहकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छति २, हारवारिधारसिंदुवारछिन्नमुत्तावलिपगासातिं अंसूणि विणिम्मुयमाणी २, रोयमाणी २, कंदमाणी २, विलवमाणी २; एवं वदासी–जतियव्वं जाया ! घडियव्वं जाया ! परक्कमियव्वं जाया !, अस्सिं च णं अट्ठे नो पमादेयव्वं, अम्हंपि णं एमेव मग्गे भवउ त्ति कट्टु, मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति २; जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया ॥ सूत्रम्–२९ ॥

'एगे पुत्ते' इति–धारिण्यपेक्षया, श्रेणिकस्य बहुपुत्रत्वात्; जीवितोच्छ्वासको हृदयनंदिजनकः, उत्पलमिति वा–नीलोत्पलं पद्ममिति वा–आदित्यबोध्यं, कुमुदमिति वा–चन्द्रबोध्यम्। 'जइयव्व' मित्यादि, प्राप्तेषु संयमयोगेषु यत्नः कार्यो हे जात !,–पुत्र !; घटितव्यं–अप्राप्तप्राप्तये घटना कार्या पराक्रमितव्यं च–पराक्रमः कार्यः, पुरुषत्वाभिमानः सिद्धफलः कर्तव्य इति भावः, किमुक्तं भवति !,–एतस्मिन्नर्थे प्रव्रज्यापालनलक्षणे न प्रमादयितव्यमिति ।

तते णं से मेहे कुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति २, जेणामेव समणे ३, तेणामेव उवागच्छति

२, समणं भगवं महावीरं तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति २, वंदति नमंसति २; एवं वदासी--आलित्ते णं भंते !, लोए पलित्ते णं भंते ! लोए आलित्तपलित्ते णं भंते !, लोए जराए मरणेण य, से जहाणामए केई गाहावती आगारंसि झियायमाणंसि, जे तत्थ भंडे भवति अप्पभारे मोल्लगुरुए तं गहाय आयाए एगंतं अवक्कमति एस मे णित्थारिए समाणे पच्छा पुरा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति एवामेव ममवि एगे आयाभंडे इट्ठे, कंते, पिए, मणुन्ने, मणामे, एस मे नित्थारिए समाणे संसारवोच्छेयकरे भविस्सति; तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाहिं सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुंडावियं, सेहावियं, सिक्खावियं, सयमेव आयारगोयरविणयवेणइयचरणकरणजायामायावत्तियं, धम्ममाइक्खियं; तते णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेति, सयमेव आयारजाव धम्ममातिक्खइ;–एवं देवाणुप्पिया !, गंतव्वं, चिट्ठितव्वं, णिसीयव्वं, तुयट्टियव्वं, भुंजियव्वं, भासियव्वं; एवं उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं, भूतेहिं, जीवेहिं, सत्तेहिं, संजमेणं संजमितव्वं, अस्सिं च णं अट्ठे णो पमादेयव्वं; तते णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं णिसम्म सम्मं पडिवज्जइ, तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ जाव उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूतेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमइ ॥ सूत्रम्–३० ॥ जं दिवसं च णं मेहे कुमारे मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए, तस्स णं दिवसस्स पुव्वावरण्ह-

१ °ओ पडिणिखमेंति । २ त्ता उ° अ ।

१–उत्क्षिप्ताध्य० मेघकुमारस्य दीक्षाग्रहणविधिवर्णनम् ।

कालसमयंसि, समणाणं निग्गंथाणं अहारातिणियाए, सेज्जासंथारएसु, विभज्जमाणेसु, मेहकुमारस्स दार-मूले सेज्जासंथारए जाए यावि होत्था; तते णं समणा णिग्गंथा पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए, पुच्छ-णाए, परियट्टणाए, धम्माणुजोगचिंताए य; उच्चारस्स य पासवणस्स य अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगतिया, मेहं कुमारं हत्थेहिं संघट्टंति, एवं पाएहिं सीसे पोट्टे कायंसि अप्पेगतिया ओलंडेति, अप्पे-गइया पोलंडेइ, अप्पेगतिया पायरयरेणुगुंडियं करेंति; एवंमहालियं च णं रयणीं मेहे कुमारे णो संचाएति, खणमवि अच्छिं निमीलित्तए; तते णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था एवं खलु अहं सेणियस्स रन्नो पुत्ते, धारिणीए देवीए अत्तए मेहे, जाव समणयाए तं जया णं अहं अगारमज्झे वसामि, तया णं मम समणा णिग्गंथा आढायंति, परिजाणंति, सक्कारेंति; सम्माणेंति, अट्ठाइं, हेऊतिं, पसिणातिं, कारणाइं, वाकरणाइं, आतिक्खंति; इट्ठाहिं, कंताहिं, वग्गूहिं, आलवेंतिं, संलवेंति; जप्पभितिं च णं अहं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए, तप्पभितिं च णं मम समणा नो आढायंति, जाव नो संलवंति; अदुत्तरं च णं मम समणा णिग्गंथा राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए, पुच्छणाए जाव महालियं च णं रत्तिं नो संचाएमि, अच्छिं णिमिलावेत्तए; तं सेयं खलु मज्झं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते, समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि आगारमज्झे वसित्तए त्ति कट्टु; एवं संपेहेति २, अट्टदुहट्टवसट्टमाणसगए णिरयपडिरूवियं च णं तं रयणिं खवेति २,

कल्लं पाउप्पभायाए सुविमलाए रयणीए जाव तेयसा जलंते जेणेव समणे भगवं० तेणामेव उवागच्छति २, तिखुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेइ २, वंदइ नमंसइ २; जाव पज्जुवासइ ॥ सूत्रम्–३१ ॥

आदीप्त--ईषद्दीप्तः प्रदीप्तः–प्रकर्षेण दीप्त आदीप्तप्रदीप्तोऽत्यन्तप्रदीप्त इति भावः, 'गाहावइ'त्ति–गृहपतिः, 'झियायमाणंसि'त्ति–ध्मायमाने भाण्डं–पण्यं हिरण्यादि अल्पभारं, पाठान्तरे अल्पं च तत्सारं चेत्यल्पसारं मूल्यगुरुकं; 'आयाए'त्ति–आत्मना, 'पच्छापुरा य'त्ति–पश्चादागामिनि काले पुरा च पूर्वमिदानीमेव लोके–जीवलोके, अथवा–पश्चाल्लोके–आगामिजन्मनि पुरालोके–इहैव जन्मनि;–पाठान्तरे–'पच्छाउरस्स'त्ति, पश्चादग्निभयोत्तरकालं; आतुरस्य–बुभुक्षादिभिः पीडितस्येति । 'एगे भंडे'त्ति–एकं–अद्वितीयं भाण्डमिव भाण्डं, 'सयमेवे'त्यादि,--स्वयमेव प्रव्राजितं वेषदानेन आत्मानं इति गम्यते भावे वा क्तः प्रत्ययः प्रव्राजनमित्यर्थः, मुण्डितं शिरोलोचेन सेधितं–निष्पादितं करणप्रत्युपेक्षणादिग्राहणतः, शिक्षितं सूत्रार्थग्राहणतः, आचारो--ज्ञानादिविषयमनुष्ठानं कालाध्ययनादि गोचरो--भिक्षाटनं, विनयः--प्रतीतो, वैनयिकं--तत्फलं कर्म्मक्षयादि, चरणं---व्रतादि, करणं--पिण्डविशुद्ध्यादि, यात्रा--संयमयात्रा मात्रा–तदर्थमेवाहारमात्रा, ततो द्वन्द्वः; तत एषामाचारादीनां वृत्तिः-वर्त्तनं, यस्मिन्नसो आचारगोचरविनयवैनयिकचरणकरणयात्रामात्रावृत्तिकस्तं धर्म्ममाख्यातं--अभिहितं; ततः श्रमणो भगवान् महावीरः स्वयमेव प्रव्राजयति यावत् धर्म्ममाख्याति, कथमित्याह–एवं गन्तव्यं–युगमात्रभून्यस्तदृष्टिनेत्यर्थः, 'एवं चिट्ठियव्वं'त्ति–शुद्धभूमौ ऊर्द्धस्थानेन स्थातव्यं, एवं निषीदितव्यं–उपवेष्टव्यं संदंशकभूमिप्रमार्जनादिन्यायेनेत्यर्थः, एवं त्वग्वर्त्तितव्यं–शयनीयं,–सामायिकाद्युच्चारणापूर्वकं शरीरप्रमार्जनां विधाय संस्तारकोत्तरपट्टयोर्बाहूपधानेन वामपार्श्वत इत्यादिना

न्यायेनेत्यर्थः; भोक्तव्यं-वेदनादिकारणतो अङ्गारादिदोषरहितमित्यर्थः, भाषितव्यं-हितमितमधुरादिविशेषणतः, एवमुत्था-योत्थाय-प्रमादनिद्राव्यपोहेन विबुध्य २ प्राणादिषु विषयेषु संयमो-रक्षा तेन संयंतव्यम्-संयतितव्यमिति, तत्र-" प्राणा द्वित्रिचतुः प्रोक्ताः, भूतास्तु तरवः स्मृताः। जीवाः पञ्चेन्द्रिया ज्ञेयाः, शेषाः सत्त्वा उदीरिताः ॥ १ ॥" किं बहुना ?,-अस्मिन् प्राणादिसंयमे न प्रमादयितव्यमुद्यम एव कार्य इत्यर्थः। प्रत्यपराह्णकालसमयो-विकालः, 'अहाराइ-णियाए'त्ति-यथारत्नाधिकतया यथाज्येष्ठमित्यर्थः, शय्या-शयनं, तदर्थं संस्तारकभूमयः; अथवा-शय्यायां-वसतौ संस्ता-रकाः; वाचनायै-वाचनार्थं धर्मार्थमनुयोगस्य-व्याख्यानस्य चिन्ता धर्म्मानुयोगस्य वा-धर्मव्याख्यानस्य चिन्ता धर्मानु-योगचिन्ता तस्यै अतिगच्छन्तः प्रविशन्तो निर्गच्छन्तश्चालयादिति गम्यते, 'ओलंडिंति'त्ति-उल्लङ्घयंति, 'पोलंडेन्ति'त्ति-प्रकर्षेण द्विस्त्रिर्वोल्लङ्घयंतीत्यर्थः, पादरजोलक्षणेन रेणुना पादरयाद्वा-तद्वेगात् रेणुना गुण्डितो यः स तथा तं कुर्वन्ति। 'एवं महालियं च णं रयणि'न्ति-इतिमहतीं च रजनीं यावदिति शेषः, मेघकुमारो 'नो संचाएति'त्ति-न शक्नोति क्षणमप्यक्षि निमीलयितुं निद्राकरणायेति, आध्यात्मिकः-आत्मविषयश्चिन्तितः-स्मरणरूपः, प्रार्थितः-अभिलाषात्मकः मनोगतः-मनस्येव वर्तते यो न बहिः स तथा, सङ्कल्पो-विकल्पः, समुत्पन्नः आगारमध्ये-गेहमध्ये वसामि-अधितिष्ठामि; पाठान्तरतो अगारमध्ये आवसामि, 'आढंति'-आद्रियन्ते, 'परिजानन्ति'-यदुतायमेवंविध इति, 'सक्कारयंति सत्कार-यन्ति च वस्त्रादिभिरभ्यर्चयन्तीत्यर्थः, 'सन्मानयन्ति'-उचितप्रतिपत्तिकरणेन, अर्थान्-जीवादीन्, हेतून्-तद्गमकानन्वय-व्यतिरेकलक्षणान्, प्रश्नान्-पर्यनुयोगान्, कारणानि-उपपत्तिमात्राणि, व्याकरणानि-परेण प्रश्ने कृते उत्तराणीत्यर्थः,

आख्यान्ति-ईषत् संलपन्ति-मुहुर्मुहुः; 'अदुत्तरं च णं'ति-अथवा परं 'एवं संपेहेइ'त्ति-संप्रेक्षते-पर्यालोचयति, 'अट्ट-दुहट्टवसट्टमाणसगए'त्ति-आर्त्तेन-ध्यानविशेषेण दुःखार्त्त-दुःखपीडितं वशार्त्तं-विकल्पवशमुपगतं यन्मानसं, तद्गतः-प्राप्तो यः स तथा, निरयप्रतिरूपिकां च-नरकसदृशीं दुःखसाधर्म्यात् तां रजनीं क्षपयति-गमयति।

तते णं मेहाति समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं, एवं वदासी-से णूणं तुमं मेहा!, राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि समणेहिं निग्गंथेहिं वायणाए पुच्छणाए जाव महालियं च णं राइं णो संचाएमि, मुहुत्तमवि अच्छिं निमिलावेत्तए; तते णं तुब्भं मेहा!, इमे एयारूवे अब्भत्थिए० समुपज्जित्था-जया णं अहं अगारमज्झे वसामि, तया णं मम समणा निग्गंथा आढायंति जाव परियाणंति; जप्पभिंतिं च णं मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयामि, तप्पभिंतिं च णं मम समणा णो आढायंति जाव नो परियाणंति, अदुत्तरं च णं समणा निग्गंथा राओ अप्पेगतिया वायणाए जाव पायरयरेणुगुंडियं करेंति; तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि आगारमज्झे आवसित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेसि २, अट्टदुहट्टवसट्टमाणसे जाव रयणीं खवेसि २, जेणामेव अहं तेणामेव हव्वमागए?, से णूणं मेहा!, एस अत्थे समट्ठे?, हंता अत्थे समट्ठे, एवं खलु मेहा!, तुमं इओ तच्चे अईए भवग्गहणे वेयड्ढगिरिपायमूले वणयरेहिं णिव्वत्तियणामधेज्जे, सेते संखदलउज्जलविमलनिम्मलदहिघणगोखीरफेणरयणियरप्पयासे, सत्तुस्सेहे, णवायए, दसपरिणाहे, सत्तंगपतिट्ठिए,

सोमे, समिए, सुरूवे; पुरतो उदग्गे समूसियसिरे सुहासणे, पिट्ठओ वराहे अतियाकुच्छी, अच्छिद्दकुच्छी, अलंबकुच्छी, पलंबलंबोदराहरकरे, धणुपट्ठागिइविसिट्ठपुट्ठे, अल्लीणपमाणजुत्तवट्टियापीवरगत्तावरे, अल्लीणपमाणजुत्तपुच्छे, पडिपुन्नसुचारुकुम्मचलणे, पंडुरसुविसुद्धनिद्धणिरुवहयविंसतिणहे, छद्दंते, सुमेरुप्पभे नामं हत्थिराया होत्था; तत्थ णं तुमं मेहा!, बहूहिं हत्थीहि य, हत्थीणियाहि य, लोट्टएहि य, लोट्टियाहि य, कलभेहि य, कलभियाहि य सद्धिं संपरिवुडे; हत्थिसहस्सणायए देसए पागट्ठी पट्ठवए जूहवई वंदपरियट्टए, अन्नेसिं च बहूणं एकल्लाणं हत्थिकलभाणं आहेवच्चं जाव विहरसि; तते णं तुमं मेहा!, णिच्चप्पमत्ते सइं पललिए, कंदप्परई, मोहणसीले, अवितण्हे, कामभोगतिसिए, बहूहिं हत्थीहि य; जाव संपरिवुडे, वेयड्ढगिरिपायमूले गिरीसु य, दरीसु य, कुहरेसु य, कंदरासु य, उज्झरेसु य, निज्झरेसु य, वियरएसु य, गड्डासु य, पल्लवेसु य, चिल्ललेसु य, कडयेसु य, कडयपल्ललेसु य, तडीसु य, वियडीसु य, टंकेसु य, कूडेसु य, सिहरेसु य, पब्भारेसु य, मंचेसु य, मालेसु य, काणणेसु य, वणेसु य, वणसंडेसु य, वणराईसु य, नदीसु य, नदीकच्छेसु य, जूहेसु य, संगमेसु य, वावीसु य, पोक्खरिणीसु य, दीहियासु य, गुंजालियासु य, सरेसु य, सरपंतियासु य, सरसरपंतियासु य, वणयरएहिं दिन्नवियारे बहूहिं हत्थीहि य जाव सद्धिं संपरिवुडे, बहुविहतरुपल्लवपउरपाणियतणे निब्भए, निरुव्विग्गे, सुहंसुहेणं विहरसि। तते णं तुमं मेहा!, अन्नया कयाई पाउसवरिसारत्तसरयहेमंतवसंतेसु

कमेण पंचसु उऊसु समतिक्कंतेसु गिम्हकालसमयंसि, जेट्ठामूलमासे; पायवघंससमुट्ठिएणं, सुक्कतणपत्तकय-वरमारुतसंजोगदीविएणं, महाभयंकरेणं, हुयवहेणं; वणदवजालासंपलित्तेसु वणंतेसु धूमाउलासु दिसासु महावायवेगेणं संघट्टिएसु, छिन्नजालेसु, आवयमाणेसु, पोल्लरुक्खेसु अंतो २ झियायमाणेसु, मयकुहित-विणिविट्ठकिमियकद्दमनदीवियरगजिण्णपाणीयंतेसु वणंतेसु, भिंगारकदीणकंदियरवेसु, खरफरुसअणिट्ठरिट्ठ-वाहितविदुमग्गेसु दुमेसु, तण्हावसमुक्कपक्खपयडियजिब्भतालुयअसंपुडिततुंडपक्खिसंघेसु, ससंतेसु गिम्हउम्हउण्हवायखरफरुसचंडमारुयसुक्कतणपत्तकयवरवाउलिभमंतदित्तसंभंतसावयाउलमिगतण्हाबद्ध-चिण्हपट्टेसु गिरिवरेसु, संवट्टिएसु, तत्थमियपसवसिरीसिवेसु अवदालियवयणविवरणिल्लालियग्गजीहे महंततुंबइव पुन्नकन्ने संकुचियथोरपीवरकरे ऊसियलंगूले पीणाइयविरसरडियसद्देणं फोडयंतेव अंबरतलं पायदद्दरएणं कंपयंतेव मेइणितलं विणिम्मुयमाणे य सीयारं सव्वतो समंता वल्लिवियाणाइं छिंदमाणे रुक्खसहस्साति तत्थ सुबहूणि णोल्लायंते विणट्ठरट्ठेव्व णरवरिंदे वायाइद्धेव्व पोए मंडलवाएव्व परिब्भमंते अभिक्खणं २, लिंडणियरं पमुंचमाणे २, बहूहिं हत्थीहि य जाव सद्धिं दिसोदिसिं विप्पलाइत्था; तत्थ णं तुमं मेहा !, जुन्ने जराजज्जरियदेहे आउरे झंझिए, पिवासिए, दुब्बले, किलंते, नट्ठसुइए, मूढदिसाए, सयातो जूहातो विप्पहूणे, वणदवजालापरद्धे उण्हेण तण्हाए य, छुहाए य, परब्भाहए समाणे भीए, तत्थे तसिए,

1 'मेयणि० ध ।

उविग्गे, संजातभए, सव्वतो समंता आधावमाणे, परिधावमाणे, एगं च णं महं सरं अप्पोदयं पंकबहुलं अतित्थेणं पाणियपाए उइन्नो; तत्थ णं तुमं मेहा !, तीरमतिगते पाणियं असंपत्ते, अंतरा चेव सेयंसि विसन्ने; तत्थ ण तुमं मेहा !, पाणियं पाइस्सामि त्तिकट्टु हत्थं पसारेसि, सेवि य ते हत्थे उदगं न पावति; तते णं तुमं मेहा !, पुणरवि कायं पच्चुद्धरिस्सामी तिकट्टु बलियतरायं पंकंसि खुत्ते। तते णं तुमे मेहा !, अन्नया कदाइ एगे चिरनिज्जूढे गयवरजुवाणए सगाओ जूहाओ करचरणदंतमुसलप्पहारेहिं विप्परद्धे समाणे, तं चेव महद्दहं पाणीयं पादेउं समोयरेति; तते णं से कलभए तुमं पासति २, तं पुव्ववेरं संमरति २, आसुरुत्ते रुट्ठे, कुविए, चंडिक्किए, मिसिमिसेमाणे; जेणेव तुमं तेणेव उवागच्छति २, तुमं तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं तिक्खुत्तो पिट्ठतो उच्छुभति, उच्छुभित्ता; पुव्ववेरं निज्जाएति २; हट्ठतुट्ठे पाणियं पियति २, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए; तते णं तव मेहा !, सरीरगंसि वेयणा पाउब्भवित्था, उज्जला विउला तिउला कक्खडा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरित्था। तते णं तुमं मेहा !, तं उज्जलं जाव दुरहियासं सत्तराइंदियं वेयणं वेदेसि, सवीसं वाससतं परमाउं पालइत्ता, अट्टवसट्टदुहट्टे कालमासे कालं किच्चा, इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे, दाहिणड्ढभरहे, गंगाए महाणदीए, दाहिणे कूले, विंझगिरिपायमूले, एगेणं मत्तवरगंधहत्थिणा एगाए गयवरकरेणूए कुच्छिंसि गयकलभए जणिते;

१ सुम० अ।

तते णं सा गयकलभिया णवण्हं मासाणं वसंतमासंमि तुमं पयाया, तते णं तुमं मेहा !, गब्भवासाओ विप्पमुक्के समाणे गयकलभए यावि होत्था, रत्तुप्पलरत्तसूमालए जासुमणारत्तपारिजत्तयलक्खारससरस-कुंकुमसंझब्भरागवन्ने इट्ठे णिगस्स जूहवइणो गणियायारकणेरुकोत्थहत्थी अणेगहत्थिसयसंपरिवुडे रम्मेसु गिरिकाणणेसु सुहंसुहेणं विहरसि । तते णं तुमं मेहा !, उम्मुक्कबालभावे, जोव्वणगमणुपत्ते, जूहवइणा कालधम्मुणा संजुत्तेणं तं जूहं सयमेव पडिवज्जसि; तते णं तुमं मेहा !,—वणयरेहिं निव्वत्तियनामधेज्जे जाव चउदंते मेरुप्पभे, हत्थिरयणे होत्था; तत्थ णं तुमं मेहा !, सत्तंगपइट्ठिए तहेव जाव पडिरूवे, तत्थ णं तुमं मेहा !, सत्तसइयस्स जूहस्स आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था; तते णं तुमं अन्नया कयाइ गिम्हकाल-समयंसि जेट्ठामूले वणदवजालापलित्तेसु वणंतेसु सुधूमाउलासु दिसासु जाव मंडलवाएव्व तते णं परि-ब्भमंते, भीते, तत्थे जाव संजायभए बहूहिं हत्थीहि य जाव कलभियाहि य सद्धिं संपरिवुडे, सव्वतो समंता दिसोदिसिं विप्पलाइत्था; तते णं तव मेहा !, तं वणदवं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—" कहिण्णं मन्ने मए अयमेयारूवे अग्गिसंभवे अणुभूयपुव्वे ?, " तवे मेहा !, लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं, अज्झवसाणेणं सोहणेणं, सुभेणं परिणामेणं, तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं, ईहापूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स सन्निपुव्वे जातिसरणे समुपज्जित्था; तते णं तुमं मेहा !, एयमट्ठं सम्मं

१ °व्वे ततेणं । २ तव अ ।

अभिसमेसि; एवं खलु मया अतीए दोचे भवग्गहणे इहेव जंबुद्दीवे २, भारहे वासे वियड्डगिरिपायमूले जाव तत्थ णं महया अयमेयारूवे अग्गिसंभवे समणुभूए; तते णं तुमं मेहा !, तस्सेव दिवसस्स पुव्वावरण्हकालसमयंसि नियएणं जूहेणं सद्धिं समन्नागए यावि होत्था; तते णं तुमं मेहा !, सत्तुस्सेहे जाव सन्निजाइस्सरणे चउद्दंते मेरुप्पभे नाम हत्थी होत्था, तते णं तुज्झं मेहा अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-" तं सेयं खलु मम इयाणिं गंगाए महानदीए दाहिणिल्लंसि कूलंसि विंझगिरिपायमूले दवग्गिसंताणकारणट्ठा सएणं जूहेणं महालयं मंडलं घाइत्तए, त्ति कट्टु, एवं संपेहेसि २; सुहंसुहेणं विहरसि; तते णं तुमं मेहा !, अन्नया कदाइं पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निवइयंसि गंगाए महानदीए अदूरसामंते बहूहिं हत्थीहिं जाव कलभियाहि य सत्तहि य हत्थिसएहिं संपरिवुडे एगं महं जोयणपरिमंडलं महतिमहालयं मंडलं घाएसि, जं तत्थ तणं वा, पत्तं वा, कट्ठं वा, कंटए वा, लया वा, वल्ली वा, खाणुं वा, रुक्खे वा, खुवे वा; तं सव्वं तिखुत्तो आहुणिय एगंते एडेसि २, पाएण उट्ठवेसि, हत्थेणं गेण्हसि[२त्ता] तते णं तुमं मेहा !, तस्सेव मंडलस्स अदूरसामंते गंगाए महानदीए दाहिणिल्ले कूले विंझगिरिपायमूले, गिरीसु य जाव विहरसि; तते णं मेहा !, अन्नया कदाइ मज्झिमए वरिसारत्तंसि महाविट्ठिकायंसि सन्निवइयंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि २, दोच्चंपि तच्चंपि मंडलं घाएसि २, एवं चरिमे वासारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि सन्निवइयमाणंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि २, तच्चं-

पि मंडलघायं करेसि, जं तत्थ तणं वा जाव सुहंसुहेणं विहरसि; अह मेहा !, तुमं गइंदभावंमि वट्टमाणो, कमेणं नलिणिवणविवहणगरे हेमंते, कुंदलोद्धउद्धततुसारपउरंमि अतिक्कंते, अहिणवे गिम्हसमयंसि पत्ते, वियट्टमाणेसु वणेसु वणकरेणुविविहदिण्णकयपंसुघाओ तुमं उउयकुसुमकयचामरकन्नपूरपरिमंडियाभिरामो मयवसविगसंतकडतडकिलिन्नगंधमदवारिणा सुरभिजणियगंधो करेणुपरिवारिओ उउसमत्तजणितसोभो काले दिणयरकरपयंडे परिसोसियतरुवरसिहरभीमतरदंसणिज्जे भिंगाररवंतभेरवरवे णाणाविहपत्तकट्ठतणकयवरुद्धतपइमारुयाइद्धनहयलदुमगणे वाउलियादारुणतरे तण्हावसदोसदूसियभमंतविविहसावयसमाउले भीमदरिसणिज्जे वट्टंते दारुणंमि गिम्हे; मारुतवसपसरपसरियवियंभिएणं, अब्भहियभीमभेरवरवप्पगारेणं; महुधारापडियसित्तउद्धायमाणधगधगधगंतसद्दुद्धुएणं, दित्ततरसफुलिंगेणं, धूममालाउलेणं, सावयसयंतकरणेणं, अब्भहियवणदवेणं; जालालोवियनिरुद्धधूमंधकारभीयो आयवालोयमहंततुंबइयपुन्नकन्नो आकुंचियथोरपीवरकरो भयवसभयंतदित्तनयणो वेगेण महामेहोव्व पवणोल्लियमहल्लरूवो जेणेव कओ ते पुरा दवग्गिभयभीयहियएणं अवगयतणप्पएसरुक्खो रुक्खोद्देसो दवग्गिसंताणकारणट्ठाए जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए, एक्को ताव एस गमो। तते णं तुमं मेहा !, अन्नया कदाइं कमेणं पंचसु ऊउसु समतिक्कंतेसु, गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले मासे, पायवसंघससमुट्ठिएणं जाव संवट्टिएसु, मियपसुपक्खिसिरीसिवे दिसो दिसिं विप्पलायमाणेसु, तेहिं बहूहिं हत्थीहि य सद्धिं; जेणेव

मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए; तत्थ णं अण्णे बहवे सीहा य, वग्घा य, विगया, दीविया, अच्छा य, तरच्छा य, पारासरा य, सरभा य, सियाला, विराला, सुणहा, कोला, ससा, कोकंतिया, चित्ता, चिल्लला, पुव्व-पविट्ठा अग्गिभयविहुया एगयाओ बिलधम्मेणं चिट्ठंति; तए णं तुमं मेहा !, जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि २ त्ता, तेहिं बहूहिं सीहेहिं जाव चिल्ललएहि य एगयओ बिलधम्मेणं चिट्ठसि; तते णं तुमं मेहा !, पाएणं गत्तं कंडुइस्सामीति कट्टु, पाए उक्खित्ते, तंसि च ण अंतरंसि अन्नेहिं बलवन्तेहिं सत्तेहिं पणोलिज्जमणे २, ससए अणुपविट्ठे। तते णं तुमं मेहा !, गायं कंडुइत्ता पुणरवि पायं पडिनिक्खमिस्सामि त्तिकट्टु तं ससयं अणुपविट्ठं पाससि २; पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपाए, जीवाणुकंपाए, सत्ताणुकंपयाए, सो पाए अंतरा चेव संधारिए, नो चेव णं णिक्खित्ते; तते णं तुमं मेहा !, ताए पाणाणुकंपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए, संसारे परित्तीकते, माणुस्साउए निबद्धे; तते णं से वणदवे अड्ढातिज्जातिं रातिंदियाइं तं वणं झामेइ २, निट्ठिए, उवरए उवसंते विज्झाए यावि होत्था; तते णं ते बहवे सीहा य जाव चिल्लला य, तं वणदवं निट्ठियं जाव विज्झायं पासंति २ त्ता, अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य, छुहाए य, परब्भाहया समाणा मंडलातो पडिनिक्खमंति २, सव्वतो समंता विप्पसरित्था, [तए णं ते बहवे हत्थि जाव छुहाए य परब्भाहया समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति २ दिसो दिसिं विप्पसरित्था;] तए णं तुमं मेहा !, जुन्ने जराजज्जरियदेहे, सिढिलवलितयापिणिद्धगत्ते, दुब्बले, किलंते, जुंजिए, पिवासिते, अत्थामे, अबले, अपरक्कमे,

अचंकमणो वा ठाणुखंडे वेगेण विप्पसरिस्सामि त्ति कट्टु पाए पसारेमाणे, विज्जुहते विव रयतगिरि-पब्भारे धरणितलंसि सव्वंगेहि य सन्निवइए; तते णं तव मेहा, सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूता, उज्जला जाव दाहवक्कंतिए यावि विहरसि; तते णं तुमं मेहा !, तं उज्जलं जाव दुरहियासं तिन्नि राइंदियाइं वेयणं वेएमाणे विहरित्ता एगं वाससतं परमाउं पालइत्ता, इहेव जंबुद्दीवे २, भारहे वासे रायगिहे नयरे; सेणितस्स रन्नो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि कुमारत्ताए पच्चायाए ॥ सूत्रम्-३२ ॥

'मेहाइ'त्ति-हे मेघ इति, एवमभिलाप्य महावीरस्तमवादीत् । 'से णूण'मित्यादि, अथ नूनं-निश्चितं मेघ !, अस्ति एषोऽर्थः ?, 'हंते' ति-कोमलामन्त्रणे, अस्त्येषोऽर्थ इति मेघेनोत्तरमदायि, वनचरकैः-शबरादिभिः, 'संखे'त्यादि, विशेषणं प्रागिव सत्तुस्सेहे-सप्तहस्तोच्छ्रितः, नवायतो-नवहस्तायतः, एवं दशहस्तप्रमाणः मध्यभागे सप्ताङ्गानि-पादकर-पुच्छलिङ्गलक्षणानि प्रतिष्ठितानि भूमौ यस्य स तथा समः-अविषमगात्रः, सुसंस्थितो-विशिष्टसंस्थानः; पाठान्तरेण सौम्यसम्मितः । तत्र सोम्यः-अरौद्राकारो नीरोगो वा; सम्मितः-प्रमाणोपेताङ्गः । पुरतः-अग्रतः उदग्रः-उच्चः समुच्छ्रित-शिराः शुभानि सुखानि वा आसनानि-स्कन्धादीनि यस्य स तथा, पृष्ठतः-पश्चाद्भागे वराह इव-शूकर इव वराहः अवनत-त्वात्, अजिकाया इवोन्नतत्वात् कुक्षी यस्य स तथा, अच्छिद्रकुक्षी मांसलत्वात् अलम्बकुक्षिरपलक्षणवियोगात् पलम्बलंबो-यराहरकरेत्ति-प्रलम्बं च लम्बौ च क्रमेणोदरं च-जठरमधरकरौ च-ओष्ठहस्तौ यस्य स तथा; पाठान्तरे [प्र]लम्बौ लम्बो-

१ ०सयं, अ ।

दरस्येव–गणपतेरिव अधरकरो यस्य स तथा धनुःपृष्ठाकृति–आरोपितज्यधनुराकारं विशिष्टं–प्रधानं पृष्ठं यस्य स तथा, आलीनानि–सुश्लिष्टानि प्रमाणयुक्तानि, वर्त्तितानि–वृत्तानि, पीवराणि–उपचितानि, गात्राणि–अङ्गानि, अपराणि–वर्णितगात्रेभ्योऽन्यानि अपरभागगतानि वा यस्य स तथा, अथवा आलीनादिविशेषणं गात्रं–उरः अपरश्च–पश्चाद्भागो यस्य स तथा, वाचनान्तरे विशेषणद्वयमिदं–अभ्युद्गता–उन्नता मुकुलमल्लिकेव–कोरकावस्थविचकिलकुसुमवद्धवलाश्च दन्ता यस्य सोऽभ्युद्गतमुकुलमल्लिकाधवलदन्तः, आनामितं यच्चापं–धनुस्तस्येव ललितं–विलासो यस्याः सा, तथा च संवेल्लिता च–संवेल्लन्ती सङ्कोचिता वा अग्रसुण्डा–सुण्डाग्रं यस्य स आनामितचापललितसंवेल्लिताग्रसुण्डः, आलीनप्रमाणयुक्तपुच्छः, प्रतिपूर्णाः सुचारवः कूर्म्मवच्चरणा यस्य स तथा, पाण्डुराः–शुक्लाः, सुविशुद्धाः–निर्म्मलाः, स्निग्धाः–कान्ता निरुपहताः–स्फोटादिदोषरहिता विंशतिर्नखा यस्य स तथा, तत्र त्वं हे मेघ !, बहुभिर्हस्त्यादिभिः सार्द्धं संपरिवृतः आधिपत्यं कुर्वन् विहरसीति सम्बन्धः । तत्र हस्तिनः–परिपूर्णप्रमाणाः लोट्टकाः–कुमारकावस्थाः, कलभाः–बालकावस्थाः, हस्तिसहस्रस्य नायकः–प्रधानः, न्यायको वा–देशको हितमार्गादेः प्राकर्षी–प्राकर्षको अग्रगामी, प्रस्थापको–विविधकार्येषु प्रवर्तको, यूथपतिः–तत्स्वामी, वृन्दपरिवर्द्धकः–तद्वृद्धिकारकः, 'सइं पललिए'त्ति–सदा प्रललितः–प्रक्रीडितः, कन्दर्परतिः–केलिप्रियः, मोहनशीलो–निधुवनप्रियः, अवितृप्तो–मोहने एवानुपरतवाञ्छः, तथा सामान्येन कामभोगेऽतृपितः गिरिषु च–पर्वतेषु, दरीषु च–कन्दरविशेषेषु, कुहरेषु च–पर्वतान्तरालेषु, कन्दरासु च–गुहासु, उज्झरेषु च–उदकस्य प्रपातेषु, निर्झरेषु च–स्यन्दनेषु, विदरेषु च–

१ °धद्धवला° ख ।

क्षुद्रनद्याकारेषु, नदीपुलिनस्यन्दजलगतिरूपेषु वा गर्तासु च-प्रतीतासु, पल्वलेषु-च प्रह्लादनशीलेषु, चिल्लेषु च-चिक्खिल्लमिश्रेषु, कटकेषु च-पर्वततटेषु, कटकपल्वलेषु-पर्वततटव्यस्थितजलाशयविशेषेषु, तटीषु च-नद्यादीनां तटेषु, वितटीषु च-तास्वेव विरूपासु; अथवा-वियडिशब्देन लोके अटवी उच्यते, टङ्केषु च-एकदिशि छिन्नेषु पर्वतेषु, कुटकेषु च अधोविस्तीर्णेषूपरि संकीर्णेषु वृत्तपर्वतेषु, हस्त्यादिबन्धनस्थानेषु वा; शिखरेषु च-पर्वतोपरिवर्त्तिकूटेषु, प्राग्भारेषु च-ईषदवनतपर्वतभागेषु, मञ्चेषु च-स्तम्भन्यस्तफलकमयेषु नद्यादिलङ्घनार्थेषु, मालेषु च-श्वापदादिरक्षार्थेषु तद्विशेषेष्वेव मञ्चमालकाकारेषु, पर्वतदेशेष्वित्यन्ये; काननेषु च-स्त्रीपक्षस्य पुरुषपक्षस्य चैकतरस्य भोग्येषु वनविशेषेषु, अथवा-यत्परतः पर्वतोऽटवी वा भवति तानि काननानि जीर्णवृक्षाणि वा तेषु वनेषु च-एकजातीयवृक्षेषु, वनखण्डेषु च-अनेकजातीयवृक्षेषु वनराजीषु च-एकानेकजातीयवृक्षाणां पङ्क्तिषु, नदीषु च-प्रतीतासु, नदीकक्षेषु च-तद्गहनेषु, यूथेषु च वानरादियूथाश्रयेषु, सङ्गमेषु च-नदीमीलकेषु, वापीषु च-चतुरस्रासु, पुष्करिणीषु च-वर्तुलासु, पुष्करवतीषु वा; दीर्घिकासु च-ऋजुसारिणीषु, गुंजालिकासु च-वक्रसारिणीषु, सरस्सु च-जलाशयविशेषेषु, सरःपङ्क्तिकासु च-सरसां पद्धतिषु, सरःसरःपङ्क्तिकासु च-यासु सरःपङ्क्तिषु एकस्मात्सरसोऽन्यस्मिन्नन्यस्मादन्यत्रैवं सञ्चारकपाटकेनोदकं संचरति तासु बहुविधास्तरुपल्लवाः प्रचुराणि पानीयतृणानि च यस्य भोग्यतया स तथा, निर्भयः शूरत्वात्, निरुद्विग्नः सदैव अनुकूलविषयप्राप्तेः सुखंसुखेन-अकृच्छ्रेण। 'पाउसे'त्यादि, प्रावृट्-आषाढश्रावणौ, वर्षारात्रो-भाद्रपदाश्वयुजौ, शरत्-कार्त्तिकमार्गशीर्षौ, हेमन्तः-पौषमाघौ, वसन्तः-फाल्गुनचैत्रौ, एतेषु पञ्चसु ऋतुषु समतिक्रान्तेषु; 'ज्येष्ठामूलमासे'त्ति-ज्येष्ठमासे पादप्रघर्षणसमुत्थितेन शुष्कतृणपत्रलक्षणं कचवरं मारुतश्च तयोः संयोगेन दीप्तो

यः स तथा तेन, 'महाभयंकरेण'-अतिभयकारिणा, 'हुतवहेन'-अग्निना यो जनित इति हृदयस्थं, 'वनदवो'-वनाग्निः, तस्य ज्वालाभिः संप्रदीप्ता ये ते तथा, तेषु वनान्तेषु सत्सु; अथवा-'पायवघंससमुट्ठिएण'मित्यादिषु णंकाराणां वाक्यालङ्कारार्थत्वात्सप्तम्येकवचनान्तता व्याख्येया, तथा-धूमाकुलासु दिक्षु, तथा महावायुवेगेन संघट्टितेषु छिन्नज्वालेषु-त्रुटितज्वालासमूहेषु आपतत्सु-सर्वतः संपतत्सु, तथा-'पोल्लरुक्खेसु'त्ति-शुषिरवृक्षेषु अन्तरन्तः-मध्ये मध्ये ध्मायमानेषु-दह्यमानेषु, तथा-मृतैर्मृगादिभिः कुथिताः-कोथमुपनीता, विनष्टाः-विगतस्वभावाः, 'किमिणकद्दम'त्ति-कृमिवत्कर्दमाः नदीनां निर्झरकाणां च क्षीणपानीयाः अन्ताः-पर्यन्ता येषु, क्वचित्-'किमवत्ति' पाठः, तत्र मृतैः कुथिताः विनष्टकृमिकाः कर्दमाः नदीविदरकलक्षणाः क्षीणा जलक्षयात्पानीयान्ता-जलाशया येषु ते तथा, तेषु वनान्तेषु-वनविभागेषु सत्सु; तथा-भृङ्गारकाणां-पक्षिविशेषाणां दीनः क्रन्दितरवो येषु ते तथा तेषु वनान्तेष्विति वर्तते, तथा खरपरुषं-अतिकर्कशमनिष्टं रिष्टानां-काकानां व्याहृतं-शब्दितं येषु ते तथा, विद्रुमाणीव-प्रवालानीव लोहितानि अग्नियोगात्पल्लवयोगाद्वा अग्राणि येषां ते विद्रुमाग्रास्तवः पदद्वयस्य २ कर्म्मधारयः, ततस्तेषु द्रुमाग्रेषु वृक्षोत्तमेषु सत्सु; वाचनान्तरे-खरपरुषरिष्टव्याहृतानि विविधानि द्रुमाग्राणि येषु ते खरपरुषरिष्टव्याहृतविविधद्रुमाग्रास्तेषु वनान्तेष्विति, तथा-तृष्णावशेन मुक्तपक्षाः-श्लथीकृतपक्षाः प्रकटितजिह्वाताल्लुकाः असंपुटिततुण्डाश्च-असंवृतमुखाः ये पक्षिसङ्घास्ते तथा तेषु 'ससंतेसु'त्ति-श्वसत्सु-श्वासं मुञ्चत्सु, तथा ग्रीष्मस्य ऊष्मा च-उष्णता उष्णपातश्च-रविकरसन्तापः खरपरुषचण्डमारुतश्च-अतिकर्कशप्रबलवातः शुष्कतृणपत्रकचवरप्रधानवातोली चेति द्वन्द्वः ताभिर्भ्रमन्तः-अनवस्थिता दृप्ताः संभ्रांता ये श्वापदाः-सिंहादयः तैराकुला ये ते तथा, मृगतृष्णा-मरीचिका

११

तल्लक्षणो बद्धः चिह्नपट्टो येषु ते तथा, ततः पदद्वयस्य कर्म्मधारयोऽतस्तेषु सत्सु, गिरिवरेषु–पर्वतराजेषु, तथा–संवर्तकितेषु–संजातसंवर्तकेषु त्रस्ता–भीता ये मृगाश्च प्रसयाश्च–आटव्यचतुष्पदविशेषाः, सरीसृपाश्च–गोधादयस्तेषु, ततश्चासौ हस्ती अवदारितवदनविवरो निर्लालिताग्रजिह्वश्च य इति कर्म्मधारयः; 'महंततुंबइयपुण्णकण्णे'–महान्तौ तुम्बकितौ भयाद्दरघट्टतुम्बाकारौ कृतौ स्तब्धावित्यर्थः, पुण्यौ–व्याकुलतया शब्दग्रहणे प्रवणौ कर्णौ यस्य स तथा, संकुचितः 'थोर'त्ति–स्थूलः, पीवरो–महान् करो यस्य स तथा उच्छ्रितलाङ्गुलः; 'पीणाइय'त्ति–पीनाया–मह्वा तया निर्वृत्तं पैनायिकं, तद्विधं यद्विरसं रटितं तल्लक्षणेन शब्देन स्फोटयन्निवाम्बरतलं पाददर्दरेण–पादघातेन कम्पयन्निव 'मेदिनीतल'मित्यादि, कण्ठ्यं; 'दिसो दिसिं'ति–दिक्षु चापदिक्षु च विपलायितवान्, आतुरो–व्याकुलः 'जुंजिए'त्ति–बुभुक्षितः, दुर्बलः–क्लान्तो ग्लानः, नष्टश्रुतिको–मूढदिकः, 'परब्भाहए'त्ति–पराभ्याहतो वाधितो भीतो–जातभयः, त्रस्तो–जातक्षोभः; 'तसिए'त्ति–शुष्कआनन्दरसशोषात्, उद्विग्नः–कथमितोऽनर्थान्मोक्ष्येऽहमित्यध्यवसायवान्, किमुक्तं भवति ?–संजातभयः–सर्वात्मनोत्पन्नभयः आधावमान–ईषत् परिधावमानः–समन्तात्, 'पाणियपाए'त्ति–पानं पायः पानीयस्य पायः पानीयपायस्तस्मिन्, जलपानायेत्यर्थः; 'सेयंसि विसन्ने'त्ति पङ्के निमग्नः, कायं प्रत्युद्धरिष्यामीतिकृत्वा कायमुद्धर्तुमारब्ध इति शेषः, 'बलियतरायं'-ति–गाढतरं । 'तए ण'मित्यादि, इहैवमक्षरघटना–त्वया हे मेघ !, एको गजवरयुवा करचरणदन्तमुशलप्रहारैर्विप्रालब्धो विनाशयितुमिति गम्यते, विपराद्धो वा–हतः सन् अन्यदा कदाचित् स्वकाद्यूथात् चिरं, 'निज्जूढे'ति–निर्धाटितो यः स पानीयपानाय तमेव महाह्रदं समवतरति स्मेति, 'आसुरुत्ते'त्ति–स्फुरितकोपलिङ्गः रुष्टः–उदितक्रोधः कुपितः–प्रवृद्धकोपोदयः

चाण्डिक्यितः-संजातचाण्डिक्यः प्रकटितरौद्ररूप इत्यर्थः, 'मिसिमिसीमाणे'त्ति-क्रोधाग्निना देदीप्यमान इव, एकार्थिका वैते शब्दाः कोपप्रकर्षप्रतिपादनार्थं नानादेशजविनेयानुग्रहार्थं वा, 'उच्छुहइ'-अवष्टभ्नाति विध्यतीत्यर्थः, 'निज्जाए'त्ति-निर्यातयति-समापयति, वेदना किंविधा?,-उज्ज्वला विपक्षलेशेनापि अकलङ्किता, त्रिपुला शरीरव्यापकत्वात्, 'कचित्ति-तुले'त्ति पाठस्तत्र त्रीनपि मनोवाक्कायलक्षणानर्थांस्तुलयति-जयति, तुलारूढानिव वा करोतीति त्रितुला; कर्कशा-कर्कशद्रव्यमिवानिष्टेत्यर्थः, प्रगाढा-प्रकर्षवती, चण्डा-रौद्रा, दुःखा-दुःखरूपा न सुखेत्यर्थः किमुक्तं भवति?-दुरधिसह्या, 'दाहवक्कंतीए'त्ति-दाहो व्युत्क्रान्त-उत्पन्नो यस्य स तथा स एव दाहव्युत्क्रान्तिकः 'अट्टवसट्टदुहट्टे'त्ति-आर्त्तवशं-आर्त्तध्यानवशतामृतो-गतो दुःखार्त्तश्च यः स तथा, 'कणेरुए'त्ति-करेणुकायाः, 'रत्तुपल्ले'त्यादि,-रक्तोत्पलवद्रक्तः सुकुमारकश्च यः स तथा, जपासुमनश्च आरक्तपारिजातकश्च वृक्षविशेषौ लाक्षारसश्च सरसकुङ्कुमं च सन्ध्याभ्ररागश्चेति द्वन्द्वः, एतेषामिव वर्णो यस्य स तथा, 'गणियार'त्ति-गणिकाकाराः-समकायाः करेणवस्तासां, 'कोत्थं'ति-उदरदेशस्तत्र हस्तो यस्य कामक्रीडापरायणत्वात् स तथा, इह चेत्समासान्तो द्रष्टव्यः। 'कालधम्मुणा'[1]त्ति-कालः-मरणं स एव धर्मो-जीवपर्यायः कालधर्मः 'निव्वत्तियनामधेज्जो'-इह यावत्करणेन यद्यपि समग्रः पूर्वोक्तो हस्तिवर्णकः सूचितस्तथापि श्वेततावर्णकवर्ज्जो द्रष्टव्यः, इह रक्तस्य तस्य वर्णितत्वादत एवाग्रे; 'सत्तुस्सेहे' इत्यादिकमतिदेशं वक्ष्यति, यत् पुनरिह दृश्यते; 'सत्तंगे'त्यादि-तद्वाचनान्तरं, वर्णकापेक्षं तु लिखितमिति। 'लेसाही'त्यादि, तेजोलेश्याद्यन्यतरलेश्यां प्राप्तस्येत्यर्थः, अध्यवसानं-मानसी

---

१ ०मुणा. अ।

परिणतिः, परिणामो—जीवपरिणतिः, जातिस्मरणावरणीयानि कर्म्माणि—मतिज्ञानावरणीयभेदाः क्षयोपशमः—उदितानां क्षयोऽनुदितानां विष्कम्भितोदयत्वं, ईहा—सदर्थाभिमुखो वितर्क इत्यादि प्राग्वत्, संज्ञिनः पूर्वजातिः—प्राक्तनं जन्म तस्या यत् स्मरणं तत्संज्ञिपूर्वजातिस्मरणं व्यस्तनिर्देशे तु संज्ञी पूर्वो भवो यत्र तत्संज्ञिपूर्वं, संज्ञीति च विशेषणं स्वरूपज्ञापनार्थं, न ह्यसंज्ञिनो जातिविषयं स्मरणमुत्पद्यत इति, 'अभिसमेसि'त्ति—अवबुध्यसे प्रत्यपराह्णः—अपराह्णः, 'तए ण'मित्यादिको ग्रन्थो जातिस्मरणविशेषणमाश्रित्य वर्णितः, 'दवग्गिसंजायकारणट्ठ'त्ति—दवाग्नेः संजातस्य कारणस्य—भयहेतोर्निवृत्तये इदं दवाग्निसंजातकारणार्थं, अर्थशब्दस्य निवृत्त्यर्थत्वात्; क्वचित्—'दवग्गिसंताणकारणट्ठ'त्ति दृश्यते, तत्र दवाग्निसन्त्राणकारणायेति व्याख्येयं; 'मंडलं घाएसि'—वृक्षाद्युपघातेन तत्करोतीत्यर्थः, 'खुवेतयति व'त्ति—क्षुवो ह्रस्वशिखः शाखी, 'आहुणिय'त्ति—२ प्रकम्प्य चलयित्वेत्यर्थः, 'उद्धवेसि'त्ति—उद्धरसि, 'एडेसि'त्ति—छर्दयसि, 'दोच्चंपि'—द्वितीयं तस्यैव मण्डलस्य घातं, एवं तृतीयमिति; नलिनीवनविवधनकरे, इह विवधनं—विनाशः; 'हेमंते'त्ति—शीतकाले कुन्दाः—पुष्पजातीयविशेषाः, लोध्राश्च—वृक्षविशेषास्ते च शीतकाले पुष्यन्त्यतस्ते उद्धताः—पुष्पसमृद्ध्या उद्धुरा इव यत्र स तथा, तथा—तुषारं हिमं, तत् प्रचुरं यत्र स तथा, ततः कर्मधारयः ततस्तत्र; ग्रीष्मे—उष्णकाले विवर्तमानो—विचरन् वनेषु वनकरेणूनां ताभिर्वा विविधा 'दिन्न'त्ति—दत्ताः कजप्रसवैः—पद्मकुसुमैर्घाताः—प्रहारा येषु यस्य वा स तथा, 'वणरेणुविविहदिन्नकयपंसुघाओ'त्ति—पाठान्तरे तु वनरेणवो—वनपांशवो विविधं—अनेकधा, 'दिन्न'त्ति—दत्ता दिक्ष्वात्मनि च क्रीडापरतया क्षिप्ता येन स तथा, तथा क्रीडयैव कृताः पांशुघाता येन स तथा, ततः पदद्वयस्य कर्म्मधारयः, 'तुमं'ति त्वं, तथा कुसुमैः कृतानि यानि चाम-

१—उत्क्षिप्ताध्य० श्रीमेघकुमारपूर्वभववर्णनम् ।

रवत्कर्णपूराणि तैः परिमण्डितोऽभिरामश्च यः स तथा, क्वचित्–'उउयकुसुम'त्ति पाठः, तत्र ऋतुजकुसुमैरिति व्याख्येयं, तथा मदवशेन विकसन्ति कटतटानि–गण्डतटानि, क्लिन्नानि–आर्द्रीकृतानि येन तत्तथा, तच्च तद्गन्धमदवारि च तेन सुरभिजनितगन्धः–मनोज्ञकृतगन्धः करेणुपरिवृतः ऋतुभिः समस्ता समाप्ता वा–परिपूर्णा जनिता शोभा यस्य स तथा, काले किंभूते ?,–दिनकरः करप्रचण्डो यत्र स तथा तत्र, परिशोषिताः–नीरसीकृताः तरुवराः श्रीधराः–शोभावन्तो येन परिशोषिता वा तरुवराणां श्रीः–संपद्धरायां–भुवि वा येन, पाठान्तरे–परिशोषितानि तरुवरशिखराणि येन स तथा स चासौ भीमतरदर्शनीयश्चेति, तत्र भृङ्गारगणां–पक्षिविशेषाणां रुवतां–रवं कुर्वतां भैरवो–भीमो रवः–शब्दो यस्मिन् स तथा तत्र, नानाविधानि पत्रकाष्ठतृणकचवराण्युद्धतानि–उत्पाटितानि येन स तथा स चासौ प्रतिमारुतश्च–प्रतिकूलवायुस्तेन आदिग्धं–व्याप्तं नभस्तलं–व्योम 'पडुममाणे'त्ति–पटुत्वादुपतापकारि यस्मिन् पाठान्तरे–उक्तविशेषणेन प्रतिमारुतेनादिग्धं नभस्तलं द्रुमगणश्च यस्मिन् स तथा, तत्र वातोल्या–वात्यया दारुणतरो यः स तथा तत्र, तृष्णावशेन ये दोषा–वेदनादयस्तैर्दोषिता–जातदोषा दूषिता वा भ्रमन्तो विविधा ये श्वापदास्तैः समाकुलो यः स तथा तत्र; भीमं यथा भवत्येवं दृश्यते यः स भीमदर्शनीयः तत्र वर्तमाने दारुणे ग्रीष्मे, केनेत्याह–मारुतवशेन यः प्रसरः–प्रसरणं तेन प्रसृतो विजृम्भितश्च–प्रचलीभूतो यः स तथा तेन, वनदवेनेति योगः, अभ्यधिकं यथा भवत्येवं भीमभैरवः–अतिभीष्मो रवप्रकारो यस्य स तथा तेन, मधुधाराया यत्पतितं–पतनं तेन सिक्त उद्धाव्यमानः–प्रवर्द्धमानो धगधगायमानो–जाज्वल्यमानः स्पन्दोद्धतश्च–दह्यमानदारुस्पन्दप्रबलः, पाठान्तरे–शब्दोद्धतश्च यः स तथा, तेन दीप्ततरो यः सस्फुलिङ्गश्च तेन, धूममालाकुलेनेति प्रतीतं, श्वापदशतान्तकरणेन–तद्विनाशकारिणा ज्वालाभिरालोपितः–

कृताच्छादनो निरुद्धश्च-विवक्षितदिग्गमनेन निवारितो धूमजनितान्धकाराद्भीतश्च यः स तथा, आत्मानमेव पालयतीत्या-त्मपालः, पाठान्तरेण-'आयवालोय'त्ति-तत्र आतपालोकेन-हुतवहतापदर्शनेन महान्तौ तुम्बकितौ स्तब्धतया अरघट्ट-तुम्बाकृती ससंभ्रमौ कर्णौ यस्य स तथा, आकुञ्चितस्थूलपीवरकरः भयवशेन भजन्ती दिश इति गम्यते दीप्ते नयने यस्य स तथा । 'आकुंचियथोरपीवरकराभोयसव्वभयंतदित्तनयणो'त्ति-पाठान्तरं-तत्राभोगो-विस्तरः, सर्वा दिशो भजन्ती दीप्ते नयने यस्येति; वेगेन महामेघ इव वातेनोदितमहारूपः, किमित्याह-येन यस्यां दिशि कृतो-विहितस्ते-त्वया पुरा-पूर्वं दवाग्निभयभीतहृदयेन अपगतानि तृणानि तेषामेव च प्रदेशा-मूलादयोऽवयवा वृक्षाश्च यस्मात्सोऽपगततृणप्रदेशवृक्षः, कोऽसौ ?-वृक्षोद्देशः-वृक्षप्रधानो भूमेरेकदेशो रूक्षोद्देशो वा किमर्थं ?-दवाग्निसन्त्राणकारणार्थं-दवाग्निसन्त्राणहेतुरिदं भवत्वित्येतदर्थं, तथा येनैव-यस्यामेव दिशि मण्डलं तेनैव-तत्रैव प्रधारितवान् गमनाय, कथं बहुभिर्हस्त्यादिभिः सार्द्धमित्ययमेको गमः । यत् पुनः 'तए णं तुमं मेहा !, अण्णया कयाइं कमेण पंचसु' इत्यादि दृश्यते तद्गमान्तरं मन्यामहे, तच्च एवं द्रष्टव्यं ' दुच्चंपि मंडलघायं करेसि जाव सुहंसुहेणं विहरसि, तए णं तुमं मेहा !, अन्नया कयाइ पंचसु उऊसु अइक्कंतेसु' इत्यादि, यावत् 'जेणेव मण्डले तेणेव पहारेत्थ गमणाए'त्ति, सिंहादयः प्रतीताः नवरं वृका-वरुक्षाः, द्वीपिकाः-चित्रकाः, अच्छत्ति-रिक्षाः, तरच्छा-लोकप्रसिद्धाः, परासराः-शरभाः शृगालबिरालशुनकाः प्रतीताः, कोलाः-शूकराः, शशकाः-प्रतीताः, कोकन्तिका-लोमटकाः, चित्राः, चिल्ललगा-आरण्या जीवविशेषाः; एतेषां मध्येऽधिकृतवाचनायां कानिचिन्न दृश्यन्ते, अग्निभयविद्रुताः-अग्निभयाभिभूता 'एगओ'त्ति-एकतो बिलधर्मेण-बिलाचारेण

यथैकत्र बिले यावन्तो मर्कोटकादयः संमान्ति तावन्तस्तिष्ठन्ति एवं तेऽपीति, ततस्त्वया हे मेघ !, गात्रेण गात्रं कण्डूयिष्ये इतिकृत्वा-इतिहेतोः पाद उत्क्षिप्तः-उत्पाटितः, तंसि च णं अंतरंसि-तस्मिंश्चान्तरे पादाक्रान्तपूर्वे अन्तराले इत्यर्थः। 'पादं निक्खेविस्सामि त्तिकट्टु'-इह भुवं निरूपयन्निति शेषः, 'प्राणानुकम्पये'त्यादि पदचतुष्टयमेकार्थं दयाप्रकर्षप्रतिपादनार्थं, 'निट्ठिए'त्ति-निष्ठां गतः, कृतस्वकार्यो जात इत्यर्थः; उपरतोऽनालिङ्गितेन्धनाद् व्यावृत्तः उपशान्तो-ज्वालोपशमात् विध्यातोऽङ्गारमुर्मुराद्यभावात्, 'वापी'ति-समुच्चये, 'जीर्ण' इत्यादि, शिथिला वलिप्रधाना या त्वक् तया पिनद्धं गात्रं शरीरं यस्य स तथा, अस्थामा-शारीरबलविकलत्वात्, अबलः-अवष्टम्भवर्जितत्वात्, अपराक्रमो-निष्पादितस्वफलाभिमानविशेषरहितत्वात्; अचंक्रमणतो वा 'ठाणुखंडे'त्ति-ऊर्द्धस्थानेन स्तम्भितगात्र इत्यर्थः, 'रययागिरिपब्भारे'त्ति-इह प्राग्-भार-ईषदवनतं खण्डं, उपमा चानेनास्य महत्त्वैव, न वर्णतो, रक्तत्वात्तस्य, वाचनान्तरे तु सित एवासाविति ॥३२॥

ततेणं तुमं मेहा !, आणुपुव्वेणं गब्भवासाओ निक्खंते समाणे उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुपत्ते; मम अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए; तं जति जाव तुमे मेहा !, तिरिक्खजोणियभावमुवगएणं अपडिलद्धसंमत्तरयणलंभेणं से पाणे पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा चेव संधारिते नो चेव णं निक्खित्ते, किमंग पुण तुमं मेहा !, इयाणिं विपुलकुलसमुब्भवेणं निरुवहयसरीरदंतलद्धपंचिंदिएणं एवं उट्ठाणबलवीरियपुरिसगारपरक्कमसंजुत्तेणं मम अंतिए मुंडे भवित्ता आगारातो अणगारियं पव्वतिए समाणे समणाणं निग्गंथाणं राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए जाव धम्माणुओगचिंताए य

उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अतिगच्छमाणाण य निग्गच्छमाणाण य हत्थसंघट्टणाणि य पायसंघट्टणाणि य जाव रयरेणुगुंडणाणि य नो सम्मं सहसि, खमसि, तितिक्खसि; अहियासेसि। तते णं तस्स मेहस्स अणगारस्स समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए एतमट्ठं सोचा, णिसम्म, सुभेहिं परिणामेहिं, पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं, लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं; तयावरणिज्जाणं कम्माणं, खओवसमेणं ईहावूहमग्गणगवेसणं करेमाणस्स सन्निपुव्वे जातीसरणे समुप्पन्ने, एतमट्ठं सम्मं अभिसमेति। तते णं से मेहे कुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वजातीसंभरणे दुगुणाणीयसंवेगे आणंदयंसुपुन्नमुहे हरिसवसेणं धाराहयकदंबकं पिव समुस्ससितरोमकूवे समणं भगवं महावीरं वंदति, नमंसति २ त्ता; एवं वदासीअज्जप्पभिती णं भंते !, मम दो अच्छीणि मोत्तूणं अवसेसे काए समणाणं णिग्गंथाणं निसट्ठे त्तिकट्टु पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदति, नमंसति, २; एवं वदासी–इच्छामि णं भंते !, इयाणिं सयमेव दोचंपि सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं जाव सयमेव आयारगोयरं जायामायावत्तियं धम्ममातिक्खह। तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ जाव जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ, एवं देवाणुप्पिया !, गन्तव्वं एवं चिट्ठियव्वं, एवं णिसीयव्वं, एवं तुयट्टियव्वं, एवं भुंजियव्वं, भासियव्वं, उट्ठाय २, पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमितव्वं; तते णं से मेहे समणस्स

१ °हापोहम० अ।

भगवतो महावीरस्स अयमेयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं पडिच्छति २, तह चिट्ठति जाव संजमेणं संजमति; तते णं से मेहे अणगारे जाए ईरियासमिए अणगारवन्नओ भणियव्वो, तते णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए एतारूवाणं थेराणं सामातियमातियाणि एक्कारस अंगातिं अहिज्जति २ त्ता, बहूहिं चउत्थछट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरति; तते णं स० भ० महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेतियाओ पडिनिक्खमति २, बहिया जणवयविहारं विहरति ॥ सूत्रम्-३३ ॥

'अपडिलद्धसंमत्तरयणलंभेणं'ति-अप्रतिलब्धः-असंजातः, 'विपुलकुलसमुब्भवेण'मित्यादौ, णंकारा-वाक्यालङ्कारे, निरुपहतं शरीरं यस्य स तथा दान्तानि-उपशमं नीतानि प्राक्काले लब्धानि सन्ति पञ्चेन्द्रियाणि येन स तथा, ततः कर्म्मधारयः; पाठान्तरे-निरुपहतशरीरप्राप्तश्चासौ लब्धपञ्चेन्द्रियश्चेति समासः । 'एव'मित्युपलभ्यमानरूपैरुत्थानादिभिः संयुक्तो यः स तथा, तत्र उत्थानं-चेष्टाविशेषः बलं-शारीरं वीर्यं-जीवप्रभवं पुरुषकारः-अभिमानविशेषः पराक्रमः-स एव साधितफल इति । नो सम्यक् सहसे भयाभावेन क्षमसे क्षोभाभावेन तितिक्षसे दैन्यानवलम्बनेन अध्यासयसि अविचलितकायतया, एकार्थिकानि वैतानि पदानि तस्य मेघस्यानगारस्य जातिस्मरणं समुत्पन्नमिति सम्बन्धः, समुत्पन्ने च तत्र किमित्याह-एतमर्थं-पूर्वोक्तं वस्तु सम्यक् 'अभिसमेइ'त्ति-अभिसमेति-अवगच्छतीत्यर्थः । 'संभारियपुव्वजाईसरणे'त्ति-संस्मारितं पूर्व-

---

१ क्रोधाभा० ख ।

जात्योः—प्राक्तनजन्मनोः सम्बन्धि सरणं—गमनं पूर्वजातिसरणं यस्य स तथा, पाठान्तरे—संस्मारितपूर्वभवः, तथा प्राक्कालापेक्षया द्विगुण आनीतः संवेगो यस्य स तथा, आनन्दाश्रुभिः पूर्णं भृतं प्लुतमित्यर्थो मुखं यस्य स तथा 'हरिसवस'त्ति—अनेन 'हरिसवसविसप्पमाणहियए'त्ति द्रष्टव्यं, धाराहतं यत्कदम्बकं—कदम्बपुष्पं तद्वत् समुच्छ्रितरोमकूपो रोमाञ्चित इत्यर्थः; 'निसट्ठे'त्ति—निःसृष्टो दत्तः। अनगारवर्णको वाच्यः, स चायं—'ईरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपरिट्ठावणियासमिए, मणसमिए वयसमिए; कायसमिए मणगुत्ते ३,'—मनःप्रभृतीनां समितिः—सत्प्रवृत्तिः, गुप्तिस्तु—निरोधः, अत एव 'गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबंभयारी' ब्रह्मगुप्तिभिः; चाई—सङ्गानां त्यागी लज्जू—रज्जुरिवावक्रव्यवहारात् लज्जालुर्वा, संयमेन लौकिकलज्जया वा, 'तवस्सी खंतिखमे' क्षान्त्या क्षमते यः स तथा; 'जिइंदिए सोही'—शोधयत्यात्मपराविति शोधी, शोभी वा, 'अणिदाणे अप्पुस्सुए'—अल्पौत्सुक्योऽनुत्सुक इत्यर्थः, 'अबहिल्लेसे'—संयमादबहिर्भूतचित्तवृत्तिः,'सुसामण्णरए इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओ त्तिकट्टु विहरइ'—निर्ग्रन्थप्रवचनानुमार्गेण इत्यर्थः ॥३३॥

ततेणं से मेहे अणगारे अन्नया कदाइ समणं भगवं० वंदति, नमंसति २; एवं वदासी—इच्छामि णं भंते !, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया !, मा पडिबन्धं करेह; तते णं से मेहे समणेणं भगवया० अब्भणुन्नाते समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं, अहाकप्पं, अहामग्गं०, सम्मं काएणं फासेति, पालेति, सोभेति, तीरेति, किट्टेति; सम्मं काएण फासेत्ता, पालित्ता, सोभेत्ता, तीरेत्ता, किट्टेत्ता,

पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदति, नमंसति २ त्ता; एवं वदासी–इच्छामि णं भंते !, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे 卐दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह; जहा पढमाए अभिलावो तहा दोच्चाए, तच्चाए, चउत्थाए, पंचमाए, छम्मासियाए, सत्तमासियाए, पढमसत्तराइंदियाए, दोच्चं सत्तरातिंदियाए, तइयं सत्तरातिंदियाए, अहोरातिंदियाएवि, एगराइंदियाएवि; तते णं से मेहे अणगारे बारस भिक्खुपडिमाओ सम्मं काएणं फासेत्ता, पालेत्ता, सोभेत्ता, तीरेत्ता, किट्टेत्ता; 卐पुणरवि वंदति, नमंसइ २. त्ता; एवं वदासी–इच्छामि णं भंते !, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे गुणरतणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जिता णं विहरित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया !, मा पडिबंधं करेह; तते णं से मेहे अणगारे पढमं मासं चउत्थंचउत्थेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे, आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं, अवाउडतेणं, दोच्चं मासं छट्ठंछट्ठेणं०, तच्चं मासं अट्ठमंअट्ठमेणं० चउत्थं मासं दसमं २ अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडूए, सूराभिमुहे, आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडसेणं; पंचमं मासं दुवालसमं २, अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडूए सूराभिमुहे, आयावणभूमीए आयावेमाणे रत्तिं वीरासणेणं अवाउडतेणं एवं खलु एएणं अभिलावेणं छट्ठे चोद्दसमं २, सत्तमे सोलसमं २, अट्ठमे अट्ठारसमं २, नवमे

卐 卐 एतदन्तर्गतः पाठः 'अ' प्रतौ नास्ति.

वीसतिमं २, दशमे बावीसतिमं २, एक्कारसमे चउव्वीसतिमं २, बारसमे छव्वीसतिमं २, तेरसमे अट्ठावीसतिमं २, चोद्दसमे तीसइमं २, पंचदसमे बत्तीसतिमं २, सोलसमे चउत्तीसतिमं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुएणं, सूराभिमूहे, आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेण य, अवाउडतेण य; तते णं से मेहे अणगारे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं अहासुत्तं जाव सम्मं काएणं फासेइ, पालेइ, सोभेइ, तीरेइ, किट्टेइ; अहासुत्तं, अहाकप्पं, जाव किट्टेत्ता; समणं भगवं महावीरं वंदति, नमंसति २; बहूहिं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं, मासद्धमासखमणेहिं, विचित्तेहिं, तवोकम्मेहिं; अप्पाणं भावेमाणे विहरति ॥ सूत्रम्-३४ ॥

'अहासुहं'ति-यथासुखं सुखानतिक्रमेण मा पडिबन्धं-विघातं विधेहि विवक्षितस्येति गम्यं । 'भिक्खुपडिम'त्ति-अभिग्रहविशेषः, प्रथमा एकमासिकी, एवं द्वितीयाद्याः सप्तम्यन्ताः क्रमेण द्वित्रिचतुष्पञ्चषट्सप्तमासमानाः; अष्टमीनवमीदशम्यः प्रत्येकं सप्ताहोरात्रमानाः, एकादशी अहोरात्रमाना, द्वादशी एकरात्रमानेति, तत्र-"पडिवज्जइ एयाओ संघयणधिइजुओ महासत्तो । पडिमाओ भावियप्पा सम्मं गुरुणा अणुन्नाओ ॥ १ ॥ गच्छेच्चिय निम्माओ जा पुव्वा दस भवे असंपुण्णा । नवमस्स तइय वत्थू होइ जहन्नो सुयाहिगमो ॥ २ ॥ वोसट्ठचत्तदेहो उवसग्गसहो जहेव जिणकप्पी । एसण अभिग्गहिया भत्तं च अलेवडं तस्स ॥३॥ दुट्ठस्सहत्थिमाइ तओ भएणं पयंपि नोसरइ । एमाइ नियमसेवी विहरइ जाऽखंडिओ मासो॥४॥"

सा० प्रतिपद्यते एताः संहननधृतियुतो महासत्वः । प्रतिमा भावितात्मा सम्यग् गुरुणाऽनुज्ञातः ॥ १ ॥ गच्छ एव निर्मातो यावत्पूर्वाणि दश भवन्ति ।

इत्यादिग्रन्थान्तराभिहितो विधिरासां द्रष्टव्यः। यच्चेह एकादशाङ्गविदोऽपि मेघानगारस्य प्रतिमानुष्ठानं भणितं, तत्सर्ववेदिसमुपदिष्टत्वादनवद्यमवसेयमिति; 'यथासूत्रं'-सूत्रानतिक्रमेण, 'यथाकल्पं'-प्रतिमाचारानतिक्रमेण, 'यथामार्गं'-ज्ञानाद्यनतिक्रमेण क्षायोपशमिकभावानतिक्रमेण वा, कायेन न मनोरथमात्रेण; 'फासेइ'त्ति-उचितकाले विधिना ग्रहणात्, 'पालयति'-असकृदुपयोगेन प्रतिजागरणात्, 'शोभयति'-पारणकदिने गुरुदत्तशेषभोजनकरणात्, शोधयति वा-अतिचारपङ्कक्षालनात्, 'तीरयति'-पूर्णेऽपि काले स्तोककालमवस्थानात्, 'कीर्त्तयति'-पारणकदिने इदं चेदं चैतस्याः कृत्यं कृतमित्येवं कीर्त्तनात्। गुणानां-निर्जराविशेषाणां रचना-करणं, संवत्सरेण-सत्रिभागवर्षेण यस्मिंस्तत्तपो गुणरचनसंवत्सरं, गुणा एव वा रत्नानि यत्र स तथा गुणरत्नः संवत्सरो यत्र तपसि तद्गुणरत्नसंवत्सरमिति, इह च त्रयोदश मासाः सप्तदश दिनाधिकास्तपःकालः, त्रिसप्ततिश्च दिनानि पारणककाल इति; एवं चायं-"पण्णरस वीस चउवीस चेव चउवीस पण्णवीसा य। चउवीस एक्कवीसा चउवीसा सत्तवीसा य॥ १॥ तीसा तेत्तीसावि य चउवीस छवीस अट्ठवीसा य। तीसा बत्तीसावि य सोलस मासेसु तवदिवसा॥ २॥ पनरसदसट्ठ छप्पंच चउर पंचसु य तिण्णि तिण्णित्ति। पंचसु दो दो य तहा सोलसमासेसु पारणगा॥ ३॥" इह च यत्र मासे अष्टमादितपसो यावन्ति दिनानि न पूर्यन्ते, तावन्त्यग्रेतनमासादाकृष्य पूरणीयान्यधिकानि चाग्रेतनमासे क्षेप्तव्यानीति। 'चउत्थ'मित्यादि, चत्वारि भक्तानि यत्र त्यज्यन्ते तच्चतुर्थं, इयं चोप-

असंपूर्णानि, नवमस्य तृतीयं वस्तु भवति श्रुताधिगमो जघन्यः॥ २॥ व्युत्सृष्टत्यक्तदेह उपसर्गसहो यथैव जिनकल्पी। एषणाऽभिग्रहयुता भक्तं चालेपकृतस्य॥ ३॥ दुष्टाश्वहस्त्यादयः (आगच्छेयुः) ततो भयेन पदमपि नापसरति। एवमादि नियमसेवी विहरति यावदखण्डितो मासः॥ ४॥ पञ्च. पृ. ७८ तमे।

वासस्य संज्ञा, एवं षष्ठादिरुपवासद्वयादेरिति, 'अणिक्खित्तेणं'ति-अविश्रान्तेन, 'दिया ठाणुक्कुडुएणं'-दिवा-दिवसे स्थानं-आसनमुत्कुटुकं आसनेषु पुतालगनरूपं यस्य स तथा, आतापयन्-आतापनां कुर्वन् 'वीरासणेणं'ति-सिंहासनोपविष्टस्य भुवि न्यस्तपादस्यापनीतसिंहासनस्येव यदवस्थानं तद्वीरासनं तेन व्यवस्थित इति गम्यते। किंभूतेन अप्रावृतेन-अविद्यमानप्रावरणेन स एवं वा अप्रावृतः, णंकारस्तु अलङ्कारार्थः ॥ ३४ ॥

--तते णं से मेहे अणगारे तेणं उरालेणं, विपुलेणं, सस्सिरीएणं, पयत्तेणं, पग्गहिएणं, कल्लाणेणं, सिवेणं, धन्नेणं, मंगल्लेणं, उदग्गेणं, उदारएणं, उत्तमेणं, महाणुभावेणं, तवोकम्मेणं; सुक्के, भुक्खे, लुक्खे, निम्मंसे, निस्सोणिए, किडिकिडियाभूए, अट्ठिचम्मावणद्धे, किसे धमणिसंतए जाते यावि होत्था; जीवं जीवेणं गच्छति, जीवं जीवेणं चिट्ठति; भासं भासित्ता गिलायति, भासं भासमाणे गिलायति, भासं भासिस्सामित्ति गिलायति; से जहा नामए इंगालसगडियाइ वा, कट्ठसगडियाइ वा, पत्तसगडियाइ वा, तिलसगडियाइ वा, एरंडकट्ठसगडियाइ वा, उण्हे दिन्ना सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठति; एवामेव मेहे अणगारे ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ; उवचिए तवेणं, अवचिते मंससोणिएणं, हुयासणे इव भासरासिपरिच्छन्ने, तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए; अतीव अतीव उवसोभेमाणे २ चिट्ठति। तेणं कालेणं, तेणं समएणं, समणे भगवं महावीरे आइगरे, तित्थगरे जाव पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दुतिज्जमाणे, सुहंसुहेणं विहरमाणे; जेणामेव रायगिहे नगरे, जेणामेव गुणसिलए चेतिए, तेणामेव

उवागच्छति २ त्ता; अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति; तते णं तस्स मेहस्स अणगारस्स राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिते जाव समुपज्जित्था-एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं तहेव जाव भासं भासिस्सामीति गिलामि, तं अत्थि ता मे उट्ठाणे, कम्मे, बले, वीरिए, पुरिसक्कारपरक्कमे; सद्धा धिई संवेगे तं जाव ता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे, बले, वीरिए; पुरिसगारपरक्कमे, सद्धा धिई संवेगे जाव इमे धम्मायरिए, धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरति, ताव ताव मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते सूरे समणं ३, वंदित्ता, नमंसित्ता; समणेणं भगवता महावीरेणं अब्भणुन्नायस्स समाणस्स सयमेव पंच महव्वयाइं आरूहित्ता, गोयमादिए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेत्ता, तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं २ सणियं सणियं दुरूहित्ता, सयमेव मेहघणसन्निगासं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेत्ता, संलेहणाझूसणाए झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खितस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए; एवं संपेहेति २, कल्लं पाउप्पभायाए रयणी जाव जलंते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति २, समणं ३, तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं करेइ २ त्ता, वंदति, नमंसति २, नच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे, नमंसमाणे, अभिमुहे विणएणं पंजलियपुडे पज्जुवासति; मेहेत्ति समणे भगवं महावीरे मेहं अणगारं एवं वदासी-से णूणं तव मेहा !

राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिते जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं जाव जेणेव अहं तेणेव हव्वमागए, से णूण मेहा अट्ठे समट्ठे ?, हंता अत्थि, अहासुहं देवाणुप्पिया !, मा पडिबंधं करेह; तते णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया० अब्भणुन्नाए समाणे हट्ठ जाव हियए उट्ठाइ उट्ठेइ २ त्ता, समणं ३, तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता, वंदइ, नमंसइ २ त्ता, सयमेव पंच महव्वयाइं आरुभेइ २ त्ता, गोयमातिसमणे निग्गंथे, निग्गंथीओ य खामेति, खामेत्ता य, तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं २, दुरूहति २, सयमेव मेहघणसन्निगासं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहति २, उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहति २, दब्भसंथारगं संथरति २, दब्भसंथारगं दुरूहति २, पुरत्थाभिमुहे, संपलियंकनिसन्ने; करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु, एवं वदासी–नमोऽत्थु णं अरिहंताणं, भगवंताणं, जाव संपत्ताणं; णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स; वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे भगवं तत्थगते इहगतं तिकट्टु वंदति, नमंसइ २ त्ता; एवं वदासी–पुव्विंपिय णं मए समणस्स ३, अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए, मुसावाए, अदिन्नादाणे, मेहुणे, परिग्गहे, कोहे, माणे, माया, लोभे, पेज्जे, दोसे, कलहे, अब्भक्खाणे, पेसुन्ने, परपरिवाए, अरतिरति, मायामोसे, मिच्छादंसणसल्ले,

१ उंट्ठाए २ त्ता श्र।

पच्चक्खाते; इयाणिंपि णं अहं तस्सेव अंतिए सव्वं पाणातिवायं पच्चक्खामि जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्च-
क्खामि सव्वं असणपाणखादिमसातिमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए; जंपि य इमं सरीरं
इट्ठं कंतं पियं जाव विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंती तिकट्टु, एयंपिय णं चरमेहिं ऊसासनिस्सासेहिं
वोसिरामि त्तिकट्टु, संलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विह-
रति; तते णं ते थेरा भगवंतो मेहस्स अणगारस्स अगिलाए वेयावडियं करेंति। तते णं से मेहे अणगारे
समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता,
बहुपडिपुन्नाइं दुवालस वरिसाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता,
सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता, आलोतियपडिक्कंते, उद्धियसल्ले, समाहिपत्ते, आणुपुव्वेणं, कालगए;
तते णं ते थेरा भगवंतो मेहं अणगारं आणुपुव्वेणं कालगयं पासेंति २, परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं
करेंति २, मेहस्स आयारभंडयं गेण्हंति २, विउलाओ पव्वयाओ सणियं २, पच्चोरुहंति २; जेणामेव
गुणसिलए चेइए, जेणामेव समणे भगवं महावीरे, तेणामेव उवागच्छंति २ त्ता, समणं ३, वंदंति, नमंसंति
२ त्ता; एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे णामं अणगारे पगइभद्दए जाव विणीते, से
णं देवाणुप्पिएहिं अब्भणुन्नाए समाणे गोतमातिए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेत्ता, अम्हेहिं सद्धिं
विउलं पव्वयं सणियं २, दुरूहति २, सयमेव मेघघणसन्निगासं पुढविसिलं पट्टयं पडिलेहेति २,

भत्तपाणपडियाइक्खित्ते अणुपुव्वेणं कालगए, एस णं देवाणुप्पिया मेहस्स अणगारस्स आयारभंडए ॥ सूत्रम्-३५ ॥ भंतेत्ति भगवं गोतमे समणं ३, उ वंदति नमंसति २ त्ता एवं वदासी-एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे णामं अणगारे से णं भंते !, मेहे अणगारे कालमासे कालं किच्चा, कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?, गोतमादि समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं-वयासी एवं खलु गोयमा !, मम अंतेवासी मेहे णामं अणगारे पगतिभद्दए जाव विणीए से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयातिं एक्कारस अंगातिं अहिज्जति २, बारस भिक्खुपडिमाओ, गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं काएणं, फासेत्ता जाव किट्टेत्ता; मए अब्भणुन्नाए समाणे गोयमाइ थेरे खामेइ २, तहारूवेहिं जाव विउलं पव्वयं दुरूहति २, दब्भसंथारगं संथरति २, दब्भसंथारोवगए सयमेव पंच महव्वए उच्चारेइ, बारस वासातिं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झुसित्ता, सट्ठिं भत्तातिं अणसणाए छेदेत्ता, आलोइयपडिक्कंते, उद्धियसल्ले, समाहिपत्ते, कालमासे कालं किच्चा; उद्धं चंदिमसूरगहगणणक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणाइं, बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं, बहूइं जोयणसयसहस्साइं, बहूइ जोयणकोडीओ, बहूइ जोयणकोडाकोडीओ; उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहंमी-साण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-लं-तग-महासुक्क-सहस्सारा-णय-पाणया-रण-च्चुते, तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेवेज्जविमाणावाससए वीइवइत्ता,

१ गोयमाएहि स० अ।

विजए महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे; तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं सागारोवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं मेहस्सवि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमातिं ठिती पं०; एस णं भंते !, मेहे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं, ठितिक्खएणं, भवक्खएणं; अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ?, कहिं उववज्जिहिति ?; गो० ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति, बुज्झिहिति, मुचिहिति, परिनिव्वाहिति, सव्वदुक्खाणमंतं काहिति। एवं खलु जंबू !, समणेणं भगवया महावीरेणं, आइगरेणं, तित्थगरेणं जाव संपत्तेणं अप्पोपालंभनिमित्तं पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ सूत्रम्-३६ ॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

'उरालेण' मित्यादि, उरालेन-प्रधानेन विपुलेन-बहुदिनत्वाद्विस्तीणन सश्रीकेण-सशोभेन, 'पयत्तेणं'ति-गुरुणा प्रदत्तेन प्रयत्नवता वा प्रमादरहितेनेत्यर्थः, प्रगृहीतेन-बहुमानप्रकर्षाद्गृहीतेन, कल्याणेन-नीरोगताकरणेन, शिवेन शिवहेतुत्वात् , धन्येन-धनावहत्वात् , मङ्गल्येन-दुरितोपशमे साधुत्वात्, उदग्रेण-तीव्रेण, उदारेण-औदार्यवता, निःस्पृहत्वातिरेकात् ; 'उत्तमेणं'ति-ऊर्द्धं तमसः-अज्ञानाद्यत्तत्तथा तेन अज्ञानरहितेनेत्यर्थः, महानुभागेन-अचिन्त्यसामर्थ्येन शुष्को नीरसशरीरत्वात्, 'भुक्खे'त्ति-बुभुक्षावशेन रूक्षीभूतत्वात् किटिकिटिका-निर्मांसास्थिसम्बन्धी उपवेशनादिक्रियाभावी शब्दविशेषः तां भूतः-प्राप्तो यः स तथा, अस्थीनि चर्मणाऽवनद्धानि यस्य स तथा, कृशो-दुर्बलो धमनीसन्ततः-नाडीव्याप्तो जातश्चाप्यभूत्, 'जीवं जीवेणं गच्छति'-जीवबलेन-शरीरबलेनेत्यर्थः, 'भासं भासित्ता'इत्यादौ कालत्रयनिर्देशः, 'गिलायति'त्ति-ग्लायति ग्लानो भवति; 'से'इति अथार्थः, अथशब्दश्च वाक्योपक्षेपार्थः, यथा-दृष्टान्तार्थः, नामेति संभावनायां एवेति वाक्यालङ्कारे;

अङ्गाराणां भृता शकटिका—गन्त्री अङ्गारशकटिका, एवं काष्ठानां पत्राणां पर्णानां 'तिल'त्ति—तिलदण्डकानां एरण्डशकटिका—एरण्डकाष्ठमयी, आतपे दत्ता शुष्का सतीति विशेषणद्वयं, आर्द्रकाष्ठपत्रभृतायाः तस्यां न (शब्दः) संभवति; इतिशब्द उपप्रदर्शनार्थः, वाशब्दा विकल्पार्थाः, सशब्दं गच्छति तिष्ठति वा, एवमेव मेघोऽनगारः सशब्दं गच्छति, सशब्दं तिष्ठति, हुताशन इव भस्मराशिप्रतिच्छन्नः; 'तवेणं'ति—तपोलक्षणेन तेजसा, अयमभिप्रायो—यथा भस्मच्छन्नोऽग्निर्बहिर्वृत्त्या तेजोरहितोऽन्तर्वृत्त्या तु ज्वलति एवं मेघोऽनगारोऽपि बहिर्वृत्त्याऽपचितमांसादित्वान्निस्तेजा अन्तर्वृत्त्या तु शुभध्यानतपसा ज्वलतीति; उक्तमेवाह—तपस्तेजःश्रिया अतीवातीव उपशोभमानः २, तिष्ठतीति। 'तं अत्थि ता मे'त्ति—तदेवमस्ति तावन्मे उत्थानादि न सर्वथा क्षीणं तदिति भावः, 'तं जाव ता मे'त्ति—तत्—तस्मात् यावन्मेऽस्ति उत्थानादि ता इति भाषामात्रेण यावच्च मे धर्माचार्यः, 'सुहत्थी'ति—पुरुषवरगन्धहस्ती शुभाः वा क्षायिकज्ञानादयोऽर्था यस्य स तथा, 'ताव ताव'त्ति—तावच्च तावच्चेति वस्तुद्वयापेक्षा द्विरुक्तिः, 'कडाईहिं'ति—कृतयोग्यादिभिः, 'मेहघणसन्निगासं'ति—घनमेघसदृशं कालमित्यर्थः, 'भत्तपाणपडियाइक्खियस्स'त्ति—प्रत्याख्यातभक्तपानस्य, 'कालं'ति—मरणं, 'जेणेव इहं'ति—इहशब्दविषयं स्थानं इदमित्यर्थः; 'संपलियंकनिसण्णे'ति—पद्मासनसन्निविष्टः, 'पेज्जे'त्ति—अभिष्वङ्गमात्रं, 'दोसे'त्ति—अप्रीतिमात्रं, अभ्याख्यानं—असद्दोषारोपणं, पैशून्यं—पिशुनकर्म्म, परपरिवादः—विप्रकीर्णपरदोषकथा, अरतिरती—धर्माधर्माङ्गेषु, मायामृषा—वेषान्तरकरणतो लोकविप्रतारणं; संलेखना—कषायशरीरकृशतां स्पृशतीति संलेखनास्पर्शकः। पाठान्तरेण—

१. तस्याः सं० अ।

'संलेहणाझूसणाझूसिय'त्ति–संलेखनासेवनजुष्टः इत्यर्थः। 'मासियाए'त्ति-मासिक्या मासपरिमाणया, 'अप्पाणं झूसिते'त्ति–क्षपयित्वा षष्टिं भक्तानि, 'अणसणाए'त्ति-अनशनेन, छित्त्वा–व्यवच्छेद्य, किल दिने २ द्वे द्वे भोजने लोकः कुरुते, एवं च त्रिंशता दिनैः षष्टिर्भक्तानां परित्यक्ता भवतीति; 'परिनिव्वाणवत्तिय'त्ति-परिनिर्वाणमुपरतिर्मरणमित्यर्थः, तत्प्रत्ययो–निमित्तं यस्य स परिनिर्वाणप्रत्ययः मृतकपरिष्ठापनाकायोत्सर्ग इत्यर्थः, तं कायोत्सर्गं कुर्वन्ति; 'आयारभंडगं'त्ति–आचाराय–ज्ञानादिभेदभिन्नाय भाण्डकं–उपकरणं, वर्षाकल्पादि आचारभाण्डकं, 'पगइभद्दए'इत्यत्र यावत्करणादेवं दृश्यं, 'पयइउवसन्ते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपन्ने आलीणे भद्दए विणीए'त्ति–तत्र प्रकृत्यैव–स्वभावेनैव, भद्रकः–अनुकूलवृत्तिः, प्रकृत्यैवोपशान्तः–उपशान्ताकारः मृदु च तन्मार्दवं च मृदुमार्दवं–अत्यन्तमार्दवं इत्यर्थः; आलीनः–आश्रितो गुर्वननुशासनेऽपि सुभद्रक एव यः स तथा, 'कहिं गए'त्ति–कस्यां गतौ गतः ?, क्व च देवलोकादौ उत्पन्नो ?, जातः ?; विजयविमानमनुत्तरविमानानां प्रथमं पूर्वदिग्भागवर्त्ति, तत्रोत्कृष्टादिस्थितेर्भावादाह–'तत्थे'त्यादि, आयुःक्षयेण–आयुर्दलिकनिर्जरणेन, स्थितिक्षयेण–आयुःकर्मणः स्थितेर्वेदनेन; भवक्षयेण–देवभवनिबन्धनभूतकर्मणां गत्यादीनां निर्जरणेनेति। अनन्तरं देवभवसम्बन्धिनं चयं–शरीरं 'चइत्त'त्ति–त्यक्त्वा, अथवा च्यवं–च्यवनं कृत्वा सेत्स्यति। निष्ठितार्थतया विशेषतः सिद्धिगमनयोग्यतया महर्द्धिप्राप्त्या वा भोत्स्यते केवलालोकेन, मोक्ष्यते सकलकर्मांशैः, परिनिर्वास्यति–स्वस्थो भविष्यति, सकलकर्म्मकृतविकारविरहिततया किमुक्तं भवति ?,–सर्वदुःखानामन्तं करिष्यतीति। 'एवं खल्वि'त्यादि, निगमनं 'अप्पोपालंभनिमित्तं'–आप्तेन हितेन गुरुणेत्यर्थः, उपालम्भो–विनेयस्याविहितविधायिनः आप्तोपालम्भः स निमित्तं यस्य

प्रज्ञापनस्य तत्तथा। प्रथमस्य ज्ञाताध्ययनस्यायं-अनन्तरोदितः मेघकुमारचरितलक्षणोऽर्थोऽभिधेयः, प्रज्ञप्तः-अभिहितः। अविधिप्रवृत्तस्य शिष्यस्य गुरुणा मार्गे स्थापनाय उपालम्भो देयो, यथा भगवता दत्तो मेघकुमारायेत्येवमर्थं प्रथममध्ययनमित्यभिप्रायः। इह गाथा-महुरेहिं निउणेहिं वयणेहिं चोययंति आयरिया। सीसे कहिंचि खलिए जह मेहमुणिं महावीरो ॥ १ ॥

इतिशब्दः समाप्तौ, ब्रवीमीति-प्रतिपादयाम्येतदहं तीर्थकरोपदेशेन, न स्वकीयबुद्ध्या, इत्येवं गुरुवचनपारतन्त्र्यं सुधर्मस्वामी आत्मनो जम्बूस्वामिने प्रतिपादयति; एवमन्येनापि मुमुक्षुणा भवितव्यमित्येतदुपदर्शनार्थमिति ॥

ज्ञाताधर्मकथायां प्रथममुत्क्षिप्ताध्ययनं ज्ञातविवरणं मेघकुमारकथानकाख्यं समाप्तम् ॥



२-अथ श्रीसंघाटाख्यं ज्ञाताध्ययनम् ॥

अस्य च पूर्वेण सहायं सम्बन्धः, पूर्वस्मिन्ननुचितप्रवृत्तिकस्य शिष्यस्य उपालम्भ उक्तः; इह त्वनुचितप्रवृत्तिकोचितप्रवृत्तिकयोरनर्थार्थप्राप्तिपरम्पराऽभिधीयते इत्येवंसम्बन्धस्यास्येदमुपक्षेपसूत्रम्—

जति णं भंते!, समणेणं भगवया महावीरेणं पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते; बितीयस्स णं भंते!, नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते?; एवं खलु जंबू!, तेणं कालेणं, तेणं समएणं, रायगिहे णामं

सा० [1]मधुरैर्निपुणैर्वचनैः स्थापयन्ति आचार्याः। शिष्यं क्वचित् स्खलिते यथा मेघमुनिं महावीरः ॥ १ ॥

नयरे होत्था वन्नओ; तस्स णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए गुणसिलए नामं चेतिए होत्था वन्नओ, तस्स णं गुणसिलयस्स चेतियस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे जिण्णुज्जाणे यावि होत्था, विणट्ठदेवउले परिसडियतोरणघरे नाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिवच्छाइए अणेगवालसयसंकणिज्जे यावि होत्था, तस्स णं जिन्नुज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगे भग्गकूवए यावि होत्था, तस्स णं भग्गकूवस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए यावि होत्था, किण्हे किण्होभासे जाव रम्मे महामेहनिउरंबभूते बहूहिं रुक्खेहि य, गुच्छेहि य, गुम्मेहि य, लयाहि य, वल्लीहि य, कुसेहि य, खाणुएहि य संच्छन्ने, पलिच्छन्ने, अंतो झुसिरे बाहिं गंभीरे अणेगवालसयसंकणिज्जे यावि होत्था ॥ सूत्रम्-३७ ॥

'जइ ण'मित्यादि, कण्ठ्यं; 'एवं खल्वि'त्यादि तु प्रकृताध्ययनार्थसूत्रं सुगमं चैतत्सर्वं नवरं जीर्णोद्यानं चाप्यभूत्। चापीति समुच्चये, अपिचेत्यादिवत्; विनष्टानि देवकुलानि परिसटितानि तोरणानि प्राकारद्वारदेवकुलसम्बन्धीनि गृहाणि च यत्र तत्तथा, नानाविधा ये गुच्छा–वृन्ताकीप्रभृतयः, गुल्मा–वंशजालीप्रभृतयः, लताः–अशोकलतादयः, वल्ल्यः–त्रपुषीप्रभृतयः, वृक्षाः–सहकारादयः, तैः छादितं यत्तत्तथा; अनेकैर्व्यालशतैः–श्वापदशतैः शङ्कनीयं–भयजनकं चाप्यभूत्, शङ्कनीयमित्येद्विशेषणसम्बन्धत्वात्क्रियावचनस्य न पुनरुक्तता, 'मालुकाकच्छए'त्ति–एकास्थिफलाः वृक्षविशेषाः मालुकाः प्रज्ञापनाभिहितास्तेषां कक्षो–गहनं मालुकाकक्षः, चिर्भटिकाकच्छक इति तु जीवाभिगमचूर्णिकारः। 'किण्हे किण्होभासे' इह यावत्करणादिदं दृश्यं, "नीले नीलोभासे, हरिए हरिओभासे, सीए सीओभासे, निद्धे निद्धोभासे, तिव्वे तिव्वो-

भासे; किण्हे किण्हच्छाए, नीले नीलेच्छाए, हरिए हरियच्छाए, सीये सीयच्छाए, निद्धे निद्धच्छाए, तिव्वे तिव्वच्छाए; धणकडियडच्छाए'त्ति कृष्णः-कृष्णवर्णः अञ्जनवत् स्वरूपेण कृष्णवर्ण एवावभासते-द्रष्टॄणां प्रतिभातीति कृष्णावभासः, किल किञ्चिद्वस्तु स्वरूपेण भवत्यन्यादृशं प्रतिभासते तु सन्निधानविप्रकर्षादेः कारणादन्यादृशमिति, एवं क्वचिदसौ नीलो मयूरग्रीवेव, क्वचित्-हरितः शुकपिच्छवत्, हरितालाभ इति वृद्धाः, तथा शीतः स्पर्शतः वल्ल्याद्याक्रान्तत्वादिति च वृद्धाः, स्निग्धो न रूक्षः तीव्रो वर्णादिगुणप्रकर्षवान् तथा कृष्णः सन् वर्णतः कृष्णच्छायः, छाया च-दीप्तिरादित्यकरावरणजनिता वेति; एवमन्यत्रापि 'धणकडियडच्छाए'त्ति-अन्योऽन्यशाखाप्रशाखानुप्रवेशात् घननिरन्तरच्छायो रम्यो महामेघानां निकुरम्बः-समूहस्तद्वद् यः स महामेघनिकुरम्बभूतः, वाचनान्तरे त्विदमधिकं पठ्यते-'पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्ज-माणे' हरितकश्चासौ रेरिज्जमाणेत्ति-भृशं राजमानश्च यः स तथा, "सिरीए अईव २ उवसोभेमाणे चिट्ठइ'त्ति श्रिया-वनलक्ष्म्या अतीव २ उपशोभमानस्तिष्ठति 'कुसेहि य'त्ति दर्भैः, क्वचित्-'कूविएहि य'त्ति पाठः, तत्र कूपिकाभिः लिङ्गव्यत्ययात् 'खाणुएहि'न्ति-स्थाणुभिश्च, पाठान्तरेण-'खत्तएहिं'ति-खातैर्गर्तैरित्यर्थः, अथवा-'कूविएहिं'ति चोरगवेषकैः 'खत्तएहिं'ति खातकैः क्षेत्रस्येति गम्यते चौरैरित्यर्थः, अयमभिप्रायो-गहनत्वात् तस्य तत्र चौराः प्रविशन्ति तद्गवेषणार्थमितरे चेति, संछन्नो-व्याप्तः परिछन्नः-समन्तात् अन्तः-मध्ये शुषिरः सावकाशत्वात् बहिर्गम्भीरो दृष्टेरप्रक्रमणात् ।

तत्थ णं रायगिहे नगरे, धण्णे नामं सत्थवाहे, अड्ढे दित्ते जाव विउलभत्तपाणे; तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स भद्दा नामं भारिया होत्था, सुकुमालपाणिपाया, अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरा, लक्खण-

वंजणगुणोववेया, माणुम्माणप्पमाणपडिपुन्नसुजातसव्वंगसुंदरंगी, ससिसोमागारा, कंता, पियदंसणा, सुरूवा, करयलपरिमियतिवलियमज्झा, कुंडलुल्लिहियगंडलेहा, कोमुदिरयणियरपडिपुण्णसोमवयणा, सिंगारागारचारुवेसा जाव पडिरूवा, वंझा अवियाउरी जाणुकोप्परमाया यावि होत्था ॥सूत्रम् ३८॥ तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पंथए नाम दासचेडे होत्था, सव्वंगसुंदरंगे मंसोवचिते बालकीलावणकुसले यावि होत्था; तते णं से धण्णे सत्थवाहे, रायगिहे नयरे बहूणं नगरनिगमसेट्ठिसत्थवाहाणं अट्ठारसण्ह य सेणियप्पसेणीणं बहुसु कज्जेसु य कुडुंबेसु य जाव चक्खुभूते यावि होत्था, नियगस्सवि य णं कुडुंबस्स बहुसु य कज्जेसु जाव चक्खुभूते यावि होत्था ॥ सूत्र ३९ ॥ तत्थ णं रायगिहे नयरे, विजए नामं तक्करे होत्था; पावे चंडालरूवे, भीमतररुद्दकम्मे, आरुसियदित्तरत्तनयणे, खरफरुसमहल्लविगयबीभत्थ(च्छ)दाढिए, असंपुडितउट्ठे, उद्धुयपइन्नलंबंतमुद्धए, भमरराहुवन्ने, निरणुक्कोसे, निरणुतावे, दारुणे, पइभए, निसंसतिए, निरणुकंपे, अहिव्व एगंतदिट्ठिए, खुरेव एगंतधाराए, गिद्धेव आमिसतल्लिच्छे, अग्गिमिव सव्वभक्खे[1], जलमिव सव्वगाही, उक्कंचणवंचणमायानियडिकूडकवडसाइसंपओगबहुले, चिरनगरविणट्ठदुट्ठसीलायारचरित्ते; जूयपसंगी, मज्जपसंगी, भोज्जपसंगी, मंसपसंगी; दारुणे, हिययदारए, साहसिए, संधिच्छेयए, उवहिए विस्संभघाती; आलीयगतितित्थभेयलहुहत्थसंपउत्ते परस्स दव्वहरणंमि निच्चं अणुबद्धे, तिव्ववेरे;

१ °क्खी छ।

रायगिहस्स नगरस्स बहूणि अइगमणाणि य, निग्गमणाणि य, दाराणि य, अवदाराणि य, छिंडिओ य, खंडीओ य, नगरनिद्धमणाणि य, संवट्टणाणि य, निव्वट्टणाणि य, जूवखलयाणि य, पाणागाराणि य, वेसागाराणि य, तद्दारट्ठाणाणि य, तक्करट्ठाणाणि य, तक्करघराणि य, सिंगाडगाणि य, तियाणि य, चउक्काणि य, चच्चराणि य, नागघराणिय, भूयघराणि य, जक्खदेउलाणि य, सभाणि य, पवाणि य, पणियसालाणि य, सुन्नघराणि य; आभोएमाणे २ मग्गमाणे, गवेसमाणे; बहुजणस्स छिद्देसु य, विसमेसु य, विहुरेसु य, वसणेसु य, अब्भुदएसु य, उस्सवेसु य, पसवेसु य, तिहीसु य, छणेसु य, जन्नेसु य, पव्वणीसु य; मत्तपमत्तस्स य, वक्खित्तस्स य, वाउलस्स य, सुहितस्स य, दुक्खियस्स विदेसत्थस्स य, विप्पवसियस्स य, मग्गं च, छिद्दं च, विरहं च, अंतरं च मग्गमाणे, गवेसमाणे एवं च णं विहरति; बहियावि य णं रायगिहस्स नगरस्स आरामेसु य, उज्जाणेसु य, वावि-पोक्खरणी-दीहिया-गुंजालिया-सरेसु य, सरपंतिसु य, सरसरपंतियासु य, जिण्णुज्जाणेसु य, भग्गकूवएसु य, मालुयाकच्छएसु य, सुसाणएसु य, गिरिकंदरलेणउवट्ठाणेसु य, बहुजणस्स छिद्देसु य जाव एवं च णं विहरति ॥ सूत्रम्-४० ॥

'अड्ढे दित्ते'-इह यावत्करणादिदं द्रष्टव्यम्। "विच्छिण्णविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइन्ने बहुदासदासीगोमहिसगवेलगप्पभूए बहुधणबहुजायरूवरयए आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डियविउलभत्तपाणे"त्ति-व्याख्या त्वस्य मेघकुमारराजवर्णकवत्। भद्रावर्णकस्य तु धारिणीवर्णकवन्नवरं। 'करयल'त्ति अनेन करयलपरिमियतिवलियमज्झा इति दृश्यं,

'वंझ'त्ति–अपत्यफलापेक्षया निष्फला, 'अवियाउरि'त्ति–प्रसवानन्तरमपत्यमरणेनापि फलतो वन्ध्या भवतीत्यत उच्यते–अवियाउरित्ति–अविजननशीला अपत्यानामत एवाह–जानुकूर्पराणामेव माता–जननी जानुकूर्प्परमाता, एतान्येव शरीरांशभूतानि तस्याः स्तनौ स्पृशन्ति नापत्यमित्यर्थः, अथवा जानुकूर्पराण्येव मात्रा–परप्रणोदे साहाय्ये समर्थ उत्सङ्गनिवेशनीयो वा परिकरो यस्या न पुत्रलक्षणः सा जानुकूर्परमात्रा। 'दासचेडे'त्ति–दासस्य–भृतकविशेषस्य चेटः–कुमारकः दासचेटः अथवा दासश्चासौ चेटश्चेति दासचेटः। 'तक्करे'ति–चौरः, 'पापस्य'–पापकर्मकारिणः, चाण्डालस्येव रूपं–स्वभावो यस्य स तथा, चण्डालकर्मापेक्षया भीमतराणि–रौद्राणि कर्म्माणि यस्य स तथा; 'आरुसिय'त्ति–आरुष्टस्येव दीप्ते–रक्ते नयने यस्य स तथा, खरपरुषे–अतिकर्कशे महत्यौ विकृते–बीभत्से दंष्ट्रिके–उत्तरोष्ठकेशगुच्छरूपे दशनविशेषरूपे वा यस्य स तथा, असंपुटितौ असंवृतौ वा परस्परालाभौ तुच्छत्वाद्दशनदीर्घत्वाच्च ओष्ठौ यस्य स तथा उद्धूता–वायुना प्रकीर्णा लम्बमाना मूर्द्धजा यस्य स तथा, भ्रमरराहुवर्ण्णः कृष्ण इत्यर्थः, 'निरनुक्रोशो'–निर्दयो, 'निरनुतापः'–पश्चात्तापरहितः, अत एव 'दारुणो' रौद्रः, अत एव 'प्रतिभयो' भयजनकः; 'निःसंशयिकः'–शौर्यातिशयादेव तत्साधयिष्याम्येवेत्येवंप्रवृत्तिकः, पाठान्तरे–'निसंसे'ति–नॄन्–नरान् शंसति–हिनस्तीति नृशंसः निःशंसो वा–विगतश्लाघः। 'निरणुकंपे'त्ति–विगतप्राणिरक्षः निर्गता वा जनानामनुकम्पा यत्र स तथा, अहिरिव एकान्ता–ग्राह्यमेवेदं मयेत्येवमेवनिश्चया दृष्टिर्यस्य स तथा, 'खुरेव एगंतधाराए'त्ति–एकत्रान्ते–वस्तुभागेऽपहर्तव्यलक्षणे धारा परोपतापप्रधानवृत्तिलक्षणा यस्य स तथा, यथा क्षुरप्रः–एकधारः, मोपकलक्षणैकप्रवृत्तिक एवेति भावः, 'जलमिव सव्वगाहि'त्ति–यथा जलं सर्वं स्वविषयापन्नमभ्यन्तरीकरोति तथाऽ-

यमपि सर्वं गृह्णातीति भावः, तथा उत्कञ्चनवञ्चनमायानिकृतिकूटकपटैः सह योऽतिसंप्रयोगो—गाढ्यं तेन बहुलः—प्रचुरो यः स तथा, तत्र ऊर्द्ध्वं कञ्चनं मूल्याद्यारोपणार्थं उत्कञ्चनं हीनगुणस्य गुणोत्कर्षप्रतिपादनमित्यर्थः वञ्चनं—प्रतारणं माया—परवञ्चनबुद्धिः निकृतिः—बकवृत्त्या गलकर्तकानामिवावस्थानं कूटं—कार्षापणतुलादेः परवञ्चनार्थं न्यूनाधिककरणं कपटं—नेपथ्यभाषाविपर्ययकरणं एभिरुत्कञ्चनादिभिस्सहातिशयेन यः संप्रयोगो—योगस्तेन यो बहुलः स तथा, यदिवा सातिशयेन द्रव्येण कस्तूरिकादिना परस्य द्रव्यस्य संप्रयोगः सातिसंप्रयोगः, ततश्चोत्कञ्चनादिभिः सातिसंप्रयोगेण च यो बहुलः स तथा, उक्तं च सातिप्रयोगशब्दार्थाय—"सो होई साइजोगो दवं जं छुहिय अन्नदवेसु। दोसगुणा वयणेसु य अत्थविसंवायणं कुणइ ॥१॥"—त्ति एकीयं व्याख्यानं, व्याख्यानान्तरं पुनरेवं—उत्कोचनं उत्कोचः निकृतिः—वञ्चनप्रच्छादनार्थं कर्म सातिः—अविश्रम्भः एतत्संप्रयोगे बहुलः, शेषं तथैव; चिरं—बहुकालं यावत् नगरे नगरस्य वा विनष्टो—विप्लुतः चिरनगरविनष्टः, बहुकालीनो यो नगरविनष्टो भवति स किलात्यन्तं धूर्तो भवतीत्येवं विशेषितः, तथा दुष्टं शीलं—स्वभावः आकारः—आकृतिश्चरित्रं च—अनुष्ठानं यस्य स तथा ततः कर्मधारयः, द्यूतप्रसङ्गी—द्यूतासक्तः एवमितराणि, नवरं भोज्यानि—खण्डखाद्यादीनि, पुनर्दारुणग्रहणं हृदयकारक इत्यस्य विशेषणार्थत्वान्न पुनरुक्तं, लोकानां हृदयानि दारयति—स्फोटयतीति हृदयकारकः, पाठान्तरेण 'जणहियाकारए'—जनहितस्याकर्त्तेत्यर्थः, 'साहसिकः'—अवितर्कितकारी, 'सन्धिच्छेदकः'—क्षेत्रखानकः, 'उपधिको'—मायित्वेन प्रच्छन्नचारी, 'विश्रम्भघाती'—विश्वासघातकः, आदीपकः—अग्निदाता, तीर्थानि—तीर्थभूतदेव-

सा० १ स भवति सातियोगो यद् द्रव्यमन्यद्रव्येषु क्षिप्त्वा। दोषगुणान् वचनेषु च अर्थविसंवादन करोति ॥ १ ॥

द्रोण्यादीनि भिनत्ति–द्विधा करोति तद्द्रव्यमोषणाय तत्परिकरभेदनेनेति तीर्थभेदः, लघुभ्यां–क्रियासु दक्षाभ्यां हस्ताभ्यां संप्रयुक्तो यः स तथा, ततः पदत्रयस्य कर्म्मधारयः, परस्य द्रव्यहरणे नित्यमनुबद्धः प्रतिबद्ध इत्यर्थः, 'तीव्रवैरः'–अनुबद्धविरोधः, 'अतिगमनानि'–प्रवेशमार्गान् 'निर्गमनानि'–निस्सरणमार्गान्, 'द्वाराणि'–प्रतोल्यः, 'अपरद्वाराणि'–द्वारिकाः, 'छिण्डीः'–छिण्डीकाः–वृत्तिच्छिद्ररूपाः, 'खण्डीः'–प्राकारच्छिद्ररूपाः, नगरनिर्द्धमनानि–नगरजलनिर्गमक्षालान्, 'संवर्त्तनानि'–मार्गमिलनस्थानानि, 'निवर्त्तनानि'–मार्गनिर्घटनस्थानानि, 'द्यूतखलकानि'–द्यूतस्थण्डिलानि, 'पानागाराणि'–मद्यगेहानि, 'वेश्यागाराणि'–वेश्याभवनानि, 'तस्करस्थानानि'–शून्यदेवकुलागारादीनि, 'तस्करगृहाणि'–तस्करनिवासान्, शृङ्गाटकादीनि प्राग् व्याख्यातानि, सभाः–जनोपवेशनस्थानानि; प्रपाः–जलस्थानानि, लिङ्गव्यत्ययश्च प्राकृतत्वात्; 'पणितशालाः'–हट्टान् शून्यगृहाणि–प्रतीतानि, 'आभोगयन्'–पश्यन्, 'मार्गयन्'–अन्वयधर्म्मपर्यालोचनतः, 'गवेषयन्'–व्यतिरेकधर्म्मपर्यालोचनतः, बहुजनस्य, 'छिद्रेषु'–प्रविरलपरिवारत्वादिषु चौरप्रवेशावकाशेषु, 'विषमेषु'–तीव्ररोगादिजनितातुरत्वेषु, 'विधुरेषु'–इष्टजनवियोगेषु, 'व्यसनेषु'–राज्याद्युपप्लवेषु, तथा–'अभ्युदयेषु'–राज्यलक्ष्म्यादिलाभेषु, 'उत्सवेषु'–इन्द्रोत्सवादिषु, 'प्रसवेषु'–पुत्रादिजन्मसु, 'तिथिषु'–मदनत्रयोदश्यादिषु, 'क्षणेषु'–बहुलोकभोजनदानादिरूपेषु, 'यज्ञेषु'–नागादिपूजासु, 'पर्वणीषु'–कौमुदीप्रभृतिषु; अधिकरणभूतासु मत्तः, पीतमद्यतया प्रमत्तश्च–प्रमादवान् यः स तथा तस्य बहुजनस्येति योगः, 'व्याक्षिप्तस्य'–प्रयोजनान्तरोपयुक्तस्य व्याकुलस्य च नानाविधकार्याक्षेपेण सुखितस्य दुःखितस्य च, विदेशस्थस्य च–देशान्तरस्थस्य, विप्रोषितस्य च–देशान्तरं

गन्तुं प्रवृत्तस्य, 'मार्गं च'–पन्थानं, 'छिद्रं च'–अपद्वारं, 'विरहं च'–विजनं, अन्तरं च–अवसरमिति आगमादिपदानि प्राग्वत् । 'सुसाणेसु य'त्ति–श्मशानेषु, 'गिरिकन्दरेषु'–गिरिरन्ध्रेषु,–'लयनेषु'–गिरिवर्तिपाषाणगृहेषु, 'उपस्थानेषु'–तथाविधमण्डपेषु बहुजनस्य छिद्रेष्वित्यादि पुनरावर्त्तनीयं यावद्, 'एवं च णं विहरइ'त्ति ।

तते णं तीसे भद्दाए भारियाए, अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए, अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था,–अहं धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं बहूणि वासाणि सद्दफरिसरसगंधरूवाणि माणुस्सगाइं कामभोगाइं पच्चणुभवमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारिगं वा पयायामि; तं धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव सुलद्धे णं माणुस्सए जम्मजीवियफले, तासिं अम्मयाणं जासिं मन्ने णियगकुच्छिसंभूयातिं, थणदुद्धलुद्धयातिं, महुरसमुल्लावगातिं, मम्मणपयंपियातिं थणमूलकक्खदेसभागं अभिसरमाणातिं,मुद्धयाइं थणयं पिबंति;ततो य कोमलकोमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊणं उच्छंगे निवेसियाइं देंति, समुल्लावए पिए सुमहुरे पुणो २ मंजुलप्पभणिते; तं अहन्नं अधन्ना, अपुन्ना, अलक्खणा, अकयपुन्ना, एत्तो एगमवि न पत्ता; तं सेयं मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलंते, धण्णं सत्थवाहं आपुच्छित्ता, धण्णेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाया समाणी सुबहुं विपुलं असणपाणखातिमसातिमं उवक्खडावेत्ता, सुबहुं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरिजणमहिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा जाइं इमाइं रायगिहस्स नगरस्स बहिया णागाणि य, भूयाणि य,

जक्खाणि य, इंदाणि य, खंदाणि य, रुद्दाणि य, सेवाणि य, वेसमणाणि य; तत्थ णं बहूणं नागपडिमाण य, जाव वेसमणपडिमाण य, महरिहं पुप्फच्चणियं करेत्ता; जाणुपायपडियाए एवं वइत्तए-जइ णं अहं देवाणुप्पिया !, दारगं वा, दारिगं वा पयायामि, तो णं अहं तुब्भं जायं च दायं च, भायं च, अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेमित्ति कट्टु उवातियं उवाइत्तए; एवं संपेहेति २ कल्लं जाव जलंते जेणामेव धण्णे सत्थवाहे तेणामेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता; एवं वदासी-एवं खलु अहं देवाणुप्पिया !, तुब्भेहिं सद्धिं बहूइं वासातिं जाव देंति समुल्लावए सुमहुरे पुणो २ मंजुलप्पभणिते तण्णं अहं अहन्ना अपुन्ना अकयलक्खणा एत्तो एगमवि न पत्ता, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया !, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाता समाणी विपुलं असणं ४ जाव अणुवड्ढेमि उवाइयं करेत्तए, तते णं धण्णे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वदासी-ममंपि य णं खलु देवाणुप्पिए !, एस चेव मणोरहे-कहं णं तुमं दारगं दारियं वा पयाएज्जसि ?, भद्दाए सत्थवाहीए एयमट्ठमणुजाणति, तते णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाता समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हयहियया विपुलं असणपाणखातिमसातिमं उवक्खडावेति २ त्ता, सुबहुं पुप्फगंधवत्थमल्लालंकारं गेण्हति २, सयाओ गिहाओ निग्गच्छति २, रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २ त्ता, जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २, पुक्खरिणीए तीरे सुबहुं पुप्फजावमल्लालंकारं ठवेइ २, पुक्खरिणिं ओगाहइ २, जलमज्जणं करेति, जलकीडं करेति २; ण्हाया कयबलिकम्मा उल्लपडसाडिगा जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सहस्स-

पत्ताइं ताइं गिण्हइ २, पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ २, तं सुबहुं पुप्फगंधमल्लं गेण्हति २, जेणामेव नागघरए य जाव वेसमणघरए य, तेणेव उवागच्छति २; तत्थ णं नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य आलोए पणामं करेइ, ईसिं पच्चुन्नमइ २, लोमहत्थगं परामुसइ २, नागपडिमाओ य जाव वेसमणपडिमाओ य लोमहत्थेणं पमज्जति, उदगधाराए अब्भुक्खेति २; पम्हलसुकुमालाए गंधकासाईए गायाइं लूहेइ २, महरिहं वत्थारुहणं च मल्लारुहणं च गंधारुहणं च चुन्नारुहणं च वन्नारुहणं च करेति २, जाव धूवं डहति २; जानुपायपडिया पंजलिउडा एवं वदासी-जइ णं अहं दारगं वा दारिगं वा पयायामि, तो णं अहं जायं च जाव अणुवड्ढेमि त्ति कट्टु उवातियं करेति २, जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २, विपुलं असणं ४ आसाएमाणी जाव विहरति; जिमिया जाव सुइभूया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागया अदुत्तरं च णं भद्दा सत्थवाही चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुन्नमासिणीसु विपुलं असण ४ उवक्खडेति २, बहवे नागा य जाव वेसमणा य उवायमाणी जाव एवं च णं विहरति ॥ सूत्रम्-४१ ॥ तते णं सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइ केणति कालंतरेणं आवन्नसत्ता जाया यावि होत्था, तते णं तीसे भद्दाए सत्थवाहीए दोसु मासेसु वीतिक्कंतेसु ततिए मासे वट्टमाणे इमेयारूवे दोहले पाउब्भूते-धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं विउलं असणं ४, सुबहुयं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं गहाय, मित्तनाति-नियगसयणसंबंधिपरियणमहिलियाहिं य सद्धिं संपरिवुडाओ रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति

२-श्री-
संघाटका-
ध्य० भद्रा-
या उपया-
चितकादि-
करणम् ।

२, जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति २ पोक्खरिणीं ओगाहिंति २, ण्हायाओ कयबलिकम्माओ सव्वालंकारविभूसियाओ विपुलं असणं ४ आसाएमाणीओ जाव पडिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेति, एवं संपेहेति २, कल्लं जाव जलंते जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति २; धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया !, मम तस्स गब्भस्स जाव विणेति तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया !, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाता समाणी जाव विहरित्तए; अहासुहं देवाणुप्पिया !, मा पडिबंधं करेह; तते णं सा भद्दा सत्थवाही धण्णेणं सत्थवाहेणं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठतुट्ठा जाव विपुलं असणं ४ जाव ण्हाया जाव उल्लपडसाडगा जेणेव नागघरते जाव धूवं दहति २, पणामं करेति, पणामं करेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २; तते णं ताओ मित्तनाति जाव नगरमहिलाओ भद्दं सत्थवाहिं सव्वालंकारविभूसितं करेंति, तते णं सा भद्दा सत्थवाही ताहिं मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरिजणणगरमहिलियाहिं सद्धिं तं विपुलं असणं ४ जाव परिभुंजमाणी य दोहलं विणेति २, जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया; तते णं सा भद्दा सत्थवाही संपुन्नडोहला जाव तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहति, तते णं सा भद्दा सत्थवाही, णवण्हं मासाणं, बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं, सुकुमालपाणिपादं जाव दारगं पयाया; तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे जातकम्मं करेंति २, तहेव जाव विपुलं असणं ४ उवक्खडावेंति २, तहेव मित्तनाति० भोयावेत्ता, अयमेयारूवं गोन्नं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति तम्हा

णं अम्हं इमे दारए बहूणं नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य उवाइयलद्धे णं ते होउ णं अम्हं इमे दारए देवदिन्ननामेणं; तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधिज्जं करेंति देवदिन्नेत्ति, तते णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो जायं च दायं च भायं च अक्खयनिहिं च अणुवड्ढेंति ॥ सूत्रम्-४२ ॥

'कुडुंबजागरियं जागरमाणीए'त्ति-कुटुम्बचिन्ताया जागरणं-निद्राक्षयः कुटुम्बजागरिका, द्वितीयायास्तृतीयार्थत्वात्, तया 'जाग्रत्या'-विबुध्यमानया; अथवा कुटुम्बजागरिकां, जाग्रत्याः 'पयायामि'त्ति-प्रजनयामि, 'यासिं मन्ने'-इत्यत्र तासां सुलब्धं जन्म जीवितफलं अहं 'मन्ये'-वितर्कयामि यासां निजककुक्षिसंभूतानीत्येवमक्षरघटना कार्या, निजकुक्षिसंभूतानि डिम्भरूपाणि इति गम्यते; स्तनदुग्धलुब्धकानि मधुरसमुल्लापकानि मन्मनं-स्खलत्प्रजल्पितं येषां तानि तथा स्तनमूलात्कक्षादेशभागमभिसरन्ति-संचरन्ति स्तनजं पिबन्ति, ततश्च कोमलकमलोपमाभ्यां हस्ताभ्यां गृहीत्वा उत्सङ्गे निवेशितानि ददति समुल्लापकान् सुमधुरान्, 'एत्तो एगमवि न पत्त'त्ति-इतः पूर्वं एकमपि-डिम्भकविशेषणकलापादेकमपि विशेषणं न प्राप्ता, 'बहिया नागघराणि ये' इत्यादि प्रतीतं, 'जण्णुपायवडिय'त्ति-जानुभ्यां पादपतिता जानुपादपतिता जानुनी भुवि विन्यस्य प्रणतिं गतेत्यर्थः। 'जायं वे'त्यादि, यागं-पूजां दायं-पर्वदिवसादौ दानं भागं-लाभांशं अक्षयनिधिं-अव्ययं भाण्डागारं अक्षयनिधिं वा-मूलधनं येन जीर्णीभूतदेवकुलस्योद्धारः करिष्यते अक्षीणिकां वा प्रतीतां वर्द्धयामि-पूर्वकाले अल्पं सन्तं महान्तं करोमीति भावः। 'उववाइयं'त्ति-उपयाच्यते-मृग्यते स्म यत्तत् उपयाचितं-ईप्सितं वस्तु, 'उपयाचितुं'-प्रार्थयितुं, 'उल्लपडसाडय'त्ति-स्नानेनार्द्रे पटशाटिके-उत्तरीयपरिधानवस्त्रे यस्याः सा तथा, 'आलोए'त्ति-दर्शने

नागादिप्रतिमानां प्रणामं करोति, ततः प्रत्युन्नमति, लोमहस्तं–प्रमार्जनीकं, 'परामृशति'–गृह्णाति; ततस्तेन ताः प्रमार्जयति 'अब्भुक्खेइ'त्ति–अभिषिञ्चति वस्त्रारोपणादीनि प्रतीतानि। 'चाउद्दसी'त्यादौ 'उद्दिट्ठि'ति–अमावस्या 'आवन्नसत्ते'ति–आपन्नः–उत्पन्नः सत्त्वो–जीवो गर्भे यस्याः सा तथा।

तते णं से पंथए दासचेडए देवदिन्नस्स दारगस्स बालग्गाही जाए, देवदिन्नं दारयं कडीए गेण्हति २, बहूहिं डिंभएहि य, डिंभगाहि य, दारएहि य, दारियाहि य; कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे अभिरममाणे अभिरमति। तते णं सा भद्दा सत्थवाही अन्नया कयाइं देवदिन्नं दारयं ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारभूसियं करेति, पंथयस्स दासचेडयस्स हत्थयंसि दलयति; तते णं से पंथए दासचेडए भद्दाए सत्थवाहीए हत्थाओ देवदिन्नं दारगं कडिए गिण्हति २, सयातो गिहाओ पडिनिक्खमति २, बहूहिं डिंभएहि य, डिंभियाहि य जाव कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ २, देवदिन्नं दारगं एगंते ठावेति २, बहूहिं डिंभएहि य जाव कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे पमत्ते यावि होत्था विहरति; इमं च णं विजए तक्करे रायगिहस्स नगरस्स बहूणि बाराणि य, अवदाराणि य तहेव जाव आभोएमाणे, मग्गेमाणे, गवेसमाणे जेणेव देवदिन्ने दारए तेणेव उवागच्छइ २, देवदिन्नं दारगं सव्वालंकारविभूसियं पासति, पासित्ता; देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणालंकारेसु

१ य कुमारएहिं कु० भ।

मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने पंथयं दासचेडं पमत्तं पासति २, दिसालोयं करेति, करेत्ता; देवदिन्नं दारगं गेण्हति २, कक्खंसि अल्लियावेति २, उत्तरिज्जेणं पिहेइ २, सिग्घं तुरियं चवलं चेतियं रायगिहस्स नगरस्स अवदारेणं निग्गच्छति २, जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छति २, देवदिन्नं दारयं जीवियाओ ववरोवेति २, आभरणालंकारं गेण्हति २, देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरगं निप्पाणं, निच्चेट्ठं, जीवियविप्पजढं भग्गकूवए पक्खिवत्ति २; जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छति २, मालुयाकच्छयं अणुपविसति २, निच्चले निप्फंदे तुसिणीए दिवसं खिवेमाणे चिट्ठति ॥ सूत्रम्-४३ ॥ तते णं से पंथए दासचेडे तओ मुहुत्तंतरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए तेणेव उवागच्छति २, देवदिन्नं दारगं तंसि ठाणंसि अपासमाणे, रोयमाणे, कंदमाणे, विलवमाणे, देवदिन्नदारगस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेइ २, देवदिन्नस्स कत्थइ सुतिं वा, खुतिं वा, पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति २; धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी एवं खलु सामी !, भद्दा सत्थवाही देवदिन्नं दारयं ण्हायं जाव मम हत्थंसि दलयति, ततेणं अहं देवदिन्नं दारयं कडीए गिण्हामि २, जाव मग्गणगवेसणं करेमि तं न णज्जति णं सामि !, देवदिन्ने दारए केणइ हते वा, अवहिए वा, अवखित्ते वा, पायवडिए धणस्स सत्थवाहस्स एतमट्ठं निवेदेति; तते णं से धण्णे सत्थवाहे पंथयदासचेडयस्स एतमट्ठं सोचा णिसम्म तेण य महया पुत्तसोएणाभिभूते समाणे परसुणियत्तेव चंपगपायवे धसत्ति, धरणीयलंसि

सव्वंगेहिं सन्निवइए; तते णं से धण्णे सत्थवाहे ततो मुहुत्तंतरस्स आसत्थे पच्छागयपाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वतो समंता मग्गणगवेसणं करेंति, देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइं वा खुइं वा, पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २, महत्थं पाहुडं गेण्हति २, जेणेव नगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छति २, तं महत्थं पाहुडं उवणति, उवणतित्ता; एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया !, मम पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए देवदिन्ने नाम दारए, इट्ठे जाव उंबरपुप्फंपिव दुल्लहे, सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ?; तते णं सा भद्दा देवदिन्नं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं पंथगस्स हत्थे दलाति जाव पायवडिए तं मम निवेदेति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! देवदिन्नदारगस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं कयं । तए णं ते नगरगोत्तिया धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा सन्नबद्धवम्मियकवया, उप्पीलियसरासणवट्टिया जाव गहियाउहपहरणा, धण्णेणं सत्थवाहेणं सद्धिं रायगिहस्स नगरस्स बहूणि अतिगमणाणि य जाव पवासु य, मग्गणगवेसणं करेमाणा रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खिमंति २, जेणेव जिण्णुज्जाणे, जेणेव भग्गकूवए, तेणेव उवागच्छंति २; देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरगं निप्पाणं, निच्चेट्ठं, जीवविप्पजढं पासंति २; हा हा अहो अकज्जमिति कट्टु देवदिन्नं दारगं भग्गकूवाओ उत्तारेंति २ धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थे णं दलयंति ॥ सूत्रम्-४४ ॥

डिम्भदारककुमारकाणामल्पबहुबहुतरकालकृतो विशेषः मूर्च्छितो-मूढो गतविवेकचैतन्य इत्यर्थः, 'ग्रथितो'-लोभ-

तन्तुभिः संदर्भितः, 'गृद्धः' आकाङ्क्षावान् 'अभ्युपपन्नः'-अधिकं तदेकाग्रतां गत इति, शीघ्रादीनि एकार्थिकानि शीघ्रतातिशयख्यापनार्थानि; निष्प्राणं-उच्छ्वासादिरहितं, निश्चेष्टं-व्यापाररहितं, 'जीवविप्पजढं'त्ति-आत्मना विप्रमुक्तं, निश्चलो-गमनागमनादिवर्जितः, निष्पन्दो-हस्ताद्यवयवचलनरहितः, तूष्णीको-वचनरहितः, 'क्षेपयन्'-प्रेरयन्, 'श्रुतिं'-वार्तामात्रं, 'क्षुतं'-तस्यैवसंबन्धिनं शब्दं तच्चिह्नं वा, 'प्रवृत्तिं'-व्यक्ततरवार्त्तां, नीतो मित्रादिना स्वगृहे अपहृतश्चौरेण आक्षिप्तः-उपलोभितः । 'परसुनियत्तेव्व'त्ति-परशुना-कुठारेण निकृत्तः-छिन्नो यः स तथा तद्वत्, 'नगरगोत्तिय'त्ति-नगरस्य गुप्तिं-रक्षां कुर्वन्तीति नगरगुप्तिकाः-आरक्षकाः, 'सन्नद्धबद्धवम्मियकवय'त्ति-सन्नद्धाः-संहननीभिः कृतसन्नाहाः, बद्धाः-कसाबन्धनेन, वर्मिताश्च-अङ्गरक्षीकृताः, शरीरारोपणेन, कवचाः-कङ्कटा यैस्ते तथा ततः कर्म्मधारयः; अथवा-वर्मितशब्दः क्वचिन्नाधीयत एव । 'उप्पीलियसरासणपट्टिया'-उत्पीडिता-आक्रान्ता गुणेन शरासनं-धनुस्तल्लक्षणा पट्टिका यैस्ते तथा, अथवा-उत्पीडिता-बद्धा शरासनपट्टिका-बाहुपट्टको यैस्ते तथा, दृश्यते च धनुर्धराणां बाहौ चर्म्मपट्टबन्ध इति, इह स्थाने यावत्करणादिदं दृश्यं; "पिणद्धगेवेज्जा बद्धआविद्धविमलवरचिंधपट्टा"-पिनद्धानि-परिहितानि ग्रैवेयकाणि-ग्रीवारक्षाणि यैस्ते तथा, बद्धो गाढीकरणेन आविद्धः-परिहितो मस्तके विमलो वरचिह्नपट्टो यैस्ते तथा ततः कर्मधारयः; 'गहियाउहपहरणा'-गृहीतान्यायुधानि प्रहरणाय-प्रहारदानाय यैस्ते तथा; अथवाऽऽयुधप्रहरणयोः क्षेप्याक्षेप्यकृतो विशेषः ।

तते णं ते नगरगुत्तिया विजयस्स तक्करस्स पयमग्गमणुगच्छमाणा जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छंति २, मालुयाकच्छयं अणुपविसंति २, विजयं तक्करं ससक्खं सहोढं सगेवेज्जं जीवग्गाहं गिण्हंति

२-श्रीसंघाटकाख्य० श्रेष्ठिपुत्रस्य गवेषणा शबप्राप्तिश्च ।

२, अट्ठिमुट्ठिजाणुकोप्परपहारसंभग्गमहियगत्तं करेंति २, अवउडाबन्धणं करेंति २, देवदिन्नगस्स दारगस्स आभरणं गेण्हंति २, विजयस्स तक्करस्स गीवाए बंधंति २, मालुयाकच्छगाओ पडिनिक्खमंति २, जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छंति २, रायगिहं नगरं अणुपविसंति २, रायगिहे नगरे सिंघाडगतिय-चउक्कचच्चरमहापहपहेसु कसप्पहारे य, लयप्पहारे य, छिवापहारे य, निवाएमाणा २; छारं च, धूलिं च, कयवरं च, उवरिं पक्किरमाणा २; महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वदंति–एस णं देवाणुप्पिया !, विजए नामं तक्करे जाव गिद्धे विव आमिसभक्खी, बालघायए बालमारए; तं नो खलु देवाणुप्पिया !, एयस्स केति राया वा, रायपुत्ते वा, रायमच्चे वा, अवरज्झति एत्थट्ठे अप्पणो सयातिं कम्माइं अवरज्झंति त्तिकट्टु जेणामेव चारगसाला तेणामेव उवागच्छंति २, हडिबंधणं करेंति २, भत्तपाणनिरोहं करेंति २, तिसंझं कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा २ विहरंति; तते णं से धण्णे सत्थवाहे मित्तनातिनियगसयणसंबंधि-परियणेणं सद्धिं रोयमाणे जाव विलवमाणे, देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरस्स महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं निहरणं करेंति २, बहूइं लोतियातिं मयगकिच्चाइं करेंति २, केणइ कालंतरेणं अवगयसोए जाए यावि होत्था । सूत्रम्–४५ ॥ तते णं से धण्णे सत्थवाहे अन्नया कयाइं लहूसयंसि रायावराहंसि संपलत्ते जाए यावि होत्था, तते णं ते नगरगुत्तिया धण्णं सत्थवाहं गेण्हंति २, जेणेव चारगे तेणेव उवागच्छंति २, चारगं अणुपवेसंति २; विजएणं तक्करेणं सद्धिं एगयओ हडिबंधणं करेंति । तते णं सा भद्दा भारिया कल्लं

जाव जलंते विपुलं असणं ४ उवक्खडेति २, भोयणपिंडए करेति २, भोयणाइं पक्खिवति लंछियमुदियं करेइ २, एगं च सुरभिवारिपडिपुन्नं दगवारयं करेति २, पंथयं दासचेडं सद्दावेति २; एवं वदासी-गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया !, इमं विपुलं असणं ४ गहाय चारगसालाए धण्णस्स सत्थवाहस्स उवणेहि; तते णं से पंथए भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे तं भोयणपिंडयं तं च सुरभिवरवारिपडिपुन्नं दगवारयं गेण्हति २, सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमति २, रायगिहे नगरे मज्झंमज्झेणं जेणेव चारगसाला जेणेव धन्ने सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति २, भोयणपडियं ठावेति २, उल्लंछति २ त्ता, भायणाइं गेण्हति २, भायणाइं धोवेति २, हत्थसोयं दलयति २, धण्णं सत्थवाहं तेणं विपुलेणं असण० ४ परिवेसति, तते णं से विजए तक्करे धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी-तुमण्णं देवाणुप्पिया !, मम एयाओ विपुलातो असण० ४ संविभागं करेहि; तते णं से धण्णे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वदासी-अवि याइं अहं विजया ! एयं विपुलं असणं ४ कायाणं वा, सुणगाणं वा दलएज्जा, उक्कुरुडियाए वा णं छड्डेज्जा, नो चेव णं तव पुत्तघायगस्स, पुत्तमारगस्स, अरिस्स, वेरियस्स, पडिणीयस्स, पच्चासित्तस्स एत्तो विपुलाओ असण० ४ संविभागं करेज्जामि; तते णं से धण्णे सत्थवाहे तं विपुलं असणं ४ आहारेति २, तं पंथयं पडिविसज्जेति, तते णं से पंथए दासचेडे तं भोयणपिडगं गिण्हति २, जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव दिसिं पडिगए; तते णं तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स तं विपुलं असणं ४, आहारियस्स समाणस्स उच्चारपासवणे णं उव्वाहित्था, तते णं

से धण्णे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वदासी–एहि ताव विजया ! एगंतमवक्कमामो जेणं अहं उच्चारपासवणं परिट्ठवेमि, तते णं से विज्जए तक्करे धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी–तुब्भं देवाणुप्पिया ! विपुलं असणं ४ आहारियस्स अत्थि उच्चारे वा पासवणे वा ममन्नं देवाणुप्पिया ! इमेहिं बहूहिं कसप्पहारेहि य जाव लयापहारेहि य तण्हाए य छुहाए य परब्भवमाणस्स णत्थि केइ उच्चारे वा पासवणे वा तं छंदेणं तुमं देवाणुप्पिया ! एगंते अवक्कमित्ता उच्चारपासवणं परिट्ठवेति तते णं से धण्णे सत्थवाहे विजएणं तक्करेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठति तते णं से धण्णे सत्थवाहे मुहुत्तंतरस्स बलियतरागं उच्चारपासवणेणं उव्वाहिज्जमाणे विजयं तक्करं एवं वदासी–एहि ताव विजया ! जाव अवक्कमामो, तते णं से विज़ए धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी–जइ णं तुमं देवाणुप्पिया ! ततो विपुलाओ असण० ४ संविभागं करेहि, ततोऽहं तुमेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमामि; ततेणं से धण्णे सत्थवाहे विजयं एवं वदासी–अहन्नं तुब्भं ततो विपुलाओ असण० ४ संविभागं करिस्सामि, तते णं से विजए धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणति, तते णं से विजए धण्णेणं सद्धिं एगंते अवक्कमेति उच्चारपासवणं परिट्ठवेति, आयंते चोक्खे परमसुइभूए तमेव ठाणं उवसंकमित्ता णं विहरति; तते णं सा भद्दा कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं ४ जाव परिवेसेत्ति, तते णं से धण्णे सत्थवाहे विजयस्स तक्करस्स ततो विपुलाओ असण० ४ संविभागं करेति, तते णं से धण्णे सत्थवाहे पंथयं दासचेडं विसज्जेति, तते णं से पंथए भोयणपिडयं गहाय चारगाओ पडिनिक्ख-

मति २, रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गेहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, भद्दं सत्थवाहिणिं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिए ! धण्णे सत्थवाहे तव पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ताओ विपुलाओ असण० ४ संविभागं करेति ॥ सूत्रम्-४६ ॥

'ससक्खं'ति-ससाक्षि ससाक्षिणोऽध्यक्षान् विधायेत्यर्थः। 'सहोढं'ति-समोषं, 'सगेवेज्जं'ति-सह ग्रैवेयकेण-ग्रीवाबन्धनेन यथा भवति तथा गृह्णन्ति, 'जीवग्गाहं गिण्हंति'त्ति-जीवतीति जीवस्तं जीवन्तं गृह्णन्ति, अस्थिमुष्टिजानुकूर्परैस्तेषु वा ये प्रहारास्तैः संभग्नं-मथितं मोटितं-जर्जरितं गात्रं-शरीरं यस्य स तथा तं कुर्वन्ति, 'अवउडगबंधणं'ति-अवझोटनेन-अवमोटनेन कृकाटिकायाः बाह्वोश्च पश्चाद्भागनयनेन बन्धनं यस्य स तथा तं कुर्वन्ति, 'कसप्पहारे य'त्ति-वर्ध्रताडनानि, 'छिव'त्ति-श्लक्ष्णः कषः, 'लत्ता'-कम्बा 'बालघातकः'-प्रहारदानेन, 'बालमारकः'-प्राणवियोजनेन। 'रायमच्चे'त्ति-राजामात्यः, 'अवरज्झइ'त्ति अपराध्यति अनर्थं करोति; 'नन्नत्थ'त्ति-नत्वन्यत्रेत्यर्थः, वाचनान्तरे-त्विदं नाधीयत एव, स्वकानि निरुपचरितानि नोपचारेणात्मनः सम्बन्धीनि, 'लहुस्सगंसि'त्ति-लघुः स्व-आत्मा स्वरूपं यस्य स लघुस्वकः-अल्पस्वरूपः राज्ञि विषये अपराधो राजापराधस्तत्र 'संप्रलप्तः'-प्रतिपादितः पिशुनैरिति गम्यते। 'भोयणपडिय'त्ति भोजनस्थालाद्याधारभूतं वंशमयं भाजनं पिटकं तत् करोति, सज्जीकरोतीत्यर्थः; पाठान्तरेण-'भरेइ'त्ति पूरयति, पाठान्तरेण भोजनपिटके करोति अशनादीनि। 'लाञ्छितं'-रेखादिदानतो, मुद्रितं-कृतमुद्रादिमुद्रं, 'उल्लंछेइ'त्ति-विगतलाञ्छनं करोति, 'परिवेशयति'-भोजयति,-'आवि याइं'-ति-अपिः-संभावने, आइंति भाषायां अरेः-शत्रोर्वैरिणः-

सानुबन्धशत्रुभावस्य प्रत्यनीकस्य-प्रतिकूलवृत्तेः प्रत्यमित्रस्य-वस्तु २ प्रति अमित्रस्य 'धण्णस्स'त्ति-कर्मणि षष्ठी उच्चार-प्रश्रवणं कर्तुं, णमित्यलङ्कारे 'उव्वाहित्थ'त्ति-उद्बाधयति स्म; 'एहि तावे'त्यादि, आगच्छ तावदिति भाषामात्रे हे विजय !, एकान्तं-विजनमपक्रमामो-यामः, 'जेणं'ति-येनाहमुच्चारादि परिष्ठापयामीति 'छंदेणं'ति-अभिप्रायेण यथारुचीत्यर्थः ।

तते णं सा भद्दा सत्थवाही पंथयस्स दासचेडयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ता रुट्ठा जाव मिसिमिसेमाणा धण्णस्स सत्थवाहस्स पओसमावज्जति, तते णं से धण्णे सत्थवाहे अन्नया कयाइं मित्त-नातिनियगसयणसंबंधिपरियणेणं सएण य अत्थसारेणं रायकज्जातो अप्पाणं मोयावेति २, चारगसालाओ पडिनिक्खमति २, जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छति २, अलंकारियकम्मं करेति २, जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति २, अह धोयमट्टियं गेण्हति पोक्खरिणीं ओगाहति २, जलमज्जणं करेति २, ण्हाए कयबलिकम्मे जाव रायगिहं नगरं अणुपविसति २; रायगिहनगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पधारेत्थ गमणाए । तते णं तं धण्णं सत्थवाहं एज्जमाणं पासित्ता रायगिहे नगरे बहवे नियगसेट्ठिसत्थवाहपभितओ आढंति, परिजाणंति, सक्कारेंति, सम्माणेंति; अब्भुट्ठेंति सरीरकुसलं पुच्छंति । तते णं से धण्णे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति २, जाविय से तत्थ बाहिरिया परिसा भवति तं०-दासाति वा, पेस्साति वा, भियगाइ वा भाइल्लगाइ वा; सेवि य णं धण्णं सत्थवाहं एज्जंतं पासति २, पायवडियाए खेमकुसलं पुच्छंति, जावि य से तत्थ अब्भंतरिया परिसा भवति तं०-मायाइ वा, पियाइ वा, भायाति

वा, भगिणीति वा; सावि य णं धण्णं सत्थवाहं एज्जमाणं पासति २, आसणाओ अब्भुट्ठेति २, कंठाकंठियं अवयासिय बाहप्पमोक्खणं करेति; तते णं से धण्णे सत्थवाहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवागच्छति, तते णं सा भद्दा धण्णं सत्थवाहं एज्जमाणं पासति, पासित्ता; णो आढाति, नो परियाणाति, अणाढायमाणी, अपरिजाणमाणी, तुसिणीया परम्मुही संचिट्ठति; तते णं से धण्णे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वदासी-किन्नं तुब्भं देवाणुप्पिए !, न तुट्ठी वा न हरिसे वा नाणंदे वा जं मए सएणं अत्थसारेणं रायकज्जातो अप्पाणं विमोतिए, तते णं सा भद्दा धण्णं सत्थवाहं एवं वदासी-कहन्नं देवाणुप्पिया, मम तुट्ठी वा जाव आणंदे वा भविस्सति जेणं तुमं मम पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ततो विपुलातो असण० ४ संविभागं करेसि, तते णं से धण्णे भद्दं एवं वदासी-नो खलु देवाणुप्पिए !, धम्मोत्ति वा, तवोत्ति वा कयपडिकइया वा, लोगजत्ताति वा, नायएति वा, घाडिएति वा, सहाएति वा, सुहितिवा ततो विपुलातो असण० ४ संविभागे कए नन्नत्थ सरीरचिंताए; तते णं सा भद्दा धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव आसणातो अब्भुट्ठेति कंठाकंठिं अवयासेति खेमकुसलं पुच्छति २ ण्हाया जाव पायच्छित्ता विपुलाति भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरति। तते णं से विजए तक्करे चारगसालाए तेहिं बंधेहि वहेहिं कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए य, छुहाए य, परब्भवमाणे कालमासे कालं किच्चा नरएसु नेरइयत्ताए उववन्ने। से णं तत्थ नेरइए जाते काले कालोभासे जाव वेयणं पच्चणुभवमाणे विहरइ,

से णं ततो उव्वट्टित्ता अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सति; एवामेव जंबू !, जे णं अम्हं निग्गंथो वा, निग्गंथी वा, आयरियउवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता, आगाराओ अणगारियं पव्वतिए समाणे विपुलमणिमुत्तियधणकणगरयणसारेणं लुब्भति, सेविय एवं चेव ॥ सूत्रम्-४२ ॥

'अलंकारियसह'त्ति-यस्यां नापितादिभिः शरीरसत्कारो विधीयते अलङ्कारिककर्म-नखखण्डनादि, दासा-गृहदासीपुत्राः, प्रेष्या-ये तथाविधप्रयोजनेषु नगरान्तरादिषु प्रेष्यन्ते, भृतका-ये आबालत्वात्पोषिताः, 'भाइल्लग'त्ति-ये भागं लाभस्य लभन्ते ते, क्षेमकुशलं-अनर्थानुद्भवानर्थप्रतिघातरूपं, कण्ठे च कण्ठे च गृहीत्वा कण्ठाकण्ठि, यद्यपि व्याकरणे युद्धविषय एवैवंविधोऽव्ययीभाव इष्यते, तथापि-योगविभागादिभिरेतस्य साधुशब्दता दृश्येति; 'अवयासिय'त्ति-आलिङ्ग्य बाष्पप्रमोक्षणं-आनन्दाश्रुजलप्रमोचनम् । 'नायए वे'त्यादि, नायकः-प्रभुर्न्यायदो वा-न्यायदर्शी ज्ञातको वा स्वजनपुत्रक इतिरुपदर्शने वा विकल्पे, 'घाडिय'त्ति-सहचारी सहायः-साहाय्यकारी सुहृद्-मित्रम् । 'बंधेहि य'त्ति-बन्धो रज्ज्वादिबन्धनं, 'वधो' यष्ट्यादिताडनं, कशप्रहारादयस्तु तद्विशेषाः; 'काले कालोभासे'इत्यादि, कालः-कृष्णवर्णः काल एवावभासते द्रष्टॄणां कालो वाऽवभासो दीप्तिर्यस्य सः कालावभासः, इह यावत्करणादिदं दृश्यं, 'गम्भीरलोमहरिसे भीमे उत्तासणए परमकण्हे वण्णेणं, से णं तत्थ निच्चं भीए निच्चं तत्थे निच्चं तसिए निच्चं परमसुहसम्बद्धं नरगं'ति-तत्र गम्भीरो-महान् रोमहर्षो-भयसंभूतो रोमाञ्चो यस्य यतो वा सकाशात् स तथा, किमित्येवमित्याह-'भीमो'-भीष्मः, अत एवोत्रासकारित्वादुत्रासकः, एतदपि कुत इत्याह-परमकृष्णो वर्णेनेति; परां-प्रकृष्टां अशुभसंबद्धां-पापकर्मणोपनीतां; 'अणाइय'मित्यादि,

अनादिकं, 'अणवदग्गं'ति-अनन्तं, 'दीहमद्धं'ति दीर्घाद्धं-दीर्घकालं, दीर्घाध्वं वा-दीर्घमार्गं, चातुरंतं-चतुर्विभागं संसार एव कान्तारं-अरण्यं संसारकान्तारमिति। इतोऽधिकृतं ज्ञातं ज्ञापनीये योजयन्नाह-एवमेव-विजयचौरवदेव 'सारे णं'ति-सारे, णमित्यलङ्कारे, करणे तृतीया वेयं, लुभ्यते-लोभी भवति; 'सेवि एवं चेव'त्ति-सोऽपि प्रव्रजितो विजयवदेव नरकादिकमुक्तरूपं प्राप्नोति।

तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा भगवंतो जातिसंपन्ना २, जाव पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेतिए जाव अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति; परिसा निग्गया धम्मो कहिओ, तते णं तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स बहुजणस्स अंतिए एतमट्ठं सोच्चा णिसम्म इमेतारूवे अज्झत्थिते जाव समुपज्जित्था-एवं खलु भगवंतो जातिसंपन्ना इहमागया इह संपत्ता तं इच्छामि णं थेरे भगवंते वंदामि नमंसामि ण्हाते जाव सुद्धप्पावेसातिं मङ्गल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए पायविहारचारेण जेणेव गुणसिले चेतिए जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छति २, वंदति, नमंसति। तते णं थेरा धण्णस्स विचित्तं धम्ममातिक्खंति, तते णं से धण्णे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा, एवं वदासी-सद्दहामि णं भंते!, निग्गंथे पावयणे जाव पव्वतिए जाव बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता भत्तं पच्चक्खातित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेइ २ त्ता, कालमासे कालं किच्चा, सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने; तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं

ठिती पन्नत्ता, तत्थ णं धण्णस्स देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, से णं धण्णे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं, ठितीक्खएणं, भवक्खएणं; अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति ॥ सूत्रम्-४७ ॥ जहा णं जंबू !, धण्णेणं सत्थवाहेणं नो धम्मोत्ति वा जाव विजयस्स तक्करस्स ततो विपुलाओ असण० ४ संविभागे कए नन्नत्थ सरीरसारक्खणट्ठाए; एवामेव जंबू !, जे णं अम्हं निग्गंथे वा २, जाव पव्वतिए समाणे ववगयण्हाणुम्मद्दणगंधमल्लालंकारविभूसे इमस्स ओरालियसरीरस्स नो वन्नहेउं वा, रूवहेउं वा, विसयहेउं वा, असणं ४ आहारमाहारेति; नन्नत्थ णाणदंसणचरित्ताणं वहणयाए; से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं, समणीणं, सावगाण य, साविगाण य, अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे भवति; परलोएवि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य, कन्नच्छेयणाणि य, नासाछेयणाणि य, एवं हिययउप्पायणाणि य, वसणुप्पाडणाणि य, उल्लंबणाणि य, पाविहिति अणातीयं च णं अणवदग्गं दीहं जाव वीतिवतिस्सति जहा व से धण्णे सत्थवाहे । एवं खलु जंबू !, समणेणं जाव दोच्चस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि ॥ सूत्रम्-४८ ॥ बितीयं अज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

'जहा ण'मित्यादिनाऽपि ज्ञातमेव ज्ञापनीये नियोजितं, 'नन्नत्थ सरीरसारक्खणट्ठाए'त्ति-न शरीरसंरक्षणार्थादन्यत्र तदर्थमेवेत्यर्थः 'जहा व से धण्णे'त्ति-दृष्टान्तनिगमनम् । इह पुनर्विशेषयोजनामिमामभिदधति बहुश्रुताः-इह राजगृहनगरस्थानीयं मनुष्यक्षेत्रं, धन्यसार्थवाहस्थानीयः साधुजीवः, विजयचौरस्थानीयं शरीरं, पुत्रस्थानीयो निरुपमनिरन्तरानन्द-

निबन्धनत्वेन संयमो, भवति ह्यसत्प्रवृत्तिकशरीरात्संयमविघातः, आभरणस्थानीयाः-शब्दादिविषयाः, तदर्थप्रवृत्तं हि शरीरं संयमविघाते प्रवर्तते, हडिबन्धस्थानीयं जीवशरीरयोरविभागेनावस्थानं, राजस्थानीयः कर्मपरिणामः, राजपुरुषस्थानीयाः कर्मभेदाः, लघुस्वकापराधस्थानीया मनुष्यायुष्कबन्धहेतवः, मूत्रादिमलपरिस्थानीयाः प्रत्युपेक्षणादयो व्यापाराः, यतो भक्तादिदानाभावे यथासौ विजयः प्रश्रवणादिव्युत्सर्जनाय न प्रवर्तितवान्, एवं शरीरमपि निरशनं प्रत्युपेक्षणादिषु न प्रवर्तते; पान्थकस्थानीयो मुग्धसाधुः, सार्थवाहीस्थानीया आचार्याः; ते हि विवक्षितसाधुं भक्तादिभिः शरीरमुपष्टम्भयन्तं साध्वन्तरादुपश्रुत्योपालम्भयन्ति, विवक्षितसाधुनैव निवेदिते वेदनावैयावृत्त्यादिके भोजनकारणे परितुष्यन्ति चेति, पठ्यते च-"सिवसाहणेसु आहारविरहिओ जं न वट्टए देहो। तम्हा धण्णोव विजयं साहू तं तेण पोसेज्जा ॥"

'एवं खल्वि'त्यादि निगमनं' इतिशब्दः समाप्तौ ब्रवीमीति पूर्ववदेवेति ॥ ज्ञाताधर्म्मकथायां विवरणतो द्वितीयमध्ययनं समाप्तमिति ।



सा० १ शिवसाधनेषु आहारविरहितो यन्न प्रवर्त्तते देहः। तस्मात् धन्य इव विजयं साधुस्तत् तेन पोषयेत् ॥ १ ॥

॥ ३–अण्डकाख्यं ज्ञाताध्ययनम् ॥

अथ तृतीयमण्डकाख्यमध्ययनं, तस्य च पूर्वेण सहायं सम्बन्धः–अनन्तराध्ययने साभिष्वङ्गस्य निरभिष्वङ्गस्य च दोषगुणानभिदधता चारित्रशुद्धिर्विधेयतयोपदिष्टा, इह तु शङ्कितस्य निःशङ्कस्य च तानभिदधता संयमशुद्धेरेव हेतुभूता सम्यक्त्वशुद्धिर्विधेयतयोपदिश्यते, इत्येवं संबन्धस्यास्येदमुपक्षेपसूत्रम्

*जति णं भंते !, समणेणं भगवया महावीरेणं दोच्चस्स अज्झयणस्स णायाधम्मकहाणं अयमट्ठे पन्नत्ते, तइअस्स अज्झयणस्स केअट्ठे पण्णत्ते ?; *एवं खलु जंबू !, तेणं कालेणं २, चंपा नामं नयरी होत्था, वन्नओ; तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए सुभूमिभाए नामं उज्जाणे होत्था, सव्वोउय० सुरम्मे नंदणवणे इव सुहसुरभिसीयलच्छायाए समणुबद्धे, तस्स णं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उत्तरओ एगदेसंमि मालुयाकच्छए वन्नओ, तत्थ णं एगा वरमऊरी दो पुट्ठे परियागते पिट्ठुंडीपंडुरे निव्वणे निरुवहए भिन्नमुट्ठिप्पमाणे मऊरीअंडए पसवति२, सतेणं पक्खवाएणं सारक्खमाणी संगोवमाणी संविट्ठे-माणी विहरति; तत्थ णं चंपाए नयरीए दुवे सत्थवाहदारगा परिवसंति, तं०–जिणदत्तपुत्ते य सागरदत्तपुत्ते य, सहजायया सहवड्डियया सहपंसुकीलियया सहदारदरिसी अन्नमन्नमणुरत्तया अन्नमन्नमणुव्वयया अन्न-

१ °न व्याख्यायते त० ख। * * एतदन्तर्गतः पाठः 'ख' प्रतौ नास्ति। २ °मयुरी. ख।

मन्नच्छंदाणुवत्तया अन्नमन्नहियतिच्छियकारया अन्नमन्नेसु गिहेसु किचाइं करणिज्जाइं पचणुभवमाणा विहरन्ति ॥ सूत्रम्-५०) ॥

'जइ ण'मित्यादि, 'एवं खल्वि'त्यादि, प्रकृताऽध्ययनसूत्रं च समस्तं कण्ठयं नवरं, 'सव्वोउए'त्ति-सर्वे ऋतवो-वसन्तादयः, तत्संपाद्यकुसुमादिभावानां वनस्पतीनां समुद्भवात् यत्र तत्तथा; क्वचित्-'सव्वोउय'त्ति दृश्यते, तेन च 'सवोउयपुप्फफलसमिद्धे इत्येतत्सूचितं, अत एव सुरम्यं नन्दनवनं-मेरोर्द्वितीयवनं तद्वत् शुभा सुखा वा सुरभिः शीतला च या छाया तया समनुबद्धं-व्याप्तं 'दो पुट्ठे'त्यादि, द्वे-द्विसंख्ये पुष्टे-उपचिते पर्यायेण-प्रसवकालक्रमेणागते पर्यायागते प्राकृतत्वेन यकारलोपात् परियागएत्ति भणितं, पिष्टस्य-शालिलोट्टस्य उण्डी-पिण्डी पिष्टोण्डी तद्वत् पाण्डुरे ये ते तथा, निर्व्रणे-व्रणकै रहिते निरुपहते-वातादिभिरनुपहते भिन्ना-मध्यशुषिरा या मुष्टिः सा प्रमाणं ययोः ते भिन्नमुष्टिप्रमाणे मयूर्या अण्डके मयूराण्डके न कुर्कुट्या अण्डके प्रसूते-जनयति, संरक्षयन्ती-पालयन्ती, सङ्गोपायन्ती-स्थगयन्ती, संवेष्टयन्ती-पोषयन्ती, सहजातौ जन्मदिनस्यैकत्वात् सहवृद्धौ-समेतयोर्वृद्धिमुपगतत्वात् सहपांशुक्रीडितकौ समानबालभावत्वात् सहदार-दर्शिनौ समानयौवनारम्भत्वात् सहैव-एकावसर एव जातकामविकारतया दारान्-स्वकीये२, भार्ये तथाविधदृष्टिभिर्दृष्टवन्तौ, अथवा-सह-सहितौ सन्तौ अन्योऽन्यगृहयोर्द्वारे पश्यतः तत्प्रवेशनेनेत्येवंशीलौ यौ तौ तथा, एतच्चानन्तरोक्तं स्वरूपमन्योऽन्यानुरागे सति भवतीत्याह-अन्योऽन्यमनुरक्तौ-स्नेहवन्तौ अत एवान्योऽन्यमनुव्रजत इत्यन्योऽन्यानुव्रजौ, एवं छन्दोऽनुवर्त्तकौ-अभिप्रायानुवर्त्तिनौ एवं हृदयेप्सितकारकौ, 'किचाइं करणीयाइं'ति-कर्त्तव्यानि यानि प्रयोजनानीत्यर्थः; अथवा-

कृत्यानि—नैत्यिकानि करणीयानि—कादाचित्कानि 'प्रत्यनुभवन्तौ'—विदधानौ ।

ततें णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अन्नया कयाई एगतओ सहियाणं समुवागयाणं सन्निसन्नाणं सन्निविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—जन्नं देवाणुप्पिया !, अम्हं सुहं वा, दुक्खं वा, पव्वज्जा वा, विदेसगमणं वा, समुप्पज्जति तन्नं अम्हेहिं एगयओ समेच्चा णित्थरियव्वं तिकट्टु अन्नमन्नमेयारूवं संगारं पडिसुणेंति२, सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ॥ सूत्रम्–५१ ॥ तत्थ णं चंपाए नयरीए देवदत्ता नामं गणिया परिवसइ, अड्ढा जाव भत्तपाणा, चउसट्ठिकलापंडिया, चउसट्ठिगणियागुणोववेया, अउणत्तीसं विसेसे रममाणी एक्कवीसरतिगुणप्पहाणा, बत्तीसपुरिसोवयारकुसला, णवंगसुत्तपडिबोहिया, अट्ठारसदेसीभासाविसारया, सिंगारागारचारुवेसा, संगयगयहसिय० ऊसियज्झया सहस्सलंभा विदिन्नछत्तचामरबालवियणिया कन्नीरहप्पयाया यावि होत्था, बहूणं गणियासहस्साणं आहेवच्चं जाव विहरति; ततें णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अन्नया कदाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि जिमियभुत्तुत्तरागयाणं समाणाणं आयन्ताणं चोक्खाणं परमसुतिभूयाणं सुहासणवरगयाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया !, कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं ४ उवक्खडावेत्ता, तं विपुलं असणं ४ धूवपुप्फगंधवत्थं गहाय देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणाणं विहरित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २, कल्लं

पाउब्भूए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति २; एवं वदासी-गच्छह णं देवाणुप्पिया !, विपुलं असणं ४ उवक्खडेह २, तं विपुलं असणं ४ धूवपुप्फं गहाय जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव णंदापुक्खरिणी तेणामेव उवागच्छह २, नंदापुक्खरिणीतो अदूरसामंते थूणामंडवं आहणह २, आसितसम्मज्जितोवलित्तं सुगंध जाव कलियं करेह २, अम्हे पडिवालेमाणा २ चिट्ठह जाव चिट्ठंति; तए णं सत्थवाहदारगा दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति २, एवं वदासी-खिप्पामेव लहुकरणजुत्तजोतियं समखुरवालिहाणं समलिहियतिक्खग्गसिंगएहिं रययामयघंटसुत्तरज्जुपवरकंचणखचियणत्थपग्गहोवग्गहितेहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिरयणकंचणघंटियाजालपरिक्खित्तं पवरलक्खणोववेयं जुत्तमेव पवहणं उवणेह, तेऽवि तहेव उवणेंति; तते णं से सत्थवाहदारगा ण्हाया जाव सरीरा पवहणं दुरूहंति २, जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहं तेणेव उवागच्छंति २ त्ता, पवहणातो पच्चोरुहति २, देवदत्ताए गणियाए गिहं अणुपविसेंति; तते णं सा देवदत्ता गणिया सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासति २, हट्ठ २ आसणाओ अब्भुट्ठेति २, सत्तट्ठ पदातिं अणुगच्छति २, ते सत्थवाहदारए एवं वदासी-संदिसंतु णं देवाणुप्पिया !, किमिहागमणप्पतोयणं ?; तते णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्तं गणियं एवं वदासी-इच्छामो णं देवाणुप्पिए !, तुम्हेहिं सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरित्तए, तते णं सा देवदत्ता तेसिं सत्थवाहदारगाणं एतमट्ठं पडिसुणेति २, ण्हाया कयकिच्चा किं ते पवर जाव सिरिसमाणवेसा जेणेव

सत्थवाहदारगा तेणेव समागया; तते णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं जाणं दुरूहंति २, चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति २, पवहणातो पच्चोरुहंति २, नंदापोक्खरिणीं ओगाहिंति २, जलमज्जणं करेंति जलकीडं करेंति ण्हाया देवदत्ताए सद्धिं पच्चुत्तरंति जेणेव थूणामंडवे तेणेव उवागच्छंति २, थूणामंडवं अणुपविसंति २, सव्वालंकारविभूसिया आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया देवदत्ताए सद्धिं तं विपुलं असणं ४ धूवपुप्फगंधवत्थं आसाएमाणा, वीसाएमाणा, परिभुंजेमाणा, एवं च णं विहरंति; जिमियभुत्तुत्तरागयावि य णं समाणा देवदत्ताए सद्धिं विपुलाइं माणुस्सगाइं कामभोगाइं भुंजमाणा विहरंति ॥ सूत्रम्-५२ ॥

'एगउ'त्ति-क्वचिदेकस्मिन् देशे सहितयोः-मिलितयोः समुपागतयोरेकतरस्य गृहे सन्निषण्णयोः-उपविष्टयोः संनिविट्टयोः-संहततया स्थिरसुखासनतया च व्यवस्थितयोर्मिथःकथा-परस्परकथा तस्यां समुल्लापो-जल्पो यः स तथा समुदपद्यत, 'समेच्च' त्ति-समेत्य, पाठान्तरे-'संहिच्च'त्ति संहत्य सह संभूय, 'संगारं'त्ति-सङ्केतं, 'पडिसुणेंति'त्ति-अभ्युपगच्छतः। 'चउसट्ठी'-त्यादि, चतुःषष्टिकलाः गीतनृत्यादिकाः स्त्रीजनोचिता वात्स्यायनप्रसिद्धाः, चतुःषष्टिगणिकागुणाः आलिङ्गनादिकानामष्टानां क्रियाविशेषाणां प्रत्येकमष्टभेदत्वात्, एतेऽपि वात्स्यायनप्रसिद्धाः; एवं विशेषादयोऽपि, 'नवंगसुत्तपडिबोहिय'-त्ति प्राग्वत् नवयौवनेति भावः। 'संगयगयहसिय' इत्यनेनेदं सूचितं, 'संगयगयहसियभणियविहियविलाससललियसंला-

१ ०ति, २, भाण्हा अ।

वनिउणजुत्तोवयारकुसला' व्याख्या स्वस्य पूर्ववत्, वाचनान्तरे-त्विदमधिकं 'सुंदरथणजघणवयणचरणनयणलावण्णरूवजोवण-विलासकलिया' उच्छ्रितध्वजा सहस्रैर्भाव्यां लाभो यस्याः सा तथा, वितीर्णानि राज्ञा छत्रचामराणि वालवीजनिका च-चामरविशेषो यस्याः सा तथा, कर्णीरथः-प्रवहणविशेषस्तेन प्रयातं-गमनं यस्याः सा तथा कर्णीरथो हि ऋद्धिमतां केषां-चिदेव भवतीति सोऽपि तस्या अस्तीत्यतिशयप्रतिपादनार्थोऽपिशब्द इति, स्थूणाप्रधानो वस्त्राच्छादितो मण्डपः स्थूणामण्डपः 'आहणह'त्ति-निवेशयतेति भावः, 'लघुकरणे'त्यादि, लघुकरणं गमनादिका शीघ्रक्रिया दक्षत्वमित्यर्थः तेन युक्ता ये पुरुषास्तैर्योजितं-यन्त्रयूपादिभिः सम्बन्धितं यत्तत्तथा प्रवहणमिति सम्बन्धः, पाठान्तरेण-'लहुकरणजुत्तएहिं'ति तत्र लघुकरणेन-दक्षत्वेन युक्तौ-योजितौ यौ तौ तथा ताभ्यां, ककार इह स्वार्थिकः, गोयुवभ्यां युक्तमेव प्रवहणमुपनयतेति सम्बन्धः, समखुरवालधानौ-समानशफपुच्छौ समे-तुल्ये लिखिते-शस्त्रेणापनीतबाह्यत्वके तीक्ष्णे शृङ्गे ययोस्तौ तथा, ततः कर्मधारयः, ताभ्यां; वाचनान्तरे-'जंबूणयमयकलावजुत्तपइविसिट्ठएहिं' जम्बूनदमयौ-सुवर्णमयौ कलापौ-कण्ठाभरणविशेषौ योक्त्रे च-यूपेन सह कण्ठसंयमनरज्जू प्रतिविशिष्टे ययोस्तौ च तथा ताभ्यां, रजतमयौ-रूप्यविकारौ घण्टे ययोस्तौ तथा, सूत्ररज्जुके-कार्पासिकसूत्रदवरकमय्यौ वरकनकखचिते ये नस्ते-नासिकान्यस्तरज्जुके तयोः प्रग्रहेण-रश्मिना अवगृहीतकौ-बद्धौ यौ तथा ततः कर्मधारयोऽतः ताभ्यां, नीलोत्पलकृतापीडाभ्यां आपीडः,-शेखरः, प्रवरगोयुवभ्यां, नानामणिरत्न-काञ्चनघण्टिकाजालेन परिक्षिप्तं प्रवरलक्षणोपेतं, वाचनान्तरेऽधिकमिदं 'सुजातजुगजुत्तउज्जुगपसत्थसुविरइयनिम्मियं'ति तत्र सुजातं-सुजातदारुमयं युगं-यूपः युक्तं-संगतं ऋजुकं-सरलं प्रशस्तं-शुभं सुविरचितं-सुघटितं निर्म्मितं-निवेशितं यत्र तत्तथा,

युक्तमेव-सम्बद्धमेव प्रवहणं-यानं परिदक्षगन्त्रीत्यर्थः, 'किन्ते जाव सिरी' त्यादि व्याख्यातं धारिणीवर्णके।

तते णं ते सत्थवाहदारगा पुव्वावरण्हकालसमयंसि देवदत्ताए गणियाए सद्धिं थूणामंडवाओ पडिनिक्खमंति २, हत्थसंगेल्लीए सुभूमिभागे बहूसु आलिघरएसु य, कयलीघरेसु य, लयाघरएसु य, अच्छणघरएसु य; पेच्छणघरएसु य, पसाहणघरएसु य, मोहणघरएसु य, सालघरएसु य, जालघरएसु य, कुसुमघरएसु य; उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणा विहरंति ॥ सूत्रम्-५३ ॥ तते णं ते सत्थवाहदारया जेणेव से मालुयाकच्छए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं सा वणमऊरी ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासति २ भीया तत्था॰ महया २ सद्देणं केकारवं विणिम्मुयमाणी २, मालुयाकच्छाओ पडिनिक्खमति २, एगंसि रुक्खमालयंसि ठिचा ते सत्थवाहदारए मालुयाकच्छयं च अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणी २; चिट्ठति। तते णं ते सत्थवाहदारगा अण्णमन्नं सद्दावेंति २, एव वदासी-जहा णं देवाणुप्पिया !, एसा वणमऊरी अम्हे एज्जमाणा पासित्ता भीता तत्था तसिया उव्विग्गा पलाया महता २, सद्देणं जाव अम्हे मालुयाकच्छयं च पेच्छमाणी २, चिट्ठति तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं तिकट्टु मालुयाकच्छयं अंतो अणुपविसंति २, तत्थ णं दो पुट्ठे परियागये जाव पासित्ता अन्नमन्नं सद्दावेंति २; एवं वदासी-सेयं खलु देवाणुप्पिया !, अम्हे इमे वणमऊरीअंडए साणं जाइमंताणं कुक्कुडियाणं अंडएसु अ पक्खिवावेत्तए, तते णं ताओ जातिमन्ताओ

१ कुजालगसि. अ।

कुक्कुडियाओ ताए अंडए सए य अंडए सएणं पक्खवाएणं सारक्खमाणीओ संगोवेमाणीओ विहरिस्संति, तते णं अम्हं एत्थं दो कीलावणगा मऊरपोयगा भविस्संति त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति २, सए सए दासचेडे सद्दावेंति २; एवं वदासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया !, इमे अंडए गहाय सगाणं जाइमंताणं कुक्कुडीणं अंडएसु पक्खिवह जाव तेवि पक्खिवेंति, तते णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुभवमाणा विहरित्ता तमेव जाणं दुरूढा समाणा जेणेव चंपानयरीए जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छंति २, देवदत्ताए गिहं अणुपविसंति २, देवदत्ताए गणियाए विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति २, सक्कारेंति २, सम्माणेंति २, देवदत्ताए गिहातो पडिनिक्खमंति २; जेणेव सयाइं २, गिहाइं तेणेव उवागच्छंति २, सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ॥ सूत्रम्-५४ ॥ तते णं जे से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए से णं कल्लं जाव जलंते जेणेव से वणमऊरीअंडए तेणेव उवागच्छति २, तंसि मऊरीअंडयंसि संकिते कंखिते वितिगिच्छासमावन्ने भेयसमावन्ने कलुससमावन्ने किन्नं ममं एत्थ किलावणमऊरीपोयए भविस्सति उदाहु णो भविस्सइ त्तिकट्टु, तं मउरीअंडयं अभिक्खणं २, उव्वत्तेति, परियत्तेति, आसारेति, संसारेति, चालेति, फंदेइ, घट्टेति, खोभेति, अभिक्खणं २, कन्नमूलंसि टिट्टियावेति; तते णं से मऊरीअंडए अभिक्खणं २, उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्टियावेज्जमाणे पोचडे जाते यावि होत्था; तते णं से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए अन्नया कयाइं

जेणेव से मऊरअंडए तेणेव उवागच्छति २ तं मऊरीअंडयं पोच्चडमेव पासति २, अहो णं ममं एस कीलावणए मऊरीपोयए ण जाए त्तिकट्टु ओहतमण जाव झियायति। एवामेव समणाउसो !, जो अम्हं निग्गंथो वा, निग्गंथी वा, आयरियउवज्झयाणं अंतिए पव्वतिए समाणे पंचमहव्वएसु जाव छज्जीवनिकाएसु निग्गंथे पावयणे संकिते जाव कलुससमावन्ने से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं सावगाणं साविगाणं हीलणिज्जे, निंदणिज्जे, खिंसणिज्जे, गरहणिज्जे, परिभवणिज्जे, परलोएविय णं आगच्छति बहूणि दंडणाणि य जाव अणुपरियट्टए ॥ सूत्रम्-५५ ॥ तते णं से जिणदत्तपुत्ते जेणेव से मऊरीअंडए तेणेव उवागच्छति२, तंसि मउरीअंडयंसि निस्संकिते, सुवत्तए णं मम एत्थ कीलावणए मऊरीपोयए भविस्सती तिकट्टु तं मऊरीअंडयं अभिक्खणं२, नो उव्वत्तेत्ति जाव नो टिट्टियावेति; तते णं से मउरीअंडए अणुव्वत्तिज्जमाणे जाव अटिट्टियाविज्जमाणे तेणं कालेणं तेणं समएणं उब्भिन्ने मऊरिपोयए एत्थ जाते, तते णं से जिणदत्तपुत्ते तं मऊरपोययं पासति२ हट्ठ तुट्ठे मऊरपोसए सद्दावेति २, एवं वदासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया !, इमं मऊरपोययं बहूहिं मऊरपोसणपाउग्गेहिं दव्वेहिं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेह नट्टुल्लगं च सिक्खावेह; तते णं ते मऊरपोसगा जिणदत्तस्स पुत्तस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति २, तं मउरपोययं गेण्हंति जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति २, तं मयूरपोयगं जाव नट्टुल्लगं सिक्खावेंति। तते णं से मऊरपोयए उम्मुक्कबालभावे विन्नाय० जोव्वणग०

लक्खणवंजण० माणुम्माणप्पमाणपडिपुन्न० पक्खपेहुणकलावे विचित्तपिच्छे सतचंदए नीलकंठए नच्चणसीलए एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए अणेगातिं नट्टुल्लगसयातिं केकारवसयाणि य करेमाणे विहरति, तते णं ते मऊरपोसगा तं मऊरपोयगं उम्मुक्क जाव करेमाणं पासित्तार, तं मऊरपोयगं गेण्हंतिर, जिणदत्तस्स पुत्तस्स उवणेंति, तते णं से जिणदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए मउरपोयगं उम्मुक्क जाव करेमाणं पासित्ता हट्ठतुट्ठे तेसिं विपुलं जीवियारिहं पीतिदाणं जाव पडिविसज्जेइ, तए णं से मऊरपोतए जिणदत्तपुत्तेणं एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए णंगोलाभंगसिरोधरे सेयावंगे गिण्हइ अवयारियपइन्नपक्खे उक्खित्तचंदकातियकलावे केक्काइयसयाणि विमुच्चमाणे णच्चइ, तते णं से जिणदत्तपुत्ते तेणं मउरपोयएणं चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु सतिएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य पणिएहि य जयं करेमाणे विहरति। एवामेव समणाउसो !, जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वतिए समाणे पंचसु महव्वएसु छसु जीवनिकाएसु निग्गंथे पावयणे निस्संकिते निक्कंखिए निव्वितिगिच्छे से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं समणीणं जाव वीतिवतिस्सति। एवं खलु जंबू !, समणेणं० णायाणं तच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्तेत्ति बेमि ॥ सूत्रम्-५६ ॥ तच्चं नायज्झयणं समत्तं ॥ ३ ॥

'हत्थसंगेल्लीए'त्ति-अन्योऽन्यं हस्तावलम्बनेन, 'आलिघरएसु य कयलिघरएसु य'-आलीकदल्यौ-वनस्पतिविशेषौ, 'लताघरएसु य' लताः-अशोकादिलताः 'अच्छणघरएसु य'-अच्छणंति-आसनं, 'पेच्छणघरएसु य'-प्रेक्षणं-प्रेक्षणकं,

'पसाहणघरएसु य'–प्रसाधनं–मण्डनं, 'मोहणघरएसु य'–मोहनं-निधुवनं, 'सालघरएसु य'–सालाः-शाखाः, अथवा–शाला–वृक्षविशेषाः, 'जालघरएसु य'–जालगृहं–जालकान्वितं, 'कुसुमघरएसु य'–कुसुमप्रायवनस्पतिगृहेष्वित्यर्थः, क्वचित्कदलीगृहादिपदानि यावच्छब्देन सूच्यन्त इति, शङ्कितः–किमिदं निष्पत्स्यते न वेत्येवं विकल्पवान् काङ्क्षितः–तत्फलाकाङ्क्षावान् कदा निष्पत्स्यते इतो विवक्षितं फलमित्यौत्सुक्यवानित्यर्थः, विचिकित्सितः–जातेऽपीतो मयूरपोतेऽतः, किं मम क्रीडालक्षणं फलं भविष्यति न वेत्येवं फलं प्रति शङ्कावान्; किमुक्तं भवति ?,–भेदसमापन्नो मतेर्द्वैधाभावं प्राप्तः सद्भावासद्भावविषयविकल्पव्याकुलित इति भावः, कलुषसमापन्नो–मतिमालिन्यमुपगतः, एतदेव लेशत आह–'किन्न'मित्यादि, उद्वर्तयति–अधोदेशस्योपरिकरणेन परिवर्तयति–तथैव पुनः स्थापनेन 'आसारयति'–ईषत्स्वस्थानत्याजनेन, 'संसारयति'–पुनरीषत्स्वस्थानात् स्थानान्तरनयनेन चालयति–स्थानान्तरनयनेन स्पन्दयति–किंचिच्चलनेन, घट्टयति–हस्तस्पर्शनेन, क्षोभयति–ईषद्भूमिमुत्कीर्य तत्प्रवेशेन, 'कण्णमूलंसि'त्ति–स्वकीयकर्णसमीपे धृत्वा, 'टिट्टियावेति'–शब्दायमानं करोति, 'पोचडं'ति–असारं, हीलनीयो गुरुकुलाद्युद्धट्टनतः निन्दनीयः कुत्सनीयो–मनसा खिंसनीयो–जनमध्ये गर्हणीयः–समक्षमेव च परिभवनीयोऽनभ्युत्थानादिभिः, मयूरपोषका ये मयूरान् पुष्णन्ति । 'नट्टुल्लगं'ति–नाट्यं, 'विन्नाये'त्यादौ 'विन्नाय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते लक्खणवंजणगुणोववेए' इत्येवं दृश्यं, मानेन–विष्कम्भतः उन्मानेन–बाहल्यतः प्रमाणेन च–आयामतः परिपूर्णौ पक्षौ 'पेहुणकलावि'त्ति–मयूराङ्गकलापश्च यस्य स तथा, विचित्राणि पिच्छानि शतसंख्याश्च चन्द्रका यस्य स तथा, वाचनान्तरे विचित्राः–पिच्छेष्ववसक्ताः संबद्धाश्चन्द्रका यस्य स विचित्रपिच्छावसक्तचन्द्रकः नीलकण्ठको

नर्त्तनशीलकः चप्पुटिका-प्रतीता केकायितं-मयूराणां शब्दः एकस्यां चप्पुटिकायां कृतायां सत्यां 'णंगोलाभंगसिरोहरि'त्ति-लाङ्गुलाभङ्गवत्-सिंहादिपुच्छवक्रीकरणमिव शिरोधरा-ग्रीवा यस्य स तथा, स्वेदापन्नो-जातस्वेदः श्वेतापाङ्गो वा सितनेत्रान्तः अवतारितौ-शरीरात्पृथक्कृतौ प्रकीर्णौ-विकीर्णपिच्छौ पक्षौ यस्य स तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः; उत्क्षिप्तः-ऊर्द्ध्वीकृतश्चन्द्रकादिकः-चन्द्रकप्रभृतिकमयूराङ्गकविशेषोपेतश्चन्द्रकै रचितैर्वा कलापः-शिखण्डो येन स तथा, केकायितशतं-शब्दविशेषशतं, 'पणिएहिं'ति-पणितैः-व्यवहारैर्होडादिभिरित्यर्थः; 'एवमेवे'त्यादि उपनयवचनमिति, भवन्ति चात्र गाथाः-
'जिणवरभासियभावेसु भावसच्चेसु भावओ मइमं। नो कुज्जा संदेहं संदेहोऽणत्थहेउत्ति ॥ १ ॥ निस्संदेहत्तं पुण गुणहेउं जं तओ तयं कज्जं । एत्थं दो सिट्ठिसुया अंडयगाही उदाहरणं ॥ २ ॥ कत्थइ मइदुब्बलेण तव्विहायरियविरहओ वा वि । नेयगहणत्तणेणं च नाणावरणोदएणं ॥ ३ ॥ हेऊदाहरणासंभवे य सइ सुट्ठु जं न बुज्झिज्जा । सव्वन्नुमयमवितहं तहावि इह चिंतए मइमं ॥ ४ ॥ अणुवकयपराणुग्गहपरायणा जं जिणा जगप्पवरा । जियरागदोसमोहा य णन्नहावाइणो तेण ॥ ५ ॥"

विवरणतः समाप्तमिदं तृतीयमध्ययनं ॥

---

१ सा. जिनवरभाषितेषु भावेषु भावसत्येषु भावतो मतिमान् । न कुर्यात् संदेहं संदेहोऽनर्थहेतुरिति ॥ १ ॥ निस्संदेहत्वं पुनर्गुणहेतुर्यत्तस्तत्कत् कार्यं अत्र द्वौ श्रेष्ठिसुतौ अण्डकग्राहिणावुदाहरणं ॥ २ ॥ क्वचित् मतिदौर्बल्येन तद्विधाचार्यविरहतो वापि । ज्ञेयगहनत्वेन ज्ञानावरणोदयेन च ॥ ३ ॥ हेतूदाहरणासंभवे च सति सुष्ठु यन्न बुध्येत । सर्वज्ञमतवितथं तथापि इति चिन्तयेत् मतिमान् ॥ ४ ॥ अनुपकृतपरानुग्रहपरायणा यद् जिना जगत्प्रवराः । जितरागद्वेषमोहाश्च नान्यथावादिनस्तेन ॥ ५ ॥

॥ ४-श्रीकूर्माख्यं ज्ञाताध्ययनम् ॥

अथ कूर्माभिधानं चतुर्थमध्ययनं विव्रियते, अस्य चायं पूर्वेण सहाभिसम्बन्धः—अनन्तराध्ययने प्रवचनार्थेषु शङ्किताशङ्कितयोः प्राणिनोर्दोषगुणावुक्ताविह तु पञ्चेन्द्रियेषु गुप्तागुप्तयोस्तावेवाभिधीयेते इत्येवंसम्बन्धस्यास्येदमुपक्षेपादिसूत्रम्—

जति णं भंते !, समणेणं भगवया महावीरेणं नायाणं तच्चस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, चउत्थस्स णं णायाणं के अट्ठे पन्नत्ते ?; एवं खलु जंबू !, तेणं कालेणं २, वाणारसी नामं नयरी होत्था, वन्नओ; तीसे णं वाणारसीए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभागे, गंगाए महानदीए, मयंगतीरद्दहे, नामं दहे होत्था; अणुपुव्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजले, [अच्छविमलसलिलपलिच्छन्ने, संछन्नपत्तपुप्फपलासे,] बहुउप्पलपउमकुमुयनलिणसुभगसोगंधियपुंडरीयमहापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तकेसरपुप्फोवचिए, पासादीए ४, तत्थ णं बहूणं मच्छाण य कच्छभाण य गाहाण य मगराण य सुंसुमाराण य सइयाण य साहस्सियाण य सयसाहस्सियाण य जूहाइं निब्भयाइं निरुव्विग्गाइं सुहंसुहेणं अभिरममाणगाति २ विहरंति, तस्स णं मयंगतीरद्दहस्स अदूरसामंते एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए होत्था वन्नओ, तत्थ णं दुवे पावसियालगा परिवसंति, पावा चंडा, रोद्दा, तल्लिच्छा, साहसिया, लोहितपाणी, आमिसत्थी, आमिसाहारा, आमिसप्पिया, आमिसलोला, आमिसं गवेसमाणा, रत्तिं वियालचारिणो, दिया पच्छन्नं चावि, चिट्ठंति;

तते णं ताओ मयंगतीरद्दहातो अन्नया कदाइं सूरियंसि चिरत्थमियंसि लुलियाए संझाए पविरलमाणुसंसि णिसंतपडिणिसंतंसि समाणंसि दुवे कुम्मगा आहारत्थी आहारं गवेसमाणा सणियं २, उत्तरंति; तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं सव्वतो समंता परिघोलेमाणा २, वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति; तयणंतरं च णं ते पावसियालगा आहारत्थी जाव आहारं गवेसमाणा मालुयाकच्छयाओ पडिनिक्खमंति २ त्ता, जेणेव मयंगतीरे दहे तेणेव उवागच्छंति तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं परिघोलेमाणा २, वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति; तते णं ते पावसियाला ते कुम्मए पासंति २, जेणेव ते कुम्मए तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तते णं ते कुम्मगा ते पावसियालए एज्जमाणे पासंति २, भीता तत्था तसिया उव्विग्गा संजातभया हत्थे य पादे य गीवाए य सएहिं २, काएहिं साहरंति २, निचला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति; तते णं ते पावसियालया जेणेव ते कुम्मगा तेणेव उवागच्छंति २ ते कुम्मगा सव्वतो समन्ता उव्वत्तेंति, परियत्तेंति, आसारेंति, संसारेंति चालेंति, घट्टेंति, फंदेंति, खोभेंति; नहेहिं आलुंपंति, दंतेहि य अक्खोडेंति, नो चेव णं संचाएंति तेसिं कुम्मगाणं सरीरस्स आबाहं वा, पबाहं वा, वाबाहं वा, उप्पाएत्तए छविच्छेयं वा करेत्तए; तते णं ते पावसियालया एए कुम्मए दोच्चंपि तच्चंपि सव्वतो समंता उव्वत्तेंति जाव नो चेव णं संचाएन्ति करेत्तए, ताहे संता तंता परितंता निव्विन्ना समाणा सणियं २, पच्चोसक्केंति, एगंतमवक्कमंति,

१ कयाइं अ ।

निच्चला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति; तत्थ णं एगे कुम्मगे ते पावसियालए चिरंगते दूरंगए जाणित्ता सणियं २, एगं पायं निच्छुभति; तते णं ते पावसियाला तेणं कुम्मएणं सणियं २ एगं पायं नीणियं पासंति २, ताए उक्किट्ठाए गईए सिग्घं चवलं तुरियं चंडं जतिणं वेगितं जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छंति २, तस्स णं कुम्मगस्स तं पायं नखेहिं आलुंपंति, दंतेहिं अक्खोडेंति, ततो पच्छा मंसं च सोणियं च आहारेंति २, तं कुम्मगं सव्वतो समंता उव्वत्तेंति जाव नो चेव णं संचाइन्ति करेत्तए ताहे दोच्चंपि अवक्कमंति एवं चत्तारिवि पाया जाव सणियं २, गीवं णीणेति, तते णं ते पावसियालगा तेणं कुम्मएणं गीवं णीणियं पासंति २, सिग्घं चवलं ४ नहेहिं दंतेहिं कवालं विहाडेंति २, तं कुम्मगं जीवियाओ ववरोवेंति २ मंसं च सोणियं च आहारेंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा २, आयरियउवज्झायाणं अंतिए पव्वतिए समाणे पंच(से) इंदिया अगुत्ता भवंति से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४ हीलणिज्जे परलोगेऽविय णं आगच्छति बहूणं दंडणाणं जाव अणुपरियट्टति, जहा से कुम्मए अगुत्तिंदिए, तते णं ते पावसियालगा जेणेव से दोच्चए कुम्मए तेणेव उवागच्छंति २ तं कुम्मगं सव्वतो समंता उव्वत्तेंति जाव दंतेहिं अक्खुडेंति जाव करेत्तए, तते णं ते पावसियालगा दोच्चंपि तच्चंपि जाव नो संचाएन्ति तस्स कुम्मगस्स किंचि आबाहं वा विबाहं वा जाव छविच्छेयं वा करेत्तए ताहे संता तंता परितंता निव्विन्ना समाणा जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया, तते णं से कुम्मए ते

पावसियालए चिरंगए दूरंगए जाणित्ता सणियं २ गीवं नेणेति २ दिसावलोयं करेइ २ जमगसमगं चत्तारिवि पादे नीणेति २ ताए उक्किट्ठाए कुम्मगईए वीइवयमाणे २ जेणेव मयंगतीरदहे तेणेव उवागच्छइ २ मित्तनातिनियगसयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं समणो वा २ पंच से इंदियातिं गुत्तातिं भवंति जाव जहा उ से कुम्मए गुत्तिंदिए। एवं खलु जंबू !समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्ति बेमि ॥ सूत्रम्-५७ ॥ चउत्थं नायऽज्झयणं समत्तं ॥ ४ ॥

'जई'त्यादि, सुगमं सर्वं, नवरं 'मयंगतीरदहे'त्ति-मृतगङ्गातीरह्रदः मृतगङ्गा यत्र देशे गङ्गाजलं व्यूढमासीदिति, 'आनुपूर्व्येण'-परिपाट्या सुष्ठु जाता वप्राः-तटा यत्र स तथा गम्भीरं-अगाधं शीतलं जलं यत्र स तथा ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, क्वचिदिदमधिकं दृश्यते 'अच्छविमलसलिलपलिच्छन्ने' प्रतीतं नवरं भृतत्वात्प्रतिच्छन्नः-आच्छादितः, क्वचित्तु-'संछन्ने'त्यादिसूचनादिदं दृश्यं 'संछन्नपउमपत्तभिसमुणाले' संछन्नानि आच्छादितानि पद्मैः पत्रैश्च-पद्मिनीदलैः विशानि-पद्मिनीमूलानि मृणालानि च-नलिननालानि यत्र स तथा; क्वचिदेवं पाठः-'संछन्नपत्तपुप्फपलासे' संछन्नैः पत्रैः-पद्मिनी-दलैः पुष्पपलाशैश्च-कुसुमदलैर्यः स तथा 'बहुउप्पलकुमुयनलिणसुभगसोगंधियपुंडरीयमहापुंडरीयसयपत्तसहस्सपत्तकेसरफुल्लो-वइए' बहुभिरुत्पलादिभिः केसरप्रधानैः फुल्लैः-जलपुष्पैरुपचितः-समृद्धो यः स तथा,तत्रोत्पलानि नीलोत्पलादीनि कुमुदानि-चन्द्रबोध्यादीनि पुण्डरीकाणि-सितपद्मानि शेषाणि लोकरूढ्याऽवसेयानि 'छप्पयपरिभुज्जमाणकमले अच्छविमल-

सलिलपत्थपुण्णे'–अच्छं च विमलं च यत्सलिलं–जलं पथ्यं–हितं तेन पूर्णः, 'परिहत्थभमंतमच्छकच्छभअणेगसउणगणमिहुणपविचरिए'–'परिहत्थ'त्ति दृप्ता भ्रमन्तो मत्स्याः कच्छपाश्च यत्र स तथा अनेकानि शकुनगणानां मिथुनानि प्रविचरितानि यत्र स तथा,ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः,'पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे' इति प्राग्वत् , 'पावे'त्यादि, पापौ पापकारित्वात् चण्डौ क्रोधनत्वात् रौद्रौ भीषणाकारतया तत्तद्विवक्षितं वस्तु लब्धुमिच्छत इति तल्लिप्सू साहसिकौ–साहसात् प्रवृत्तौ लोहितौ पाणी–अग्रिमौ पादौ ययोस्तौ तथा, लोहितपानं वा अनयोरस्तीति लोहितपानिनौ, आमिषं–मांसादिकमर्थयतः–प्रार्थयतो यौ तौ तथा, आमिषाहारौ–मांसादिभोजिनौ आमिषप्रियौ–वल्लभमांसादिकौ आमिषलोलौ आमिषलम्पटौ आमिषं गवेषयमाणौ सन्तौ रात्रौ–रजन्यां विकाले च–सन्ध्यायां चरत इत्येवंशीलौ यौ तौ तथा, दिवा प्रच्छन्नं चापि तिष्ठतः। 'सूरिए' इत्यादि, सूर्ये–भास्करे 'चिरास्तमिते' अत्यन्तास्तं गते 'लुलितायां' अतिक्रान्तप्रायायां सन्ध्यायां 'पविरलमाणुस्संसि निसंतपडिनिसंतंसि'त्ति कोऽर्थः–प्रविरलं किल मानुषं सन्ध्याकाले यत्र तत्र देशे आसीत् तत्रापि निशान्तप्रतिनिशान्ते–अत्यन्तं भ्रमणाद्विरते निशान्तेषु वा–गृहेषु प्रतिनिश्रान्ते–विश्रान्ते निलीने अत्यन्तजनसञ्चारविरह इत्यर्थः 'समाणंसि'त्ति सति आबाधां–ईषद्बाधां प्रबाधां–प्रकृष्टां बाधां व्याबाधां वा छविच्छेदं–शरीरच्छेदं, श्रान्तौ–शरीरतः खिन्नौ तान्तौ–मनसा परितान्तौ–उभयतः, 'ताए उक्किट्ठाए'–इह एवं दृश्यं–'तुरियाए, चवलाए, चंडाए, सिग्घाए, उद्धुयाए, जयणाए, छेयाए'त्ति; तत्र उत्कृष्टा–कूर्माणां यः स्वगत्युत्कर्षः तद्वती त्वरितत्वं, मनस औत्सुक्यात् चपलत्वं,

१ क्रोद्धत्वात्. थ ।

कायस्य चण्डत्वं, संरम्भारब्धत्वात् शीघ्रत्वं, अत एव उद्धतत्वं अशेषशरीरावयवकम्पनात्, जयनीत्वं शेषकूर्मगतिजेतृत्वात् छेकत्वमपायपरिहारनैपुण्यादिति । ज्ञातोपनयनिगमने च कण्ठये, केवलं 'आयरियउवज्झायाणं अंतिए पव्वइए समाणे' इत्यत्र विहरतीति शेषो द्रष्टव्यः, विशेषोपनयनमेवं कार्यं-इह कूर्मस्थानीयौ साधू शृगालस्थानीयौ रागद्वेषौ, ग्रीवापञ्चमपादचतुष्टय-स्थानीयानि पञ्चेन्द्रियाणि, पादग्रीवाप्रसारणस्थानीयाः शब्दादिविषयेष्विन्द्रियप्रवृत्तयः, शृगालप्राप्तिस्थानीयो रागद्वेषोद्भवः, पादादिच्छेदकूर्ममरणस्थानीयानि रागादिजनितकर्मप्रभवानि तिर्यग्नरनरकजातिभवेषु नानाविधदुःखानि, पादादिगोपनस्था-नीया इन्द्रियसंलीनता, शृगालाग्रहणलक्षणा रागाद्यनुत्पत्तिः, मृतगङ्गानदप्रवेशतुल्या निर्वाणप्राप्तिरिति । इह गाथा-'विसएसु इंदिआइं रुंभंता रागदोसनिम्मुक्का । पावंति निव्वुइसुहं कुम्मुव्व मयंगदहसोक्खं ॥ १ ॥ अवरे उ अणत्थपरंपरा उ पावेंति पापकम्मवसा । संसारसागरगया गोमाउग्गसियकुम्मोव ॥ २ ॥" इति ज्ञातधर्मकथायां समाप्तमिदं चतुर्थमध्ययनम् ॥ ४ ॥

॥ ५-श्रीशैलकाख्यं ज्ञाताध्ययनम् ॥

अथ पञ्चमं शैलकाख्यं ज्ञाताध्ययनं विव्रियते, अस्य च पूर्वेण सहायं सम्बन्धः-पूर्वत्रासंलीनेन्द्रियेतरयोरनर्थार्थावुक्तौ इह तु पूर्वमसंलीनेन्द्रियो भूत्वाऽपि यः पश्चात्संलीनेन्द्रियो भवति तस्यार्थप्राप्तिरभिधीयत इत्येवंसम्बन्धस्यास्येदं सूत्रं—

१ सा०—विषयेभ्य इन्द्रियाणि रुन्धन्तो रागद्वेषविमुक्ताः । प्राप्नुवन्ति निर्वृतिसुखं कूर्म इव मृतगङ्गाह्रदसौख्यम् ॥ १ ॥ अपरे त्वनर्थपरम्परास्तु प्राप्नुवन्ति पापकर्मवशाः । संसारसागरगता गोमायुग्रस्तकूर्म इव ॥ २ ॥

जति णं भंते !, समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्झणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते; पंचमस्स णं भंते !, णायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?; एवं खलु जंबू !, तेणं कालेणं २ बारवती नामं नयरी होत्था; पाईणपडीणायया, उदीणदाहिणविच्छिन्ना, नवजोयणविच्छिन्ना, दुवालसजोयणायामा, धणवइमतिनिम्मिया, चामीयरपवरपागारणाणामणिपंचवन्नकविसीसगसोहिया, अलयापुरिसंकासा, पमुतियपक्कीलिया, पच्चक्खं देवलोयभूता; तीसे णं बारवतीए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए रेवतगे नाम नाम पव्वए होत्था, तुंगे, गगणतलमणुलिहंतसिहरे, णाणाविहगुच्छगुम्मलयावल्लिपरिगते, हंसमिगमयूरकोंचसारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेए, अणेगतडकडगवियरउज्झरयपवायपब्भारसिहरपउरे, अच्छरगणदेवसंघचारणविज्जाहरमिहुणसंविचिन्ने, निच्चच्छणए, दसारवरवीरपुरिसतेलोक्कबलवगाणं सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे पासातीए ४; तस्स णं रेवयगस्स अदूरसामंते एत्थ णं णंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था, सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासातीए ४; तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नामं जक्खाययणे होत्था, दिव्वे वन्नओ; तत्थ णं बारवतीए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसति, से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं, पंचण्हं महावीराणं उग्गसेणपामोक्खाणं, सोलसण्हं राईसहस्साणं पज्जुन्नपामोक्खाणं, अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीणं संबपामोक्खाणं, सट्ठीए दुद्दंतसाहस्सीणं वीरसेणपामोक्खाणं, एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं महासेनपामोक्खाणं,

छप्पन्नाए बलवगसाहस्सीणं, रुप्पिणीपामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासासाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं, अन्नेसिं च बहूणं ईसरतलवर जाव सत्थवाहपभिईणं वेयड्ढगिरिसायरपेरंतस्स य दाहिणड्ढभरहस्स [य] बारवतीए नयरीए आहेवचं जाव पालेमाणे विहरति ॥ सूत्रम्-५८ ॥

'जइ ण'मित्यादि, सर्वं सुगमं, नवरं 'धणवइमइनिम्माय'त्ति-धनपतिः-वैश्रमणस्तन्मत्या निर्मापिता-निरूपिता, अलकापुरी-वैश्रमणपुरी प्रमुदितप्रक्रीडिता तद्वासिजनानां प्रमुदितप्रक्रीडितत्वात् रैवतकः-उज्जयन्तः 'चक्कवाग'त्ति-चक्रवाकः, 'मयणसाल'त्ति-मदनसारिका अनेकानि तटानि कटकाश्च-गण्डशैला यत्र स तथा; 'विअर'त्ति-विवराणि च अवज्झराश्च-निर्झरविशेषाः प्रपाताश्च-भृगवः प्राग्भाराश्च-ईषदवनता गिरिदेशाः शिखराणि च-कूटानि प्रचुराणि यत्र स तथा, ततः कर्मधारयः। अप्सरोगणैः-देवसङ्घैः, चारणैः-जङ्घाचारणादिभिः, साधुविशेषैर्विद्याधरमिथुनैश्च, 'संविचिण्णे'-त्ति-संविचरित आसेवितो यः स तथा; 'नित्यं'-सर्वदा, 'क्षणा'-उत्सवा यत्रासौ नित्यक्षणिकः केषामित्याह-'दशाराः' -समुद्रविजयादयः तेषु मध्ये वरास्त एव वीरा-धीरपुरुषा ये ते तथा 'तेलोक्कबलवगाणं'-त्रैलोक्यादपि बलवन्तोऽतुलबलनेमिनाथयुक्तत्वात् ये ते तथा ते च ते चेति तेषां।

तस्स णं बारवईए नयरीए थावच्चा णामं गाहावतिणी परिवसति अड्ढा जाव अपरिभूता, तीसे णं थावच्चाए गाहावतिणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते णामं सत्थवाहदारए होत्था सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे, तते णं

१ ०णयक्षपु०अ ।

सा थावच्चागाहावइणी तं दारयं सातिरेगअट्ठवासजाययं जाणित्ता सोहणंसि तिहिकरणणक्खत्तमुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति, जाव भोगसमत्थं जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलबालियाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति बत्तीसतो दाओ जाव बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्दफरिसरसरूपवन्नगंधे जाव भुंजमाणे विहरति। तेणं कालेणं २, अरहा अरिट्ठनेमी सो चेव वण्णओ; दसधणुस्सेहे नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासे, अट्ठारसहिं समणसाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे, चत्तालीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपुरिवुडे; पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव बारवती नगरी, जेणेव रेवयगपव्वए, जेणेव नंदणवणे उज्जाणे, जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खायतणे, जेणेव असोगवरपायवे, तेणेव उवागच्छइ २, अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति; परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ। तते णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २, एवं वदासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया!, सभाए सुहम्माए मेघोघरसियं गंभीरं महुरसद्दं, कोमुदितं भेरिं तालेह; तते णं ते कोडुंबियपुरिसा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव मत्थए अंजलिं कट्टु-एवं सामी!, तहत्ति जाव पडिसुणेंति २, कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति २, जेणेव सहा सुहम्मा जेणेव कोमुदिया भेरी तेणेव उवागच्छंति तं मेघोघरसियं गंभीरं महुरसद्दं कोमुदितं भेरिं तालेंति। ततो निद्धमहुरगंभीरपडिसुएणंपिव सारइएणं बलाहएणंपिव अणुरसियं भेरीए, तते णं तीसे कोमुदि-

याए भेरियाए तालियाए समाणीए बारवतीए नयरीए, नवजोयणविच्छिन्नाए, दुवालसजोयणायामाए, सिंघाडगतियचउक्कचच्चरकंदरदरीए, विवरकुहरगिरिसिहरनगरगोउरपासातदुवारभवणदेउलपडिसुयासय-सहस्ससंकुलं सद्दं करेमाणे, बारवतिं नगरिं सब्भिंतरबाहिरियं सव्वतो समंता से सद्दे विप्पसरित्था; तते णं बारवतीए नयरीए नवजोयणविच्छिन्नाए, बारसजोयणायामाए, समुद्दविजयपामोक्खा, दसदसारा जाव गणियासहस्साइं कोमुदीयाए भेरीए सद्दं सोच्चा, णिसम्म, हट्ठतुट्ठा जाव ण्हाया आविद्धवग्घारिय-मल्लदामकलावा अहतवत्थचंदणोक्किन्नगायसरीरा अप्पेगतिया हयगया एवं गयगया रहसीयासंदमाणीगया अप्पेगतिया पायविहारचारेणं पुरिसवग्गुरापरिखित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियं पाउब्भवित्था। तते णं से कण्हे वासुदेवे, समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे जाव अंतियं पाउब्भवमाणे पासति, पासित्ता, हट्ठतुट्ठ जाव कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २; एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया!, चाउरिंगिणीं सेणं सज्जेह विजयं च गंधहत्थिं उवट्ठवेह, तेवि तहत्ति उवट्ठवेंति; जाव पज्जुवासंति ॥ सूत्रम्–५९ ॥

'बत्तीसओ दाओ'–द्वात्रिंशत्प्रासादाः, द्वात्रिंशद्धिरण्यकोट्यः, द्वात्रिंशत्सुवर्णकोट्य इत्यादिको दायो–दानं वाच्यो; यथा मेघकुमारस्य 'सो चेव वण्णओ'त्ति। आइगरे, तित्थगरे इत्यादियों महावीरस्य अभिहितः। 'गवल'त्ति–महिष्य-शृङ्गं गुलिका–नीली गवलस्य वा गुलिका गवलगुडिका अतसी–मालवकप्रसिद्धो धान्यविशेषः, 'कोमुइयं'ति–उत्सववाद्यं क्वचित्सामुदायिकीमिति पाठः तत्र सामुदायिकी–जनमीलकप्रयोजना। 'निद्धमहुरगंभीरपडिसुएणंपिव'त्ति–स्निग्धं

मधुरं गम्भीरं प्रतिश्रुतं–प्रतिशब्दो यस्य स तथा तेनेव, केनेत्याह–'शारदिकेन'–शरत्कालजातेन, 'वलाहकेन'–मेघेनानुरसितं–शब्दायितं भेर्याः, शृङ्गाटकादीनि प्राग्वत्; गोपुरं–नगरद्वारं, प्रासादो–राजगृहं, द्वाराणि प्रतीतानि, भवनानि–गृहाणि, देवकुलानि–प्रतीतानि तेषु याः 'पडिसुय'त्ति–प्रतिश्रुताः–प्रतिशब्दकास्तासां यानि शतसहस्राणि–लक्षास्तैः संकुला या सा तथा तां कुर्वन्, कामित्याह–द्वारकावतीं नगरीं; कथंभूतामित्याह–सब्भिंतरबाहिरियं'ति–सहाभ्यन्तरेण–मध्यभागेन बाहिरिकया च–प्राकाराद्बहिर्नगरदेशेन या सा तथा साभ्यन्तरबाहिरिका तां, 'से'–इति स भेरीसम्बन्धी शब्दः, 'विप्पसरित्थ'त्ति–विप्रासरत् 'पामोक्खाइं' ति–प्रमुखाः, 'आविद्धवग्घारियमल्लदामकलाव'त्ति–परिहितप्रलम्बपुष्पमालासमूहा इत्यादिर्वर्णकः प्राग्वत् । 'पुरिसवग्गुरापरिखित्ता'–वागुरा–मृगबन्धनं वागुरेव वागुरा समुदायः ।

थावच्चापुत्तेवि णिग्गए जहा मेहे तहेव धम्मं सोच्चा, णिसम्म; जेणेव थावच्चा गाहावतिणी तेणेव उवागच्छति २, पायग्गहणं करेति जहा मेहस्स तहा चेव णिवेयणा जाहे नो संचाएति, विसयाणुलोमाहि य, विसयपडिकूलेहि य, बहूहिं आघवणाहि य, पन्नवणाहि य, सन्नवणाहि य, विन्नवणाहि य आघवित्तए वा ४ ताहे अकामिया चेव थावच्चापुत्तदारस्स निक्खमणमणुमन्नित्था नवरं निक्खमणाभिसेयं पासामो; तए णं से थावच्चापुत्ते तुसिणीए संचिट्ठइ, तते णं सा थावच्चा आसणाओ अब्भुट्ठेति २, महत्थं, महग्घं, महरिहं, रायरिहं पाहुडं गेण्हति २, मित्त जाव संपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स भवणवरपडिदुवारदेसभाए तेणेव उवागच्छति २; पडिहारदेसिएणं मग्गेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवाग-

च्छति २, करयलव्वद्धावेति २; तं महत्थं, महग्घं, महरिहं, रायरिहं पाहुडं उवणेइ २; एवं वदासी-एवं खलु देवाणुप्पिया !, मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते, नामं दारए इट्ठे जाव से णं संसारभयउव्विग्गे इच्छति अरहओ अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वतित्तए; अहण्णं निक्खमणसक्कारं करेमि, इच्छामि णं देवाणुप्पिया !, थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्तमउडचामराओ य विदिन्नाओ; तते णं कण्हे वासुदेवे थावच्चागाहावतिणीं एवं वदासी-अच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिए !, सुनिव्वुया वीसत्था, अहण्णं सयमेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि; तते णं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीए सेणाए विजयं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावतिणीए भवणे तेणेव उवागच्छति २, थावच्चापुत्तं एवं वदासी-मा णं तुमे देवाणुप्पिया !, मुंडे भवित्ता पव्वयाहि, भुंजाहि णं देवाणुप्पिया ! विउले माणुस्सए कामभोए मम बाहुच्छायापरिग्गहिए; केवलं देवाणुप्पियस्स अहंणो संचाएमि, वाउकायं उवरिमेणं गच्छमाणं निवारित्तए, अण्णे णं देवाणुप्पियस्स जे किंचिवि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएति तं सव्वं निवारेमि; तते णं से थावच्चापुत्ते कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे, कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-जइ णं तुमं देवाणुप्पिया !, मम जीवियंतकरणं मच्चुं एज्जमाणं निवारेसि, जरं वा सरीररूवविणासिणिं सरीरं वा अइवयमाणिं निवारेसि, तते णं अहं तव बाहुच्छायापरिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे विहरामि; तते णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे थावच्चापुत्तं एवं वदासी-एए णं देवाणु-

प्पिया !, दुरतिक्कमणिज्जा णो खलु सक्का सुबलिएणावि देवेण वा, दाणवेण वा, णिवारित्तए णन्नत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया !, अन्नाणमिच्छत्तअविरइकसायसंचियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करित्तए, तते णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २, एवं वदासी-गच्छह णं देवाणुप्पिया !, बारवतीए नयरीए सिंघाडगतियगचउक्कचच्चर जाव हत्थिखंधवरगया महया २, सद्देणं उग्घोसेमाणा २, उग्घोसणं करेह-एवं खलु देवा० थावच्चापुत्ते संसारभउव्विग्गे भीए जम्मणमरणाणं इच्छति अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए, तं जो खलु देवाणुप्पिया !, राया वा, जुयराया वा, देवी वा, कुमारे वा, ईसरे वा, तलवरे वा, कोडुंबिय०, माडंबिय०, इब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहे वा, थावच्चापुत्तं पव्वयंतमणुपव्वयति तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणति, पच्छातुरस्सविय से मित्तनातिनियगसंबंधिपरिजणस्स जोगखेमं वट्टमाणं पडिवहति त्ति कट्टु घोसणं घोसेह जाव घोसंति, तते णं थावच्चापुत्तस्स अणुराएणं पुरिससहस्सं निक्खमणाभिमुहं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं पत्तेयं २, पुरिससहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरूढं समाणं मित्तणातिपरिवुडं थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भूयं; तते णं से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्समंतियं पाउब्भवमाणं पासति २, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति २, एवं वदासी जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ तहेव सेयापीएहिं ण्हावेति २, जाव अरहतो अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्तं पडागातिपडागं पासंति २, विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता, सीवियाओ पच्चोरुहंति; तते णं से कण्हे

वासुदेवे थावच्चापुत्तं पुरओ काउं जेणेव अरिहा अरिट्ठनेमी सव्वं तं चेव आभरणं०, तते णं से थावच्चा-गाहावइणी हंसलक्खणेणं पडगसाडएणं आभरणमल्लालंकारे पडिच्छइ हारवारिधारछिन्नमुत्तावलिप्पगासातिं अंसूणि विणिम्मुंचमाणी २; एवं वदासी–जतियव्वं जाया !, घडियव्वं जाया !, परिक्कमियव्वं जाया !, अस्सिं च णं अट्ठे णो पमादेयव्वं, जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया; तते णं से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेहिं सद्धिं सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति जाव पव्वतिए। तते णं से थावच्चापुत्ते अणगारे जाते, ईरियासमिए भासासमिए जाव विहरति; तते णं से थावच्चापुत्ते अरहतो अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयातिं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जति २, बहूहिं जाव चउत्थेणं विहरति। तते णं अरिहा अरिट्ठनेमी थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इब्भाइयं अणगारसहस्सं सीसत्ताए दलयति, तते णं से थावच्चापुत्ते अन्नया कयाइं अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति, नमंसति २; एवं वदासी–इच्छामि णं भंते !, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाते समाणे सहस्सेणं अणगारेणं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए; अहासुहं देवाणुप्पिआ !, तते णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं तेणं उरालेणं [उरालेणं] उग्गेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं बहिया जणवयविहारं विहरति ॥ सूत्रम्–६० ॥

'नन्नत्थ अप्पणो कम्मखएणं'ति–न इति यदेतन्मरणादिवारणशक्तेर्निषेधनं तदन्यत्रात्मना कृतात् आत्मनो वा सम्बन्धिनः कर्मक्षयात्, आत्मना क्रियमाणं आत्मीयं वा कर्मक्षयं वर्जयित्वेत्यर्थः; 'अज्ञाने'त्यादि, 'अप्पणा अप्पणो वा

५–श्रीशैलकाध्य० थावच्चापुत्रं प्रति मातुः हितशिक्षा।

कम्मक्खयं करित्तए'त्ति-कर्मण इह षष्ठी द्रष्टव्या; 'पच्छाउरस्से'त्यादि, पश्चाद् अस्मिन् राजादौ प्रव्रजिते सति आतुरस्यापि च द्रव्याद्यभावाद्दुःस्थस्य 'से'-तस्य तदीयस्येत्यर्थः मित्रज्ञातिनिजकसम्बन्धिपरिजनस्य योगक्षेमवार्त्तमानीं प्रतिवहति, तत्रालब्धस्येप्सितस्य वस्तुनो लाभो योगो लब्धस्य परिपालनं क्षेमस्ताभ्यां वर्त्तमानकालभवा वार्त्तमानी वार्ता योगक्षेमवार्त्तमानी, तां-निर्वाहं राजा करोतीति तात्पर्यं; 'इतिकट्टु'-इतिकृत्वा इति हेतोरेवंरूपामेव वा घोषणां घोषयत-कुरुत, 'पुरिससहस्स'मित्यादि, इह पुरुषसहस्रं स्नानादिविशेषणं थावच्चापुत्रस्यान्तिके प्रादुर्भूतमिति सम्बन्धः। 'विज्जाहरचारणे'त्ति-इह 'जंभए य देवे वीइवयमाणे इत्यादि' द्रष्टव्यं, एवमन्यदपि मेघकुमारचरितानुसारेण पूरयित्वाऽध्येतव्यमिति। 'ईरियासमिए'इत्यादि, इह यावत्करणादिदं दृश्यं, "एसणासमिए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए"-आदानेन-ग्रहणेन सह भाण्डमात्राया-उपकरणलक्षणपरिच्छदस्य या निक्षेपणा-मोचनं तस्यां समितः-सम्यक्प्रवृत्तिमान्, 'उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिए'-उच्चारः-पुरीषं, प्रश्रवणं-मूत्रं, खेलो निष्ठीवनं, सिङ्घानो-नासामलः, जल्लः-शरीरमलः; 'मणसमिए, वयसमिए, कायसमिए;'-चित्तादीनां कुशलानां प्रवर्तक इत्यर्थः; 'मणगुत्ते, वइगुत्ते, कायगुत्ते;'-चित्तादीनामशुभानां निषेधकः; अत एवाह-गुत्ते-योगापेक्षया, गुत्तिंदिए-इन्द्रियाणां विषयेष्वसत्प्रवृत्तिनिरोधात्, 'गुत्तबंभचारी'-वसत्यादिनवब्रह्मचर्यगुप्तियोगात्, अकोहे ४, कथमित्याह-सन्ते-सौम्यमूर्तित्वात्, पसन्ते-कषायोदयस्य विफलीकरणात्, उपसन्ते कषायोदयाभावात्, परिनिव्वुडे-स्वास्थ्यातिरेकात्, अणासवे-हिंसादिनिवृत्तेः अममे-ममेत्युल्लेखस्याभिष्वङ्गतोऽप्यसद्भावात्, 'अकिंचणे'-निर्द्रव्यत्वात्, छिन्नगंथे-मिथ्यात्वादिभावग्रन्थिच्छेदात्, निरुवलेवे-तथाविधबंधहेत्वभावेन तथा·

विधकर्मानुपादानात्, एतदेवोपमानैरुच्यते—'कंसपाईव मुक्कतोए'—बन्धहेतुत्वेन तोयाकारस्य स्नेहस्याभावात्; 'संखो इव निरंजणे'—रञ्जनस्य रागस्य कर्तुमशक्यत्वात्, 'जीवो विव अप्पडिहयगई'—सर्वत्रौचित्येनास्खलितविहारित्वात्; 'गगणमिव निरालंबणे'—देशग्रामकुलादीनामनालम्बकत्वात्, 'वायुरिव अपडिबद्धे'—क्षेत्रादौ प्रतिबन्धाभावेनौचित्येन सततविहारित्वात्, 'सारयसलिलंव सुद्धहियए'—शाठ्यलक्षणगडुलत्ववर्जनात्, 'पुक्खरपत्तंपिव निरुलेवे'—पद्मपत्रमिव भोगाभिलाषलेपाभावात्, 'कुम्मो इव गुत्तिंदिए' कूर्मः—कच्छपः, 'खग्गिविसाणं व एगजाए'—खड्गिः—आरण्यः पशुविशेषः, तस्य विषाणं—शृङ्गं तदेकं भवति, तद्वदेकीजातो योऽसंगतः सहायत्यागेन स तथा; 'विहग इव विप्पमुक्के'—आलयाप्रतिबन्धेन, 'भारंडपक्खीव अप्पमत्ते'—भारण्डपक्षिणो हि एकोदराः पृथग्ग्रीवा अनन्यफलभक्षिणो जीवद्वयरूपा भवन्ति, ते च सर्वदा चकितचित्ता भवन्तीति, 'कुंजरो इव सोंडीरे'—कर्मशत्रुसैन्यं प्रति शूर इत्यर्थः, 'वसभो इव जायथामे'—आरोपितमहाव्रतभारवहनं प्रति 'जातबलो निर्वाहकत्वात्, 'सीहो इव दुद्धरिसे'—दुर्द्धर्षणीयः उपसर्गमृगैः, 'मंदरो इव निप्पकंपे'—परीषहपवनैः, 'सागरो इव गंभीरे'—अतुच्छचित्तत्वात्, 'चंदो इव सोमलेसे'—शुभपरिणामत्वात्, 'सूरो इव दित्ततेए'—परेषां क्षोभकत्वात्, 'जच्चकंचणं व जायरूवे'—अपगतदोषलक्षणकुद्रव्यत्वेनोत्पन्नस्वस्वभावः, 'वसुंधरा इव सव्वफासविसहे'—पृथ्वीवत् शीतातपाद्यनेकविधस्पर्शक्षमः, 'सुहुयहुयासणोव तेजसा जलंते'—घृतादितर्पितवैश्वानरवत् प्रभया दीप्यमानः, 'नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधो भवइ'—नास्त्ययं पक्षो यदुत तस्य (भगवतः) प्रतिबन्धो भवति; 'से य पडिबंधे चउविहे पण्णत्ते, तंजहा—दव्वओ ४, 'दव्वओ—सचित्ताचित्तमीसेसु, खेत्तओ—गामे वा, नगरे वा, रण्णे वा, खले वा, अंगणे वा'; खलं—धान्यमलनादिस्थ-

ण्डिलं, 'कालओ समए वा आवलियाए वा—असंख्यातसमयरूपायां, 'आणापाणूए वा'—उच्छ्वासनिश्वासकाले, थोवे वा—सप्तो-च्छ्वासरूपे, खणे वा—बहुतरोच्छ्वासरूपे, लवे वा—सप्तस्तोकरूपे, मुहुत्ते वा—लवसप्तसप्ततिरूपे; 'अहोरत्ते वा, पक्खे वा, मासे वा, अयणे वा' दक्षिणायनेतररूपे प्रत्येकं षण्मासप्रमाणे संवत्सरे वा, 'अन्नतरे वा दीहकालसंजोए' युगादौ। 'भावओ कोहे वा ४, भये वा हासे वा हास्ये हर्षे वा', 'एवं तस्स न भवइ'—एवमनेकधा तस्य प्रतिबन्धो न भवति, 'से णं भगवं वासीचंद-णकप्पे'—वास्यां चन्दनकल्पो यः स तथा, अपकारिणोऽप्युपकारकारीत्यर्थः, वासीं वा अङ्गच्छेदनप्रवृत्तां चन्दनं कल्पयति यः स तथा, 'समतिणमणिलेट्ठुकंचणे समसुहदुक्खे'—समानि उपेक्षणीयतया तृणादीनि यस्य स तथा, 'इहलोगपरलोगऽपडिबद्धे जीवियमरणे निरवकंखे संसारपारगामी कम्मनिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिए एवं च णं विहरइ'त्ति।

तेणं कालेणं, तेणं समएणं, सेलगपुरे नामं नगरं होत्था, सुभूमिभागे उज्जाणे, सेलए राया, पउमावती देवी, मंडुए कुमारे जुवराया; तस्स णं सेलगस्स पंथगपामोक्खा पंच मंतिसया होत्था, उप्पत्तियाए वेणइ-याए ४ उववेया, रज्जधुरं चिंतयंति। थावच्चापुत्ते सेलगपुरे समोसढे, राया णिग्गतो धम्मकहा, धम्मं सोच्चा, जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरन्नं जाव पव्वइत्ता, तहा णं अहं नो संचाएमि पव्वत्तिए, अहन्नं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जाव अहिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं भावेमाणे विहरति; पंथगपामोक्खा पंच मंतिसया समणोवासया जाया, थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहारं विहरति। तेणं कालेणं २, सोगंधिया नाम नयरी होत्था, वन्नओ; नीलासोए

उज्जाणे वन्नओ, तत्थ णं सोगंधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नगरसेट्ठी परिवसति अड्ढे जाव अपरिभूते । तेणं कालेणं २, सुए नामं परिव्वायए होत्था; रिउव्वेयजजुव्वेयसामवेयअथव्वणवेयसट्ठितंतकुसले, संखसमए लद्धट्ठे, पंचजमपंचनियमजुत्तं सोयमूलयं दसप्पयारं परिव्वायगधम्मं दाणधम्मं च, सोयधम्मं च, तित्थाभिसेयं च, आघवेमाणे पन्नवेमाणे धाउरत्तवत्थपवरपरिहिए तिदंडकुंडियछत्तछलु(करोडिय-छण्णाल) यंकुसपवित्तयकेसरीहत्थगए परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव सोगंधियानगरी, जेणेव परिव्वायगावसहे, तेणेव उवागच्छइ २; परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ २ त्ता, संखसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरति । तते णं सोगंधियाए सिंघाडग० बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ-एवं खलु सुए परिव्वायए इह हव्वमागते जाव विहरइ, परिसा निग्गया सुदंसणो निग्गए; तते णं से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदंस्सणस्स य अन्नेसिं च बहूणं संखाणं परिकहेति-एवं खलु सुदंसणा !, अम्हं सोयमूलए धम्मे पन्नत्ते सेऽविय सोए दुविहे पं०, तं०-दव्वसोए य, भावसोए य; दव्वसोए य उदएणं मट्टियाए य, भावसोए दब्भेहि य मंतेहि य; जन्नं अम्हं देवाणुप्पिया !, किंचि असुई भवति तं सव्वं सज्जो पुढवीए आलिप्पति, ततो पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जति, ततो तं असुई सुई भवति; एवं खलु जीवा जलाभिसेयपूयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गच्छंति, तते णं से सुदंसणे सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा

१ °छत्तछण्णालयं° भ ।

हट्टे सुयस्स अंतियं सोयमूलयं धम्मं गेण्हति २, परिव्वायए विपुलेणं असण ४ वत्थ० पडिलामेमाणे जाव विहरति । तते णं से सुए परिव्वायगे सोगंधियाओ नगरीओ निगच्छति २ त्ता, बहिया जणवयविहारं विहरति । तेणं कालेणं २, थावच्चापुत्तस्स समोसरणं, परिसा निग्गया, सुदंसणोवि णीइ, थावच्चापुत्तं वंदति, नमंसति २; एवं वदासी–तुम्हाणं किं मूलए धम्मे पन्नत्ते ?, तते णं थावच्चापुत्ते सुदंसणेणं एवं वुत्ते समाणे सुदंसणं एवं वदासी–सुदंसणा !, विणयमूले धम्मे पन्नत्ते, सेविय विण० दुविहे पं०, तं०–अगारविणए, अणगारविणए य; तत्थ णं जे से अगारविणए से णं पंच अणुव्वयाति, सत्त सिक्खावयाति, एक्कारस उवासगपडिमाओ; तत्थ णं जे से अणगारविणए से णं पंच महव्वयाइं, तंजहा–सव्वातो पाणातिवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वातो अदिन्नादाणातो वेरमणं, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं, सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं जाव मिच्छादंसणसल्लाओ वेरमणं, दसविहे पच्चक्खाणे बारस भिक्खुपडिमाओ, इच्चेएणं दुविहेणं विणयमूलएणं धम्मेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगंठीओ खवेत्ता लोयग्गपइट्ठाणे भवंति; तते णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वदासी–तुब्भे णं सुदंसणा !, किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ?, अम्हाणं देवाणुप्पिया !, सोयमूले धम्मे पन्नत्ते जाव सग्गं गच्छंति, तते णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वदासी–सुदंसणा !, से जहा नामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा, तते णं सुदंसणा !, तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव

पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि काइ सोही ?, णो तिणट्ठे समट्ठे; एवामेव सुदंसणा !, तुब्भंपि पाणातिवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि सोही जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्जमाणस्स नत्थि सोही; सुदंसणा !, से जहा णामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं सज्जियाखारेणं अणुलिंपति २, पयणं आरुहेति २, उण्हं गाहेइ २ त्ता, ततो पच्छा सुद्धेणं वारिणा धोवेज्जा; से णूणं सुदंसणा !, तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जियाखारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरुहियस्स उण्हं गाहितस्स सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवति ?, हंता भवइ; एवामेव सुदंसणा !, अम्हंपि पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अत्थि सोही; जहा वीयस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स जाव सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही; तत्थ णं से सुदंसणे संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदति, नमंसति २, एवं वदासी-इच्छामि णं भंते !, धम्मं सोच्चा जाणित्तए जाव समणोवासए जाते अहिगयजीवाजीवे जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु सुदंसणेणं सोयं धम्मं विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवन्ने, तं सेयं खलु मम सुदंसणस्स दिट्ठिं वामेत्तए० पुणरवि सोयमूलए धम्मे आघवित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेति २, परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं जेणेव सोगंधिया नगरी, जेणेव परिव्वायगावसहे, तेणेव उवागच्छति २, परिव्वायगावसहंसि भंडनिक्खेवं करेति २, धाउरत्तवत्थपरिहिते पविरलपरिव्वायगेणं सद्धिं संपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमति २, सोगंधियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुदंसणस्स गिहे, जेणेव सुदंसणे, तेणेव उवाग-

च्छति; तते णं से सुदंसणे तं सुयं एज्जमाणं पासति २, नो अब्भुट्ठेति नो पच्चुग्गच्छति, णो आढाइ, नो परियाणाइ, नो वंदति, तुसिणीए, संचिट्ठति, तए णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं अणब्भुट्ठियं० पासित्ता, एवं वदासी–तुमं णं सुदंसणा !, अन्नदा ममं एज्जमाणं पासित्ता अब्भुट्ठेसि जाव वंदसि इयाणिं सुदंसणा ! तुमं ममं एज्जमाणं पासित्ता जाव णो वंदसि, तं कस्स णं तुमे सुदंसणा !, इमेयारूवे विणयमूलधम्मे पडिवन्ने; तते णं से सुदंसणे सुएणं परिव्वायएणं एवं वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेति २, करयल० सुयं परिव्वायगं एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहतो अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी थावच्चापुत्ते नामं अणगारे जाव इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरति, तस्स णं अंतिए विणयमूले धम्मे पडिवन्ने; तते णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं एवं वदासी–तं गच्छामो णं सुदंसणा !, तव धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामो, इमाइं च णं एयारूवाति अट्ठाइं हेऊइं पसिणातिं कारणातिं वागरणातिं पुच्छामो; तं जइ णं मे से इमाइं अट्ठातिं जाव वागरति, तते णं अहं वंदामि, नमंसामि, अह मे से इमातिं अट्ठातिं जा नो से वाकरेति; तते णं अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं हेऊहिं निप्पट्ठपसिणवागरणं करिस्सामि, तते णं से सुए परिव्वायगसहस्सेणं सुदंसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छति २ त्ता, थावच्चापुत्तं एवं वदासी–जत्ता ते भंते !, जवणिज्जं ते

1. ०ति २ त्ता त० अ।

अव्वाबाहंपि ते फासुयं विहारं ते ?, तते णं से थावच्चापुत्ते सुएणं परिव्वायगेणं एवं वुत्ते समाणे सुयं परिव्वायगं एवं वदासी-सुया !, जत्तावि मे जवणिज्जंपि मे अव्वाबाहंपि मे फासुयविहारंपि मे; तते णं से सुए थावच्चापुत्तं एवं वदासी-किं भंते !, जत्ता ?; सुया ! जन्नं मम णाणदंसणचरित्ततवसंजममातिएहिं जोएहिं जोयणा से तं जत्ता, से किं तं भंते !, जवणिज्जं ?, सुया !, जवणिज्जे दुविहे पं०, तं०-इंदियजवणिज्जे य, नोइंदियजवणिज्जे य; से किं तं इंदियजवणिज्जं ?, सुया !, जन्नं ममं सोतिंदियचक्खिंदियघाणिंदियजिब्भिंदियफासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति से तं इंदियजवणिज्जं, से किं तं नोइंदियजवणिज्जे ?, सुया !, जन्नं !, कोहमाणमायालोभा खीणा उवसंता नो उदयंति से तं नोइंदियजवणिज्जे; से किं तं भंते !, अव्वाबाहं ?; सुया !, जन्नं मम वातियपित्तियसिंभियसन्निवाइया विविहा रोगातंका णो उदीरेंति सेत्तं अव्वाबाहं; से किं तं भंते !, फासुयविहारं ?; सुया !, जन्नं आरामेसु, उज्जाणेसु, देवउलेसु, सभासु, पव्वासु, इत्थिपसुपंडगविवज्जियासु, वसहीसु; पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारयं उग्गिण्हित्ताणं विहरामि सेत्तं फासुयविहारं। सरिसवया ते भंते !, किं भक्खेया अभक्खेया ?; सुया !, सरिसवया भक्खेयावि अभक्खेयावि; से केणट्ठेणं भंते !, एवं वुच्चइ ?-सरिसवया भक्खेयावि अभक्खेयावि ?; सुया !, सरिसवया दुविहा पं०, तं०-मित्तसरिसवया, धन्नसरिसवया य; तत्थ णं जे ते मित्तसरिसवया ते तिविहा पं०, तं०-सहजायया, सहवड्ढियया, सहपंसुकीलियया; ते णं समणाणं

णिग्गथाणं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते धन्नसरिसवया ते दुविहा पं०, तं०-सत्थपरिणया य, असत्थ-परिणया य; तत्थ णं जे ते असत्थपरिणया ते समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते सत्थपरिणया ते दुविहा पं०, तं०-फासुगा य, अफासुगा य; अफासुया णं सुया !, नो भक्खेया, तत्थ णं जे ते फासुया ते दुविहा पं०, तं०-जातिया य, अजातिया य; तत्थ णं जे ते अजातिया ते अभक्खेया, तत्थ णं जे ते जाइया ते दुविहा पं०, तं०-एसणिज्जा य, अणेसणिज्जा य; तत्थ णं जे ते अणेसणिज्जा ते णं अभक्खेया, तत्थ णं जे ते एसणिज्जा ते दुविहा पं०, तं०-लद्धा य; अलद्धा य; तत्थ णं जे ते अलद्धा ते अभक्खेया, तत्थ णं जे ते लद्धा ते निग्गंथाणं भक्खेया, एएणं अट्ठेणं सुया ! एवं वुच्चति-सरिसवया भक्खेयावि अभक्खेयावि, एवं कुलत्थावि भाणियव्वा, नवरि इमं णाणत्तं-इत्थिकुलत्था य, धन्नकुलत्था य, इत्थिकुलत्था तिविहा पं०, तं०-कुलवधुया य, कुलमाउया इ य, कुलधूया इ य, धन्नकुलत्था तहेव, एवं मासावि; नवरि इमं नाणत्तं-मासा तिविहा पं०, तं०-कालमासा य, अत्थमासा य, धन्नमासा य; तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं दुवालसविहा पं०, तंजहा-सावणे जाव आसाढे, ते णं अभक्खेया, अत्थमासा दुविहा-हिरन्नमासा य सुवण्णमासा य, ते णं अभक्खेया धन्नमासा तहेव। एगे भवं, दुवे भवं, अणेगे भवं, अक्खए भवं, अव्वए भवं, अवट्ठिए भवं, अणेगभूयभावे भविएवि भवं ?; सुया ! एगेवि अहं, दुवेवि अहं, जाव अणेगभूयभावभविएवि अहं, से केणट्ठेणं भंते !, एगेवि अहं जाव सुया !,

दव्वट्ठयाए एगे अहं, नाणदंसणट्ठयाए दुवेवि अहं, पएसट्ठयाए अक्खएवि अहं, अव्वएवि अहं, अवट्ठिएवि अहं, उवओगट्ठयाए अणेगभूयभावभविएवि अहं; एत्थ णं से सुए संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदति, नमंसति २, एवं वदासी-इच्छामि णं भंते !, तुब्भे अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए धम्मकहा भाणियव्वा, तए णं से सुए परिव्वायए थावच्चापुत्तस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म एवं वदासी-इच्छामि णं भंते !, परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए, अहासुहं जाव उत्तरपुरच्छिमे दिसीभागे तिडंडयं जाव धाउरत्ताओ य एगंते एडेति २, सयमेव सिहं उप्पाडेति २, जेणेव थावच्चा थावच्चापुत्ते० मुंडे भवित्ता जाव पव्वतिए सामाइयमातियाइं चोद्दस पुव्वातिं अहिज्जति; तते णं थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारस्सहस्सं सीसत्ताए वियरति, तते णं थावच्चापुत्ते सोगंधियाओ नीलासोयाओ पडिनिक्खमति २, बहिया जणवयविहारं विहरति; तते णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे, जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ २, पुंडरीयं पव्वयं सणियं २ दुरूहति २, मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं जाव पाओवगमणं णुवन्ने; तते णं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सट्ठिं भत्तातिं अणसणाए जाव केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता, ततो पच्छा सिद्धे जाव पहीणे ॥ सूत्रम्-६१ ॥ तते णं से सुए अन्नया कयाइं जेणेव सेलगपुरे नगरे, जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे समोसरणं, परिसा निग्गया, सेलओ निग्गच्छति; धम्मं सोच्चा, जं नवरं देवाणु-

प्पिया !, पंथगपामोक्खातिं पंच मंतिसयातिं आपुच्छामि, मण्डुयं च कुमारं रज्जे ठावेमि; ततो पच्छा देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयामि, अहासुहं; तते णं से सेलए राया सेलगपुरं नयरं अणुपविसति२, जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ२, सीहासणं सन्निसन्ने; तते णं से सेलए राया पंथयपामोक्खे पंच मंतिसए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता; एवं वदासी–एवं खलु देवाणुप्पिया !, मए सुयस्स अंतिए धम्मे णिसंते सेवि य धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुतिए; अहं णं देवाणुप्पिया !, संसारभयउव्विग्गे जाव पव्वयामि, तुब्भे णं देवाणुप्पिया किं करेह ?, किं ववसह ?, किं वा ते हियइच्छंति ?; तते णं तं पंथयपामोक्खा सेलगं रायं एवं वदासी,–जइ णं तुब्भे देवा० संसार जाव पव्वयह; अम्हाणं देवाणुप्पिया !, किमन्ने आहारे वा, आलंबे वा, अम्हेऽवि य णं देवा० संसारभयउव्विग्गा जाव पव्वयामो, जहा देवाणुप्पिया !, अम्हं बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य जाव तहा णं पव्वतियाणवि समाणाणं बहुसु जाव चक्खुभूते; तते णं से सेलगे पंथगपामोक्खे पंच मंतिसए एवं व०–जति णं देवाणु० तुब्भे संसार जाव पव्वयह तं गच्छह णं देवा० सएसु २ कुडुंबेसु जेट्ठे पुत्ते कुडुंबमज्झे ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवहत्ति, तहेव पाउब्भवंति; तते णं से सेलए राया पंच मंतिसयाइं पाउब्भवमाणातिं पासति२, हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति२, एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !, मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं जाव रायाभिसेयं उवट्ठ-

वेह० अभिसिंचति जाव राया विहरति । तते णं से सेलए मंडुयं रायं आपुच्छइ, तते णं से मंडुए राया कोडुंबियपुरिसे० एवं वदासी–खिप्पामेव सेलगपुरं नगरं आसित जाव गंधवट्टिभूतं करेह य, कारवेह य २, एवमाणत्तियं पच्चप्पिणह; तते णं से मंडुए दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २, एवं वदासी–खिप्पामेव सेलगस्स रन्नो महत्थं जाव निक्खमणाभिसेयं जहेव मेहस्स तहेव णवरं पउमावतीदेवी अग्गकेसे पडिच्छति सव्वेवि पडिग्गहं गहाय सीयं दुरूहंति, अवसेसं तहेव जाव सामातियमातियातिं एक्कारस अंगाइं अहिज्जति२, बहूहिं चउत्थ जाव विहरति; तए णं से सुए सेलयस्स अणगारस्स ताइं पंथयपामोक्खातिं पंच अणगारसयाइं सीसत्ताए वियरति, तते णं से सुए अन्नया कयाइं सेलगपुराओ नगराओ सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमति२ त्ता, बहिया जणवयविहारं विहरति; तते णं से सुए अणगारे अन्नया कयाइं तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं विहरमाणे, जेणेव पोंडरीए पव्वए जाव सिद्धे ॥ सूत्रम्–६२ ॥

एवमीर्यासमित्यादिगुणयोगेनेति । 'पंचाणुव्वइयं'–इह यावत्करणात् एवं दृश्यं, 'सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए; अहासुहं देवाणुप्पिया !, मा पडिबंधं काहिसि । 'तए णं से सेलए राया, थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव उवसंपज्जइ, तए णं से सेलए राया समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे' इह यावत्करणादिदं दृश्यं, 'उवलद्धपुण्णपावे आसवसंवरनिज्जरकिरियाहिगरणबंधमोक्खकुसले'–क्रिया–कायिक्यादिका, अधिकरणं–खड्गनिर्वर्त्तनादि,

एतेन च ज्ञानिनोक्ता, 'असहेज्जे'-अविद्यमानसाहाय्यः कुतीर्थिकप्रेरितः सम्यक्त्वविचलनं प्रति न परसाहाय्यमपेक्षते इति भावः, अत एवाह 'देवासुरनागजक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरुसगरुलगंधव्वमहोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणतिक्कमणिज्जे' देवा-वैमानकज्योतिष्काः, शेषा भवनपतिव्यन्तरविशेषाः; गरुडाः-सुवर्णकुमाराः, एवं चैतद्यतो 'निग्गंथे पावयणे निस्संकिए'-निःसंशयः, निक्कंखिए-मुक्तदर्शनान्तरपक्षपातो, निव्वितिगिच्छे-फलं प्रति निःशङ्कः, लद्धट्ठे-अर्थश्रवणतः, गहियट्ठे-अर्थावधारणेन, पुच्छियट्ठे-संशये सति, अहिगयट्ठे-बोधात्, विणिच्छियट्ठे-ऐदम्पर्योपलम्भात्; अत एव अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्तेत्ति-अस्थीनि च प्रसिद्धानि मिञ्जा च-तन्मध्यवर्त्ती धातुरस्थिमिञ्जास्ताः प्रेमानुरागेण-सर्वज्ञप्रवचनप्रीतिलक्षणकुसुम्भादिरागेण रक्ता इव रक्ता यस्य स तथा, केनोल्लेखेनेत्याह-'अयमाउसो !, निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे;' 'आउसो'त्ति-आयुष्मन्निति, पुत्रादेरामन्त्रणं शेषं-धनधान्यपुत्रदारराज्यकुप्रवचनादि, उसियफलिहे-उच्छ्रितं स्फटिकमिव स्फटिकं-अन्तःकरणं यस्य स तथा, मौनीन्द्रप्रवचनावाप्त्या परितुष्टमना इत्यर्थः, इति वृद्धव्याख्या; केचित्त्वाहुः-उच्छ्रितः-अर्गलास्थानादपनीय ऊर्ध्वीकृतो न तिरश्चीनः कपाटपश्चाद्भागादपनीत इत्यर्थः, उत्सृतो वा-अपगतः परिघः-अर्गला गृहद्वारे यस्यासौ उत्सृतपरिघः उच्छ्रितपरिघो वा औदार्यातिरेकादतिशयदानदायित्वेन भिक्षुप्रवेशार्थमनर्गलितगृहद्वार इत्यर्थः, 'अवंगुयदुवारे'-अप्रावृतद्वारः कपाटादिभिर्भिक्षुकप्रवेशार्थमेव अस्थगितगृहद्वार इत्यर्थः इत्येकीयं व्याख्यानं, वृद्धानां-तु भावनावाक्यमेवं यदुत सद्दर्शनलोभेन कस्माच्चित्पापण्डिकान्न बिभेति शोभनमार्ग-प्रतिग्रहेणोद्घाटशिरास्तिष्ठतीति भावः, 'चियत्तंतेउरघरदारप्पवेसे'-चियत्तत्ति-नाप्रीतिकरः अन्तःपुरगृहे द्वारेण प्रवेशः

शिष्टजनप्रवेशनं यस्य स तथा, अनीर्ष्यालुत्वं चास्यानेनोक्तं, अथवा–चियत्तोत्ति–लोकानां प्रीतिकर एव अन्तःपुरे गृहद्वारे वा प्रवेशो यस्य स तथा, अतिधार्मिकतया सर्वत्रानाशङ्कनीयत्वादिति; 'चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णिमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे' उद्दिष्टा–अमावास्या पौषधं–आहारपौषधादिचतूरूपं 'समणे निग्गंथे फासुएणं एसणिज्जेणं असणपाणखाइमसा- इमेणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुंछणेणं'–पतद्ग्रहः–पात्रं, पादप्रोञ्छनं–रजोहरणं, 'ओसहभेसज्जेण'–भेषजं–पथ्यं 'पाडिहारिएणं पीढफलगसेज्जासंथारएणं पडिलाभेमाणे' प्रातिहारिकेण–पुनःसमर्प्पणीयेन पीठः–आसनं फलकम्–अवष्टम्भार्थं शय्या–वसतिः शयनं वा यत्र प्रसारितपादैः सुप्यते संस्तारको–लघुतरः, 'अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ' 'सुए परिव्वायगे'त्ति–शुको–व्यासपुत्रः, ऋग्वेदादयश्चत्वारो वेदाः, षष्टितन्त्रं–साङ्ख्यमतं, सांख्यसमये–साङ्ख्यसमाचारे लब्धार्थो; वाचनान्तरे तु यावत्करणादेवमिदमवगन्तव्यं,ऋग्वेदयजुर्वेदसामवेदाथर्वणवेदानामितिहासपञ्चमानां इतिहासः–पुराणं निर्घण्टु- षष्ठानां'–निर्घण्टुः–नामकोशः, 'साङ्गोपाङ्गानां'–अङ्गानि–शिक्षादीनि, उपाङ्गानि–तदुक्तप्रपञ्चनपराः प्रबन्धाः; सरहस्यानां– ऐदम्पर्ययुक्तानां, सारकः–अध्यापनद्वारेण प्रवर्तकः, स्मारको वा अन्येषां विस्मृतस्य स्मारणात्, वारकोऽशुद्धपाठनिषेधकः; पारगः–पारगामी, षडङ्गवित्; षष्टितन्त्रविशारदः–षष्टितन्त्रं–कापिलीयशास्त्रं, षडङ्गवेदकत्वमेव व्यनक्ति; सङ्ख्याने–गणित- स्कन्धे, 'शिक्षाकल्पे'–शिक्षायां–अक्षरस्वरूपनिरूपके शास्त्रे, कल्पे–तथाविधसमाचारप्रतिपादके, व्याकरणे–शब्दलक्षणे, छन्दसि- पद्यवचनलक्षणनिरूपके, निरुक्ते–शब्दनिरुक्तप्रतिपादके, ज्योतिषामयने–ज्योतिः शास्त्रे, अन्येषु च–ब्राह्मणकेषु शास्त्रेषु सुपरिनिष्ठित इति; वाचनान्तरं–'पञ्चयमपञ्चनियमयुक्तः,' तत्र पञ्च यमाः–प्राणातिपातविरमणादयः, नियमास्तु–शौचसंतोष-

तपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि शौचमूलकं यमनियममीलनाद्दशप्रकारं, धातुरक्तानि वस्त्राणि प्रवराणि परिहितो यः स तथा, त्रिदण्डादीनि सप्त हस्ते गतानि यस्य स तथा, तत्र कुण्डिका-कमण्डलुः, क्वचित्काञ्चनिका करोटिका वाऽधीयेते ते च क्रमेण रुद्राक्षकृतमाला मृद्भाजनं चोच्यते, छण्णालकं-त्रिकाष्ठिका अङ्कुशो-वृक्षपल्लवच्छेदार्थः पवित्रकं-ताम्रमयमङ्गुलीयकं केसरी-चीवरखण्डं प्रमार्जनार्थं, 'संखाणं'ति-साङ्ख्यमतं, 'सज्जपुढवि'त्ति-कुमारपृथिवी । 'पयणं आरुहेइ'-पाकस्थाने चुल्ल्यादावारोपयति, उष्माणं-उष्णत्वं ग्राहयति, 'दिट्ठिं वमित्तए'-मतं वमयितुं, त्याजयितुमित्यर्थः । 'अट्ठाइं'ति-अर्थान् अर्यमाणत्वादधिगम्यमानत्वादित्यर्थः, प्रार्थ्यमानत्वाद्वा याच्यमानत्वादित्यर्थः, वक्ष्यमाणयात्रायापनीयादीन्, तथा तानेव 'हेऊइं'ति-हेतून्, अन्तर्वर्त्तिन्यास्तदीयज्ञानसम्पदो गमकत्वात्; 'पसिणाइं'ति-प्रश्नान् पृच्छ्यमानत्वात्, 'कारणाइं'ति-कारणानि विवक्षितार्थनिश्चयस्य जनकानि, 'वागरणाइं'ति-व्याकरणानि प्रत्युत्तरतया व्याक्रियमाणत्वादेषामिति, 'निप्पट्ठ-पसिणवागरणं'ति-निर्गतानि स्पष्टानि-स्फुटानि प्रश्नव्याकरणानि-प्रश्नोत्तराणि यस्य स तथा, 'खीणा उवसंत'त्ति-क्षयोपशममुपगता इत्यर्थः; एतेषां च यात्रादिपदानामागमिकगम्भीरार्थत्वेनाचार्यस्य तदर्थपरिज्ञानमसम्भावयताऽपभ्राजनार्थं प्रश्नः कृत इति, 'सरिसवय'त्ति-एकत्र सदृशवयसः-समानवयसः, अन्यत्र सर्षपाः-सिद्धार्थकाः 'कुलत्थि'त्ति-एकत्र कुले तिष्ठन्तीति कुलस्थाः, अन्यत्र कुलत्थाः धान्यविशेषाः; सरिसवयादिपदप्रश्नः छलग्रहणेनोपहासार्थं कृत इति । 'एगे भवं'ति-एको भवान् इति, एकत्वाभ्युपगमे आत्मनः कृते सूरिणा श्रोत्रादिविज्ञानानामवयवानां चात्मनोऽनेकतोपलब्ध्या एकत्वं दूषयिष्यामीत्तिबुद्ध्या पर्यनुयोगः शुकेन कृतः, 'दुवे भवं'ति-द्वौ भवानिति च, द्वित्वाभ्युपगमे अहमित्येकत्वविशिष्टस्यार्थस्य

द्वित्वविरोधेन द्वित्वं दूषयिष्यामीतिबुद्ध्या पर्यनुयोगो विहितः, अक्षयः अव्ययः अवस्थितो भवाननेन नित्यात्मपक्षः पर्यनुयुक्तः, अनेके भूता–अतीता भावाः–सत्ताः परिणामा वा भव्याश्च–भाविनो यस्य स तथा, अनेन चातिक्रान्तभाविसत्ताप्रश्नेन अनित्यात्मपक्षः पर्यनुयुक्तः, एकतरपरिग्रहे अन्यतरस्य दूषणायेति। तत्राचार्येण स्याद्वादस्य निखिलदोषगोचरातिक्रान्तत्वात्तमवलम्ब्योत्तरमदायि–एकोऽप्यहं, कथं ?, द्रव्यार्थतया जीवद्रव्यस्यैकत्वात्, न तु प्रदेशार्थतया, तथा ह्यनेकत्वान्ममेत्यवयवादी (मश्रोत्राद्यवयवा) नामनेकत्वोपलम्भो न बाधकः, तथा कश्चित् स्वभावमाश्रित्यैकत्वसङ्ख्याविशिष्टस्यापि पदार्थस्य स्वभावान्तरद्वयापेक्षया द्वित्वमपि न विरुद्धमित्यत उक्तं–द्वावप्यहं ज्ञानदर्शनार्थतया, न चैकस्वभावे भेदो न दृश्यते, एको हि देवदत्तादिपुरुषः एकदैव तत्तदपेक्षया पितृत्वपुत्रत्वभ्रातृत्वपितृव्यत्वमातुलत्वभागिनेयत्वादीननेकान् स्वभावांल्लभत इति, तथा प्रदेशार्थतया असङ्ख्यातान् प्रदेशानाश्रित्याक्षयः, सर्वथा प्रदेशानां क्षयाभावात्, अव्ययः कियतामपि च व्ययाभावात्, किमुक्तं भवति ?–अवस्थितो नित्यः, असङ्ख्येयप्रदेशता हि न कदाचनापि व्यपैति अतो नित्यताभ्युपगमेऽपि न दोषः, उपयोगार्थतया–विविधविषयानुपयोगानाश्रित्य अनेकभूतभावभविकोऽपि, अतीतानागतयोर्हि कालयोरनेकविषयबोधानामात्मनः कथंचिदभिन्नानामुत्पादाद्विगमाद्वाऽनित्यपक्षो न दोषायेति। पुण्डरीकेण–आदिदेवगणधरेण निर्वाणत उपलक्षितः पर्वतः, तस्य तत्र प्रथमं निर्वृतत्वात् पुण्डरीकपर्वतः–शत्रुञ्जयः।

तते णं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहिं अंतेहि य, पंतेहि य, तुच्छेहि य, लूहेहि य, अरसेहि य, विरसेहि य, सीएहि य, उण्हेहि य, कालातिक्कंतेहि य, पमाणाइक्कंतेहि य, णिच्चं पाणभोयणेहि य;

५–श्रीशैलकाध्य० शुकस्य थावच्चापुत्रेण सहालापादिकम्।

पयइसुकुमालयस्स सुहोचियस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूता उज्जला जाव दुरहियासा कंडुय-दाहपित्तज्जरपरिगयसरीरे यावि विहरति; तते णं से सेलए तेणं रोयायंकेण सुक्के जाए यावि होत्था, तते णं सेलए अन्नया कदाइं पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरति, परिसा निग्गया, मंडुओऽवि निग्गओ, सेलयं अणगारं जाव वंदति, नमं० २, पज्जुवासति; तते णं से मंडुए राया सेलयस्स अणगारस्स सरीरयं सुक्कं भुक्कं जाव सव्वाबाहं सरोगं पासति २, एवं वदासी-अहं णं भंते !, तुब्भं अहापवित्तेहिं, तिगिच्छएहिं, अहापवित्तेणं, ओसहभेसज्जेणं, भत्तपाणेणं, तिगिच्छं आउंटावेमि; तुब्भे णं भंते !, मम जाणसालासु समोसरह, फासुअं एसणिज्जं पीढफलगसेज्जासंथारगं ओगिण्हित्ताणं विहरह; तते णं से सेलए अणगारे मंडुयस्स रन्नो एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेति, तते णं से मंडुए सेलयं वंदति, नमंसति २; जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव दिसिं पडिगए । तते णं से सेलए कल्लं जाव जलंते सभंडमत्तोवगरणमायाए पंथयपामोक्खेहिं पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं, सेलगपुरमणुपविसति २, जेणेव मंडुयस्स जाणसाला तेणेव उवागच्छति २, फासुयं पीढ जाव विहरति; तते णं से मंडुए चिगिच्छए सद्दावेति २, एवं वदासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया !, सेलयस्स फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं आउट्टेह; तते णं तेगिच्छया मंडुएणं रन्ना एवं वुत्ता हट्ठ० सेलयस्स अहापवित्तेहिं ओसहभेसज्जभत्तपाणेहिं तेगिच्छं आउट्टेंति, मज्जपाणयं च से उवदिसंति; तते णं तस्स सेलयस्स अहापवत्तेहिं जाव मज्जपाणेण रोगायंके

उवसंते होत्था हट्ठे मल्लसरीरे जाते ववगयरोगायंके, तते णं से सेलए तंसि रोयायंकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुलंसि असण ४ मज्जपाणए य मुच्छिए, गढिए, गिद्धे, अज्झोववन्ने ओसन्नो ओसन्नविहारी, एवं पासत्थे २, कुसीले २, पमत्ते, संसत्ते, उउबद्धपीढफलगसेज्जासंथारए पमत्ते यावि विहरति; नो संचाएति फासुएसणिज्जं पीढं पच्चप्पिणित्ता, मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता, बहिया जाव (जणवयविहारं अब्भुज्जएण पवत्तेण पग्गहिएण) विहरित्तए ॥ सूत्रम्-६३ ॥ तते णं तेसिं पंथयवज्जाणं पंचण्हं अणगारसयाणं अन्नया कयाइं, एगयओ सहियाणं जाव पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणाणं अयमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्जं जाव पव्वतिए, विपुलेणं असण ४, मज्जपाणए मुच्छिए, नो संचाएति जाव विहरित्तए, नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया !, समणाणं जाव पमत्ताणं विहरित्तए, तं सेयं खलु देवा० अम्हं कल्लं सेलयं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठवेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं जाव विहरित्तए, एवं संपेहेंति २, कल्लं जेणेव सेलए आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ० पच्चप्पिणंति २, पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावेंति २, बहिया जाव विहरंति ॥ सूत्रम्-६४ ॥ तते णं से पंथए सेलयस्स सेज्जासंथारउच्चारपासवणखेलसंघाणमत्तओसहभेसज्जभत्तपाणएणं अगिलाए विणएणं वेयावडियं करेइ, तते णं से सेलए अन्नया कयाइं कत्तियचाउम्मासियंसि विपुलं असण० ४, आहारमाहारिए सुबहुं मज्जपाणयं पीए

पुव्वावरण्हकालसमयंसि सुहप्पसुत्ते, तते णं से पंथए कत्तियचाउम्मासियंसि कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते, चाउम्मासियं पडिक्कमिउं कामे सेलयं रायरिसिं खामणट्ठयाए सीसेणं पाएसु संघट्टेइ; तते णं से सेलए पंथएणं सीसेणं पाएसु संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उट्ठेति२, एवं वदासी-से केस णं भो एस अप्पत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जे णं ममं सुहपसुत्तं पाएसु संघट्टेति !, तते णं से पंथए सेलएणं एवं वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिए करयल० कट्टु, एवं वदासी-अहण्णं भंते !, पंथए कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते, चाउम्मासियं पडिक्कंते, चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणुप्पियं वंदमाणे सीसेणं पाएसु संघट्टेमि, तं खमंतु णं देवाणुप्पिया !, खमन्तु मेऽवराहं तुमण्णं देवाणुप्पिया !, णाइभुज्जो एवं करणयाए त्तिकट्टु सेलयं अणगारं एतमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो २, खामेति; तते णं तस्स सेलयस्स रायरिसिस्स पंथएणं एवं वुत्तस्स अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं रज्जं च जाव ओसन्नो जाव उउबद्धपीढ० विहरामि, तं नो खलु कप्पति समणाणं णिग्गंथाणं अपसत्थाणं जाव विहरित्तए, तं सेयं खलु मे कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारयं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं जाव जणवयविहारेणं विहरित्तए, एवं संपेहेति २; कल्लं जाव विहरति ॥ सूत्रम्-६५ ॥ एवामेव समणाउसो !, जाव निग्गंथो वा २, ओसन्ने जाव संथारए पमत्ते विहरति, से णं इह लोए चेव बहूणं समणाणं ४, हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो । तते णं ते पंथग-

वज्जा पंच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अन्नमन्नं सद्दावेंति २, एवं वयासी—सेलए रायरिसी पंथएणं बहिया जाव विहरति, तं सेयं खलु देवा० !, अम्हं सेलयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए, एवं संपेहेंति २ त्ता, सेलयं रायं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति ॥ सूत्रम्—६६ ॥ तते णं ते सेलयपामोक्खा पंच अणगारसया बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता जेणेव पोंडरीये पव्वए तेणेव उवागच्छंति २, जहेव थावच्चापुत्ते तहेव सिद्धा । एवामेव समणाउसो !, जो निग्गंथो वा २, जाव विहरिस्सति एवं खलु जंबू !, समणेणं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥ सूत्रम्—६७ ॥ पंचमं नायज्झयणं समत्तं ॥

'अंतेहि'इत्यादि, अन्तैः—वल्लचणकादिभिः, प्रान्तैः—तैरेव भुक्तावशेषैः, पर्युषितैर्वा रुक्षैः—निःस्नेहैस्तुच्छैः—अल्पैः, अरसैः—हिङ्ग्वादिभिरसंस्कृतैर्विरसैः—पुराणत्वाद्विगतरसैः, शीतैः—शीतलैः, उष्णैः—प्रतीतैः, कालातिक्रान्तैः—तृष्णाबुभुक्षाकालाप्राप्तैः, प्रमाणातिक्रान्तैः—बुभुक्षापिपासामात्रानुचितैः; चकाराः—समुच्चयार्थाः, एवंविधविशेषणान्यपि पानादीनि निष्ठुरशरीरस्य न भवन्ति बाधायै अत आह—'प्रकृतिसुकुमारकस्ये'त्यादि,' वेयणा पाउब्भूया इत्यस्य स्थाने रोगायंकेत्ति क्वचित् दृश्यते, तत्र रोगाश्चासावातङ्कश्च—कृच्छ्रजीवितकारीति समासः, कण्डूः—कण्डूतिः, दाहः—प्रतीतस्तत्प्रधानेन पित्तज्वरेण परिगतं शरीरं यस्य स तथा, 'तेइच्छं'ति—चिकित्सां, 'आउट्टावेमि'त्ति—आवर्त्तयामि कारयामि । 'सभंडमत्तोवगरणमायाए'त्ति—भाण्डमात्रा—पतद्ग्रहं परिच्छदश्च उपकरणं च—वर्षाकल्पादि भाण्डमात्रोपकरणं स्वं च—तदात्मीयं भाण्डमात्रोपकरणं च स्वभाण्डमात्रोपकरणं तदादाय—गृहीत्वा, 'अभ्युद्यतेन'—सोद्यमेन, 'प्रदत्तेन'—गुरुणोपदिष्टेन 'प्रगृहीतेन'

गुरुसकाशादङ्गीकृतेन 'विहारेण' साधु वर्त्तनेन 'विहर्त्तुं'-वर्त्तितुं, पार्श्वे-ज्ञानादीनां बहिस्तिष्ठतीति पार्श्वस्थः-गाढग्लानत्वादि-कारणं विना शय्यातराभ्याहृतादिपिण्डभोजकत्वाद्यागमोक्तविशेषणः, स च सकृदनुचितकरणेनाल्पकालमपि भवति, तत उच्यते-पार्श्वस्थानां यो विहारो-बहूनि दिनानि यावत्तथा वर्त्तनं स पार्श्वस्थविहारः, सोऽस्यास्तीति पार्श्वस्थविहारी, एवमव-सन्नादिविशेषणान्यपि, नवरमवसन्नो-विवक्षितानुष्ठानालसः, आवश्यकस्वाध्यायप्रत्युपेक्षणाध्यानादीनामसम्यक्कारीत्यर्थः; कुत्सितशीलः-कुशीलः-कालविनयादिभेदभिन्नानां ज्ञानदर्शनचारित्राचाराणां विराधक इत्यर्थः; प्रमत्तः-पञ्चविधप्रमा-दयोगात्, संसक्तः कदाचित्संविग्नगुणानां कदाचित्पार्श्वस्थादिदोषाणां सम्बन्धात् गौरवत्रयसंसजनाच्चेति, ऋतुबद्धेऽपि-अवर्षाकालेऽपि पीठफलकानि शय्यासंस्तारकार्थं यस्य स तथा 'नाइभुज्जो एवं करणयाए'त्ति-नैवः भूयः-पुनरपि एवं-इत्थंकरणाय प्रवर्त्तिष्ये इति शेषः; 'एवमेवे'त्यादिरुपनयः, इह गाथा-"सिढिलियसंजमकज्जावि होइउं उज्जमंति जइ पच्छा। संवेगाओ तो सेलउव आराहया होंति ॥ १ ॥" इति पञ्चमशैलकज्ञातविवरणं समाप्तमिति ॥



1 सा० शिथिलितसंयमकार्या अपि भूत्वोद्यच्छन्ति यदि पश्चात्। संवेगात् तर्हि शैलक इव ते आराधका भवन्ति ॥ १ ॥

॥ ६-श्रीतुम्बकाख्यं ज्ञाताध्ययनम् ॥

पञ्चमानन्तरं षष्ठं व्याख्यायते, तस्य च पूर्वेण सहायं सम्बन्धः, अनन्तराध्ययने प्रमादवतोऽप्रमादवतश्चानर्थेतरावुक्तौ, इहापि तयोरेव तावेवोच्येते इत्येवसम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते, समणेणं जाव संपत्तेणं पंचमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते; छट्ठस्स णं भंते !, नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?; एवं खलु जंबू !, तेणं कालेणं २, रायगिहे समोसरणं, परिसा निग्गया, तेणं कालेणं २, समणस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती, अदूरसामंते जाव सुक्कज्झाणोवगए विहरति; तते णं से इंदभूती जायसड्ढे० समणस्स ३, एवं वदासी--कहण्णं भंते !, जीवा गुरुयत्तं वा, लहुयत्तं वा हव्वमागच्छंति ?; गोयमा !, से जहा नामए केइ पुरिसे एगं, महं, सुक्कं, तुंबं; णिच्छिड्डं, निरुवहयं, दब्भेहिं कुसेहिं वेढेइ २; मट्टियालेवेणं लिंपति, उण्हे दलयति २, सुक्कं समाणं दोच्चंपि दब्भेहि य, कुसेहि य, वेढति २, मट्टियालेवेणं लिंपति २; उण्हे सुक्कं समाणं तच्चंपि दब्भेहि य, कुसेहि य, वेढति २, मट्टियालेवेणं लिंपति; एवं खलु एएणुवाएणं अंतरा वेढेमाणं, अंतरा लिंपेमाणे, अंतरा सुक्कवेमाणे जाव अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं आलिंपति, अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा; से णूणं गोयमा !,

१ °ति २ त्ता० उ० अ।

से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवेणं गुरुययाए, भारिययाए, गुरुयभारिययाए; उप्पिं सलिलमतिवइत्ता अहे धरणियलपइट्ठाणे भवति; एवामेव गोयमा!, जीवावि पाणातिवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं अणुपुव्वेणं अट्ठ कम्मपगडीओ समज्जिणन्ति; तासिं गरुययाए, भारिययाए, गरुयभारिययाए, कालमासे कालं किच्चा, धरणियलमतिवतित्ता, अहे नरगतलपइट्ठाणा भवंति; एवं खलु गोयमा!, जीवा गुरुयत्तं हव्वमागच्छंति। अहण्णं गोतमा!, से तुंबे तंसि पढमिल्लुगंसि, मट्टियालेवंसि, तिन्नंसि कुहियंसि परिसडियंसि, ईसिं धरणियलाओ उप्पतित्ता णं चिट्ठति; ततोऽणंतरं च णं दोच्चंपि मट्टियालेवे जाव उप्पतित्ता णं चिट्ठति, एवं खलु एएणं उवाएणं, तेसु अट्ठसु मट्टियालेवेसु तिन्नेसु जाव विमुक्कबंधणे, अहेधरणियलमइवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवति; एवामेव गोयमा!, जीवा पाणातिवातवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं, अणुपुव्वेणं अट्ठ कम्मपगडीओ खवेत्ता, गगणतलमुप्पइत्ता उप्पिं लोयग्गपतिट्ठाणा भवंति; एवं खलु गोयमा!, जीवा लहुयत्तं हव्वमागच्छंति। एवं खलु जंबू!, समणेणं भगवया महावीरेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ सूत्रम्-६८ ॥ छट्ठं नायज्झयणं समत्तं ॥ ६ ॥

सर्वं सुगमं, नवरं, निरुपहतं-वातादिभिः, दर्भः-अग्रभूतैः, कुशैः-मूलभूतैः; जात्या दर्भकुशभेद इत्यन्ये, 'अत्थाहंसि' त्ति-अस्थाघे, अगाधे इत्यर्थः; पुरुषः परिमाणमस्येति पौरुषिकं, तन्निषेधादपौरुषिकं; मृल्लेपानां सम्बन्धात् गुरुकतया,

गुरुकतैव कुतः ?,–भारिकतया, मृल्लेपजनितभारवत्त्वेनेति भावः, गुरुकभारिकतयेति तुम्बकधर्मद्वयस्याप्यधोमज्जनकारणता-प्रतिपादनायोक्तं, 'उप्पिं'–उपरि, 'अइवइत्ता'–अतिपत्यातिक्रम्य, 'तिन्नंसि'त्ति–स्तिमित आर्द्रतां गते, ततः 'कुथिते'–कोथमुपगते; ततः 'परिसडिते'–पतिते इति । इह गाथे–"जह मिउलेवालित्तं गरुयं तुंबं अहो वयइ एवं । आसवकयकम्म-गुरू जीवा वच्चंति अहरगयं ॥ १ ॥ तं चेव तव्विमुक्कं जलोवरिं ठाइ जायलहुभावं । जह तह कम्मविमुक्का लोयग्गपइट्ठिया होंति ॥ २ ॥" श्री षष्ठतुम्बकज्ञातविवरणं समाप्तमिति ॥ ६ ॥

॥ ७–श्रीरोहिणीज्ञाताध्ययनम् ॥

अथ सप्तमं विव्रियते, अस्य च पूर्वेण सहायं सम्बन्धः, इहानन्तराध्ययने प्राणातिपातादिमतां कर्मगुरुताभावेनेतरेषां च लघुताभावेन अनर्थप्राप्तीतरे उक्ते, इह तु प्राणातिपातादिविरतिभञ्जकपरिपालकानां ते उच्येते; इत्येवंसम्बद्धम्—

जति णं भंते !, समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, सत्तमस्स णं भंते !, नायज्झयणस्स के अट्ठे पन्नत्ते ?; एवं खलु जंबू !, तेणं कालेणं २, रायगिहे नाम नयरे होत्था, सुभूमिभागे उज्जाणे; तत्थ णं रायगिहे नगरे धण्णे नामं सत्थवाहे परिवसति, अड्ढे०, भद्दा भारिया, अहीण-पंचेंदिय० जाव सुरूवा; तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता, भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवा-

सा०—१–२ यथा मृल्लेपलिप्तं गुरु तुम्बमधो व्रजति एवं । आश्रवकृतकर्मगुरुत्वा जीवा व्रजन्ति अधोगतिं ॥ १ ॥ तदेव तद्विमुक्तं जलोपरि तिष्ठति जातलघुभावं । यथा तथा कर्मविमुक्ता लोकाग्रे प्रतिष्ठिता भवन्ति ॥ २ ॥

हदारया होत्था; तंजहा–धणपाले, धणदेवे, धणगोवे, धणरक्खिए; तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था, तं०–उज्झिया, भोगवतिया, रक्खतिया, रोहिणिया; तते णं तस्स धण्णस्स अन्नया कदाइं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं रायगिहे बहूणं ईसर जाव पभिईणं सयस्स कुडुंबस्स बहूसु कज्जेसु य, करणिज्जेसु कोडुंबेसु य, मंतणेसु य, गुज्झे, रहस्से, निच्छए, ववहारेसु य; आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे मेढी; पमाणे, आहारे, आलंबणे, चक्खुमेढीभूते, कज्जवट्टावए; तं ण णज्जति जं मए गयंसि वा, चुयंसि वा, मयंसि वा, भग्गंसि वा, लुग्गंसि वा, सडियंसि वा, पडियंसि वा, विदेसत्थंसि, वा, विप्पवसियंसि वा, इमस्स कुडुंबस्स किं मन्ने आहारे वा, आलंबे वा, पडिबंधे वा भविस्सति ?; तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते विपुलं असणं ४, उवक्खडावेत्ता मित्तणाति०, चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेत्ता, तं मित्तणाइणियगसयण० य चउण्ह सुण्हाणं कुलघरवग्गं विपुलेणं असणं ४, धुवपुप्फवत्थगंध जाव सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्तणाति० चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरतो चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए पंच २, सालिअक्खए दलइत्ता; जाणामि ताव का किहं वा सारक्खेइ वा, संगोवेइ वा, संवड्ढेति वा ?; एवं संपेहेइ २, कल्लं जाव मित्तणाति०, चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ २, विपुलं असणं ४, उवक्खडावेइ; ततो पच्छा ण्हाए भोयणमंडवंसि सुहासण०, मित्तणाति०, चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गेणं सद्धिं तं

विपुलं असण ४, जाव सक्कारेति २, तस्सेव मित्तनाति०, चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरतो पंच सालिअक्खए गेण्हति २, जेट्ठा सुण्हा उज्झितिया तं सद्दावेति २; एवं वदासी-तुमं णं पुत्ता मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि २, अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणी संगोवेमाणी विहराहि; जया णंऽहं पुत्ता!, तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिदिज्जाएज्जासि त्तिकट्टु सुण्हाए हत्थे दलयति २, पडिविसज्जेति; तते णं सा उज्झिया धण्णस्स तहत्ति एयमट्ठं पडिसुणेति २, धण्णस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हति २, एगंतमवक्कमति, एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अब्भत्थिए०-एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति, तं जया णं ममं ताओ इमे पंच सालिअक्खए जाएस्सति, तया णं अहं पल्लंतराओ अन्ने पंच सालिअक्खए गहाय दाहामि त्तिकट्टु एवं संपेहेइ २, तं पंच सालिअक्खए एगंते एडेति २, सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था। एवं भोगवतियाएवि, णवरं सा छोल्लेति २, अणुगिलति २, सकम्मसंजुत्ता जाया। एवं रक्खियावि, नवरं गेण्हति २, इमेयारूवे अब्भत्थिए०-एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्तनाति०, चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरतो सद्दावेत्ता, एवं वदासी-तुमण्णं पुत्ता मम हत्थाओ जाव पडिदिज्जाएज्जासि त्तिकट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयति, तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं तिकट्टु एवं संपेहेति २, ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ २, रयणकरंडियाए पक्खिवेइ २, ऊसीसामूले ठावेइ २ तिसंझं पडि-

जागरमाणी विहरइ । तए णं से धण्णे सत्थवाहे तस्सेव मित्त जाव चउत्थि रोहिणीयं सुण्हं सद्दावेति २, जाव तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं तं सेयं खलु मम एए पंच सालिअक्खए सारक्खेमाणीए, संगोवेमाणीए, संवड्ढेमाणीए त्तिकट्टु एवं संपेहेति २, कुलघरपुरिसे सद्दावेति २; एवं वदासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया !, एते पंच सालिअक्खए गेण्हह २, पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेह २ त्ता, इमे पंच सालिअक्खए वावेह २, दोच्चंपि तच्चंपि उक्खयनिहए करेह २, वाडिपक्खेवं करेह २, सारक्खेमाणा, संगोवेमाणा, अणुपुव्वेणं संवड्ढेह; तते णं ते कोडुंबिया रोहिणीए एतमट्ठं पडिसुणंति, ते पंच सालिअक्खए गेण्हंति २, अणुपुव्वेणं सारक्खंति, संगोवंति, विहरंति; तए णं ते कोडुंबिया पढमपाउसंसि, महावुट्ठिकायंसि, णिवइयंसि, समाणंसि; खुड्डायं केदारं सुपरिकम्मियं करेंति २, ते पंच सालिअक्खए ववंति, दुच्चंपि, तच्चंपि, उक्खयनिहए करेंति २, वाडिपरिक्खेवं करेंति २, अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा, संगोवेमाणा, संवड्ढेमाणा, विहरंति; तते णं ते साली अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा, संगोविज्जमाणा, संवड्ढिज्जमाणा, साली जाया किण्हा किण्होभासा जाव निउरंबभूया पासादीया ४; तते णं साली पत्तिया, वत्तिया, गब्भिया, पसूया, आगयगंधा, खीराइया, बद्धफला, पक्का, परियागया, सल्लइया, पत्तइया, हरियपव्वकंडा जाया यावि होत्था; तते णं ते कोडुंबिया ते सालीए पत्तिए जाव सल्लइए पत्तइए जाणित्ता, तिक्खेहिं, णवपज्जणएहिं, असियएहिं लुणेंति २, करयलमलिते करेंति २, पुणंति; तत्थ

णं चोक्खाणं सूयाणं, अक्खंडाणं, अफोडियाणं, छड्डुछडापूयाणं, सालीणं मागहए पत्थए जाए; तते णं ते कोडुंबिया ते साली णवएसु घडएसु पक्खिवंति २, उपलिंपंति २, लंछियमुद्दिते करेंति २, कोट्ठागारस्स एगदेसंसि ठावेंति २, सारक्खेमाणा, संगोवेमाणा, विहरंति; तते णं ते कोडुंबिया दोच्चंमि वासारत्तंसि, पढमपाउसंसि, महावुट्ठिकायंसि, निवइयंसि; खुड्डागं, केयारं, सुपरिकम्मियं करेंति; ते साली ववंति, दोच्चंपि, तच्चंपि, उक्खयणिहए जाव लुणेंति, जाव चलणतलमलिए करेंति २, पुणंति; तत्थ णं सालीणं बहवे कुडवा (मुरला) जाव एगदेसंसि ठावेंति २, सारक्ख०, संगो०, विहरंति; तते णं ते कोडुंबिया तच्चंसि वासारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि, बहवे केदारे सुपरि० जाव लुणेंति २, संवहंति २, खलयं करेंति २, मलेंति जाव बहवे कुंभा जाया; तते णं ते कोडुंबिया साली कोट्ठागारंसि पक्खिवंति, जाव विहरंति, चउत्थे वासारत्ते बहवे कुंभसया जाया। तते णं तस्स धण्णस्स पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि, इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था;-एवं खलु मम इओ अतीते पंचमे संवच्छरे, चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए, ते पंचे सालिअक्खता हत्थे दिन्ना, तं सेयं खलु मम कल्लं जाव जलंते पंच सालि-अक्खए परिजाइत्तए जाव जाणामि, ताव काए किहं सारक्खिया वा, संगोविया वा, संवड्ढिया जाव त्तिकट्टु एवं संपेहेति २ कल्लं जाव जलंते विपुलं असण ४, मित्तनाय०, चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर जाव

१ पचपंच सा० अ।

सम्माणित्ता; तस्सेव मित्त०, चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठं उज्झियं सद्दावेइ २ त्ता, एवं वयासी-एवं खलु अहं पुत्ता !, इतो अतीते पंचमंसि संवच्छरंसि इमस्स मित्त०, चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरतो तव हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयामि, जया णं अहं पुत्ता !, एए पंच सालियअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिदिज्जाएसि त्तिकट्टु तं हत्थंसि दलयामि; से नूणं पुत्ता !, अत्थे समट्ठे ?, हंता अत्थि, तन्नं पुत्ता !, मम ते सालिअक्खए पडिनिज्जाएहि; तते णं सा उज्झितिया एयमट्ठं धण्णस्स पडिसुणेति २, जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छति २, पल्लातो पंच सालिअक्खए गेण्हति २, जेणेव धण्णे सत्थवाहे, तेणेव उवागच्छति २; धण्णं० एवं वदासी-एए णं ते पंच सालिअक्खए त्तिकट्टु, धण्णस्स हत्थंसि ते पंच सालिअक्खए दलयति; तते णं धण्णे उज्झियं सवहसावियं करेति २, एवं वयासी किण्णं पुत्ता !, एए चेव पंच सालिअक्खए उदाहु अन्ने ?, तते णं उज्झिया धण्णं सत्थवाहं, एवं वयासी-एवं खलु तुब्भे तातो !, इओऽतीए पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त०, नाति०, चउण्ह य कुल०, जाव विहरामि, तते णंऽहं तुब्भं एतमट्ठं पडिसुणेमि २, ते पंच सालिअक्खए गेण्हामि एगंतमवक्कमामि, तते णं मम इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि० सकम्मसंजुत्ता तं णो खलु ताओ ! ते चेव पंच सालिअक्खए एए णं अन्ने, तते णं से धण्णे उज्झियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, णिसम्म, आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे उज्झितियं तस्स मित्तनाति० चउण्ह य सुण्हाणं

कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झियं च, छाणुज्झियं च, कयवरुज्झियं च, समुच्छियं च, सम्मज्जिअं च, पाउवदाइं च, ण्हाणोवदाइं च, बाहिरपेसणकारिं ठवेति; एवामेव समणाउसो !, जो अम्हं निग्गंथो वा २ जाव पव्वतिते पचं य से महव्वयातिं उज्झियाइं भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४, जाव अणुपरियट्टइस्सइ, जहा सा उज्झिया। एवं भोगवइयावि, नवरं तस्स कंडिंतियं वा, कोट्टंतियं च, पीसंतियं च, एवं रुचंतियं, रंधंतियं, परिवेसंतियं च, परिभायंतियं च, अब्भंतरियं च, पेसणकारिं, महाणसिणिं ठवेंति; एवामेव समणाउसो !, जो अम्हं समणो पंच य से महव्वयाइं फोडियाइं भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४, जाव हील ४, जहा व सा भोगवतिया। एवं रक्खितियावि, नवरं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ २, मंजूसं विहाडेइ २, रयणकरंडगाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हति २, जेणेव धण्णे तेणेव उवा० २, पंच सालिअक्खए धण्णस्स हत्थे दलयति; तते णं से धण्णे रक्खितियं, एवं वदासी–किन्नं पुत्ता ते चेव ते पंच सालिखक्खया उदाहु अन्नेत्ति ?, तते णं रक्खितिया धण्णं एवं० ते चेव ताया !, एए पंच सालिअक्खया णो अन्ने, कहन्नं पुत्ता !, एवं खलु ताओ !, तुब्भे इओ पंचमंमि जाव भवियव्वं एत्थ कारणेणं तिकट्टु ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे जाव तिसंझं पडिजागरमाणी य विहरामि; ततो एतेणं कारणेणं ताओ !, ते चेव ते पंच सालिअक्खए णो अन्ने, तते णं से धण्णे रक्खितियाए अंतिए एयमट्ठं सोचा हट्ठतुट्ठ तस्स कुलघरस्स हिरन्नस्स

य कंसदूसविपुलधणजावसावतेज्जस्स य भंडागारिणिं ठवेति, एवामेव समणाउसो ! जाव पंच य से महव्वयातिं रक्खियातिं भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं ४, अचणिज्जे जहा जाव सा रक्खिया। रोहिणियावि एवं चेव, नवरं तुब्भे ताओ मम सुबहुयं सगडीसागडं दलाहि, जेणं अहं तुब्भं ते पंच सालिअक्खए पडिणिज्जाएमि; तते णं से धण्णे रोहिणिं एवं वदासी–कहण्णं तुमं मम पुत्ता !, ते पंच सालिअक्खए, सगडसागडेणं निज्जाइस्ससि ?, तते णं सा रोहिणी धण्णं एवं वदासी–एवं खलु तातो !, इओ तुब्भे पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त जाव बहवे कुंभसया जाया तेणेव कमेणं एवं खलु ताओ !, तुब्भे ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाएमि; तते णं से धण्णे सत्थवाहे रोहिणी-याए सुबहुयं सगडसागडं दलयति, तते णं रोहिणी सुबहुं सगडसागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, कोट्ठागारे विहाडेति २, पल्ले उब्भिदति २, सगडीसागडं भरेति २, रायगिहं नगरं मज्झं-मज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति, तते णं रायगिहे नगरे सिंघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नं एवमातिक्खति०–धन्ने णं देवा० !, धण्णे सत्थवाहे जस्स णं रोहिणिया सुण्हा जीए णं पंच सालिअक्खए सगडसागडिएणं निज्जाएति; तते णं से धण्णे सत्थ० ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाएतिते पासति २, हट्ठ०, पडिच्छति २, तस्सेव मित्तनाति०, चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरपुरतो रोहि-

1 °इ २ आ. फो० भ।

णीयं सुण्हं तस्स कुलघरस्स बहुसु कज्जेसु य जाव रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं जाव वट्टावितं पमाणभूयं ठावेति; एवामेव समणाउसो !, जाव पंच महव्वया संवड्डिया भवंति, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं जाव वीतीवइस्सइ जहा व सा रोहिणीया। एवं खलु जंबू !, समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ॥ सूत्रम्-६९ ॥ सत्तमं नायज्झयणं समत्तं ॥ ७ ॥

इदमपि सुगमम्, नवरं 'मए'त्ति-मयि, 'गयंसि'त्ति-गते ग्रामादौ, एवं 'च्युते'-कुतोऽप्यनाचारात् स्वपदात् पतिते 'मृते'-परासुतां गते, 'भग्ने'-वात्यादिना कुब्जखञ्जत्वकरणेनासमर्थीभूते, 'लुग्गंसि व'त्ति-रुग्णे जीर्णतां गते, 'शटिते'-व्याधिविशेषाच्छीर्णतां गते, 'पतिते'-प्रासादादेर्मञ्चके वा ग्लानभावात्, 'विदेशस्थे' विदेशं गत्वा तत्रैव स्थिते, 'विप्रोषिते' स्वस्थानविनिर्गते देशान्तरगमनप्रवृत्ते, आधारः-आश्रयो भूरिव, आलम्बनं-वरत्रादिकमिव, प्रतिबन्धः-प्रमार्जनिकाशलाकादीनां लतादवरक इव कुलगृहं-पितृगृहं, तद्वर्गो मातापित्रादिः संरक्षति, अनाशनतः सङ्गोपयति, संवरणतः संवर्द्धयति, बहुत्वकरणतः; 'छोल्लेइ'त्ति-निस्तुषीकरोति, 'अणुगिलइ'त्ति भक्षयति, क्वचित्फोल्लेईत्येतदेव दृश्यते, तत्र च भक्षयतीत्यर्थः; 'पत्तिय'त्ति सञ्जातपत्राः, 'वत्तिय'त्ति व्रीहीणां पत्राणि मध्यशलाकापरिवेष्टनेन नालरूपतया वृत्तानि भवन्ति, तद्वृत्ततया जातवृत्तत्वाद्वर्त्तिताः शाखादीनां वा समतया वृत्तीभूताः सन्तो वर्त्तिता अभिधीयन्ते, पाठान्तरेण-'तइया व'त्ति-सञ्जातत्वच इत्यर्थः; गर्भिता-जातगर्भा, डोडकिता इत्यर्थः, प्रसूताः कणिशानां पत्रगर्भेभ्यो विनिर्गमात् आगतगन्धा-जातसुरभिगन्धाः आयातगन्धा वा दूरयायिगन्धा इत्यर्थः, क्षीरकिताः सञ्जातक्षीरकाः, बद्धफलाः क्षीरस्य फलतया बन्धनात् जातफला इत्यर्थः;

पक्काः काठिन्यमुपगताः, पर्यायागताः पर्यायगता वा सर्वनिष्पन्नतां गता इत्यर्थः, 'सल्लइपत्तय'त्ति–सल्लकी वृक्षविशेषस्तस्या इव पत्रकाणि दलानि कुतोऽपि साधर्म्यात् सञ्जातानि येषां ते तथेति, गमनिकैवेयं पाठान्तरेण शल्यकिताः शुष्कपत्रतया सञ्जातशलाकाः; पत्रकिताः सञ्जातकुत्सितकाऽल्पपत्राः, 'हरियपव्वकंड'त्ति हरितानि–हरितालवर्णानि, नीलानि पर्वकाण्डानि–नालानि येषां ते तथा, जाताश्चाप्यभूवन्, 'नवपज्जणएहिं'ति नवं प्रत्यग्रं, पायनं लोहकारेणातापितं कुट्टिवं तीक्ष्णधारीकृतं पुनस्तापितानां जले निबोलनं येषां तानि तथा तैः, 'असिएहिं'ति दात्रैः, 'अखंडाणं'ति सकलानां, अस्फुटितानां असञ्जातराजीकानां, छड २ इत्येवमनुकरणतः सूर्पादिना स्फुटाः–स्फुटीकृता शोधिता इत्यर्थः, स्पृष्टा वा पाठान्तरेण पूता वा ये ते तथा तेषां, 'मागहए पत्थए'त्ति "दो असईओ पराई दो पसइओ उ सेइया होइ। चउसेइओ उ कुडओ चउकुडओ पत्थओ नेउ ॥ १ ॥"त्ति अनेन प्रमाणेन मगधदेशव्यवहृतः प्रस्थो मागधप्रस्थः, 'उपलिंपति' घटकमुखस्य तत्पिधानकस्य च गोमयादिना रन्ध्रं भञ्जन्ति 'लिंपेंति' घटमुखं तत्स्थगितं च छगणादिना पुनर्मसृणीकुर्वन्ति, लाञ्छितं रेखादिना, मुद्रितं मृन्मयमुद्रादानेन तत्कुर्वन्ति, मुरलो मानविशेषः, खलकं धान्यमलनस्थण्डिलं, चतुष्प्रस्थं आढकः, आढकानां षष्ट्या जघन्यः कुम्भः अशीत्या मध्यमः शतेनोत्कृष्ट इति, 'क्षारोष्टिकां'–भस्मपरिष्ठापिकां, 'कचवरोज्झिकां' अवकरशोधिकां 'समुक्षिकां' प्रातर्गृहाङ्गणे जलच्छटकदायिकां, पाठान्तरेण 'संपुच्छिय'त्ति तत्र सम्प्रोच्छिका पादादिलूपिकां, 'सम्मार्जिकां' गृहस्यान्तर्बहिश्च बहुकरिकावाहिकां, 'पादोदकदायिकां' पादशौचदायिकां स्नानोदकदायिकां प्रतीतां, बाह्यानि प्रेपणानि कर्माणि

गा० १ द्वे असृती प्रसृतिः द्वे प्रसृती तु सेतिका भवति। चतुःसेतिकः कुडवश्चतुष्कुडवः प्रस्थको ज्ञेयः ॥ १ ॥

करोति या सा, 'बाहिरपेसणगारियत्ति भणिया,' 'कंडयंतिका'मिति अनुकम्पिता कण्डयन्तीति-तन्दुलादीन् उदूखलादौ क्षोदयन्तीति कंडयन्तिका तां, एवं 'कुट्टयन्तिकां' तिलादीनां चूर्णनकारिकां, 'पेषयन्तिकां' गोधूमादीनां घरट्टादिना पेषणकारिकां, 'रुन्धयंतिकां' यन्त्रके व्रीहिकोद्रवादीनां निस्तुषत्वकारिकां, 'रन्धयन्तिकां' ओदनस्य पाचिकां, 'परिवेषयन्तिकां' भोजनपरिवेषणकारिकां, 'परिभाजयन्तिकां' पर्वदिने स्वजनगृहेषु खण्डखाद्याद्यैः परिभाजनकारिकां महानसे नियुक्ता महानसिकी तां स्थापयति, 'सगडीसागडं'ति शकट्यश्च-गन्त्यः शकटानां समूहः शाकटं च शकटीशाकटं गड्डीओ गडिया यत्ति उक्तं भवति, 'दलाह'त्ति दत्त प्रयच्छतेत्यर्थः; 'जाणं'ति येन 'ण'मित्यलङ्कारे 'प्रतिनिर्यातयामि'-समर्प्पयामीति, अस्य च ज्ञातस्यैवं विशेषेणोपनयनं निगदति, यथा-'जह सेट्ठी तह गुरुणो जह णाइजणो तहा समणसंघो । जह बहुया तह भवा जह सालिकणा तह वयाइं ॥ १ ॥ जह सा उज्झियनामा उज्झियसाली जहत्थमभिहाणा । पेसणगारित्तेणं असंखदुक्खक्खणी जाया ॥ २ ॥ तह भव्वो जो कोई संघसमक्खं गुरुविदिन्नाइं । पडिवज्जिउं समुज्झइ महव्वयाइं महामोहा ॥ ३ ॥ सो इह चेव भवंमी जणाण धिक्कारभायणं होइ । परलोए उ दुहत्तो नाणाजोणीसु संचरइ ॥ ४ ॥ उक्तं च-"धम्माओ भट्ठं" वुत्तं, "इहेवऽहम्मो"वुत्तं "जह वा सा भोगवती जहत्थनामोवभुत्तसालिकणा । पेसणविसेसकारित्तणेण पत्ता दुहं चेव

सा०-१-१४ । यथा श्रेष्ठी तथा गुरवो यथा ज्ञातिजनस्तथा श्रमणसंघः । यथा वध्वस्तथा भव्या यथा शालिकणास्तथा व्रतानि ॥ १ ॥ यथा सोज्झितनाम्नी उज्झितशालिर्यथार्थाभिधाना प्रेषणकर्तृत्वेनासंख्यदुःखखनिर्जाता ॥ २ ॥ तथा भव्यो यः कोऽपि संघसमक्षं गुरुवितीर्णानि प्रतिपद्य समुज्झति महाव्रतानि महामोहात् ॥ ३ ॥ स इहैव भवे जनानां धिक्कारभाजनं भवति । परलोके तु दुःखार्त्तो नानायोनिषु संचरति ॥ ४ ॥' (अत्रत्यं यदतिदिष्टं धम्माओ भट्ठं० इहेवऽहम्मो० इति वृत्तद्वय तदप्रसिद्धत्वान्नोल्लिखितुं शक्यं) । यथा वा सा भोगवती यथार्थनाम्नी उपभुक्तशालिकणा । प्रेषणविशेषकारित्वेन

॥ ५ ॥ तह जो महव्वयाइं उवभुंजइ जीवियत्ति पालिंतो । आहाराइसु सत्तो चत्तो सिवसाहणिच्छाए ॥ ६ ॥ सो एत्थ जहिच्छाए पावइ आहारमाइ लिंगित्ति । विउसाण नाइपुज्जो परलोयम्मी दुही चेव ॥ ७ ॥ जह वा रक्खियवहुया रक्खियसालीकणा जहत्थक्खा । परिजणमण्णा जाया भोगसुहाइं च संपत्ता ॥ ८ ॥ तह जो जीवो सम्मं पडिवज्जित्ता महव्वए पंच । पालेइ निरइयारे पमायलेसंपि वज्जेंतो ॥ ९ ॥ सो अप्पहिएक्करई इहलोयंमिवि विऊहिं पणयपओ । एगंतसुही जायइ परंमि मोक्खंपि पावेइ ॥ १० ॥ जह रोहिणी उ सुण्हा रोवियसाली जहत्थमभिहाणा । वड्ढित्ता सालिकणे पत्ता सव्वस्ससामित्तं॥११॥ तह जो भव्वो पाविय वयाइं पालेइ अप्पणा सम्मं । अन्नेसिवि भव्वाणं देइ अणेगेसिं हियहेउं ॥ १२ ॥ सो इह संघपहाणो जुगप्पहाणेत्ति लहइ संसद्दं । अप्पपरेसिं कल्लाणकारओ गोयमपहुव्व ॥ १३ ॥ तित्थस्स वुड्ढिकारी अक्खेवणओ कुतित्थियाईणं । विउसनरसेवियकमो कमेण सिद्धिंपि पावेइ ॥ १४ ॥"त्ति समाप्तमिदं सप्तमश्रीरोहिणीज्ञाताध्ययनम् ॥

प्राप्ता दुःसमव ॥ ५ ॥ तथा यो महाव्रतानि उपभुनक्ति जीविकेतिकृत्वा पालयन् । आहारादिषु सक्तस्त्यक्त· शिवसाधनेच्छया ॥ ६ ॥ सोऽत्र यथेच्छं प्राप्नोत्याहारादि लिङ्गीति । विदुषा नातिपूज्यः परलोके दुःख्येव ॥ ७ ॥ यथा वा रक्षिता वधू रक्षितशालिकणा यथार्थाख्या । परिजनमान्या जाता भोगसुखानि च संप्राप्ता ॥ ८ ॥ तथा यो जीवः सम्यक् प्रतिपद्य महाव्रतानि पञ्चैव पालयति निरतिचाराणि प्रमादलेशमपि वर्जयन् ॥ ९ ॥ स आत्महितैकरतिरिहलोकेऽपि विद्वत्प्रणतपादः । एकान्तसुखी जायते परस्मिन् मोक्षमपि प्राप्नोति ॥ १० ॥ यथा रोहिणी तु स्नुषा रोपितशालिर्यथार्थाभिधाना वर्धयित्वा शालिकणान् प्राप्ता सर्वस्वस्वामित्व ॥ ११ ॥ तथा यो भव्यो व्रतानि प्राप्य पालयति आत्मना सम्यक् । अन्येषामपि भव्याना ददात्यनेकेषा हितहेतोः ॥ १२ ॥ स इह सघप्रधानो युगप्रधान इति लभते संशब्दम् । आत्मपरेषा कल्याणकारको गौतमप्रभुवत् ॥ १३ ॥ तीर्थस्य वृद्धिकारी आक्षेपकः कुतीर्थिकादीना । विद्वन्नरसेवितक्रमः क्रमेण सिद्धिमपि प्राप्नोति ॥ १४ ॥

॥ ८-श्रीमल्लीज्ञाताध्ययनम् ॥

अथाष्टमं ज्ञातं व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः-पूर्वस्मिन् महाव्रतानां विराधनाविराधनयोरनर्थार्थावुक्तौ, इह तु महाव्रतानामेवाल्पेनापि मायाशल्येन दूषितानामयथावत्स्वफलसाधकत्वमुपदर्श्यते इत्यनेन सम्बन्धेन सम्बद्धमिदम्—

जति णं भंते !, समणेणं० सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते !, के अट्ठे पण्णत्ते ?; एवं खलु, जंबू ! तेणं कालेणं, तेणं समएणं, इहेव जंबूद्दीवे दीवे, महाविदेहे वासे २, मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं निसढस्स वासहरपव्वयस्स, उत्तरेणं सीयोयाए महाणदीए, दाहिणेणं सुहावहस्स वक्खारपव्वतस्स, पच्चत्थिमेणं पच्चत्थिमलवणसमुद्दस्स, पुरच्छिमेणं एत्थ णं सलिलावती नामं विजए पन्नत्ते; तत्थ णं सलिलावतीविजए वीयसोगा नामं रायहाणी पं०, नवजोयणविच्छिन्ना जाव पच्चक्खं देवलोगभूया; तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए इंदकुंभे नामं उज्जाणे, तत्थ णं वीयसोगाए रायहाणीए बले नामं राया, तस्सेव धारणीपामोक्खं देविसहस्सं उवरोधे होत्था; तते णं सा धारिणी देवी अन्नया कदाइ सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, जाव महब्बले नामं दारए जाए, उम्मुक्क जाव भोगसमत्थे; तते णं तं महब्बलं अम्मापियरो सरिसियाणं कमलसिरीपामोक्खाणं पंचण्हं रायवरक-

मासयाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति, पंच पासायसया पंचसतो दातो जाव विहरति, थेरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसढे, परिसा निग्गया, बलोवि निग्गओ, धम्मं सोच्चा, णिसम्म जं नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे ठावेति, जाव एक्कारसंगवी बहूणि वासाणि सामण्णपरियायं पाउणित्ता, जेणेव चारुपव्वए मासिएणं भत्तेणं सिद्धे; तते णं सा कमलसिरी अन्नदा सीहं सु० जाव बलभद्दो कुमारो जाओ, जुवराया यावि होत्था, तस्स णं महब्बलस्स रन्नो इमे छप्पिय बालवयंसगा रायाणो होत्था, तंजहा–अयले धरणे पूरणे वसुं वेसमणे अभिचंदे सहजायया जाव संहिच्चाते णित्थरियव्वे त्तिकट्टु अन्नमन्नस्सेयमट्ठं पडिसुणेंति; तेणं कालेणं २, इंदकुंभे उज्जाणे थेरा समोसढा, परिसा० महब्बले णं धम्मं सोच्चा जं नवरं छप्पिय बालवयंसए आपुच्छामि बलभद्दं च कुमारं रज्जे ठावेमि जाव छप्पिय बालवयंसए आपुच्छति; तते णं ते छप्पिय० महब्बलं रायं एवं वदासी–जति णं देवाणुप्पिया !, तुब्भे पव्वयह अम्हं के अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामो; तते णं से महब्बले राया ते छप्पिय० एवं०–जति णं तुब्भे मए सद्धिं जाव पव्वयह तो णं गच्छह, जेट्ठे पुत्ते सएहिं २, रज्जेहिं ठावेह पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा जाव पाउब्भवंति; तते णं से महब्बले राया छप्पिय बालवयंसए पाउब्भूते पासति २, हट्ठ० कोडुंबियपुरिसे० बलभद्दस्स अभिसेओ, आपुच्छति; तते णं से महब्बले जाव महया इड्ढीए पव्वतिए एक्कारस अंगाइं बहूहिं चउत्थ जाव भावेमाणे विहरति, तते णं तेसिं महब्बलपामोक्खाणं सत्तण्हं अणगाराणं अन्नया कयाइ एग-

यओ सहियाणं इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था-जण्णं अम्हं देवाणु० एगे तवोकम्मं उव्वसं-पज्जित्ता णं विहरति, तण्णं अम्हेहिं सव्वेहिं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २, बहूहिं चउत्थ जाव विहरति; ततेणं से महब्बले अणगारे इमेणं कारणेणं इत्थि-णामगोयं कम्मं निव्वत्तेसु-जति णं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा चउत्थं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, ततो से महब्बले अणगारे छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, जति णं ते महब्बलवज्जा अणगारा छट्ठं उवसंप-ज्जित्ता णं विहरंति, ततो से महब्बले अणगारे अट्ठमं उवसंपज्जित्ता णं विहरति; एवं अट्ठमं तो दसमं अह दसमं तो दुवालसं, इमेहि य णं वीसाएहिं य कारणेहिं आसेवियबहुलीकएहिं तित्थयरनामगोयं कम्मं निव्वत्तिंसु, तं०-"अरहंत १ सिद्ध २ पवयण ३ गुरु ४ थेर ५ बहुस्सुए ६ तवस्सीसु ७। वच्छल्लया य तेसिं अभिक्ख णाणोवओगे य ८ ॥ १ ॥ दंसण ९ विणए १० आवस्सए य ११ सीलव्वए निरइयारं १२। खणलव १३ तव १४ चियाए १५ वेयावच्चे १६ समाही य १७ ॥ २ ॥ अप्पुव्वणाणगहणे १८ सुय-भत्ती १९ पवयणे पभावणया २०। एएहिं कारणेहिं तित्थयरत्तं लहइ जीओ ॥ ३ ॥"

तए णं ते महाब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति जाव

गा. १ अर्हत्सिद्धप्रवचनगुरुस्थविरबहुश्रुततपस्विवत्सलता अभीक्ष्णं ज्ञानोपयोगश्च ॥ १ ॥ दर्शनं विनय आवश्यकानि च शीलव्रतं निरतिचारं क्षणलवः तपः त्यागः वैयावृत्त्यं समाधिश्च ॥ २ ॥ अपूर्वज्ञानग्रहणं श्रुतभक्तिः प्रवचने प्रभावना एतैः कारणैः तीर्थकरत्वं लभते जीवः ॥ ३ ॥

एगराइयं उव०, तते णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति, तं०–चउत्थं करेंति २, सव्वकामगुणियं पारेंति २, छट्ठं करेंति २, चउत्थं करेंति २, अट्ठमं करेंति २, छट्ठं करेंति २, दसमं करेंति २ अट्ठमं करेंति २, दुवालसमं करेंति २, दसमं करेंति २, चाउद्दसमं करेंति२, दुवालसमं करेंति२, सोलसमं करेंति२, चोद्दसमं करेंति २, अट्ठारसमं करेंति २, सोलसमं करेंति २, वीसइमं करेंति २, अट्ठारसमं करेंति२, वीसइमं करेंति२, सोलसमं करेंति२, अट्ठारसमं करेंति२, चोद्दसमं करेंति२, सोलसमं करेंति२, दुवालसमं करेंति२, चाउद्दसमं करेंति२, दसमं करेंति२ दुवालसमं करेंति२, अट्ठमं करेंति२, दसमं करेंति२, छट्ठं करेंति२, अट्ठमं करेंति२, चउत्थं करेंति२, छट्ठं करेंति२, चउ० क० सव्वत्थ सव्वकामगुणिएणं पारेंति; एवं खलु एसा खुड्डागसीहनिक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं मासेहिं, सत्तहि य, अहोरत्तेहि य, अहासुत्ता जाव आरहिया भवइ; तयाणंतरं दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेंति, नवरं विगइवज्जं पारेंति; एवं तच्चावि परिवाडी नवरं पारणए अलेवाडं पारेंति, एवं चउत्थावि परिवाडी नवरं पारणए आयंबिलेण पारेंति, तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं दोहिं संवच्छरेहिं अट्ठावीसाए अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव आणाए आराहेत्ता, जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति२, थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति २; एवं वयासी–इच्छामो णं भंते!, महालयं सीहनिक्कीलियं तहेव जहा खुड्डागं नवरं चोत्तीसइमाओ नियत्तए एगाए परिवाडीए कालो एगेणं

संवच्छरेणं छहिं मासेहिं, अट्ठारसहि य अहोरत्तेहिं समप्पेति; सव्वंपि सीहनिक्कीलियं छहिं वासेहिं, दोहि य मासेहिं, बारसहि य अहोरत्तेहिं, समप्पेति; तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालयं सीहनिक्कीलियं अहासुत्तं जाव आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति२, थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति२, बहूणि चउत्थ जाव विहरंति; तते णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा तेणं ओरालेणं सुक्का भुक्खा जहा खंदओ नवरं थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वयं दुरुहंति २ जाव दोमासियाए संलेहणाए सवीसं भत्तसयं चतुरासीतिं वाससयसहस्साति सामण्णपरियागं पाउणंति२, चुलसीतिं पुव्वसयसहस्साति सव्वाउयं पालइत्ता जयंते विमाणे देवत्ताए उववन्ना ॥ सूत्रम्-७० ॥

सर्वं सुगमं, नवरं शीतोदायाः पश्चिमसमुद्रगामिन्या दक्षिणे कूले सलिलावतीति यदुक्तमिह तद् ग्रन्थान्तरे-नलिनावतीत्युच्यते, चक्कवट्टिविजयं-चक्रवर्त्तिविजेतव्यं क्षेत्रखण्डं, 'इमेणं कारणेणं'ति-अनेन वक्ष्यमाणेन हेतुनाऽन्यथाप्रतिज्ञायान्यथाकरणलक्षणेन, मायारूपत्वादस्य, माया हि स्त्रीत्वनिमित्तं तत्र श्रूयते, तस्य चैतदन्यथाभिधानान्यथाकरणं किल कुतोऽपि मिथ्याभिमानादहं नायक एते त्वनुनायकाः इह च को नायकानुनायकानां विशेषो यद्यहमुत्कृष्टतरतया न भवामीत्येवमादेस्सम्भाव्यते, 'इत्थीनामगोय'न्ति-स्त्रीनामः-स्त्रीपरिणामः, स्त्रीत्वं यदुदयाद्भवति गोत्रं-अभिधानं यस्य तत् स्त्रीनामगोत्रं, अथवा यत् स्त्रीप्रायोग्यं नामकर्म गोत्रं च तत् स्त्रीनामगोत्रं कर्म निर्वर्त्तितवान्, तत्काले च मिथ्यात्वं सास्वादनं वा अनुभूतवान्, स्त्रीनामकर्मणो मिथ्यात्वानन्तानुबन्धिप्रत्ययत्वात्; 'आसेवियबहुलीकएहिं'ति-आसेवितानि सकृत्करणात् बहुली-

कृतानि बहुशः सेवनात् यानि तैः, 'अरहंतगाहा'-अर्हदादीनि सप्तपदानि, तत्र प्रवचनं-श्रुतज्ञानं, तदुपयोगानन्यत्वाद्वा सङ्घः गुरवो धर्मोपदेशकाः, स्थविराः-जातिश्रुतपर्यायभेदभिन्नास्तत्र जातिस्थविरः षष्टिवर्षः, श्रुतस्थविरः समवायधरः, पर्यायस्थविरो विंशतिवर्षपर्यायः, बहुश्रुताः परस्परापेक्षया तपस्विनः-अनशनादिविचित्रतपोयुक्ताः सामान्यसाधवो वा, इह च सप्तमी षष्ठ्यर्थे द्रष्टव्याः, ततोऽर्हत्सिद्धप्रवचनगुरुस्थविरबहुश्रुततपस्विनां वत्सलतया-वात्सल्येनानुरागयथावस्थितगुणोत्कीर्त्तनानुरूपोपचारलक्षणया तीर्थकरनामकर्म्म बद्धवानिति सम्बन्धः, 'तेसिं'ति-ये एते जगद्वन्दनीया अर्हदादयस्तेषां, अभीक्ष्णं-अनवरतं ज्ञानोपयोगे च सति तद् बध्यते इत्यष्टौ, 'दंसण'गाहा, दर्शनं-सम्यक्त्वं ९, विनयो ज्ञानादिविषयः, तयोर्निरतिचारः संस्तीर्थकरत्वं बद्धवान् १०, आवश्यकं-अवश्यकर्त्तव्यं संयमव्यापारनिष्पन्नं तस्मिंश्च निरतिचारः सन्निति ११, तथा शीलानि च-उत्तरगुणा व्रतानि च-मूलगुणास्तेषु पुनर्निरतिचार इति १२, क्षणलवग्रहणं कालोपलक्षणं, क्षणलवादिषु संवेगभावनाध्यानासेवनतश्च निर्वर्त्तितवान् १३, तथा तपस्त्यागयोः सतो निर्वर्त्तितवान्, तत्र तपसा चतुर्थादिना १४, त्यागेन च यतिजनोचितदानेनेति १५, तथा वैयावृत्त्ये सति दशविधे निर्वर्त्तितवान् १६, समाधौ च गुर्वादीनां कार्यकरणद्वारेण चित्तस्वास्थ्योत्पादने सति निर्वर्त्तितवान् १७, द्वितीयगाथायां नव, 'अप्पुव्वगाहा'-अपूर्वज्ञानग्रहणे सति निर्वर्त्तितवान् १८, श्रुतभक्तियुक्ता प्रवचनप्रभावना श्रुतभक्तिप्रवचनप्रभावना तया च निर्वर्त्तितवान् श्रुतबहुमानेन १९, यथाशक्ति मार्गदेशनादिकया च प्रवचनप्रभावनयेति भावः २०, तीर्थकरत्वकारणतायामुक्ताया हेतुविंशतेः सर्वजीवसाधारणतां दर्शयन्नाह-एतैः कारणैस्तीर्थकरत्वं अन्योऽपि लभते जीव इति, पाठान्तरे तु 'एसो'त्ति एष महाबलो लब्धवानिति 'जाव

एगरायं'ति–इह यावत्करणात्, 'दोमासियं तेमासियं चउम्मासियं पंचमासियं छम्मासियं सत्तमासियं पढमसत्तराइंदियं बीयसत्तराइंदियं तच्चसत्तराइंदियं अहोराइंदियं'ति द्रष्टव्यमिति, 'सीहनिक्कीलियं'ति–सिंहनिष्क्रीडितमिव सिंहनिष्क्रीडितं, सिंहो हि विहरन् पश्चाद्भागमवलोकयति एवं यत्र प्राक्तनं तप आवर्त्योत्तरोत्तरं तद् विधीयते तत्तपः सिंहनिष्क्रीडितं, तच्च द्विविधं–महत् क्षुद्रकं चेति, तत्र क्षुल्लकमनुलोमगतौ चतुर्भक्तादि विंशतितमपर्यन्तं प्रतिलोमगतौ तु विंशतितमादिकं चतुर्थान्तं, उभयं मध्येऽष्टादशकोपेतं चतुर्थषष्ठादीनि तु एकैकवृद्ध्यैकोपवासादीनि, स्थापना चेयं भवति इह चत्वारि २ चतुर्थादीनि त्रीण्यष्टादशानि द्वे विंशतितमे तदेवं चतुष्पञ्चाशदधिकं शतं तपोदिनानां त्रयस्त्रिंशच्च पारणकदिनानामेवमेकस्यां परिपाट्यां षण्मासाः सप्तरात्रिन्दिवाधिका भवन्ति, प्रथमपरिपाट्यां च पारणकं सर्वकामगुणिकं, सर्वे कामगुणाः–कमनीयपर्याया विकृत्यादयो विद्यन्ते यत्र तत्तथा, द्वितीयायां निर्विकृतं तृतीयायामलेपकारि चतुर्थ्यामायामाम्लमिति, प्रथमपरिपाटीप्रमाणं चतुर्गुणं सर्वप्रमाणं भवतीति । महासिंहनिष्क्रीडितमप्येवमेव भवति, नवरं चतुर्थादि चतुस्त्रिंशत्पर्यन्तं प्रत्यावृत्तौ चतुस्त्रिंशादिकं चतुर्थपर्यन्तं मध्ये द्वात्रिंशोपेतं सर्वं स्वयमूहनीयं, स्थापना चास्य 'खंदओ'त्ति–भगवत्यां द्वितीयशते इहैव वा यथा

१.

१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८
१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	

२.

१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८	१०	९	११	१०	१२	११	१३	१२	१४	१३	१५	१४	१६	१५
१	२	१	३	२	४	३	५	४	६	५	७	६	८	७	९	८	१०	९	११	१०	१२	११	१३	१२	१४	१३	१५	१४	१६	

मेघकुमारो वर्णितस्तथा तेऽपि, नवरं 'थेर'त्ति स्कन्दको महावीरमापृष्टवानेते तु स्थविरानित्यर्थः, प्रतिदिनं द्विर्भोजनस्य प्रसिद्धत्वात् मासद्वयोपवासे विंशत्युत्तरभक्तशतविच्छेदः कृतो भवतीति, जयन्तविमानं अनुत्तरविमानपञ्चके पश्चिमदिग्वर्त्ति।

तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती, तत्थ णं महब्बलवज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती, महब्बलस्स देवस्स पडिपुन्नाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिती। तते णं ते महब्बलवज्जा छप्पिय देवा ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, ठिइक्खएणं, भवक्खएणं, अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे २, भारहे वासे विसुद्धपितिमातिवंसेसु रायकुलेसु पत्तेयं २, कुमारत्ताए पच्चायायासी; तंजहा–पडिबुद्धी इक्खागराया, चंदच्छाए अंगराया, संखे कासिराया, रुप्पी कुणालाहिवत्ती, अदीणसत्तू कुरुराया, जितसत्तू पंचालाहिवई; तते णं से महब्बले देवे तीहिं णाणेहिं समग्गे उच्चट्ठाणट्ठिएसु गहेसु, सोमासु दिसासु, वितिमिरासु, विसुद्धासु, जइतेसु, सउणेसु, पयाहिणाणुकूलंसि, भूमिसप्पिंसि, मारुतंसि, पवायंसि, निप्फन्नसस्समेइणीयंसि कालंसि; पमुइयपक्कीलिएसु, जणवएसु, अद्धरत्तकालसमयंसि; अस्सिणीणक्खत्तेणं जोगमुवागएणं जे से हेमंताणं चउत्थे मासे, अट्ठमे पक्खे, फग्गुणसुद्धे तस्स णं फग्गुणसुद्धस्स चउत्थिपक्खेणं, जयंताओ विमाणाओ, बत्तीसं सागरोवमट्ठितीयाओ अणंतरं चयं चइत्ता, इहेव जंबुद्दीवे २, भारहे वासे मिहिलाए रायहाणीए कुंभगस्स रन्नो पभावतीए देवीए कुच्छिंसि आहारवक्कंतीए, सरीरवक्कंतीए, भववक्कंतीए, गब्भत्ताए वक्कंते; तं रयणिं च णं चोद्दस महासुमिणा वन्नओ, भत्तारकहणं,

सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरति । तते णं तीसे पभावतीए देवीए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं इमेयारूवे डोहले पाउब्भूते–धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ जाओ णं जलथलयभासुरप्पभूएणं दसद्धवन्नेणं मल्लेणं अत्थुयपच्चत्थुयंसि सयणिज्जंसि सन्निसन्नाओ सण्णिवन्नाओ य विहरंति एगं च महं सिरीदामगंडं पाडलमल्लियचंपयअसोगपुन्नागनागमरुयगदमणगअणोज्जकोज्जयपउरं परमसुहफासदरिसणिज्जं महया गंधद्धणिं मुयंतं अग्घायमाणीओ डोहलं विणेंति, तते णं तीसे पभावतीए देवीए इमेयारूवं डोहलं पाउब्भूतं पासित्ता, अहासन्निहिया वाणमंतरा देवा खिप्पामेव जलथलय० जाव दसद्धवन्नमल्लं कुंभग्गसो य भारग्गसो य कुंभगस्स रन्नो भवणंसि वा० साहरंति, एगं च णं महं सिरिदामगंडं जाव मुयंतं उवणेंति, तए णं सा पभावती देवी जलथलय जाव मल्लेणं डोहलं विणेति, तए णं सा पभावतीदेवी पसत्थडोहला जाव विहरइ, तए णं सा पभावतीदेवी नवण्हं मासाणं अद्धट्ठमाण य रत्तिंदियाणं जे से हेमंताणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिरसुद्धे तस्स णं० एक्कारसीए पुव्वरत्तावरत्त० अस्सिणीनक्खत्तेणं उच्चट्ठाण० जाव पमुइयपक्कीलिएसु जणवएसु आरोयाऽऽरोयं एकूणवीसतिमं तित्थयरं पयाया ॥ सूत्रम्–७१ ॥

'इक्खागराय'त्ति–इक्ष्वाकूणां–इक्ष्वाकुवंशजानां, अथवा इक्ष्वाकुजनपदस्य राजा; स च कोशलजनपदोऽप्यभिधीयते यत्र अयोध्या नगरीति, 'अंगराय'त्ति–अङ्गा–जनपदो यत्र काम्पिल्य (चम्पा) नगरी, एवं काशीजनपदो यत्र वाराणसी नगरी, कुलाणा यत्र श्रावस्ती नगरी, कुरुजनपदो यत्र हस्तिनागपुरं नगरं, पाञ्चाला यत्र काम्पिल्यं नगरं, 'उच्चट्ठाणट्ठि-

एसु'त्ति-उच्चस्थानानि ग्रहाणामादित्यादीनां मेषादीनां दशादिषु त्रिंशांशकेष्वेवमवसेयानि-'अजवृषमृगाङ्गनाकर्कमीनवणि-जोंऽशकेष्विनाद्युच्चाः । दश १० शिख्य ३ ष्टाविंशति २८ तिथि १६ इन्द्रिय ५ त्रिघन २७ विंशेषु २० ॥ १ ॥" इति, 'सोमासु' इत्यादि, 'सौम्यासु'-दिग्दाहाद्युत्पातवर्जितासु, 'वितिमिरासु'-तीर्थकरगर्भाधानानुभावेन गतान्धकारासु, 'विशुद्धासु'-अरजस्वलत्वादिना, 'जयिकेषु'-राजादीनां विजयकारिषु शकुनेषु यथा 'काकानां श्रावणे द्वित्रिचतुः शब्दाः शुभावहा' इति, प्रदक्षिणः प्रदक्षिणावर्त्त[मान]त्वात् अनुकूलश्च यः सुरभिशीतमन्दत्वात् स तथा तत्र 'मारुते'-वायौ 'प्रवाते'-वातुमारब्धे निष्पन्नशस्या मेदिनी-भूर्यत्र काले, अत एव प्रमुदितप्रक्रीडितेषु-हृष्टेषु क्रीडावत्सु च जनपदेषु-विदेह-जनपदवास्तव्येषु जनेषु, 'हेमंताणं'ति-शीतकालमासानां मध्ये चतुर्थो मासः, अष्टमः पक्षः, कोऽसावित्याह-फाल्गुनस्य शुद्धः-शुक्लः-द्वितीय इत्यर्थः, तस्य फाल्गुनशुद्धस्य पक्षस्य या चतुर्थी तिथिस्तस्याः पक्षः-पार्श्वोऽर्द्धरात्रिरिति भावः; तत्र 'ण'मित्यलङ्कारे, वाचनान्तरे,-तु गिम्हाणं पढमे इत्यादि दृश्यते, तत्रापि चैत्रसितचतुर्थ्यां मार्गशीर्षसितैकादश्यां तज्जननदिने नव सातिरेका मासाः अभिवर्द्धितमासकल्पनया भवन्तीति तदपि सम्भवति, अतोऽत्र तत्त्वं विशिष्टज्ञानिगम्यमिति, 'अणंतरं चयं चइत्त' त्ति-अव्यवहितं च्यवनं कृत्वेत्यर्थः, अथवा-अनन्तरं चयं-शरीरं देवसम्बन्धीत्यर्थः,' चइत्ता'-त्यक्त्वा 'आहारे' त्यादि, आहारापक्रान्त्या-देवाहारपरित्यागेन, भवापक्रान्त्या-देवगतित्यागेन, शरीरापक्रान्त्या-वैक्रियशरीर-त्यागेन; अथवा-आहारव्युत्क्रान्त्या-अपूर्वाहारोत्पादेन मनुष्योचिताहारग्रहणेनेत्यर्थः; एवमन्यदपि पदद्वयमिति, गर्भतया व्युत्क्रान्तः-उत्पन्नः; 'मल्लेणं'ति-मालाभ्यो हितं माल्यं-कुसुमं जातावेकवचनं, 'अत्थुयपच्चत्थुयंसि'त्ति-आस्तृते-

आच्छादिते प्रत्यवस्तृते पुनः पुनराच्छादिते इत्यर्थः; शयनीये निषण्णा निवन्नाः-सुप्ताः, 'सिरिदामगंडं'ति-श्रीदाम्नां-शोभावन्मालानां काण्डं-समूहः श्रीदामकाण्डं, अथवा गण्डो-दण्डः तद्वद्यत्तद् गण्ड एवोच्यते, श्रीदाम्नां गण्डः श्रीदामगण्डः, पाटलाद्याः पुष्पजातयः प्रसिद्धाः, नवरं मल्लिका-विचकिलः मरुयकः-पत्रजातिविशेषः, 'अणोज्ज'त्ति अनवद्यो-निर्दोषः कुब्जकः-शतपत्रिकाविशेषः एतानि प्रचुराणि यत्र तत्तथा, परमशुभदर्शनीयं परमसुखदर्शनीयं वा 'महया गंधद्धणिं मुयंतं'ति-महता प्रकारेण गंधघ्राणिं-सुरभिगन्धगुणं तृप्तिहेतुं पुद्गलसमूहं मुञ्चत् आजिघ्रन्त्यः-उत्सिङ्घन्त्यः, 'कुंभग्गसो य'त्ति-कुम्भपरिमाणतः 'भारग्गसो य'त्ति-भारपरिमाणतः, 'आरोग्गारोग्गं'ति-अनाबाधा माता अनाबाधं तीर्थकरम् ।

तेणं कालेणं २, अहोलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीओ मयहरीयाओ जहा जंबुदीवपन्नत्तीए जम्मणं सव्वं, नवरं मिहिलाए कुंभयस्स पभावतीए अभिलाओ संजोएव्वो जाव नंदीसरवरे दीवे महिमा, तया णं कुंभए राया बहूहिं भवणवति ४, तित्थयर० जाव कम्मं जाव नामकरणं, जम्हा णं अम्हे इमीए दारियाए माउए मल्लसयणिज्जंसि डोहले विणीते तं होउ णं णामेणं मल्ली, जहा महाबले नाम जाव परिवड्डिया-सा वद्धती भगवती दियलोयचुता अणोवमसिरीया । दासीदासपरिवुडा परिकिन्ना पीढमद्देहिं ॥१॥ असियसिरया सुनयणा बिंबोट्ठी धवलदंतपंतीया । वरकमलकोमलंगी फुल्लुप्पलगंधनीसासा ॥२॥"

॥ सूत्रम्-७२ ॥

तए णं सा मल्ली विदेहवररायकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण जोव्वणेण य लावन्नेण य अतीव२

उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तते णं सा मल्ली देसूणवाससयजाया ते छप्पि रायाणो विपुलेण ओहिणा आभोएमाणी२, विहरति, तं०–पडिबुद्धिं जाव जियसत्तुं पंचालाहिवइं, तते णं सा मल्ली कोडुंबि० तुब्भे णं देवा० असोगवणियाए एगं महं मोहणघरं करेह, अणेगखंभसयसन्निविट्ठं, तस्स णं मोहणघरस्स बहुमज्झदेसभाए छ गब्भघरए करेह, तेसि णं गब्भघरगाणं बहुमज्झदेसभाए जालघरयं करेह, तस्स णं जालघरयस्स बहुमज्झदेसभाए मणिपेढियं करेह २ जाव पच्चप्पिणंति, तते णं मल्ली मणिपेढियाए उवरिं अप्पणो सरिसियं सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावन्नजोव्वणगुणोववेयं कणगमइं मत्थयच्छिड्डुं पउमुप्पलप्पिहाणं पडिमं करेति२ जं विपुलं असणं ४, आहारेति; ततो मणुन्नाओ असण४, कल्लाकल्लिं एगमेगं पिंडं गहाय तीसे कणगामतीए मत्थयछिड्डाए जाव पडिमाए मत्थयंसि पक्खिवमाणी२, विहरति; तते णं तीसे कणगमतीए जाव मच्छयछिड्डाए पडिमाए एगमेगंसि पिंडे पक्खिप्पमाणे२, ततो गंधे पाउब्भवति; से जहा नामए अहिमडेत्ति वा जाव एत्तो अणिट्ठतराए अमणामतरए ॥ सूत्रम्–७३ ॥

'अहोलोयवत्थव्वाओ'त्ति–गजदन्तकानामधः अधोलोकवास्तव्या अष्टौ दिक्कुमारीमहत्तरिकाः, इह चावसरे यदभिधेयं तन्महतो ग्रन्थस्य विषय इतिकृत्वा सङ्क्षेपार्थमतिदेशमाह–'जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए जम्मणं सव्वं'ति–यथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यां सामान्यतो जिनजन्मोक्तं तथा मल्लीतीर्थकृतो जन्मेति–जन्मवक्तव्यता सर्वा वाच्येति, नवरमिह मिथिलायां नगर्यां कुम्भस्य राज्ञः प्रभावत्या देव्याः इत्ययमभिलापः संयोजितव्यो, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यां तु नायं विद्यते इति,

किं पर्यवसानं जन्म वक्तव्यमित्याह–यावन्नन्दीश्वरे 'महिम'त्ति–अतिदिष्टग्रन्थश्चार्थत एवं द्रष्टव्यो; यथा अष्टौ दिकुमारीमहत्तरिकाः, भोगङ्कराप्रभृतयस्तत्समयमुपजातसिंहासनप्रकम्पाः, प्रयुक्तावधिज्ञानाः, समवसितैकोनविंशतितमतीर्थनाथजननाः, ससम्भ्रममनुष्ठितसमवायाः, समस्तजिननायकजन्मसु महामहिमविधानमस्माकं जीतमिति विहितनिश्चयाः, स्वकीयस्वकीयाभियोगिकदेवविहितदिव्यविमानारूढाः, सामानिकादिपरिकरवृताः, सर्वर्द्ध्या मल्लिजिनजन्मनगरीमागम्य जिनजन्मभवनं यानविमानैस्त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य उत्तरपूर्वस्यां दिशि यानविमानानि चतुर्भिरङ्गुलैर्भुवमप्राप्तानि व्यवस्थाप्य जिनसमीपं जिनजननीसमीपं च गत्वा त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य कृतप्राञ्जलिपुटाः; इदमवादिषुः–नमोऽस्तु ते रत्नकुक्षिधारिके !, नमोऽस्तु ते जगत्प्रदीपदायिके !, वयमधोलोकवास्तव्या दिकुमार्यो जिनस्य जन्ममहिमानं विधास्यामः, अतो युष्माभिर्न भेतव्यमिति अभिधाय च विहितसंवर्त्तवाताः जिनजन्मभवनस्य समन्ताद्योजनपरिमण्डलक्षेत्रस्य तृणपत्रकचवरादेरशुचिवस्तुनोऽपनयनेन विहितशुद्ध्यो जिनजनन्योरदूरतो जिनस्यासाधारणमगणितगुणगणमागायन्त्यस्तस्थुः, एवमेवोर्ध्वलोकवास्तव्या नन्दनवनकूटनिवासिन्य इत्यर्थः, अष्टौ दिकुमारीमहत्तरिकास्तथैवागत्य विरचिताभ्रवर्द्दलिकाः आयोजनमानक्षेत्रं गन्धोदकवर्षं पुष्पवर्षं धूपघटीश्च कृत्वा जिनसमीपमागत्य परिगायन्त्य आसांचक्रुः, तथा पौरस्त्यरुचकवास्तव्या रुचकाभिधानस्य त्रयोदशस्य द्वीपस्य मध्यवर्त्तिनः प्राकाराकारेण मण्डलव्यवस्थितस्योपरि पूर्वदिग्व्यवस्थितेष्वष्टासु कूटेषु कृतनिवासा इत्यर्थः, आगत्य तथैवादर्शहस्ता गायन्त्यस्तस्थुः, एवं दक्षिणरुचकवास्तव्या जिनस्य दक्षिणेन भृङ्गारहस्ताः पश्चिमरुचकवास्तव्या जिनस्य पश्चिमेन ताल-

१ ०मागत्य ब ।

शृन्तहस्ता उत्तररुचकवास्तव्याश्चामरहस्ता जिनस्य उत्तरेण, एवं चतस्रो रुचकस्य विदिग्वास्तव्या आगत्य दीपिकाहस्ता जिनस्य चतसृषु विदिक्षु तथैव तस्थुः, मध्यमरुचकवास्तव्या रुचकद्वीपस्याभ्यन्तरार्द्धवासिन्य इत्यर्थः चतस्रस्तास्तथैवागत्य जिनस्य चतुरङ्गुलवर्जनाभिनालच्छेदनं च विवरखननं च नाभिनालनिधानं च विवरस्य रत्नपूरणं च तदुपरि हरितालिका-पीठबन्धं च पश्चिमावर्जदिक्त्रये कदलीगृहत्रयं च तन्मध्येषु चतुःशालभवनत्रयं च तन्मध्यदेशे सिंहासनत्रयं च दक्षिणे सिंहासने जिनजनन्योरुपवेशनं च शतपाकादितैलाभ्यङ्गनं च गन्धद्रव्योद्वर्त्तनं च पुष्पोदकं च पूर्वत्र पुष्पोदकगन्धोदकशुद्धोदकमज्जनं च सर्वालङ्कारविभूषणं च उत्तरत्र गोशीर्षचन्दनकाष्ठैर्वह्निप्रज्वलनं चाग्निहोमं च भूतिकर्म च रक्षापोट्टलिकां च मणिमयपाषाणद्वयस्य जिनकर्णाभ्यर्णे प्रताडनं च भवतु भगवान् पर्वतायुरिति भणनं च पुनः समातृकजिनस्य स्वभवननयनं च शय्याशायनं च चक्रुः कृत्वा च गायन्त्यस्तस्थुरिति । सौधर्मकल्पे च शक्रस्य सहसा आसनं प्रचकम्पे अवधिं चासौ प्रयुयुजे तीर्थंकरजन्म चालुलोके ससंभ्रमं च सिंहासनादुत्तस्थौ पादुके च मुमोच, उत्तरासङ्गं च चकार, सप्ताष्टानि च पदानि जिनाभिमुखमुपजगाम भक्तिभरनिर्भरो यथाविधि जिनं च ननाम, पुनः सिंहासनमुपविवेश हरिणेगमेषीदेवं पदात्यनीकाधिपतिं शब्दयांचकार; तं चादिदेश, यथा सुधर्मायां सभायां योजनपरिमण्डलां सुघोषाभिधानां घण्टां त्रिस्ताडयन्नुद्घोषणां विधेहि, यथा भो भो देवा !, गच्छति शक्रो जम्बूद्वीपं तीर्थंकरजन्ममहिमानं कर्त्तुमतो यूयं सर्वसमृद्ध्या शीघ्रं शक्रस्यान्तिके प्रादुर्भवतेति, स तु तथैव चकार, तस्यां च घण्टायां ताडितायामन्यान्येकोनद्वात्रिंशद्घण्टालक्षाणि समकमेव रणरणारवं चक्रुः; उपरते च घण्टारवे घोषणामुपश्रुत्य यथादिष्टं देवाः सपदि

विदधुः, ततो पालकाभिधानाभियोगिकदेवविरचिते, लक्षयोजनप्रमाणे, पश्चिमावर्जदिक्त्रयनिवेशिततोरणद्वारे, नानामणिमयूखमञ्जरीरञ्जितगगनमण्डले; नयनमनसामतिप्रमोददायिनि महाविमानेऽधिरूढः, सामानिकादिदेवकोटीभिरनेकाभिः परिवृतः, पुरःप्रवर्त्तितपूर्णकलशभृङ्गारच्छत्रपताकाचामराद्यनेकमङ्गल्यवस्तुस्तोमः, पञ्चवर्णक्कुडभिकासहस्रपरिमण्डितयोजनसहस्रोच्छ्रितमहेन्द्रध्वजप्रदर्शितमार्गो नन्दीश्वरद्वीपे दक्षिणपूर्वे रतिकरपर्वते कृतावतारो दिव्यविमानर्द्धिमुपसंहरन् मिथिलां नगरीमाजगाम, विमानारूढ एव भगवतो जिनस्य जन्मभवनं त्रिः प्रदक्षिणीकृतवान्, उत्तरपूर्वस्यां दिशि चतुर्भिरङ्गुलैर्भुवमप्राप्तं विमानमवस्थापितवान्, ततोऽवतीर्य भगवन्तं समातृकं दिक्कुमारीवदभिवन्द्य जिनमातरमवस्वाप्य जिनप्रतिबिम्बं तत्सन्निधौ विधाय पञ्चधाऽऽत्मानमाधाय एकेन रूपेण करतलपल्लवावधृतजिनः, अन्येन जिननायकोपरिविधृतच्छत्रः, अन्याभ्यां करचालितप्रकीर्णकः, अन्येन च करकिशलयकलितकुलिशः पुरः प्रगन्ता सुरगिरिशिखरोपरिवर्त्तिपण्डकवनं गत्वा तद्व्यवस्थितातिपाण्डुकम्बलाभिधानशिलासिंहासने पूर्वाभिमुखो निषण्णः; एवमन्ये ईशानादयो वैमानिकेन्द्राश्चमरादयो भवनपतीन्द्राः कालादयो व्यन्तरेन्द्राः चन्द्रसूर्यादयो ज्योतिष्काः सपरिवाराः मन्दरेऽवतेरुः; ततश्चाच्युतदेवराजो जिनाभिषेकमत्याऽऽभियोगिकदेवानादिदेश, ते चाष्टसहस्रं सौवर्णिकानां, कलशानामेवं रूप्यमयानां मणिमयानां एवं द्विकसंयोगवतां त्रीण्यष्टसहस्राणि, त्रिसंयोगवतामष्टसहस्रं भोमेयकानां च, तथाऽष्टसहस्रं चन्दनकलशानां भृङ्गाराणामादर्शानां स्थालानामन्येषां च विविधानामभिषेकोपयोगिनां भाजनानामष्टसहस्रं २ विचक्रुः; तैश्च कलशादिभाजनैः क्षीरोदस्य

१ निधा० अ०।

८–श्री-मल्ली-ज्ञाताध्य० देवदेवेन्द्र-कृतमहोत्सवम्।

समुद्रस्य पुष्करोदस्य च मागधादीनां च तीर्थानां गङ्गादीनां च महानदीनां पद्मादीनां महाह्रदानामुदकमुत्पलादीनि मृत्तिकां च हिमवदादीनां च वर्षधराणां वर्त्तुलविजयार्द्धानां च पर्वतानां भद्रशालादीनां च वनानां पुष्पाणि गन्धान् सर्वौषधीः तूवराणि सिद्धार्थकान् गोशीर्षचन्दनं चानिन्युः, ततोऽसावच्युतदेवराजोऽनेकैः सामानिकदेवसहस्रैः सह जिनपतिमभिषिषेच, अभिषेके च वर्त्तमाने इन्द्रादयो देवाः छत्रचामरकलशधूपकडुच्छुकपुष्पगन्धाद्यनेकविधाभिषेकद्रव्यव्यग्रहस्ताः, वज्रशूलाद्यनेकायुधसम्बन्धबन्धुरपाणयः, आनन्दजललवप्लुतगण्डस्थलाः, ललाटपट्टघटितकरसम्पुटा जयजयारवमुखरितदिगन्तराः, प्रमोदमदिरामन्दमदवशविरचितविविधचेष्टाः, पर्युपासांचक्रिरे; तथा केचित्–चतुर्विधं वाद्यं वादयामासुः, केचिच्चतुर्विधं गेयं परिजगुः, केचिच्चातुर्विधं नृत्तं ननृतुः, केचिच्चतुर्विधमभिनयमभिनिन्युः, केचिद्–द्वात्रिंशद्विधं नाट्यविधिमुपदर्शयामासुरिति; ततो गन्धकाषायिकया गात्राण्यलूषयन्, ततश्चाच्युतेन्द्रो मुकुटादिभिर्जिनमलश्चकार, ततो जिनपतेः पुरतो रजतमयतन्दुलैर्दर्पणादीन्यष्टाष्टमङ्गलकान्यालिलेख, पाटलादिबहलपरिमलकलितकुसुमनिकरं व्यकिरत्, शुभसुरभिगन्धबन्धुरं धूपं परिददाह, अष्टोत्तरेण वृत्तशतेन च सन्तुष्टस्तुष्टाव–नमोऽस्तु ते सिद्ध !, बुद्ध !, नीरजः !, श्रमण !, समाहित समस्तसम !, योगिन् शल्यकर्तन !, निर्भय !, नीरागद्वेष !, निर्मम !, निःशल्य !, निःसङ्ग !, मानमूरणागण्यगुणरत्न !, शीलसागर!, अनन्ताप्रमेयभव्यधर्मवरचतुरन्तचक्रवर्त्तिन् !, नमोऽस्तु तेऽर्हते, नमोऽस्तु ते भगवते इत्यभिधाय वन्दते स्म; ततो नातिदूरे स्थितः पर्युपासांचक्रे, एवं सर्वेऽप्यभिषिषेचुः, केवलं सर्वान्ते शक्रोऽभिषिक्तवान्, तदभिषेकावसरे च ईशानः शक्रवदात्मानं पञ्चधा विधाय जिनस्योत्सङ्गधरणादिक्रियामकरोत्, ततः शक्रो जिनस्य चतुर्दिशि चतुरो धवलवृषभान् विचकार, तेषां च शृङ्गाग्रेभ्योऽष्टौ तोयधारा

युगपद्विनिर्ययुः वेगेन च वियति समुत्पेतुः एकत्र च मिलन्ति स्म भगवतो मूर्द्धनि च निपेतुः, शेषमच्युतेन्द्रवदसावपि चकार; ततोऽसौ पुनर्विहितपञ्चप्रकारात्मा तथैव गृहीतजिनश्चतुर्निकायदेवपरिवृतः तूर्यनिनादापूरिताम्बरतलो जिननायकं जिनजनन्याः समीपे स्थापयामास, जिनप्रतिबिम्बमवस्वापं च प्रतिसञ्जहार, क्षोमयुगलं कुण्डयुगलं च तीर्थकरस्योच्छीर्षकमूले स्थापयति स्म, श्रीदामगण्डकं च नानामणिमयं जिनस्योल्लोके दृष्टिनिपातनिमित्तमतिरमणीयं निचिक्षेप, ततः शक्रो वैश्रमणमवादीत्-भो देवानुप्रिय !, द्वात्रिंशद्धिरण्यकोटीर्द्वात्रिंशत्सुवर्णकोटीश्च जिनजन्मभवने यथा संहरेति, तदादेशाच्च जृम्भका देवास्तथैव चक्रुः, शक्रः पुनर्देवैर्जिनजन्मनगर्यां त्रिकादिष्वेवं घोषणं कारयामास,-यथा हन्त !, भुवनत्रास्यादिदेवाः !, शृण्वन्तु भवन्तो यथा यो जिने जिनजनन्यां वाऽशुभं मनः सम्प्रधारयति, तस्यार्जकमञ्जरीव सप्तधा मूर्द्धा स्फुटतु; ततो देवा नन्दीश्वरे महिमानं विदधुः, स्वस्थानानि च जग्मुरिति । मालायै हितं तत्र वा साध्विति माल्यं-कुसुमं, तद्गतदोहदपूर्वकं-जन्मत्वेनान्वर्थतः शब्दतस्तु निपातनात् मल्लीति नाम कृतं, यस्तु स्त्रीत्वेऽपि तस्यार्हज्जिनस्तीर्थकर इत्यादिशब्दैर्व्यपदेशः, सोऽर्हदादिशब्दानां बाहुल्येन पुंस्स्वेव प्रवृत्तिदर्शनादिति; 'यथा महाबल' इति भगवत्यां महाबलोऽभिहित इहैव वा यथा मेघकुमार इति, 'सा वड्ढए भगवती' त्यादि गाथाद्वयं, आवश्यकनिर्युक्तिसम्बन्धि ऋषभमहावीरवर्णकरूपं बहुविशेषण-साधर्म्यादिहाधीतं न पुनर्गाथाद्वयोक्तानि विशेषणानि सर्वाणि मल्लिजिनस्य घटन्त एव, तच्च दर्शयिष्यामः, ततः सा वर्द्धते-वृद्धिमुपगच्छति स भगवती ऐश्वर्यादिगुणयोगात् देवलोकाच्युता अनुत्तरविमानावतीर्णत्वात् अनुपमश्रीका-निरुप-मानशोभा दासीदासपरिवृतेति प्रतीतं, परिकीर्णा-परिकरिता पीठमर्दैः-वयस्यैरिति, एतत्किल प्रायः स्त्रीणामसम्भवि,

वयस्यिकानामेव तासां सम्भवात्, अथवा–अलौकिकचरितत्वेन पीठमर्दसम्भवेऽपि निर्दूषणत्वेन भगवत्या नेदं विशेषणं न सम्भवति, असितशिरोजा–कालकुन्तला सुनयना–सुलोचना बिम्बोष्ठी–पक्वगोल्हाभिधानफलविशेषाकारोष्ठी धवलदन्तपङ्क्तिका पाठान्तरेण–धवलदन्तश्रेणिका वरकमलगर्भगौरीत्येतद्विशेषणं न सम्भवति, तस्याः कमलगर्भस्य सुवर्णवर्णत्वात् भगवत्याश्च मल्ल्याः प्रियङ्गुवर्णत्वेन श्यामत्वाद्, उक्तं च–" पउमाभ वासुपुज्जा रत्ता, ससिपुप्फदंत ससिगोरा। सुव्वयनेमी काला, पासो मल्ली पियंगाभा ॥ १ ॥ " इति, अथवा–वरकमलस्य–प्रधानहरिणस्य गर्भ इव गर्भो जठरसम्भूतत्वसाधर्म्यात् वरकमलगर्भः–कस्तूरिका तद्वद् गौरी–अवदाता वरकमलगर्भगौरी श्यामवर्णत्वात्, कस्तूरिकाया इव श्यामेत्यर्थः; पाठान्तरेण वरकमलगर्भवर्णा, तत्रापि श्यामवर्णेत्यर्थः; वाचनान्तरेण–वरकमलकोमलाङ्गीत्यनवद्यमेव । फुल्लं–विकसितं, यदुत्पलं–नीलोत्पलादि तस्य यो गन्धस्तद्वन्निःश्वासो गन्धसाधर्म्याद्यस्याः सा तथा सुरभिनिःश्वासेत्यर्थः, पाठान्तरेण–'पउमुप्पलुप्पलगंधनीसास'त्ति–तत्र पद्मं–शतपत्रादि गन्धद्रव्यविशेषो वा, उत्पलं–नीलोत्पलमित्यादि, उत्पलकुष्ठं च–गन्धद्रव्यविशेष इति; 'विदेहरायवरकन्न'त्ति–विदेहा–मिथिलानगरीजनपदस्तस्या राजा कुम्भकस्तस्य वरकन्या या सा तथा 'उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीर'त्ति–रूपादिभिरुत्कृष्टा, किमुक्तं भवति ?,–उत्कृष्टशरीरेति, 'देसूणवाससयजाय'त्ति–देशोनं वर्षशतं जाताया यस्याः सा तथा, 'मोहणघरयं'ति–सम्मोहोत्पादकं गृहं रतिगृहं वा, 'गब्भघरए'त्ति–मोहनगृहस्य गर्भभूतानि वासभवनानीति केचित्, 'जालघरगं'ति–दार्वादिमयजालकप्रायकुड्यं यत्र मध्यव्यवस्थितं वस्तु बहिःस्थितैर्दृश्यते, 'से जहा नामए अहिमडे इव'त्ति–स गन्धो यथेति दृष्टान्तोपन्यासे यादृश इत्यर्थः, नामए इत्यलङ्कारे अहिमृते–मृत-

सर्प्पे सर्प्पकलेवरस्य गन्ध इत्यर्थः, अथवा-अहिमृतं-सर्पकलेवरं तस्य यो गन्धः, सोऽप्युपचारात् तदेव; इतिरुपदर्शने वा विकल्पे, अथवा-' से जह 'त्ति-उदाहरणोपन्यासोपक्षेपार्थः; ' अहिमडे इव 'ति-अहिमृतकस्येव अहिमृतकमिव वेति, यावत्करणादिदं दृश्यं-' गोमडेइ वा, सुणगमडेइ वा, दीवगमडेइ वा, मज्जारमडेइ वा, मणुस्समडेइ वा, महिसमडेइ वा, मूसगमडेइ वा, आसमडेइ वा, हत्थिमडेइ वा, सीहमडेइ वा, वग्घमडेति वा, विगमडेइ वा, दीवियमडेइ वा, ' द्वीपिकः-चित्रकः, किंभूते अहिकडेवरादौ किंभूतं वा तदित्याह-' मयकुहियविणट्ठदुरभिवावण्णदुब्भिगंधे ' मृतं-जीवविमुक्तमात्रं सत् यत् कुथितं-कोथमुपगतं तत् मृतकुथितमीषद्दुर्गन्धमित्यर्थः; तथा विनष्टं-उच्छूनत्वादिभिर्विकारैः स्वरूपादपेतं सत् यद्दुरभि-तीव्रतरदुष्टगन्धोपेतं तत्तथा व्यापन्नं-शकुनिशृगालादिभिर्भक्षणाद्विरूपां बिभत्सामवस्थां प्राप्तं सद्यद् दुरभिगन्धं-तीव्रतमाशुभगन्धं तत्तथा, ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः; तत्र तदेव वा ' किमिजालाउलसंसत्ते '-कृमिजालैराकुलैः-व्याकुलैः आकुलं वा-सङ्कीर्णं यथा भवतीत्येवं संसक्तं-सम्बद्धं यत्र तत्तथा, तत्र तदेव वा ' असुइविलीणविगयबिभच्छदरिसणिज्जे '-अशुचि-अपवित्रमस्पृश्यत्वात्, विलीनं-जुगुप्सासमुत्पादकत्वात्, विकृतं-विकारवत्त्वात्, बीभत्सं-द्रष्टुमयोग्यत्वात्, एवंभूतं दृश्यते इति दर्शनीयं, ततः कर्मधारयः; तत्र तदेव वा ' भवेतारूवे सिया '-यादृशः सर्पादिकलेवरे गन्धो भवेत्, यादृशं वा सर्पादिकलेवरं गन्धेन भवेत्, एतद्रूपस्तद्रूपो वा स्याद्-भवेत्तस्य भक्तकवलस्य गन्ध इति सूत्रकारस्य विकल्पोल्लेखः ?, ' नो इणट्ठे समट्ठे '-नायमर्थः समर्थः-सङ्गत इत्ययं तु तस्यैव निर्णयः; निर्णीतमेव गन्धस्वरूपमाह-' एत्तो अणिट्ठतराए चेव '-इतः-अहिकडेवरादिगन्धात् सकाशादनिष्टतर एव-अभिलाषस्याविषय एव

अकान्तरकः—अकमनीयतरस्वरूपः, अप्रियतरः—अप्रीत्युत्पादकत्वेन, अमनोज्ञतरकः—कथयाऽप्यनिष्टत्वात्, अमनोज्ञतरश्चिन्तयाऽपि मनसोऽनभिगम्य इत्यर्थः ।

तेणं कालेणं २, कोसला नाम जणवए, तत्थ णं सागेए नाम नयरे, तस्स णं उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए, एत्थ णं महं एगे णागघरए होत्था, दिव्वे सच्चे सच्चोवाए संनिहियपाडिहेरे; तत्थ णं नगरे पडिबुद्धिनाम इक्खागुराया परिवसति, पउमावती देवी, सुबुद्धी अमच्चे, सामदंड०; तते णं पउमावतीए अन्नया कयाइं नागजन्नए यावि होत्था, तते णं सा पउमावती नागजन्नमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धि० करयल० एवं वदासी—एवं खलु सामी !, मम कल्लं नागजन्नए यावि भविस्सति, तं इच्छामि णं सामी !, तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी नागजन्नयं गमित्तए; तुब्भेऽवि णं सामी !, मम नागजन्नयंसि समोसरह; तते णं पडिबुद्धी पउमावतीए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेति, तते णं पउमावती पडिबुद्धिणा रन्ना अब्भणुन्नाया हट्ठ०, कोडुंबिय०, सद्दावेति २; एवं वदासी—एवं खलु देवाणुप्पिया !, मम कल्लं नागजण्णए भविस्सति, तं तुब्भे मालागारे सद्दावेह २, एवं वदह—एवं खलु पउमावईए देवीए कल्लं नागजन्नए भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया !, जलथलय०, दसद्धवन्नं मल्लं णागघरयंसि साहरह, एगं च णं महं सिरिदामगंडं उवणेह, तते णं जलथलय० दसद्धवन्नेणं मल्लेणं, णाणाविहभत्तिसुविरइयं हंसमियमउरकोंचसारसचक्कवायमयणसालकोइलकुलोववेयं, ईहामियजावभत्तिचित्तं, महग्घं, महरिहं, विपुलं पुप्फमंडवं विरएह; तस्स णं बहुमज्झ-

देसभाए एगं महं सिरिदामगंडं जाव गंधद्धुणिं मुयंतं उल्लोयंसि ओलंबेह २, पउमावतिं देविं पडिवालेमाणा २, चिट्ठह; तते णं ते कोडुंबिया जाव चिट्ठंति, तते णं सा पउमावती देवी कल्लं०, कोडुंबिए एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !, सागेयं नगरं सब्भिंतरबाहिरियं आसितसम्मज्जितोवलित्तं जाव पच्चप्पिणंति, ततेणं सा पउमावती दोच्चंपि कोडुंबिय०, खिप्पामेव लहुकरणजुत्तं जाव जुत्तामेव उवट्ठवेह; ततेणं तेऽवि तहेव उवट्ठावेंति, ततेणं सा पउमावती अंतो अंतेउरंसि ण्हाया जाव धम्मियं जाणं दूरूढा, तए णं सा पउमावई नियगपरिवालसंपरिवुडा सागेयं नगरं मज्झंमज्झेणं णिज्जति२, जेणेव पुक्खरणी तेणेव उवागच्छति२, पुक्खरणिं ओगाहइ२, जलमज्जणं जाव परमसूइभूया उल्लपडसाडया जाति तत्थ उप्पलातिं जाव गेण्हति२, जेणेव नागघरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए; ततेणं पउमावतीए दासचेडीओ, बहूओ पुप्फपडलगहत्थगयाओ, धूवकडुच्छुगहत्थगयाओ, पिट्ठतो समणुगच्छंति; ततेणं पउमावती सव्विड्ढिए जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छति२, नागघरयं अणुपविसति२, लोमहत्थगं जाव धूवं डहति२, पडिवुद्धिं पडिवालेमाणी२, चिट्ठति; ततेणं पडिवुद्धी ण्हाए हत्थिखंधवरगते सकोरंट जाव सेयवरचामराहिं हयगयरहजोहमहयाभडगचडकरपहकरेहिं साकेयनगरं० णिग्गच्छति २, जेणेव नागघरे तेणेव उवागच्छति२, हत्थिखंधाओ पच्चोरुहति२, आलोए पणामं करेइ२, पुप्फमंडवं अणुपविसति २, पासति तं एगं महं सिरिदामगंडं; तए णं पडिवुद्धी तं सिरिदामगंडं सुइरं कालं

निरिक्खइ२, तंसि सिरिदामगंडंसि जायविम्हए सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी–तुमन्नं देवाणुप्पिया !, मम दोच्चेणं बहूणि गामागर जाव सन्निवेसाइं आहिंडसि बहूणि रायईसर जाव गिहातिं अणुपविससि तं अत्थि णं तुमे कहिंचि एरिसए सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमे पउमावतीए देवीए सिरिदामगंडे ?, तते णं सुबुद्धी पडिबुद्धिं रायं एवं वदासी–एवं खलु सामी ! अहं अन्नया कयाइं तुब्भं दोच्चेणं मिहिलं रायहाणिं गते, तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पउमावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए संवच्छरपडिलेहणगंसि दिव्वे सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे तस्स णं सिरिदामगंडस्स इमे पउमावतीए सिरिदामगंडे सयसहस्सतिमं कलं ण अग्घति, तते णं पडिबुद्धी सुबुद्धिं अमच्चं एवं वदासी–केरिसिया णं देवाणुप्पिया ! मल्ली विदेहरायवरकन्ना जस्स णं संवच्छरपडिलेहणयंसि सिरिदामगंडस्स पउमावतीए देवीए सिरिदामगंडे सयसहस्सतिमंपि कलं न अग्घति ?, तते णं सुबुद्धी पडिबुद्धिं इक्खागुरायं एवं वदासी–विदेहरायवरकन्नगा सुपइट्ठियकुमुन्नयचारुचरणा वन्नओ, तते णं पडिबुद्धी सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए सोच्चा णिसम्म सिरिदामगंडजणितहासे दूयं सद्दावेइ२, एवं व०–गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! मिहिलं रायहाणिं, तत्थ णं कुंभगस्स रन्नो धूयं, पभावतीए देवीए अत्तियं मल्लिं, विदेहवररायकण्णगं, मम भारियत्ताए वरेहि, जतिविय णं सा सयं रज्जसुंका; तते णं से दूए पडिबुद्धिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठ०, पडिसुणेंति२, जेणेव सए गिहे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छति२, चाउग्घंटं आसरहं पडिकप्पा-

वेति२, दुरूढे जाव हयगयमहयाभडचडगरेणं साएयाओ णिग्गच्छति२, जेणेव विदेहजणवए जेणेव मिहिला रायहाणी, तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सूत्रम्—७४ ॥

'नागघरए'त्ति–उरगप्रतिमायुक्तं चैत्यं, 'दिव्वे'त्ति–प्रधानं, 'सच्चे'त्ति–तदादेशानामवितथत्वात्, 'सच्चोवाए'त्ति–सत्यावपातं सफलसेवमित्यर्थः, 'संनिहियपाडिहेरे'त्ति–सन्निहितं–विनिवेशितं, प्रातिहार्यं–प्रतीहारकर्म तथाविधव्यन्तरदेवेन यत्र तत्तथा देवाधिष्ठितमित्यर्थः, 'नागजण्णए'त्ति–नागपूजा, नागोत्सव इत्यर्थः, 'सिरिदामगंड'मित्यादौ यावत्करणात्, 'पाडलमल्लि' इत्यादिर्वर्णको दृश्यः, 'दोच्चेणं'ति दौत्येन दूतकर्मणा, 'अत्थियाइं'ति–इह आइंशब्दो भाषायां, 'संवच्छरपडिलेहणगंसि'त्ति–जन्मदिनादारभ्य संवत्सरः प्रत्युपेक्ष्यते–एतावतिथः संवत्सरोऽद्य पूर्ण इत्येवं निरूप्यते महोत्सवपूर्वकं यत्र दिने तत्संवत्सरप्रत्युपेक्षणकं, यत्र वर्षं वर्षं प्रति सङ्ख्याज्ञानार्थं ग्रन्थिबन्धः क्रियते, यदिदानीं वर्षग्रन्थिरिति रूढं; तस्येत्यादेरयमर्थः–मल्लीश्रीदामकाण्डस्य पद्मावतीश्रीदामकाण्डं शतसहस्रतमामपि कलां–शोभाया अंशं नार्घति–न प्राप्नोति, कूर्मोन्नतचारुचरणा इत्यादिस्त्रीवर्णको जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यादिप्रसिद्धो मल्लीविषये अध्येतव्यः, 'सिरिदामगंडजणियहासे'त्ति–श्रीदामकाण्डेन जनितो हर्षः–प्रमोदोऽनुरागो यस्यः स तथा, 'अत्तिय'न्ति–आत्मजां, 'सयं रज्जसुंक'त्ति–स्वयं–आत्मना स्वरूपेण निरुपमचरिततयेतियावत् राज्यं शुल्कं–मूल्यं यस्याः सा तथा; राज्यप्राप्येत्यर्थः; तथापि वृणिवति सम्बन्धः, 'चाउग्घंटे'त्ति–चतस्रो घण्टाः पृष्ठतोऽग्रतः पार्श्वतश्च यस्य स तथा अश्वयुक्तो रथोऽश्वरथः, 'पडिकप्पावेइ'त्ति–सज्जयति, 'पहारेत्थ गमणाए'त्ति–प्रधारितवान्–विकल्पितवान् गमनाय–गमनार्थम् ।

तेणं कालेणं २, अंगानाम जणवए होत्था, तत्थ णं चंपानामे णयरी होत्था, तत्थ णं चंपाए नयरीए चंदच्छाए अंगराया होत्था, तत्थ णं चंपाए नयरीए अरहन्नगपामोक्खा बहवे संजत्ता णावावाणियगा परिवसंति, अड्ढा जाव अपरिभूया; तते णं से अरहन्नगे समणोवासए यावि होत्था, अहिगयजीवाजीवे वन्नओ; तते णं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजुत्ताणावावाणियगाणं अन्नया कयाइ एगयओ सहिआणं इमे एयारूवे मिहो कहासंलावे समुप्पज्जित्था—सेयं खलु अम्हं गणिमं, धरिमं च, मेज्जं च, पारिच्छेज्जं च, भंडगं गहाय लवणसमुद्दपोतवहणेण ओगाहित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नं एयमट्ठं पडिसुणेंति२, गणिमं च ४, गेण्हंति२, सगडिसागडियं च सज्जेंति२, गणिमस्स४, भंडगस्स सगडसागडियं भरेंति२, सोहणंसि तिहि-करणनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असण४, उवक्खडावेंति, मित्तणाइभोअणवेलाए भुंजावेंति जाव आपुच्छंति२, सगडिसागडियं जोयंति२, चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवा०२, सगडि-सागडियं मोयंति२, पोयवहणं सज्जेंति२; गणिमस्स य जाव चउव्विहस्स भंडगस्स भरेंति तंदुलाण य, समितस्स य, तेल्लयस्स य, गुलस्स य, घयस्स य, गोरसस्स य, उदयस्स य, उदयभायणाण य, ओसहाण य, भेसज्जाण य, तणस्स य, कट्ठस्स य, आवरणाण य, पहरणाण य, अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाणं पोतवहणं भरेंति, सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तमुहुत्तंसि विपुलं असण४, उवक्खडावेंति२, मित्तणातिं आपुच्छंति२; जेणेव पोतट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति। तते णं तेसिं अरहन्नग जाव वाणियगाणं परियणो

जाव तारिसेहिं वग्गूहिं अभिणंदंता य, अभिसंथुणमाणा य; एवं वदासी-अज्ज ताय भाय माउल भाइ-णज्जे भगवता समुद्देणं अनभिखिज्जमाणा२, चिरं जीवह भद्दं च भे पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे नियगं घरं हव्वमागए पासामो त्तिकट्टु, ताहिं सप्पिवासाहिं पप्पुयाहिं दिट्ठीहिं निरीक्खमाणा मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठंति, तओ समाणिएसु पुप्फबलिकम्मेसु दिन्नेसु, सरसरत्तचंदणदद्दरपंचंगुलितलेसु, अणुक्खित्तंसि धूवंसि पूतिएसु, समुद्दवाएसु, संसारियासु वलयबाहासु, ऊसिएसु सिएसु, झयग्गेसु, पडुप्पवाइएसु, तूरेसु जइएसु, सव्वसउणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु, महया उक्किट्ठिसीहणाय जाव रवेणं पक्खु-भितमहासमुद्दरवभूयंपिव मेइणिं करेमाणा, एगदिसिं जाव वाणियगा णावं दुरूढा; ततो पुस्समाणवो वक्कमुदाहु-हं भो !, सव्वेसिमवि अत्थसिद्धी उवट्ठिताइं कल्लाणाइं पडिहयातिं सव्वपावाइं जुत्तो पूसो विजओ मुहुत्तो अयं देसकालो, ततो पुस्समाणएणं वक्के मुदाहिए हट्ठतुट्ठ कुच्छिधारकन्नधारगब्भिजसंज-त्ताणावावाणियगा वावारिंसु तं नावं पुन्नुच्छंगं पुण्णमुहिं बंधणेहिंतो मुंचंति, तते णं सा नावा विमुक्क-बंधणा पवणबलसमाहया उस्सियसिया विततपक्खा इव गरुडजुवई गंगासलिलतिक्खसोयवेगेहिं संखु-ब्भमाणी२, उम्मीतरंगमालासहस्साइं समतिच्छमाणी२, कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवणसमुद्दं अणेगातिं जोयणसतातिं ओगाढा; तते णं तेसिं अरहन्नगपामोक्खाणं संजुत्तानावावाणियगाणं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं बहूतिं उप्पातियसतातिं पाउब्भूयाइं, तंजहा-अकाले गज्जिते, अकाले

विज्जुते, अकाले थणियसद्दे; अभिक्खणं२, आगासे देवताओ नच्चंति, एगं च णं महं पिसायरूवं पासंति, तालजंघं दिवं गयाहिं बाहाहिं, मसिमूसगमहिसकालगं, भरियमेहवन्नं, लंबोट्ठं, निग्गयग्गदंतं, निल्लालियजमलजुयलजीहं, आऊसियवयणगंडदेसं, चीणचिपिटनासियं, विगयभुग्गभग्गभुमयं, खज्जोयगदित्तचक्खुरागं, उत्तासणगं, विसालवच्छं, विसालकुच्छिं, पलंबकुच्छिं, पहसियपयलियपयडियगत्तं, पणच्चमाणं, अप्फोडंतं, अभिवयंतं, अभिगज्जंतं बहुसो २, अट्टट्टहासे विणिम्मुयंतं, नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासं, खुरधारं असिं गहाय अभिमुहमावयमाणं पासंति । तते णं ते अरहण्णगवज्जा संजुत्ताणावावाणियगा एगं च णं महं तालपिसायं पासंति, तालजंघं दिवं गयाहिं बाहाहिं, फुट्टसिरं भमरणिगरवरमासरासिमहिसकालगं, भरियमेहवन्नं, सुप्पणहं, फालसरिसजीहं, लंबोट्ठं, धवलवट्टअसिलिट्ठतिक्खथिरपीणकुडिलदाढोवगूढवयणं, विकोसियधारासिजुयलसमसरिसतणुयचंचलगलंतरसलोलचवलफुरुफुरेंतनिल्लालियग्गजीहं, अवयच्छियमहल्लविगयबीभत्सलालपगलंतरत्ततालुयं; हिंगुलुयसगब्भकंदरबिलंव अंजणगिरिस्स, अग्गिजालुग्गिलंतवयणं, आऊसियअक्खचम्मउइट्ठगंडदेसं, चीणचिपिडवंकभग्गणासं, रोसागयधम्मधमेंतमारुतनिट्ठुरखरफरुसझुसिरं, ओभुग्गणासियपुडं, घाडुब्भडरइयभीसणमुहं, उद्धमुहकन्नसक्कुलियमहंतविगयलोमसंखालगलंबंतचलियकन्नं, पिंगलदिप्पंतलोयणं, भिउडितडियनिडालं,

१ ०हं पिसायरूव पा० अ ।

नरसिरमालपरिणद्धचिंधं, विचित्तगोणससुबद्धपरिकरं, अवहोलंतपुप्फुयायंतसप्पविच्छुयगोधुंदरनउलसर-डविरइयविचित्तवेयच्छमालियागं, भोगाकूरकण्हसप्पधमधमेंतलंबंतकन्नपूरं, मज्जारसियाललइयखंधं, दित्तघुघुयंतघूयकयकुंतलसिरं, घंटारवेणभीमं, भयंकरं, कायरजणहिययफोडणं, दित्तमट्टट्टहासं, विणिम्मुयंतं, वसारुहिरपूयमंसमलमलिणपोच्चडतणुं, उत्तासणयं, विसालवच्छं पेच्छंता भिन्नणहमुहनयणकन्नवरवग्घचित्तकत्तीणिवसणं, सरसरुहिरगयचम्मविततऊसवियबाहुजुयलं ताहि य खरफरुसअसिणिद्धअणिट्ठदित्तअसुभअप्पिय [अमणुन्न] अकंतवग्गूहि य तज्जयंतं पासंति; तं तालपिसायरूवं एज्जमाणं पासंति२, भीया संजायभया अन्नमन्नस्स कायं समतुरंगेमाणा२, बहूणं इंदाण य, खंदाण य, रुद्दसिववेसमणणागाणं भूयाण य, जक्खाण य, अज्जकोट्टकिरियाण य, बहूणि उवाइयसयाणि ओवातियमाणा २ चिट्ठंति; तए णं से अरहन्नए *समणोवासए तं दिव्वं पिसायरूवं एज्जमाणं पासति२; अभीते, अतत्थे, अचलिए, असंभंते, अणाउले, अणुव्विग्गे, अभिन्नमुहरागणयणवन्ने, अदीणविमणमाणसे, पोयवहणस्स एगदेसंसि वत्थंतेणं भूमिं पमज्जति२, ठाणं ठाइ२, करयलओ एवं वयासि-नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं; जइ णं अहं एत्तो उवसग्गातो मुंचामि, तो मे कप्पति, पारित्तए अह णं एत्तो *उवसग्गाओ ण मुंचामि, तो मे तहा पच्चक्खाएयव्वे त्तिकट्टु सागारं भत्तं पच्चक्खाति; तते णं से पिसायरूवे जेणेव

१ °णामाण अं । * * एतदन्तर्गतः पाठः अ प्रतौ नास्ति ।

अरहन्नए समणोवासए तेणेव उवा० २, अरहन्नगं एवं वदासी-हं भो ! अरहन्नगा, अपत्थियपत्थिया जाव परिवज्जिया, णो खलु कप्पति तव सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणे पोसहोववासातिं चालित्तए वा, एवं खोभेत्तए वा, खंडित्तए वा, भंजित्तए वा, उज्झित्तए वा, परिच्चइत्तए वा; तं जति णं तुमं सीलव्वयं जाव ण परिचयसि, तो ते अहं एयं पोतवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गेण्हामि २, सत्तट्ठतलप्पमाणमेत्तातिं उड्ढं वेहासं उव्विहामि २, अंतो जलंसि णिच्छोलेमि, जेणं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि; तते णं से अरहन्नते समणोवासए, तं देवं मणसा चेव एवं वदासी-अहं णं देवाणु० !, अरहन्नए णामं समणोवासए अहिगयजीवाजीवे नो खलु अहं सक्का केणइ देवेण वा जाव निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा, खोभेत्तए वा, विपरिणामेत्तए वा, तुमं णं जा सद्धा तं करेहि, त्तिकट्टु, अभीए जाव अभिन्नमुहरागणयणवन्ने, अदीणविमणमाणसे, निच्चले, निप्फंदे, तुसिणीए, धम्मज्झाणोवगते विहरति; तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नगं समणोवासगं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदासी-हं भो अरहन्नगा !० अदीणविमणमाणसे, निच्चले, निप्फंदे, तुसिणीए, धम्मज्झाणोवगए विहरति; तते णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहन्नगं धम्मज्झाणोवगयं पासति २, पासित्ता बलियतरागं आसुरुत्ते तं पोयवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गिण्हति २, सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं एवं वदासी-हं भो अरहन्नगा !, अप्पत्थियपत्थिया णो खलु कप्पति, तव सीलव्वय तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए विहरति; तते णं से पिसा-

यरूवे अरहन्नगं जाहे नो संचाएइ निग्गंथाओ० चालित्तए वा० ताहे उवसंते जाव निव्विन्ने तं पोयवहणं सणियं २, उवरिं जलस्स ठवेति २, तं दिव्वं पिसायरूवं पडिसाहरइ२, दिव्वं देवरूवं विउव्वइ२, अंतलिक्खपडिवन्ने सखिंखिणियाइं जाव परिहिते अरहन्नगं स० एवं वयासी-हं भो ! अरहन्नगा !, धन्नोऽसि णं तुमं देवाणुप्पिया !, जाव जीवियफले जस्स णं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, एवं खलु देवाणुप्पिया !, सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए, बहूणं देवाणं मज्झगते, महया सद्देणं आतिक्खति४, एवं खलु जंबूद्दीवे२, भारहे वासे, चंपाए नयरीए, अरहन्नए सम०, अहिगयजीवाजीवे नो खलु सक्का केणति देवेण वा, दाणवेण वा, णिग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा जाव विपरिणामेत्तए वा; तते णं अहं देवाणु० !, सक्कस्स णो एयमट्ठं सद्दहामि०, तते णं मम इमेयारूवे अब्भत्थिए ५, गच्छामि णं अरहन्नयस्स अंतियं पाउब्भवामि जाणामि ताव अहं अरहन्नगं किं पियधम्मे णो पियधम्मे ?, दढधम्मे नो दढधम्मे ?, सीलव्वयगुणे किं चालेति जाव परिचयति, णो परिचयति त्तिकट्टु, एवं संपेहेमि२, ओहिं पउंजामि२, देवाणु० !, ओहिणा आभोएमि२, उत्तरपुरच्छिमं२, उत्तरविउव्वियं० ताए उक्किट्ठाए जेणेव समुद्दे जेणेव देवाणुप्पिया तेणेव उवागच्छामि२, देवाणु० उवसग्गं करेमि; नो चेव णं देवाणुप्पिया भीया वा०, तं जण्णं सक्के देविंदे देवराया वदति, सच्चे णं एसमट्ठे तं दिट्ठे णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जुई जसे जाव परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए तं खामेमि,

णं देवाणु० ! खमंतु, मरहंतु, णं देवाणुप्पिया !, णाइभुज्जो २, एवंकरणयाए त्तिकट्टु पंजलिउडे पायवडिए एयमट्ठं विणएणं भुज्जो२, खामेइ२, अरहन्नयस्स दुवे कुंडलजुयले दलयति२, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव पडिगए ॥ सूत्रम्-७९ ॥ तते णं से अरहन्नए निरुवसग्गमि तिकट्टु पडिमं पारेति, तए णं ते अरहन्नगपामोक्खा जाव वाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति२, पोयं लंबेंति२, सगडसागडं सज्जेंति२, तं गणिमं४, सगडि० संकामेंति२, सगडी० जोएंति२, जेणेव मिहिला तेणेव उवा०२, मिहिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि, सगडीसगडं मोएइ२, मिहिलाए रायहाणीए तं महत्थं, महग्घं, महरिहं, विउलं, रायरिहं पाहुडं, कुंडलजुयलं च गेण्हंति२, अणुपविसंति२; जेणेव कुंभए तेणेव उवा०२, करयल० तं महत्थं दिव्वं कुंडलजुयलं उवणेंति२; तते णं कुंभए तेसिं संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ२, मल्लीं विदेहवररायकन्नं सद्दावेति२, तं दिव्वं कुंडलजुयलं मल्लीए विदेहवररायकन्नगाए पिणद्धति२, पडिविसज्जेति; तते णं से कुंभए राया ते अरहन्नगपामोक्खे जाव वाणियगे विपुलेणं असण-वत्थगंध जाव उस्सुक्कं वियरति२, रायमग्गमोगाढेइ आवासे वियरति, पडिविसज्जेति; तते णं अरहन्नग-संजत्तगा जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छंति२, भंडववहरणं करेंति२, पडिभंडं गेण्हंति२, सगडी० भरेंति जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव२, पोतवहणं सज्जेंति२, भंडं संकामेंति, दक्खिणाणु० जेणेव चंपा पोयट्ठाणे तेणेव पोयं लंबेंति२, सगडी० सज्जेंति२, तं गणिमं४, सगडी० संकामेंति२, जाव

जेणेव चंदच्छाए अंगराया तेणेव उवा० तं महत्थं जाव महत्थं पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं गेण्हंति२, जेणेव चंदच्छाए अंगराया तेणेव उवा० तं महत्थं जाव उवणेंति; तते णं चंदच्छाए अंगराया तं दिव्वं महत्थं च कुंडलजुयलं पडिच्छति२, ते अरहन्नगपामोक्खे एवं वदासी-तुब्भे णं देवा० !, बहूणि गामागार जाव आहिंडह लवणसमुद्दं च अभिक्खणं२; पोयवहणेहिं ओगाहेह गाहह तं अत्थियाइं भे केइ कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?, तते णं ते अरहन्नपामोक्खा चंदच्छायं अंगरायं, एवं वदासी-एवं खलु सामी !, अम्हे इहेव चंपाए नयरीए अरहन्नपामोक्खा बहवे संजत्तगा णावावाणियगा परिवसामो, तते णं अम्हे अन्नया कयाइं गणिमं च४, तहेव अहीणमतिरित्तं जाव कुंभगस्स रन्नो उवणेमो, तते णं से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तं दिव्वं कुंडलजुयलं पिणद्धेति२, पडिविसज्जेति; तं एस णं सामी !, अम्हेहिं कुंभरायभवणंसि मल्ली विदेहे अच्छेरए दिट्ठे तं नो खलु अन्ना कावि तारिसिया देवकन्ना वा जाव जारिसिया णं मल्लीविदेहा, तते णं चंदच्छाए ते अरहन्नगपामोक्खे सक्कारेति सम्माणेति२, पडिवसज्जेति; तते णं चंदच्छाए वाणियगजणियहासे दूतं सद्दावेति जाव जइविय णं सा सयं रज्जसुक्का, तते णं ते दूते हट्ठे जाव पहारेत्थ गमणाए२ ॥ सूत्रम्-७६ ॥

'संजत्ताणावावाणियगा'-सङ्गता यात्रा-देशान्तरगमनं संयात्रा, तत्प्रधाना नौवाणिजकाः-पोतवणिजः, संयात्रानौवाणिजकाः, 'अरहण्णगे समणोवासगे आवि होत्थ'त्ति-न केवलमाढ्यादिगुणयुक्तः श्रमणोपासकश्चाप्यभूत्, 'गणिमं चे'त्यादि, गणिमं-नालिकेरपूगीफलादि यद् गणितं सत् व्यवहारे प्रविशति, धरिमं-यत्तुलाधृतं सत् व्यवह्रियते,

मेयं–यत्सेतिकापल्यादिना मीयते, परिच्छेद्यं–यद् गुणतः परिच्छेद्यते–परीक्ष्यते वस्त्रमण्यादि, 'समियस्स य'त्ति–कणिकायाश्च, 'ओसहाणं'त्ति–त्रिकटुकादीनां, 'भेसज्जाण य'त्ति–पथ्यानामाहारविशेषाणां, अथवा–ओषधानां–एकद्रव्यरूपाणां, भेषजानां–द्रव्यसंयोगरूपाणां, आवरणानां–अङ्गरक्षकादीनां बोधिस्थप्रक्षराणां चः 'अज्जे'त्यादि, आर्य !, हे पितामह !, तात !–हे पितः !, हे भ्रातः !, हे मातुल !, हे भागिनेय !, भगवता समुद्रेण अभिरक्ष्यमाणा यूयं जीवत, भद्रं च 'भे'त्ति–भवतां भवत्विति गम्यते, पुनरपि लब्धार्थान् कृतकार्यान् अनघान् समग्रान्, अनघत्वं–निर्दूषणतया, समग्रत्वम्–अहीनधनपरिवारतया, निजकं गृहं 'हव्वं'ति–शीघ्रमागतान् पश्याम, इतिकृत्वा–इत्यभिधाय, 'सोमाहिं'ति–निर्विकारत्वात्, 'निद्धाहिं'ति–सस्नेहत्वात्, 'दीहाहिं'ति–दूरं यावदवलोकनात्, 'सप्पिवासाहिं'ति–सपिपासाभिः पुनर्दर्शनाकाङ्क्षावतीभिर्दर्शनातृप्ताभिर्वा, 'पप्पुयाहिं'ति–प्रप्लुताभिः अश्रुजलार्द्राभिः, 'समाणिएसु'त्ति–समापितेषु दत्तेषु नावीति गम्यते, सरसरक्तचन्दस्य दर्दरेण–चपेटाप्रकारेण पञ्चाङ्गुलितलेषु हस्तकेष्वित्यर्थः, 'अणुक्खित्तंसी'ति–अनूत्क्षिप्ते–पश्चादुत्पाटिते धूपे पूजितेषु समुद्रवातेषु नौसांयात्रिकप्रक्रियया समुद्राधिपदेवपादेषु वा, 'संसारियासु वलयबाहासु'त्ति–स्थानान्तरादुचितस्थाननिवेशितेषु दीर्घकाष्ठलक्षणबाहुषु आवल्लकेष्विति सम्भाव्यते, तथा उच्छ्रितेषु–ऊर्द्धीकृतेषु, सितेषु ध्वजाग्रेषु–पताकाग्रेषु पटुभिः पुरुषैः पटु वा यथा भवतीत्येवं प्रवादितेषु तूर्येषु जयिकेषु–जयावहेषु, सर्वशकुनेषु–वायसादिषु, गृहीतेषु राजवरशासनेषु–आज्ञासु पट्टकेषु वा प्रक्षुभितमहासमुद्ररवभूतमिव तदात्मकमिव तं प्रदेशमिति गम्यते; 'तओ पुस्समाणवो वद्धमुयाहु'त्ति–ततोऽनन्तरं मागधो मङ्गलवचनं ब्रवीति स्म इत्यर्थः; तदेवाह–सर्वेषामेव 'भे'–भवतामर्थसिद्धिर्भवतु, उप-

स्थितानि कल्याणानि प्रतिहतानि सर्वपापानि–सर्वविघ्नाः, 'जुत्तो'त्ति–युक्तः, 'पुष्यो'–नक्षत्रविशेषः, चन्द्रमसा इहावसरे इति गम्यते; पुष्यनक्षत्रं हि यात्रायां सिद्धिकरं, यदाह–"अपि द्वादशमे चन्द्रे, पुष्यः सर्वार्थसाधन" इति, मागधेन तदुपन्यस्तं, विजयो मुहूर्त्तस्त्रिंशतो मुहूर्त्तानां मध्यात्, अयं देशकालः–एष प्रस्तावो गमनस्येति गम्यते, 'वक्के उदाहिए'त्ति–वाक्ये उदाहृते हृष्टतुष्टाः कर्णधारो–निर्यामकः, कुक्षिधारा–नौपार्श्वनियुक्तकाः, आवेल्लकवाहकादयः गर्भे भवाः गर्भजाः–नौमध्ये उच्चात्रचकर्मकारिणः, संयात्रानौवाणिजका–भाण्डपतयः, एतेषां द्वन्द्वः; 'वावरिसु'त्ति–व्यापृतवन्तः स्वस्वव्यापारेष्विति, ततस्तां नावं पूर्णोत्सङ्गां–विविधभाण्डभृतमध्यां पण्यमध्यां वा मध्यभागनिवेशितमङ्गल्यवस्तुत्वात् पूर्णमुखीं पुण्यमुखीं वा तथैव बन्धनेभ्यो विसर्जयन्ति–मुञ्चन्ति, पवनबलसमाहता–वातसामर्थ्यप्रेरिताः, 'ऊसियसिय'त्ति–उच्छ्रितसितपटा, यानपात्रे हि वायुसङ्ग्रहार्थं महान् पट उच्छ्रितः क्रियते, एवं चासावुपमीयते विततपक्षेव गरुडयुवतिः गङ्गासलिलस्य तीक्ष्णाः ये श्रोतोवेगाः–प्रवाहवेगास्तैः सङ्क्षुभ्यती २,–प्रेर्यमाणा समुद्रं प्रतीति, ऊर्मयो–महाकल्लोलाः, तरङ्गा–ह्रस्वकल्लोलास्तेषां मालाः–समूहाः तत्सहस्राणि; 'समतिच्छमाणि'त्ति–समतिक्रामन्ती, 'ओगाढ'त्ति–प्रविष्टा, 'तालजंघ'मित्यादि, तालो–वृक्षविशेषः, स च दीर्घस्कन्धो भवति, ततस्तालवज्जङ्घे यस्य तत्तथा; 'दिवंगयाहिं बाहाहिं'ति–आकाशप्राप्ताभ्यामतिदीर्घाभ्यां बाहुभ्यां युक्तमित्यर्थः, 'मसिमूसगमहिसकालगं'ति मषी–कज्जलं, मूषकः–उन्दुरविशेषः; अथवा–मषीप्रधाना मूषा–ताम्रादिधातुप्रतापनभाजनं मषीमूषा महिषश्च प्रतीत एव तद्वत्कालकं यत्तत्तथा 'भरियमेहवण्णं'ति–जलभृतमेघवर्णमित्यर्थः; तथा लम्बोष्ठं 'निग्गयग्गदंतं'ति निर्गतानि मुखादग्राणि येषां ते तथा निर्गताग्रा दन्ता यस्य तत्तथा, 'निल्लालिय-

जमलजुयलजीहं'ति-निर्लालितं-विवृतमुखान्निःसारितं यमलं-समं युगलं-द्वयं जिह्वयोर्येन तत्तथा, 'आऊसियवयणगंडदेसं'ति-आऊसियत्ति-प्रविष्टौ वदने गण्डदेशौ-कपोलभागौ यस्य तत्तथा, 'चीणचिपिडनासियं'ति-चीना-ह्रस्वा चिपिटा च-निम्ना नासिका यस्य तत्तथा, 'विगयभुग्गभुमयं'ति-विकृते-विकारवत्यौ, भुग्ने-भग्ने इत्यर्थः; पाठान्तरेण-'भुग्गभग्गे'-अतीव वक्रे भ्रुवौ यस्य तत्तथा; 'खज्जोयगदित्तचक्खुरागं'ति-खद्योतका-ज्योतिरिङ्गणाः, तद्वद्दीप्तश्चक्षूरागो-लोचनरक्तत्वं यस्य तत्तथा, उत्रासनकं-भयंकरं, विशालवक्षो-विस्तीर्णोरःस्थलं, विशालकुक्षि-विस्तीर्णोदरदेशं, एवं प्रलम्बकुक्षिः 'पहसियपयलियपयडियगत्तं'ति-प्रहसितानि-हसितुमारब्धानि, प्रचलितानि च स्वरूपात् प्रवलिकानि वा-प्रजातवलीकानि-प्रपतितानि च-प्रकर्षेण श्लथीभूतानि गात्राणि यस्य तत्तथा; वाचनान्तरे-'विगयभुग्गभुमयपहसियपयलियपयडियफुलिंगखज्जोयदित्तचक्खुरागं'ति पाठः, तत्र विकृते भग्ने भ्रुवौ प्रहसिते च प्रचलिते प्रपतिते यस्य स्फुलिङ्गवत् खद्योतकवच्च दीप्तश्चक्षूरागश्च यस्य तत्तथा; 'पणच्चमाण'मित्यादि, विशेषणपञ्चकं प्रतीतं, 'नीलुप्पले'त्यादौ, गवलं-महिषशृङ्गं अतसी-मालवकदेशप्रसिद्धो धान्यविशेषः, 'खुरहारं'ति-क्षुरस्येव धारा यस्य स तथा, तमसिं-खड्गं, क्षुरो ह्यतितीक्ष्णधारो भवत्यन्यथा केशानाममुण्डनादिति क्षुरेणोपमा खड्गधारायाः कृतेति, अभिमुखमापतत् पश्यन्ति सर्वेऽपि सांयात्रिकाः, तत्राऽर्हन्नकवर्जा यत् कुर्वन्ति तद्दर्शयितुमुक्तमेव पिशाचस्वरूपं सविशेषं तेषां तद्दर्शनं चानुवदन्निदमाह-'तए ण'मित्यादि, ततस्ते अर्हन्नकवर्जाः सांयात्रिकाः पिशाचरूपं वक्ष्यमाणविशेषणं पश्यन्ति, दृष्ट्वा च बहूनामिन्द्रादीनां बहून्युपयाचितशता-न्युपयाचितवन्तस्तिष्ठन्तीति समुदायार्थः, अथवा-'तए णं'ति 'अरहन्नगवज्जा' इत्यादि, गमान्तरं-'आगासदेवयाओ नच्चंति'

इतोऽनन्तरं द्रष्टव्यम्, अत एव वाचनान्तरे नेदमुपलभ्यते, उपलभ्यते चैवम्–'अभिमुहं आवयमाणं पासंति, तए णं ते अरहन्नगवज्जा नावावाणियगा भीया' इत्यादि, तत्र 'तालपिसायं'ति–तालवृक्षाकारोऽतिदीर्घत्वेन पिशाचः तालपिशाचः तं, विशेषणद्वयं प्रागिव, 'फुट्टसिरं'ति–स्फुटितम्–अबन्धत्वेन विकीर्णं शिर इति–शिरोजातत्वात् केशा यस्य स तथा तं भ्रमरनिकरवत् वरमाषराशिवत् महिषवच्च कालको यः स तथा तं, भृतमेघवर्णं तथैव, सूर्प्पमिव–धान्यशोधकभाजनविशेषवत् नखा यस्य स सूर्प्पनखः तं, 'फालसहशजिह्व'मिति–फालं–द्विपञ्चाशत्पलप्रमाणो लोहमयो दिव्यविशेषस्तच्च वह्निप्रतापितमिह ग्राह्यं तत्साधर्म्यं चेह जिह्वाया वर्णदीप्तिदीर्घत्वादिभिरिति, लम्बोष्ठं प्रतीतं धवलाभिर्वृत्ताभिरश्लिष्टाभिर्तिशरारुत्वेन तीक्ष्णाभिः स्थिराभिः निश्चलत्वेन पीनाभिरुपचितत्वेन कुटिलाभिश्च वक्रतया दंष्ट्राभिरवगूढं–व्याप्तं वदनं यस्य स तथा तं, विकोशितस्य–अपनीतकोशकस्य निरावरणस्येत्यर्थः धारास्यो–धाराप्रधानखड्गयोर्यद्युगलं–द्वितयं तेन समसदृश्यौ–अत्यन्ततुल्ये तनुके–प्रतले चञ्चलं–विमुक्तस्थैर्यं यथा भवत्यविश्राममित्यर्थो गलन्त्यौ–रसातिलौल्यात् लालाविमुञ्चन्त्यौ रसलोले–भक्ष्यरसलम्पटे चपले–चञ्चले फुरुफुरायमाणे–प्रकम्पे निर्लालिते–मुखान्निष्काशिते अग्रजिह्वे–अग्रभूते जिह्वे जिह्वाग्रे इत्यर्थो येन स तथा तं, 'अविच्छियं'ति–प्रसारितमित्येके, अन्ये तु यकारस्यालुप्तत्वात्, 'अवयच्छियं'–प्रसारितमुखत्वेन दृश्यमानमित्याहुः, 'महल्लं'ति–महत्–विकृतं–बीभत्सं लालाभिः प्रगलत् रक्तं च तालु–काकुन्दं यस्य स तथा तं, तथा हिङ्गुलकेन–वर्णकद्रव्यविशेषेण सगर्भं कन्दरलक्षणं बिलं यस्य स तथा तमिव, 'अंजणगिरिस्स'त्ति–विभक्तिविपरिणामादञ्जनगिरिं–कृष्णवर्णपर्वतविशेषं तथाऽग्निज्वाला उद्गिरत् वदनं यस्य स तथा तं, अथवा–'अवच्छियेत्यादि

हिंगलुए' त्यादि, अग्गिजाले' त्यादि प्रत्यंतरे च कर्म्मधारयेण वक्ष्यमाणवदनपदस्य विशेषणं कार्यं यस्य तमित्येवंरूपश्च वाक्यशेषो द्रष्टव्यः, तथा अग्निज्वाला उद्गिरद्वदनं यस्य स तथा तं, 'आऊसिय'त्ति-सङ्कुचितं यदक्षचर्म-जलाकर्षणकोशस्तद्वत् 'उड्ड'त्ति अपकृष्टौ अपकर्षवन्तौ सङ्कुचितौ गण्डदेशौ यस्य स तथा तं, अन्ये त्वाहुः-आमूषितानि-सङ्कुटितानि अक्षाणि-इन्द्रियाणि च चर्म च ओष्ठौ च गण्डदेशौ च यस्य स तथा तं, चीना ह्रस्वा 'चिवड'त्ति-चिपटा-निम्ना वंका-वक्रा भग्नेव भग्ना-अयोघनकुट्टितेवेत्यर्थो नासिका यस्य स तथा तं, रोषादागतो, 'धमधमेंत'त्ति-प्रबलतया धमधमेंतत्ति शब्दं कुर्वाणो मारुतो-वायुर्निष्ठुरो-निर्भरः, खरपरुषः-अत्यन्तकर्कशः, शुषिरयोः-रन्ध्रयोर्यत्र तत्तथा, तदेवंविधमवभुग्नं-वक्रं नासिकापुटं यस्य तथा तं, इह च पदानामन्यथा निपातः प्राकृतत्वादिति, घाताय-पुरुषादिवधाय घाटाभ्यां वा-मस्तकावयवविशेषाभ्यां उद्भटं-विकरालं रचितमत एव भीषणं मुखं यस्य स तथा तं, ऊर्द्ध्वमुखे कर्णशष्कुल्यौ-कर्णावती ययोस्तौ तथा तौ च महान्ति-दीर्घाणि विकृतानि लोमानि ययोस्तौ तथा तौ च, 'संखालग'त्ति-शङ्खवन्तौ च शङ्खयोः-अक्षिप्रत्यासन्नावयवविशेषयोः संलग्नौ-सम्बद्धाचित्येके, लम्बमानौ च-प्रलम्बौ चलितौ-चलन्तौ कर्णौ यस्य स तथा तं, पिङ्गले-कपिले दीप्यमाने-भासुरे लोचने यस्य स तथा तं, भृकुटिः-कोपकृतो भ्रूविकारः सैव तडिद्-विद्युद्यस्मिंस्तत्तथा तथाविधं, पाठान्तरेण-भ्रूकुटितं-कृतभ्रूकुटि ललाटं यस्य स तथा तं, नरशिरोमालया परिणद्धं-वेष्टितं चिन्हं-पिशाचकेतुर्यस्य स तथा तं, अथवा-नरशिरोमालया यत्परिणद्धं-परिणहनं तदेव चिन्हं यस्य स तथा तं, विचित्रैः-बहुविधैर्गोनसैः-सरीसृपविशेषैः सुबद्धः परिकरः-सन्नाहो येन स तथा तं, 'अवहोलंत'त्ति-अवघोलयन्तो डोलायमानाः, 'फुप्फुयायंत'त्ति-फूत्कुर्वन्तो ये सर्प्पाः वृश्चिका

गोधाः उन्दुरा नकुलाः सरटाश्च तैर्विरचिता विचित्रा-विविधरूपवती वैकक्षेण-उत्तरासङ्गेन मर्कटबन्धेन स्कन्धलम्बमात्रतया वा मालिका-माला यस्य स तथा तं, भोगः-फणः स क्रूरो-रौद्रो ययोस्तौ तथा तौ च कृष्णसर्पौ च तौ धमधमायमानौ च तावेव लम्बमाने कर्णपूरे-कर्णाभरणविशेषौ यस्य स तथा तं, मार्जारशृगालौ लगितौ-नियोजितौ स्कन्धयोर्येन स तथा तं, दीप्तं-दीप्तस्वरं यथा भवत्येवं, 'घुघुयंत'त्ति-घूत्कारशब्दं कुर्वाणो यो घूकः-कौशिकः स कृतो-विहितो, 'कुंतल'त्ति-शेखरकः शिरसि येन स तथा तं, घण्टानां रवणं-शब्दस्तेन भीमो यः स तथा स चासौ भयङ्करश्चेति तं, कातरजनानां हृदयं स्फोटयति यः स तथा तं, दीप्तमट्टट्टहासं घण्टारवेण भीमादिविशेषणविशिष्टं विनिर्मुञ्चन्तं वसारुधिरपूयमांसमलैर्मलिना, 'पोचड'त्ति-विलीना च तनुः-शरीरं यस्य स तथा तं, उत्रासनकं विशालवक्षसं च प्रतीते, 'पेच्छंत'त्ति-प्रेक्ष्यमाणा-दृश्यमाना अभिन्ना-अखण्डा नखाश्च-नखरा रोम च मुखं च नयने च कर्णौ च यस्यां सा तथा सा चासौ वरव्याघ्रस्य चित्रा-कर्बुरा-कृत्तिश्च-चर्मेति सा तथा सैव निवसनं-परिधानं यस्य स तथा तं, सरसं-रुधिरप्रधानं यद्गजचर्म तद्वितत-विस्तारितं यत्र तत्तथा तदेवंविधं, 'ऊसवियं'ति-उच्छ्रुतं-ऊर्द्धीकृतं बाहुयुगलं येन स तथा तं, ताभिश्च तथाविधाभिः खरपरुषा-अतिकर्कशाः अस्निग्धाः-स्नेहविहीना दीप्ता-ज्वलन्त्य इवोपतापहेतुत्वात् अनिष्टा-अभिलाषाविषयभूताः अशुभाः स्वरूपेण अप्रियाः अप्रीतिकरत्वेन अकान्ताश्च विस्वरत्वेन या वाचस्ताभिः त्रस्तान् कुर्वाणं-त्रस्तयन्तं तर्जयन्तं च पश्यन्ति स्म, पुनस्तत्तालपिशाचरूपं, 'एज्जमाणं'ति-नात्रं प्रत्यागच्छत् पश्यन्ति, 'समतुरंगेमाणे'त्ति-आश्लिष्यन्तः, स्कन्दः-कार्त्तिकेयः, रुद्रः-प्रतीतः, शिवो-महादेवः, वैश्रमणो-यक्षनायकः, नागो-भवनपतिविशेषः, भूतयक्षाः-व्यन्तरभेदाः,

आर्या-प्रशान्ता प्रसन्नरूपा, दुर्गा-कोट्टक्रिया-सैव महिषारूढरूपा, पूजाभ्युपगमपूर्वकाणि प्रार्थनानि उपयाचितान्युच्यन्ते, उपयाचितवन्तो-विदधतस्तिष्ठन्ति स्मेति, अर्हन्नकवर्जानामियमितिकर्त्तव्यतोक्ता, अधुनाऽर्हन्नकस्य तामाह-' तए ण ' मित्यादि, ' अपत्थियपत्थिय 'त्ति अप्रार्थितं-यत्केनापि न प्रार्थ्यते तत्प्रार्थयति यः स तथा, तदामन्त्रणं पाठान्तरेण-अप्रस्थितः सन् यः प्रस्थित इव मुमूर्षुरित्यर्थः, स तथोच्यते, तस्यामन्त्रणं हे अप्रस्थितप्रस्थित !; यावत्करणात् 'दुरंतपंतलक्खणे'त्ति-दुरन्तानि-दुष्टपर्यन्तानि, प्रान्तानि-अपसदानि लक्षणानि यस्य स तथा तस्यामन्त्रणं 'हीणपुण्णचाउद्दसी' इति हीना-असमग्रा पुण्या-पवित्रा चतुर्दशी तिथिर्यस्य जन्मनि स तथा, चतुर्दशीजातो हि किल भाग्यवान् भवतीति, आक्रोशे तदभावो दर्शित इति, ' सिरिहिरिधीकित्तिवज्जिय 'त्ति-प्रतीतं, ' तवसीलव्वए 'त्यादि, तत्र शीलव्रतानि-अणुव्रतानि; गुणाः-गुणव्रतानि, विरमणानि-रागादिविरतिप्रकाराः प्रत्याख्यानानि-नमस्कारसहितादीनि, पौषधोपवासः-अष्टम्यादिषु पर्वदिनेषूपवसनं आहारशरीरसत्काराब्रह्मव्यापारपरिवर्जनमित्यर्थः, एतेषां द्वन्द्वः; ' चालित्तए 'त्ति-भङ्गकान्तरगृहीतान् भङ्गकान्तरेण कर्त्तुं क्षोभयितुं-एतान्येवं परिपालयाम्युतोज्झामीति क्षोभविषयान् कर्त्तुं खण्डयितुं-देशतः भङ्क्तुं सर्वतः उज्झितुं-सर्वस्या देशविरतेस्त्यागेन परित्यक्तुं-सम्यक्त्वस्यापि त्यागत इति, ' दोहिं अंगुलीहिं 'ति-अङ्गुष्ठकतर्जनीभ्यां, अथवा-तर्जनीमध्यमाभ्यामिति; ' सत्तट्ठतलप्पमाणमेत्ताय़ं 'ति-तलो-हस्ततलः तालाभिधानो वाऽतिदीर्घवृक्षविशेषः स एव प्रमाणं-मानं तलप्रमाणं सप्ताष्टौ वा सप्ताष्टानि तलप्रमाणानि परिमाणं येषां ते सप्ताष्टतलप्रमाणमात्रास्तान् गगनभागान् यावदिति गम्यते, 'उड्ढं वेहासं'ति-ऊर्द्ध्वं विहायसि-गगने, 'उव्विहामि'त्ति-नयामि, ' जेणं तुमं'ति-येन त्वं, 'अट्टदु-

हट्टवसट्टे'त्ति-आर्त्तस्य-ध्यानविशेषस्य यो, ' दुहट्ट 'त्ति-दुर्घटः दुःस्थगो दुर्निरोधो वशः-पारतन्त्र्यं, तेन ऋतः-पीडितः आर्त्तदुर्घटवशार्त्तः; किमुक्तं भवति ?-असमाधिप्राप्तः, 'ववरोविज्जसि'त्ति-व्यपरोपयिष्यसि अपेतो भविष्यसीत्यर्थः ' चालित्तए'त्ति इह चलनमन्यथाभावत्वं, कथं ? ' खोभित्तए 'त्ति-क्षोभयितुं संशयोत्पादनतः तथा, 'विपरिणामित्तए'त्ति-विपरिणामयितुं विपरीताध्यवसायोत्पादनत इति, ' संते ' इत्यादौ, यावत्करणात्, ' तंते परितंते' इति द्रष्टव्यं, तत्र श्रान्तः शान्तो वा मनसा तान्तः-कायेन खेदवान् परितान्तः-सर्वतः खिन्नः निर्विण्ण-तस्मादुपसर्गकरणादुपरतः, 'लद्धे'त्यादि, तत्र लब्धा-उपार्जनतः प्राप्ता-तत्प्राप्तेरभिसमन्वागता-सम्यगासेवनतः, ' आइक्खइ ' इत्यादि, आख्याति सामान्येन भाषते विशेषतः, एतदेव द्वयं क्रमेण पर्यायशब्दाभ्यामुच्यते-प्रज्ञापयति, प्ररूपयति; ' देवेण वा दाणवे 'त्यादाविदं द्रष्टव्यमपरं, ' किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण व 'त्ति-तत्र देवो-वैमानिको ज्योतिष्को वा, दानवो-भवनपतिः, शेषा व्यन्तरभेदाः, 'नो सद्दहामि' इत्यादि, न श्रद्दधे-प्रत्ययं न करोमि, 'नो पत्तियामि' तत्र प्रीतिकं-प्रीतिं न करोमि, न रोचयामि-अस्माकमप्येवंभूता गुणप्राप्तिर्भवत्वेवं न रुचिविषयीकरोमीति; ' पियधम्मे 'त्ति धर्मप्रियो, दृढधर्म्मा आपद्यपि धर्मादविचलः, यावत्करणात् ऋद्ध्यादिपदानि दृश्यानि; तत्र ' इड्ढि 'त्ति-गुणर्द्धिः, द्युतिः-आन्तरं तेजः, यशः-ख्यातिः, बलं-शारीरं, वीर्यं-जीवप्रभवं, पुरुषकारः-अभिमानविशेषः, पराक्रमः-स एव निष्पादितस्वविषयः, लब्धादिपदानि तथैव, 'उस्सुक्कं वियरइ'त्ति-शुल्काभावमनुजानातीत्यर्थः, ' गामागरे 'त्यादाविदं द्रष्टव्यं-'नगरखेडकब्बडमडंबदोणमुहपट्टणनिगमसन्निवेसाइं' इति तत्र ग्रामो-जनपदाध्यासितः, आकरो-हिरण्याद्युत्पत्तिस्थानं, नगरं-करविरहितं, खेटं-धूली-

प्राकारं, कर्बटं–कुनगरं–मडम्बं–दूरवर्त्तिसन्निवेशान्तरं, द्रोणमुखं–जलपथस्थलपथयुक्तं, पत्तनं–जलपथस्थलपथयोरेकतरयुक्तं, निगमो वणिग्जनाधिष्ठितः, सन्निवेशः–कटकादीनामावासः; 'देवकन्नगा वे'–त्यादाविदं दृश्यं 'असुरकन्ना वा, नागकन्ना वा, जक्खकन्ना वा, गंधव्वकन्ना वा, रायकन्ना वे'ति–'वाणियगजणियहासे'त्ति नैगमोत्पादितमल्लीविषयानुराग इत्यर्थः॥७६॥

तेणं कालेणं २, कुणाला नाम जणवए होत्था; तत्थ णं सावत्थी नामं नगरी होत्था, तत्थ णं रुप्पी कुणालाहिवई नामं राया होत्था, तस्स णं रुप्पिस्स धुया धारिणीए देवीए, अत्तया सुबाहुनामं, दारिया होत्था; सुकुमाल० रूवेण य, जोव्वणेणं लावण्णेण य, उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था; तीसे णं सुबाहुए दारियाए अन्नदा चाउम्मासियमज्जणए जाए यावि होत्था, तते णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुबाहुए दारियाए चाउम्मासियमज्जणयं उवट्ठियं जाणति२, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति२, एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया !, सुबाहुए दारियाए कल्लं चाउम्मासियमज्जणए भविस्सति, तं कल्लं तुब्भे णं रायमग्गमोगाढंसि चउक्कंसि जलथलयदसद्धवन्नमल्लं साहरेह, जाव सिरिदामगंडे ओलइन्ति; तते णं से रुप्पी कुणालाहिवती सुवन्नगारसेणिं सद्दावेति२, एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया !, रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि णाणाविहपंचवन्नेहिं तंदुलेहिं णगरं आलिहह, तस्स बहुमज्झदेसभाए पट्टयं रएह२, जाव पच्चप्पिणंति; तते णं से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थिखंधवरगए, चाउरंगिणीए सेणाए, महया भड०, अंतेउरपरियाल संपरिवुडे, सुबाहुं दारियं पुरतो कट्टु जेणेव रायमग्गे, जेणेव पुप्फमण्डवे, तेणेव उवा-

गच्छति२, हत्थिखंधातो पच्चोरूहति२, पुप्फमंडवं अणुपविसति२, सीहासणवरगए, पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने; तते णं ताओ अंतेउरियाओ सुबाहुं दारियं पट्टयंसि दुरूहेंति२, सेयपीतएहिं कलसेहिं ण्हाणेंति२, सव्वालंकारविभूसियं करेंति२, पिउणो पायं वंदिउं उवणेंति; तते णं सुबाहुदारिया जेणेव रूप्पी राया, तेणेव उवागच्छति२, पायग्गहणं करेति; तते णं से रूप्पी राया सुबाहुं दारियं अंके निवेसेति२, सुबाहुए दारियाए रूवेण य जो० लाव० जाव विम्हिए वरिसधरं सद्दावेति २, एवं वयासी- तुमण्णं देवाणुप्पिया !, मम दोच्चेणं बहूणि गामागरनगरगिहाणि अणुपविससि; तं अत्थि याइं ते कस्सइ रन्नो वा, ईसरस्स वा, कहिंचि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमीसे सुबाहुदारियाए मज्जणए ?, तते णं से वरिसधरे रुप्पिं करयल० एवं व०-एवं खलु सामी !, अहं अन्नया तुब्भेणं दोच्चेणं मिहिलं गए तत्थ णं मए कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावतीए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे, तस्स णं मज्जणगस्स इमे सुबाहुए दारियाए मज्जणए सयसहस्सइमंपि कलं न अग्घेति, तए णं से रूप्पी राया वरिसधरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, णिसम्म, सेसं तहेव मज्जणगजणितहासे दूतं सद्दावेति २, एवं वयासी०-जेणेव मिहिला नयरी, तेणेव पहारित्थगमणाए ३ ॥सूत्रम्-७७॥

तेणं कालेणं २, कासी नाम जणवए होत्था, तत्थ णं वाणारसीनाम नगरी होत्था, तत्थ णं संखे नामं कासीराया होत्था, तते णं तीसे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अन्नया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधी

विसंघडिए यावि होत्था, तते णं से कुंभए राया सुवन्नगारसेणिं सद्दावेति २, एवं वदासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया !, इमस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं संघाडेह, तए णं सा सुवन्नगारसेणी एतमट्ठं तहत्ति पडिसुणेंति २, तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हति २, जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ तेणेव उवागच्छंति २, सुवन्नगारभिसियासु णिवेसेति २, बहूहिं आएहि य जाव परिणामेमाणा इच्छंति, तस्स दिवस्स कुंडलजुयलस्स संधिं घडित्तए, नो चेव णं संचाएंति संघडित्तए, तते णं सा सुवन्नगारसेणी जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छति २, करयल० वद्धावेत्ता एवं वदासी-एवं खलु सामी ! अज्ज तुब्भे अम्हे सद्दावेह २, जाव संधिं संघाडेत्ता एतमाणं पच्चप्पिणह, तते णं अम्हे तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हामो जेणेव सुवन्नगारभिसियाओ जाव नो संचाएमो संघाडित्तए, तते णं अम्हे सामी !, एयस्स दिव्वस्स कुंडलस्स अन्नं सरिसयं कुंडलजुयलं घडेमो, तते णं से कुंभए राया तीसे सुवन्नगारसेणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, निसम्म, आसुरुत्ते तिवलियं भिउडीं निडाले साहट्टु; एवं वदासी-से केणं तुब्भे कलायाणं भवह !, जे णं तुब्भे इमस्स कुंडलजुयलस्स नो संचाएह, संधिं संघाडेत्तए; ते सुवन्नगारे निव्विसए आणवेति; तते णं ते सुवन्नगारा कुंभेणं रण्णा निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साइं २, गिहाइं तेणेव उवा०२, सभंडमत्तोवगरणमायाओ मिहिलाए, रायहाणीए, मज्झंमज्झेणं निक्खमंति२, विदेहस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कासी जणवए, जेणेव वाणारसी नयरी, तेणेव

१ °ति २ ता त० अ ।

उवा०, अग्गुज्जाणंसि सगडीसागडं मोएन्ति२, महत्थं जाव पाहुडं गेण्हंति२ त्ता, वाणारसीनयरीं मज्झंमज्झेणं जेणेव संखे कासीराया, तेणेव उवागच्छंति२, करयल० जाव एवं अम्हे णं सामी ! मिहिलातो नयरीओ कुंभएणं रन्ना निव्विसया, आणत्ता समाणा, इहं हव्वमागता; तं इच्छामो णं सामी !, तुब्भं बाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया, निरुव्विग्गा, सुहंसुहेणं परिवसिउं; तते णं संखे कासीराया ते सुवन्नगारे एवं वदासी-किन्नं तुब्भे देवा० ! कुंभएणं रन्ना निव्विसया आणत्ता ?, तते णं ते सुवन्नगारा संखं एवं वदासी एवं-खलु सामी-कुंभगस्स रन्नो धूयाए पभावतीए देवीए, अत्तयाए मल्लीए, कुंडलजुयलस्स संधी विसंघडिए; तते णं से कुंभए सुवन्नगारसेणिं सद्दावेति २, जाव निव्विसया आणत्ता, तं एएणं कारणेणं सामी !, अम्हे कुंभएणं निव्विसया आणत्ता, तते णं से संखे सुवन्नगारे एवं वदासी-केरिसिया णं देवाणुप्पिया !, कुंभगस्स धूया पभावतीदेवीए, अत्तया मल्ली वि० तते णं ते सुवन्नगारा संखरायं एवं वदासी-णो खलु सामी ! अन्ना काई तारिसिया देवकन्ना वा, गंधव्वकन्नगा वा, जाव जारिसिया णं मल्ली विदेहवररायकन्ना; तते णं से संखे कुंडलजुअलजणितहासे दूतं सद्दावेति जाव तहेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सूत्रम्—७८ ॥

'भिसियाओ'त्ति-आसनानि, 'तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु'त्ति-त्रिवलीकां-वलित्रयोपेतां भृकुटीं-भ्रूविकारं संहृत्य-अपनीयेति; 'केणं तुब्भे कलायाणं भवह'त्ति-के यूयं कलादानां-सुवर्णकाराणां मध्ये मवथ ?, न केऽपी-

त्यर्थो, निर्विज्ञानत्वात्, अथवा-के यूयं सुवर्णकाराणां पुत्राद्यन्यतमा भवथ; अथवा-के यूयं कलादाः ?, न केऽपीत्यर्थः; णमित्यलङ्कारे, शेषं सुगमं ।

तेणं कालेणं २, कुरुजणवए होत्था, हत्थिणाउरे नगरे अदीणसत्तू नामं राया होत्था, जाव विहरति; तत्थ णं मिहिलाए कुंभगस्स पुत्ते पभावतीए, अत्तए मल्लीए, अणुजायए मल्लदिन्नए नाम कुमारे, जाव जुवराया यावि होत्था; तते णं मल्लदिन्ने कुमारे अन्नया कोडुंबिय० सद्दावेति २, गच्छह णं तुब्भे मम पमदवणंसि एगं महं चित्तसभं करेह, अणेग जाव पच्चप्पिणंति; तते णं से मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सद्दावेति २, एवं वयासी-तुब्भे णं देवा० !, चित्तसभं हावभावविलासविब्बोयकलिएहिं रूवेहिं चित्तेह२, जाव पच्चप्पिणह, तते णं सा चित्तगरसेणी तहत्ति पडिसुणेति२, जेणेव सयाइं गिहाइं तेणेव उवा०२, तूलियाओ वन्नए य गेण्हंति२, जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छंति २ त्ता, अणुपविसंति २, भूमिभागे विरंचंति २, भूमिं सज्जेंति २, चित्तसभं हावभाव जाव चित्तेउं पयत्ता यावि होत्था; तते णं एगस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगरलद्धी लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया-जस्स णं दुपयस्स वा, चउपयस्स वा, अपयस्स वा, एगदेसमवि पासति, तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं निव्वत्तेति, तए णं से चित्तगरदारए मल्लीए जवणियंतरियाए जालंतरेण पायंगुट्ठं पासति, तते णं तस्स णं चित्तगरस्स इमेयारूवे जाव सेयं खलु ममं मल्लीएवि पायंगुट्ठाणुसारेणं सरिसगं जाव गुणोववेयं रूवं निव्वत्तित्तए, एवं संपेहेति २, भूमि-

भागं सज्जेति २, मल्लीएवि पायंगुट्ठाणसारेणं जाव निव्वत्तेति; तते णं सा चित्तगरसेणी चित्तसभं जाव हावभावे चित्तेति २, जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव २, जाव एतमाणत्तियं पच्चप्पिणंति, तए णं मल्लदिन्ने चित्तगरसेणिं सक्कारेइ २, विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलेइ २, पडिविसज्जेइ; तए णं मल्लदिन्ने अन्नया ण्हाए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे अम्मधाईए सद्धिं जेणेव चित्तसभा तेणेव उवा० २, चित्तसभं अणुपविसइ २, हावभावविलासविब्बोयकलियाइं रूवाइं पासमाणे २, जेणेव मल्लीए विदेहवररायकन्नाए तयाणुरूवे णिव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए; तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे मल्लीए विदेहवररायकन्नाए तयाणुरूवं निव्वत्तियं पासति २, इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एस णं मल्ली विदेहवररायकन्न त्तिकट्टु, लज्जिए, वीडिए, विअडे, सणियं २, पच्चोसक्कइ; तए णं मल्लदिन्नं अम्मधाई पच्चोसक्कंतं पासित्ता एवं वदासी–किन्नं तुमं पुत्ता ! लज्जिए, वीडिए, विअडे, सणियं २, पच्चोसक्कइ ?; तते णं से मल्लदिन्ने अम्मधातिं एवं वदासी–जुत्तं णं अम्मो !, मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवयभूयाए लज्जणिज्जाए मम चित्तगरणिव्वत्तियं सभं अणुपविसित्तए !, तएणं अम्मधाई मल्लदिन्नं कुमारं व०–नो खलु पुत्ता !, एस मल्ली, एस णं मल्ली विदे०, चित्तगरएणं तयाणुरूवे णिव्वत्तिए; तते णं मल्लदिन्ने अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा, आसुरुत्ते एवं वयासी–केस णं भो चित्तयरए अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए जे णं मम जेट्ठाए भगिणीए गुरुदेवयभूयाए जाव निव्वत्तिए त्तिकट्टु, तं चित्तगरं वज्झं आणवेइ; तए णं सा चित्तगरस्सेणी इमीसे कहाए

लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे, तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेइ २ त्ता २, एवं वयासी-एवं खलु सामी !, तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तकरलद्धी लद्धा पत्ता, अभिसमन्नागया जस्स णं दुपयस्स वा जाव णिव्वत्तेति तं मा णं सामी !, तुब्भे तं चित्तगरं वज्झं आणवेह, तं तुब्भे णं सामी !, तस्स चित्तगरस्स अन्नं तयाणुरूवं दंडं निव्वत्तेह; तए णं से मल्लदिन्ने तस्स चित्तगरस्स संडासगं छिंदावेइ २, निव्विसयं आणवेइ, तए णं से चित्तगरए मल्लदिन्नेणं णिव्विसए आणत्ते समाणे सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ णयरीओ णिक्खमइ २, विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे नयरे, जेणेव कुरुजणवए जेणेव अदीणसत्तू राया, तेणेव उवा० २ त्ता, भंडणिक्खेवं करेइ २, चित्तफलगं सज्जेइ२, मल्लीए विदेह० पायंगुट्ठाणुसारेण रूवं णिव्वत्तेइ २, कक्खंतरंसि छुब्भइ २, महत्थं ३ जाव पाहुडं गेण्हइ २, हत्थिणापुरं नयरं मज्झंमज्झेणं, जेणेव अदीणसत्तू राया, तेणेव उवागच्छति २, तं करयल जाव वद्धावेइ २, पाहुडं उवणेति२, एवं खलु अहं सामी !, मिहिलाओ रायहाणीओ कुंभगस्स रन्नो पुत्तेणं पभावतीए देवीए, अत्तएणं मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे इह हव्वमागए, तं इच्छामि णं सामी !, तुब्भं बाहुच्छायापरिग्गहिए जाव परिवसित्तए, तत्तं णं से अदीणसत्तू राया तं चित्तगदारयं, एवं वदासी-किन्नं तुमं देवाणुप्पिया !, मल्लदिण्णेणं निव्विसए आणत्ते !, तए णं से चित्तयरदारए अदीणसत्तुरायं एवं वदासी-एवं खलु सामी !, मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाई चित्तगरसेणिं सद्दावेइ२, एवं व०-तुब्भे णं

देवाणुप्पिया !, मम चित्तसभं तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव मम संडासगं छिंदावेइ२, निव्विसयं आण-
वेइ; तं एवं खलु सामी !, मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते, तते णं अदीणसत्तू राया तं चित्तगरं
एवं वदासी–से केरिसए णं देवाणुप्पिया !, तुमे मल्लीए तदाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ?, तते णं से चित्त०
कक्खंतराओ चित्तफलयं णीणेति२, अदीणसत्तुस्स उवणेइ २, एवं व०–एस णं सामी !, मल्लीए वि०
तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगारभावपडोयारे निव्वत्तिए, णो खलु सक्का केणइ देवेण वा जाव मल्लीए
विदेहरायवरकण्णगाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तित्तए, तते णं अदीणसत्तू पडिरूवजणितहासे दूयं सद्दा-
वेति२, एवं वदासी–तहेव जाव पहारेत्थ गमणयाए ॥ सूत्रम्–७९ ॥

'पमयवणंसि'त्ति–गृहोद्याने, 'हावभावविलासविब्बोयकलिएहिं'ति–हावभावादयः सामान्येन स्त्रीचेष्टाविशेषाः,
विशेषः पुनरयम्–"हावो मुखविकारः स्याद्, भावश्चित्तसमुद्भवः। विलासो नेत्रजो ज्ञेयो, विभ्रमो भ्रूसमुद्भवः ॥ १ ॥" इति,
अन्ये त्वेवं विलासमाहुः–"स्थानासनगमनानां हस्तभ्रूनेत्रकर्मणां चैव। उत्पद्यते विशेषो यः श्लिष्टोऽसौ विलासः स्यात् ॥१॥"
विब्बोकलक्षणं चेदम्–इष्टानामर्थानां प्राप्तावभिमानगर्भसम्भूतः। स्त्रीणामनादरकृतो विब्बोको नाम विज्ञेयः ॥१॥" 'तूलि-
याउ'त्ति–तूलिका बालमय्यश्चित्रलेखनकूर्चिकाः, 'तदणुरूवं रूवं'ति–दृष्ट्वा द्विपदाद्युचितमाकारमिति, 'अंतेउरपरि-
यालेण'न्ति–अन्तःपुरं च परिवारश्च अन्तःपुरलक्षणो वा परिवारो यः स तथा, ताभ्यां तेन वा सम्परिवृतः, लज्जितो व्रीडितो
व्यर्द्दः इत्येते त्रयोऽपि पर्यायशब्दाः लज्जाप्रकर्षाभिधानायोक्ताः, 'लज्जणिज्जाए'त्ति–लज्ज्यते यस्याः सा लज्जनीया।

तेणं कालेणं २, पंचाले जणवए, कंपिल्ले पुरे नयरे, जियसत्तू नाम राया, पंचालाहिवई; तस्स णं जितसत्तुस्स धारिणीपामोक्खं देविसहस्सं ओरोहे होत्था, तत्थ णं मिहिलाए चोक्खा नामं परिव्वाइया, रिउव्वेद जाव परिणिट्ठिया यावि होत्था; तते णं सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूणं राईसर जाव सत्थवाहपभितीणं पुरतो दाणधम्मं च, सोयधम्मं च, तित्थाभिसेयं च, आघवेमाणी, पण्णवेमाणी, परूवेमाणी, उवदंसेमाणी, विहरति; तते णं सा चोक्खा परिव्वाइया अन्नया कयाई तिदंडं च कुंडियं च जाव धाउरत्ताओ य गेण्हइ२, परिव्वाइगावसहाओ पडिनिक्खमइ२, पविरलपरिव्वाइया सद्धिं संपुरिवुडा मिहिलं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं, जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे, जेणेव कण्णंतेउरे, जेणेव मल्ली विदेह०, तेणेव उवागच्छइ २, उदयपरिफासियाए दब्भोवरि पच्चत्थुयाए भिसियाए निसियति२ त्ता, मल्लीए विदेह० पुरतो दाणधम्मं च जाव विहरति; तते णं मल्ली विदेहा चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी-तुब्भे णं चोक्खे !, किंमूलए धम्मे पन्नत्ते ?, तते णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लिं विदेहं एवं वदासी-अम्हं णं देवाणुप्पिए ! सोयमूलए धम्मे पण्णवेमि, जण्णं अम्हं किंचि असुई भवइ, तण्णं उदएण य मट्टियाए जाव अविग्घेणं सग्गं गच्छामो, तए णं मल्ली विदेह० चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी-चोक्खा !, से जहा नामए केई पुरिसे रुहिरकयं वत्थं, रुहिरेण चेव धोवेज्जा; अत्थि णं चोक्खा !, तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोव्वमाणस्स काई सोही ?, नो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव चोक्खा ! तुब्भे णं पाणाइवाएणं

जाव मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि काई सोही, जहा व तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव धोव्वमाणस्स, तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लीए विदेह०, एवं वुत्ता समाणा संकिया, कंखिया, विइगिच्छिया, भेयसमावण्णा जाया यावि होत्था; मल्लीए णो संचाएति, किंचिवि पामोक्खमाइक्खित्तए तुसिणीया संचिट्ठति; तते णं तं चोक्खं मल्लीए बहुओ दासचेडीओ हीलेंति, निंदंति, खिंसंति, गरहंति, अप्पेगतिया हेरुयालंति, अप्पे० मुहमक्कडिया करेंति, अप्पे० वग्घाडीओ करेंति, अप्पे० तज्जमाणीओ निच्छुभंति; तए णं सो चोक्खा मल्लीए विदेह० दासचेडियाहिं जाव गरहिज्जमाणी, हीलिज्जमाणी, आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणी, मल्लीए विदेहरायवरकण्णाए पओसमावज्जति, भिसियं गेण्हति२, कण्णंतेउराओ पडिनिक्खमति२, मिहिलाओ निग्गच्छति २, परिव्वाइयासंपरिवुडा, जेणेव पंचालजणवए, जेणेव कंपिल्लपुरे, बहूणं राइसर जाव परूवेमाणी विहरति; तए णं से जियसत्तू अन्नदा कदाई अंतेउरपरियाल सद्धिं संपरिवुडे एवं जाव विहरति, तते णं सा चोक्खा परिव्वाइयासंपरिवुडा जेणेव जितसत्तुस्स रण्णो भवणे, जेणेव जितसत्तू, तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, अणुपविसति२, जियसत्तुं जएणं विजएणं वद्धावेति; तते णं से जितसत्तू चोक्खं परि०, एज्जमाणं पासति २, सीहासणाओ अब्भुट्ठेति२, चोक्खं सक्कारेति२, आसणेणं उवणिमंतेति; तते णं सा चोक्खा उदगपरिफासियाए जाव भिसियाए निविसइ, जियसत्तुं रायं रज्जे य जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ; तते णं सा चोक्खा जियसत्तुस्स रन्नो

दाणधम्मं च जाव विहरति, तते णं से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जाव विम्हिए चोक्खं एवं वदासी-तुमं णं देवाणुप्पिया !, बहूणि गामागर जाव अडह बहूण य रातीसर गिहातिं अणुपविससि, तं अत्थियाइं ते कस्सवि रन्नो वा जाव एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए णं इमे मह उवरोहे ?; तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया जियसत्तुं [एवं वदासी] ईसिं अवहसियं करेइ२, [एवं वयासी-] एवं च सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया !, तस्स अगडदद्दुरस्स ?, के णं देवाणुप्पिए !, से अगडदद्दुरे ?, जियसत्तू !, से जहा नामए अगडदद्दुरे सिया, से णं तत्थ जाए तत्थेव वुड्ढे अण्णं अगडं वा, तलागं वा, दहं वा, सरं वा, सागरं वा, अपासमाणे चेवं मण्णइ-अयं चेव अगडे वा जाव सागरे वा, तए णं तं कूवं अण्णे सामुद्दए दद्दुरे हव्वमागए, तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुद्ददद्दुरं, एवं वदासी-से केस णं तुमं देवाणुप्पिया !, कत्तो वा इह हव्वमागए ?, तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया !, अहं सामुद्दए दद्दुरे, तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुद्दयं दद्दुरं, एवं वयासी-केमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?, तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी-महालए णं देवाणुप्पिया !, समुद्दे, तए णं से दद्दुरे पाएणं लीहं कड्ढेइ २, एवं वयासी-एमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?, णो इणट्ठे समट्ठे, महालए णं से समुद्दे, तए णं से कूवदद्दुरे पुरच्छिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता णं गच्छइ २, एवं वयासी-एमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?, णो इणट्ठे समट्ठे, तहेव एवामेव तुमंपि

जियसत्तू अन्नेसिं बहूणं राईसर जाव सत्थवाहपभिईणं भज्जं वा, भगिणीं वा, धूयं वा, सुण्हं वा, अपासमाणे जाणेसि जारिसए मम चेव णं ओरोहे तारिसए णो अण्णस्स, तं एवं खलु जियसत्तू !, मिहिलाए नयरीए, कुंभगस्स धूता पभावतीए, अत्तिया मल्ली नामंति रूवेण य जुव्वणेण जाव नो खलु अण्णा काई देवकन्ना वा जारिसिया मल्ली, विदेहवररायकण्णाए छिण्णस्सवि पायंगुट्ठस्स इमे तवोरोहे सयसहस्सतिमंपि कलं न अग्घइ त्तिकट्टु जामेव दिसं पाउब्भूया, तामेव दिसं पडिगया; तते णं से जितसत्तू परिव्वाइयाजणितहासे दूयं सद्दावेति २, जाव पहारेत्थ गमणाए ६ ॥सूत्रम्—८०॥ तते णं तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जेणेव मिहिला, तेणेव पहारेत्थ गमणाए; तते णं छप्पिय दूतका जेणेव मिहिला तेणेव उवाग०२, मिहिलाए अग्गुज्जाणंसि, पत्तेयं २, खंधावारनिवेसं करेंति२, मिहिलं रायहाणीं अणुपविसंति२, जेणेव कुंभए तेणेव उवा०२, पत्तेयं२, करयल० साणं२, राईणं वयणातिं निवेदेंति; तते णं से कुंभए तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा, आसुरुत्ते जाव तिवलियं भिउडिं एवं वयासी—न देमि णं अहं तुब्भं मल्लीं विदेहवरकण्णं, तिकट्टु; ते छप्पि दूते असक्कारिय, असम्माणिय, अवद्दारेणं णिच्छुभावेति; तते णं जितसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राइणं दूया कुंभएणं रन्ना असक्कारिया, असम्माणिया, अवदारेणं णिच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा२, जाणवया जेणेव सयातिं२, णगराइं जेणेव सगा २, रायाणो तेणेव उवा०, करयलपरि० एवं वयासी—एवं खलु सामी !, अम्हे जितसत्तुपामो-

क्खाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जेणेव मिहिला जाव अवदारेणं निच्छुभावेति; तं ण देइ णं सामी !, कुंभए मल्ली वि०, साणं २, राईणं एयमट्ठं निवेदंति; तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा, निसम्म, आसुरुत्ता अण्णमण्णस्स दूयसंपेसणं करेंति २, एवं वदासी— एवं खलु देवाणुप्पिया !, अम्हं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जाव निच्छूढा, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं कुंभगस्स जत्तं गेण्हित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एतमट्ठं पडिसुणेंति२, ण्हाया सण्णद्धा हत्थिखंधवरगया सकोरंटमल्लदामा जाव सेयवरचामराहिं० महयाहयगयरहपवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा, सव्विड्ढीए जाव रवेणं सएहिं२, नगरेहिंतो जाव निग्गच्छंति२, एगयओ मिलायंति२, जेणेव मिहिला, तेणेव पहारेत्थ गमणाए; तते णं कुंभए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे, समाणे, बलवाउयं सद्दावेति२, एवं वदासी—खिप्पामेव० हय जाव सेण्णं सन्नाहेह जाव पच्चप्पिणंति; तते णं कुंभए ण्हाते सण्णद्धे, हत्थिखंध०, सकोरंट०, सेयवरचामरए महया० मिहिलं मज्झंमज्झेणं णिज्जाति २; विदेहं जणवयं मज्झंमज्झेणं, जेणेव देसअंते, तेणेव उवा० २, खंधावारनिवेसं करेति २, जियसत्तुपा० छप्पिय रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठति; तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पिय रायाणो जेणेव कुंभए तेणेव उवा० २, कुंभएणं रन्ना सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था; तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभयं रायं हयमहियपवरवीरघाइयनिवडियचिंधद्धयप्पडागं किच्छप्पाणोवगयं दिसो

दिसिं पडिसेहिंति, तते णं से कुंभए जितसत्तुपामोक्खेहिं छहिं राईहिं हयमहित जाव पडिसेहिए समाणे अत्थामे, अबले, अवीरिए, जाव अधारिणिज्जमि तिकट्टु सिग्घं, तुरियं, जाव वेइयं जेणेव मिहिला, तेणेव उवा० २, मिहिलं अणुपविसति २, मिहिलाए दुवारातिं पिहेइ २, रोहसज्जे चिट्ठति; तते णं ते जितसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति २, मिहिलं रायहाणिं णिस्संचारं णिरुच्चारं सव्वतो समंता ओरुंभित्ताणं चिट्ठंति; तते णं से कुंभए मिहिलं रायहाणिं रुद्धं जाणित्ता, अब्भंतरियाए उवट्ठाणसालाए, सीहासणवरगए तेसिं जितसत्तुपामोक्खाणं छण्हं रातीणं छिद्दाणि य, विवराणि य, मम्माणि य, अलभमाणे बहूहिं आएहि य, उवाएहि य, उप्पत्तियाहि य ४, बुद्धीहिं परिणामेमाणे २, किंचि आयं वा, उवायं वा, अलभमाणे ओहतमणसंकप्पे जाव झियायति; इमं च णं मल्लीवि० ण्हाया जाव बहूहिं खुज्जाहिं परिवुडा, जेणेव कुंभए, तेणेव उ०२, कुंभगस्स पायग्गहणं करेति; तते णं कुंभए मल्लिं विदेह०, णो आढाति, नो परियाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठति; तते णं मल्ली वि० कुंभगं एवं वयासी–तुब्भे णं ताओ !, अण्णदा ममं एज्जमाणं जाव निवेसेह, किण्णं तुब्भं अज्ज ओहत० झियायह ?, तते णं कुंभए मल्लिं, वि० एवं व०–एवं खलु पुत्ता !, तव कज्जे जितसत्तुपमुक्खेहिं छहिं रातीहिं दूया संपेसिया, ते णं मए असक्कारिया जाव निच्छूढा; तते णं ते जितसत्तुपामुक्खा तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा, परिकुविया समाणा मिहिलं रायहाणिं निस्संचारं जाव चिट्ठंति, तते णं अहं

पुत्ता, तेसिं जितसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि अलभमाणे जाव झियामि; तते णं सा मल्ली वि० कुंभयं रायं, एवं वयासी–मा णं तुब्भे ताओ !, ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह, तुब्भे णं ताओ !, तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं पत्तेयं२, रहसियं दूयसंपेसे करेह; एगमेगं एवं वदह–तव देमि मल्लिं विदेहवररायकण्णं तिकट्टु संझाकालसमयंसि पविरलमणूसंसि निसंतंसि, पडिनिसंतंसि, पत्तेयं२, मिहिलं रायहाणिं अणुप्पवेसेह२, गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह, मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइं पिधेह२, रोहसज्जे चिट्ठह; तते णं कुंभए एवं० तं चेव जाव पवेसेति, रोहसज्जे चिट्ठति; तते णं ते जितसत्तुपामोक्खा छप्पिय रायाणो कल्लं पाउब्भूया जाव जालंतरेहिं कणगमयं मत्थयछिड्डं पउमुप्पलपिहाणं पडिमं पासति एस णं मल्ली विदेहरायवरकण्ण त्तिकट्टु मल्लीए विदेह० रूवे य, जोव्वणे य, लावण्णे य, मुच्छिया गिद्धा जाव अज्झोववण्णा अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणा२ चिट्ठंति; तते णं सा मल्ली वि० ण्हाया जाव पायच्छित्ता सव्वालंकार० बहूहिं खुज्जाहिं जाव परिक्खित्ता, जेणेव जालघरए, जेणेव कणयपडिमा, तेणेव उवाग०२, तीसे कणगपडिमाए मत्थयाओ तं पउमं अवणेति, तते णं गंधे णिद्धावति, से जहा नामए अहिमडेति वा जाव असुभतराए चेव; तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं२ उत्तरिज्जएहिं आसातिं पिहेंति २ त्ता, परम्मुहा चिट्ठंति; तते णं सा मल्ली वि० ते जितसत्तुपामोक्खे एवं वयासी–किण्णं तुब्भं देवाणुप्पिया !, सएहिं २ उत्तरिज्जेहिं जावं परम्मुहा

चिट्ठह ?, तते णं ते जितसत्तुपामोक्खा मल्लीं वि० एवं वयंति-एवं खलु देवाणुप्पिए !, अम्हे इमेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं२ जाव चिट्ठामो; तते णं मल्ली वि० ते जितसत्तुपामुक्खे० जइ ता देवाणुप्पिया !, इमीसे कणग० जाव पडिमाए कल्लाकल्लिं ताओ मणुण्णाओ असण४, एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे२, इमेयारूवे असुभे पोग्गलपरिणामे इमस्स पुण ओरालियसरीरस्स, खेलासवस्स, वंतासवस्स, पित्तासवस्स, सुक्कसोणियपूयासवस्स, दूरूवऊसासनीसासस्स, दुरूवमुत्तपुतियपुरीसपुण्णस्स, सडण जाव धम्मस्स केरिसए परिणामे भविस्सति ?; तं मा णं तुब्भे देवाणु० माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह, रज्जह, गिज्झह, मुज्झह, अज्झोववज्जह; एवं खलु देवाणु० !, तुम्हे अम्हे इमाओ तच्चे भवग्गहणे अवरविदेहवासे सलिलावतिंसि विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बलपामोक्खा सत्तवि य बालवयंसया रायाणो होत्था, सहजाया जाव पव्वतिता; तए णं अहं देवाणुप्पिया !, इमेणं कारणेणं इत्थीनामगोयं कम्मं निव्वत्तेमि, जति णं तुब्भं चोत्थं उवसंपज्जित्ताणं विहरह; तते णं अहं छट्ठं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, सेसं तहेव सव्वं; तते णं तुब्भे देवाणुप्पिया !, कालमासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा, तत्थ णं तुब्भे देसूणातिं बत्तीसातिं सागरोवमाइं ठिती; तते णं तुब्भे ताओ देवलोयाओ अणंतरं चयं चइत्ता, इहेव जंबुद्दीवे २, जाव साइं २, रज्जातिं उवसंपज्जित्ताणं विहरह; तते णं अहं देवाणु० !, ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव दारियत्ताए पच्चायाया;-किं थ तयं पम्हुट्ठं जं थ तया भो जयंत पवरंमि।

वुत्था समयनिबद्धं देवा !, तं संभरह जातिं ॥ १ ॥ तते णं तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं रायाणं मल्लीए विदेहराय० अंतिए एतमट्ठं सोचा, णिसम्म, सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं, लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं, ईहावूह०, जाव सण्णिजाइस्सरणे समुप्पन्ने, एयमट्ठं सम्मं अभिसमागच्छंति; तए णं मल्ली अरहा जितसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो समुप्पण्णजाइसरणे जाणित्ता, गब्भघराणं दाराइं विहाडावेति; तते णं ते जितसत्तुपामोक्खा जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति २, तते णं महब्बलपामोक्खा सत्तविय बालवयंसा एगयओ अभिसमन्नागया यावि होत्था, तते णं मल्लीए अरहा ते जितसत्तुपामोक्खे छप्पिय रायाणो, एवं व०–एवं खलु अहं देवा० !, संसारभयउव्विग्गा जाव पव्वयामि, तं तुब्भे णं किं करेह किं च ववसह जाव किं भे हियसामत्थे !, जियसत्तू० मल्लिं अरहं एवं वयासी–जति णं तुब्भे देवा० !, संसार जाव पव्वयह अम्हे णं देवा० ! के अण्णे आलंबणे वा, आहारे वा, पडिबंधे वा, जह चेव णं देवा० !, तुब्भे अम्हे इओ तच्चे भवग्गहणे बहुसु कज्जेसु य मेढी पमाणं जाव धम्मधुरा होत्था, तहा चेव णं देवा० ! इण्हिंपि जाव भविस्सह; अम्हेविय णं देवाणु० ! संसारभउव्विग्गा जाव भीया जम्मणमरणाणं देवाणुप्पियाणं सद्धिं मुंडा भवित्ता, जाव पव्वयामो; तते णं मल्ली अरहा ते जितसत्तुपामोक्खे, एवं वयासी–जण्णं तुब्भे संसार जाव मए सद्धिं पव्वयह, तं गच्छह, णं तुब्भे देवा० !,

१ किं न वस० अ।

सएहिं २ रज्जेहिं जेट्ठे पुत्ते रज्जे ठावेह २ त्ता, पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूहह दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउ०भवह; तते णं ते जितसत्तुपामुक्खा मल्लिस्स अरहतो एतमट्ठं पडिसुणेंति, तते णं मल्ली अरहा ते जितसत्तु० गहाय जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, कुंभगस्स पाएसु पाडेति; तते णं कुंभए ते जितसत्तु० विपुलेणं असण ४, पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेति, जाव पडिविसज्जेति, तते णं ते जियसत्तुपामोक्खा कुंभएणं रण्णा विसज्जिया समाणा जेणेव साइं २ रज्जातिं, जेणेव नगरातिं, तेणेव उवा० २, सगाइं रज्जातिं उवसंपज्जित्ता विहरंति; तते णं मल्ली अरहा संवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामित्ति मणं पहारेति ॥ सूत्रम्—८१ ॥

'पामोक्खं'ति-उत्तरं आक्षेपस्य परिहार इत्यर्थः, 'हीलंती'त्यादि, हीलयन्ति जात्याद्युद्घट्टनतः, निन्दन्ति-मनसा कुत्सन्ति, खिंसंति परस्परस्याग्रतः तद्दोषकीर्त्तनेन, गर्हन्ते-तत्समक्षमेव, 'हरुयालिं'ति-विकोपयन्ति मुखमर्कटिकातः अन्यथा स्वमुखवक्रताः कुर्वन्ति, 'वग्घाडियाओ'त्ति-उपहासार्था रुतविशेषाः, 'कुसुलोदंतं'ति-कुशलवार्त्ता, 'अगडददुरेसिय'त्ति कूपमण्डूको भवेत्, 'जमगसमगं'ति-युगपत्, 'जत्तं गिण्हित्तए'त्ति—यात्रां-विग्रहार्थं गमनं ग्रहीतुं-आदातुं विधातुमित्यर्थः, 'बलवाउयं'ति-बलव्यापृतं सैन्यव्यापारवन्तं, 'संपलग्गे'त्यत्र-योद्धुमिति शेषः; 'हयमहियपवरवीरघाइयविवडियचिंधद्धयपडागे'त्ति-हतः-सैन्यस्य हतत्वात्, मथितो-मानस्य निर्मथनात्, प्रवरा वीरा-भटा घातिता-विनाशिता यस्य स तथा, विपतिता चिह्नध्वजाः-चिह्नभूतगरुडसिंहधरा बलकध्वजादयः पताकाश्च हस्तिनाम्नुपरिवर्त्तिन्यः

प्रबलपरबलप्रयुक्तानेकतीक्ष्णक्षुरप्रहारप्रकरेण दण्डादिच्छेदनाद्यस्य स तथा, ततः पदचतुष्कस्य कर्मधारयः; अथवा-हय-मथिताः-अश्वमर्दिताः, प्रवरवीरा यस्य घातिताश्च सत्यो विपतिताश्चिह्नध्वजपताका यस्य स तथा तं, 'दिसोदिसं'ति-दिशो दिशि सर्वत इत्यर्थः, 'पडिसेहंति'त्ति-आयोधनाद्विनिवर्त्तयन्ति निराकुर्वन्तीत्यर्थः, 'अधारणिज्जं'ति-अधारणीयं धारयितुमशक्यं परबलमितिकृत्वा; अथवा-अधारणीयं-अयापनीयं यापना कर्तुमात्मनो न शक्यत इतिकृत्वा, 'निस्संचारं'ति-द्वारापद्वारैः जनप्रवेशनिर्गमवर्जितं यथा भवति, 'निरुच्चारं'-प्राकारस्योर्ध्वं जनप्रवेशनिर्गमवर्जितं यथा भवति, अथवा-उच्चारः-पुरीषं, तद्विसर्गार्थं यज्जनानां बहिर्निर्गमनं तदपि स एवेति तेन वर्जितं यथा भवत्येवं सर्वतो-दिक्षु समन्तात्-विदिक्षु, 'अवरुध्य'-रोधकं कृत्वा तिष्ठन्ति स्मेति, 'रहस्सिए'त्ति-रहसिकान् गुप्तान्, 'दूतसंप्रेषान्'-दूतप्रेषणानि, 'पविरलमणूसंसि'त्ति-प्रविरलाः मनुष्याः मार्गादिषु यस्मिन् सन्ध्याकालसमये स तथा तस्मिन्, तथा-'निशान्तेषु'-गृहेषु, 'प्रतिनिश्रान्ता'-विश्रान्ता यस्मिन् मनुष्या इतीह द्रष्टव्यं, स तथा त्रत, अथवा-सन्ध्याकालसमये सति तथा तत्रैव यः प्रविरलो मनुष्यो-मानुषजनो मार्गेषु भवति तत्र निशान्तेषु प्रतिनिश्रान्ते इत्यर्थः; 'जइ तावे'त्यादि, यदि तावदस्याहारपिण्डस्यायं परिणामः अस्य पुनरौदारिकशरीरस्य कीदृशो भविष्यतीति सम्बन्धः, इह च 'किमंग पुण'त्ति-यत्क्वचिद् दृश्यते, ततः 'इमस्स-पुण'त्ति पठनीयं वाचनान्तरे-तथादर्शनात्; 'कल्लाकल्लिं'ति-प्रतिदिनं 'खेलासवे'त्यादि,-खेलं-निष्ठीवनं, तदाश्रवति-क्षरतीति खेलाश्रवं तस्य एवं शेषाण्यपि पदानि, नवरं वान्तं-वमनं पित्तं-दोषविशेषः,शुक्रं-सप्तमो धातुः, शोणितं-आर्त्तवं

सामान्येन वा रुधिरं, 'पूयं'-परिपक्कं तदेव दूरूपौ-विरूपावुच्छ्वासनिःश्वासौ यस्य तत्तथा तस्य, दूरूपेण मूत्रकेण पूतिकेन वा-अशुभगन्धवता पुरीषेण पूर्णं यत्तत्तथा तस्य, तथा शटनं-अङ्गुल्यादेः कुष्ठादिना पतनं छेदनं-बाह्वादेर्विध्वंसनं च-क्षयः एते धर्माः-स्वभावा यस्य तत्तथा तस्य, 'सज्जह'-सजत सङ्गं कुरुत, 'रज्यत'-रागं कुरुत, 'गिज्झह'-गृध्यत गृद्धिं प्राप्तभोगेष्वतृप्तिलक्षणां कुरुत, 'मुज्झह'-मुह्यत मोहं-तद्दोषदर्शने मूढत्वं कुरुत, 'अज्झोववज्जह'-अध्युपपद्यध्वं तदप्राप्तप्रापणायाध्युपपत्तिं-तदेकाग्रतालक्षणां कुरुत, 'किं थ तयं'-गाहा, 'किं'मिति प्रश्ने, 'थ' इति वाक्यालङ्कारे, 'तकत्' तत् 'पम्हुट्ठं'ति विस्मृतं, 'जं'ति यत् थ इति वाक्यालङ्कारे, 'तदा'-तस्मिन् काले 'भो' इत्यामन्त्रणे, 'जयंतप्रवरे'-जयन्ताभिधाने प्रवरेऽनुत्तरविमाने, 'वुत्थ'ति-उषिता निवासं कृतवन्तः, 'समयनिबद्धं'-मनसा निबद्धसङ्केतं यथा प्रतिबोधनीया वयं परस्परेणेति, समकनिबद्धां वा-सहितैर्या उपात्ता जातिस्तां देवाः अनुत्तरसुराः सन्तः, 'तं'ति-त एव तां वा देवसम्बधिनीं स्मरत जातिं-जन्म यूयमिति ॥ १ ॥

तेणं कालेणं २, सक्कस्सासणं चलति, तते णं सक्के देविंदे ३, आसणं चलियं पासति२, ओहिं पउंजति२, मल्लिं अरहं ओहिणा आभोएति२, इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु जंबुद्दीवे२, भारहे वासे, मिहिलाए, कुंभगस्स० मल्ली अरहा निक्खमिस्सामित्ति मणं पहारेति, तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं सक्काणं३, अरहंताणं, भगवंताणं, निक्खममाणाणं, इमेयारूवं अत्थसंपयाणं दलि-

१ °स्स, तथा दु° अ।

त्तए; तंजहा–" तिण्णेव य कोडिसया अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ। असितिं च सयसहस्सा इंदा दलयंति अरहाणं ॥ १ ॥ एवं संपेहेति २, वेसमणं देवं सद्दावेति २ त्ता०, एवं खलु देवाणु० !, जंबुद्दीवे २, भारहे वासे जाव असीतिं च सयसहस्साइं दलइत्तए, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया !, जंबु०, भारहे०; कुंभग- भवणंसि इमेयारूवं अत्थसंपदाणं साहराहि२, खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि; तते णं से वेसमणे देवे सक्केणं देविंदेणं० एवं वुत्ते हट्ठे करयल जाव पडिसुणेइ२, जंभए देवे सद्दावेइ२, एवं वयासी– गच्छह णं तुब्भे देवाणु० !, जंबुद्दीवं दीवं, भारहं वासं, मिहिलं रायहाणिं, कुंभगस्स रन्नो भवणंसि, तिन्नेव य कोडिसया अट्ठासीयं च कोडीओ असियं च सयसहस्साइं अयमेयारूवं अत्थसंपयाणं साह- रह २, मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह; तते णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं जाव सुणेत्ता, उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमंति२, जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति२; ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा जेणेव जंबुद्दीवे २, भारहे वासे, जेणेव मिहिला रायहाणी, जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे, तेणेव उवाग- च्छंति२, कुंभगस्स रन्नो भवणंसि, तिन्नि कोडिसया जाव साहरंति२, जेणेव वेसमणे देवे, तणेव उवा०२, करयल जाव पच्चप्पिणंति; तते णं से वेसमणे देवे, जेणेव सक्के देविंदे देवराया, तेणेव उवा- गच्छइ२, करयल जाव पच्चप्पिणत्ति; तते णं मल्ली अरहा कल्लाकल्लिं जाव मागहओ पायरासोत्ति बहूणं सणाहाण य, अणाहाण य, पंथियाण य, पहियाण य, करोडियाण य, कप्पडियाण य, एगमेगं

हिरण्णकोडिं अट्ठ य अणूणातिं सयसहस्सातिं इमेयारूवं अत्थसंपदाणं दलयति; तए णं से कुंभए मिहिलाए राय०, तत्थ २, तहिं २, देसे २, बहूओ महाणससालाओ करेति; तत्थ णं बहवे मणुया दिण्णभइभत्तवेयणा विपुलं असण४, उवक्खडेंति२, जे जहा आगच्छंति, तं०—पंथिया वा, पहिया वा, करोडिया वा, कप्पडिया वा, पासंडत्था वा, गिहत्था वा, तस्स य तहा आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणवरगत० तं विपुलं असणं४, परिभाएमाणा परिवेसेमाणा विहरंति; तते णं मिहिलाए सिंघाडग जाव बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमातिक्खति—एवं खलु देवाणु० !, कुंभगस्स रण्णो भवणंसि सव्वकामगुणियं, किमिच्छियं विपुलं असणं४ बहूणं समणाण य जाव परिवेसिज्जति; वरवरिया घोसिज्जति किमिच्छियं दिज्जए बहुविहीयं । सुरअसुरदेवदाणवनरिंदमहियाण निक्खमणे ॥ १ ॥ तते णं मल्ली अरहा संवच्छरेणं तिन्नि कोडिसया, अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ, असितिं च सयसहस्साइं, इमेयारूवं अत्थसंपदाणं दलइत्ता, निक्खमामित्ति मणं पहारेति ॥ सूत्रम्—८२ ॥ तेणं कालेणं २, लोगंतिया देवा, बंभलोए कप्पे, रिट्ठे विमाणपत्थडे सएहिं२ विमाणेहिं, सएहिं २, पासायवडिंसएहिं; पत्तेयं२, चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं, अन्नेहि य बहूहिं लोगंतिएहिं देवेहिं सद्धिं संपरिवुडा, महयाहयनट्टगीयवाइय जाव रवेणं भुंजमाणा विहरइ; तंजहा—"सारस्सयमाइचा वण्ही वरुणा य गद्दतोया य । तुसिया अव्वाबाहा अग्गिचा चेव रिट्ठा य

॥ १ ॥ " तते णं तेसिं लोयंतियाणं देवाणं पत्तेयं२, आसणातिं चलंति, तहेव जाव अरहंताणं निक्खममाणाणं संबोहणं करेत्तए त्ति तं गच्छामो णं अम्हेवि मल्लिस्स अरहतो संबोहणं करेमि त्तिकट्टु एवं संपेहेंति२, उत्तरपुरच्छिमं दिसीभायं० वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति २ संखिज्जाइं जोयणाइं एवं जहा जंभगा जाव जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रन्नो भवणे जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति२, अंतलिक्खपडिवन्ना सखिंखिणियाइं जाव वत्थातिं पवर परिहिया करयल०, ताहिं इट्ठा०, एवं वयासी-बुज्झाहि भगवं !, लोगनाहा पवत्तेहि, धम्मतित्थं जीवाणं हियसुहनिस्सेयसकरं भविस्सति, त्तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयंति२, मल्लिं अरहं वंदंति, नमंसंति२, जामेव दिसिं पाउब्भूआ, तामेव दिसिं पडिगया; तते णं मल्ली अरहा तेहिं लोगंतिएहिं देवेहिं संबोहिए समाणे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवा०२, करयल० इच्छामि णं अम्मयाओ !, तुब्भेहिं अब्भणुण्णाते मुंडे भवित्ता जाव पव्वतित्तए, अहासुहं देवा० !, मा पडिबंधं करेहि; तते णं कुंभए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेति२, एवं वदासी-खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं जाव भोमेज्जाणंति, अण्णं च महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति; तेणं कालेणं २, चमरे असुरिंदे जाव अच्चुयपज्जवसाणा आगया; तते णं सक्के३, आभिओगिए देवे सद्दावेति२, एवं वदासी-खिप्पामेव अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं जाव अण्णं च तं विउलं उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति, तेवि कलसा ते चेव कलसे अणुपविट्ठा; तते णं से सक्के देविंदे देवराया कुंभराया मल्लिं अरहं सीहासणंसि

पुरत्थाभिमुहं निवेसेइ, अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं जाव अभिसिंचंति; तते णं मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे, अप्पेगतिया देवा मिहिलं च सब्भिंतरं बाहिं आव सव्वतो समंता परिधावंति; तए णं कुंभए राया दोच्चंपि उत्तरावक्कमणं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेति २, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता, एवं वयासी-खिप्पामेव मणोरमं सीयं उवट्ठवेह, ते उवट्ठवेंति; तते णं सक्के२, आभिओगिए०, खिप्पामेव अणेगखंभ० जाव मणोरमं सीयं उवट्ठवेह जाव सावि सीया तं चेव सीयं अणुपविट्ठा; तते णं मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेति२, जेणेव मणोरमा सीया, तेणेव उवा०२, मणोरमं सीयं अणुपयाहिणीकरेमाणा मणोरमं सीयं दुरूहति २, सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने; तते णं कुंभए अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेति२, एवं वदासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया !, ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मल्लिस्स सीयं परिवहह जाव परिवहंति; तते णं सक्के देविंदे देवराया मणोरमाए दक्खिणिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हति, ईसाणे उत्तरिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हति, चमरे दाहिणिल्लं हेट्ठिल्लं, बली उत्तरिल्लं हेट्ठिल्लं, अवसेसा देवा जहारिहं मणोरमं सीयं परिवहंति; "पुव्विं उक्खित्ता माणुस्सेहिं, तो हट्ठरोमकूवेहिं । पच्छा वहंति सीयं, असुरिंदसुरिंदनागेंदा ॥ १ ॥ चलचवलकुंडलधरा सच्छंदविउव्वियाभरणधारी । देविंददाणविंदा, वहंति सीयं जिणिंदस्स ॥ २ ॥" तते णं मल्लिस्स अरहओ मणोरमं सीयं दुरूढस्स इमे

१ ०ता सपरि० अ । २ व्याकयवलिकम्मा जा० अ ।

अट्ठमंगला पुरतो, अह्ाणु० एवं निग्गमो जहा जमालिस्स, तते णं मल्लिस्स अरहतो निक्खममाणस्स अप्पे०, देवा मिहिलं आसिय० अब्भिंतरवासविहिगाहा जाव परिधावंति; तते णं मल्ली अरहा, जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे, जेणेव असोगवरपायवे, तेणेव उवा०, सीयाओ पच्चोरुभति२, आभरणालंकारं पभावती पडिच्छति; तते णं मल्ली अरहा सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेति, तते णं सक्के देविंदे३, मल्लिस्स केसे पडिच्छति, खीरोदगसमुद्दे पक्खिवइ; तते णं मल्ली अरहा णमोऽत्थु णं सिद्धाणं तिकट्टु सामाइयचरित्तं पडिवज्जति, जं समयं च णं मल्ली अरहा चरित्तं पडिवज्जति, तं समयं च णं देवाणं माणुसाण य णिग्घोसे तुरियनिणायगीयवातियनिग्घोसे य सक्कस्स वयणसंदेसेणं णिलुक्के यावि होत्था, जं समयं च णं मल्ली अरहा सामातियं चरित्तं पडिवन्ने, तं समयं च णं मल्लिस्स अरहतो माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवनाणे समुप्पन्ने, मल्ली णं अरहा जे से हेमंताणं, दोच्चे मासे, चउत्थे पक्खे, पोससुद्धे, तस्स णं पोससुद्धस्स एक्कारसीपक्खेणं, पुव्वण्हकालसमयंसि, अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं, अस्सिणीहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं, तिहिं इत्थीसएहिं अब्भितरियाए परिसाए, तिहिं पुरिससएहिं बाहिरियाए परिसाए, सद्धिं मुंडे भवित्ता पव्वइए; मल्लिं अरहं इमे अट्ठ रायकुमारा, अणुपव्वइंसु तंजहा–" णंदे य णंदिमित्ते, सुमित्त बलमित्त भाणुमित्ते य। अमरवति अमरसेणे महसेणे चेव अट्ठमए ॥ १ ॥ " तए णं से भवणवई४, मल्लिस्स अरहतो निक्खमणमहिमं करेंति२, जेणेव नंदीसरवरे०, अट्ठाहियं करेंति २, जाव पडि-

गया; तते णं मल्ली अरहा जं चेव दिवसं पव्वतिए, तस्सेव दिवसस्स पुव्वा (पच्च) वरण्हकालसमयंसि, असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि; सुहासणवरगयस्स सुहेणं परिणामेणं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं पसत्थाहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणकम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते जाव केवलनाणदंसणे समुप्पन्ने ॥ सूत्रम्-८३ ॥

'जाव मागहओ पायरासो'त्ति-मगधदेशसम्बन्धिनं प्रातराशं-प्राभातिकं भोजनकालं यावत् प्रहरद्वयादिकमित्यर्थः, 'बहूण'मित्यादि, सनाथेभ्यः-सस्वामिकेभ्यः, अनाथेभ्यो-रङ्केभ्यः, 'पंथियाणं'ति-पन्थानं नित्यं गच्छतीति पान्थास्त एव पान्थिकास्तेभ्यः, 'पहियाणं'ति-पथि गच्छन्तीति पथिकास्तेभ्यः प्रहितेभ्यो वा केनापि क्वचित्-प्रेषितेभ्य इत्यर्थः, करोट्या-कपालेन चरन्तीति करोटिकास्तेभ्यः, क्वचित्-'कायकोडियाणं'ति पाठस्तत्र काचो-भारोद्वहनं तस्य कोटी-भागः काचकोटी तया ये चरन्ति काचकोटिकास्तेभ्यः; कर्पटैश्चरन्तीति-कार्पटिकाः कापटिका वा-कपटचारिणस्तेभ्यः, 'एगमेगं हत्थामासं'ति-वाचनान्तरे-दृश्यते, तत्र हस्तेन हिरण्यस्यामर्शः-परामर्शो ग्रहो हस्तामर्शः तत्परिमाणं हिरण्यमपि स एवोच्यते, अतस्तमेकैकमेकैकस्मै ददाति स्म, प्रायिकं चैतत्सम्भाव्यते 'वरवरिया घोसिज्जइ किमिच्छियं दिज्जए बहुविहीयं'ति वचनात्, अत एव 'एगा हिरण्णकोडी' त्याद्यपि शक्रार्पितहिरण्यदानप्रमाणमेव, यतोऽन्यदपि स्वकीयधनधान्यादिगतं दानं सम्भवतीति, 'तत्थ तत्थ'त्ति-अवान्तरपुरादौ देशे देशे-शृङ्गाटकादौ, 'तहिं तहिं'ति-तत्र तत्र महापथपथादीनां भागे भागे अतिबहुषु स्थानेष्विति तात्पर्यमिति, महानससाला-रसवतीगृहाणि, 'दिण्णभयभत्त-

वेयण'त्ति-दत्तं-वितीर्णं भृतिभक्तलक्षणं द्रव्यभोजनस्वरूपं, वेतनं-मूल्यं येभ्यस्ते तथा, 'पासंड'त्ति-लिङ्गिनः, 'सव्वकामगुणियं'ति-सर्वे कामगुणा-अभिलषणीयपर्याया रूपरसगन्धस्पर्शलक्षणाः सन्ति सञ्जाता वा यत्र तत् सर्वकामगुणिकं सर्वकामगुणितं वा, कः किमीप्सतीत्येवमिच्छानुसारेण यद्दीयते तत्किमीप्सितं, बहुभ्यः श्रमणेभ्यो ब्राह्मणेभ्यः सनाथेभ्य इत्यादि पूर्ववत्, 'सुरासुरियं'ति-वाचनान्तरे दृश्यते, तत्र भोजने अयं च सूरोऽयं च सूरो भुक्तां च यथेष्टमित्येवं या परिवेषणक्रिया सा सूरासूरिका पुटापुटिकादीनामिवात्र समासः तया सूरासूरिकया, तृतीयार्थे चेह सूत्रनिर्देशे द्वितीया द्रष्टव्येति; 'वरवरिया'-गाहा वरस्य-इष्टार्थस्य वरणं-ग्रहणं वरवरिका, वरं वृणुत वरं वृणुतेत्येवं संशब्दनं वरवरिकेति भावः; सुरासुरैर्देवदानवनरेन्द्रैश्च महिता ये ते तथा तेषां; 'सारस्सय' गाहा, सारस्वताः१, आदित्याः२, वह्नयो३, वरुणाश्च४, गर्दतोयाश्च५, तुपिताः६, अव्याबाधाः७, आग्नेयाश्च८, त्वष्टौ कृष्णराज्यवकाशान्तरस्थविमानाष्टकवासिनो रिष्टाश्चेति रिष्टाख्यविमानप्रस्तटवासिनः; क्वचित्-दशविधा एते व्याख्यायन्ते, अस्माभिस्तु स्थानाङ्गानुसारेणैवमभिहिताः; 'हट्ठरोमकूवेहिं'ति-रोमाञ्चितैः, 'चलचवलकुंडलधर'त्ति-चलाश्च ते चपलकुण्डलधराश्चेति विग्रहः, 'सच्छंदविउव्वियाभरणधारि'त्ति-स्वच्छन्दाश्च ते विकुर्विताभरणधारिणश्च स्वच्छन्देन वा-स्वाभिप्रायेण विकुर्वितान्याभरणानि धारयन्तीति विग्रहः, 'जहा जमालिस्स'त्ति-भगवत्यां यथा जमालेः निष्क्रमणं तथेह वाच्यमिहैव वा यथा मेघकुमारस्य, नवरं चामरधारितरुण्यादिपु शक्रेशानारीन्द्रप्रवेशत इह विशेषः, 'आसिय० अब्भंतरा वास विहि गाहा' इति, 'अप्पेगइया देवा मिहिलं रायहाणिं सब्भितरबाहिरं आसियसंमज्जियं संमट्ठसुइरत्थंतरावणवीहियं करेंति,' 'अप्पेगइया देवा मंचाइमंचकलियं करेंति'त्यादि-

मेंघकुमारनिष्क्रमणोक्तनगरवर्णकस्य' तथा-'अप्पेगइया देवा हिरण्णवासं वासिंसु एवं सुवन्नवासं वासिंसु एवं रयणवइर-पुप्फमल्लगंधचुण्णआभरणवासं वासिंसु' इत्यादिवर्षसमूहस्य, तथा-'अप्पेगइया देवा हिरण्णविहिं भाइंसु एवं' सुवण्णचुण्णविहिं भाइंसु' इत्यादिविधिसमूहस्य तीर्थकरजन्माभिषेकोक्तसङ्ग्रहार्था याः क्वचित्-गाथाः सन्ति, ताः अनुश्रित्य सूत्रमध्येयं यावद्, 'अप्पेगइया देवा आधावेंति परिधावन्ती'त्येतदवसानमित्यर्थः, इदं च राजप्रश्नकृतादौ द्रष्टव्यमिति; 'निलुक्के'त्ति-निलुक्कोऽन्तर्हित इत्यर्थः, 'सुद्धस्स एक्कारसीपक्खेणं'ति-शुद्धपक्षस्य या एकादशी तिथिस्तत्पक्षे तदर्द्धे णमित्यलङ्कारे, 'णायकुमार'त्ति-ज्ञाताः-इक्ष्वाकुवंशविशेषभूताः, तेषां कुमाराः-राज्यार्हा ज्ञातकुमाराः; 'तस्सेव दिवसस्स पुव्वा(पच्च)-वरण्हकालसमयंसि'त्ति-यत्र दिवसे दीक्षां जग्राह, तस्यैव पोषमासशुद्धैकादशीलक्षणस्य प्रत्यपराह्णकालसमये-पश्चिमे भागे इदमेवावश्यके पूर्वाह्णे मार्गशीर्षे च श्रूयते, यदाह-'तेवीसाए णाणं उप्पन्नं जिणवराण पुव्वण्हे'त्ति, तथा 'मग्गसिरसुद्ध-एक्कारसीए मल्लिस्स अस्सिणीजोगि'त्ति तथा तत्रैवास्याहोरात्रं यावच्छद्मस्थपर्यायः श्रूयते, तदत्राभिप्रायं बहुश्रुता विदन्तीति, 'कम्मरयविकरणकरं'ति कर्म्मरजोविक्षेपणकारि अपूर्वकरणमष्टमगुणस्थानकं, अनन्तं विषयानन्तत्वात् यावत्करणा-दिदं द्रष्टव्यं, अनुत्तरं-समस्तज्ञानप्रधानं, निर्व्याघातं-अप्रतिहतं, निरावरणं-क्षायिकं, कृत्स्नं-सर्वार्थग्राहकत्वात्, प्रतिपूर्णं-सकलस्वांशयुक्तत्वात्, पौर्णमासीचन्द्रवत् केवलवरज्ञानदर्शनं संशुद्धं वरविशेषग्रहणं सामान्यग्रहणं चेत्यर्थः।

तेणं कालेणं२, सव्वदेवाणं आसणातिं चलंति, समोसढा, सुणेंति अट्ठाहियमहा० नंदीसरं, जामेव दिसं पाउ०, कुंभएवि निग्गच्छति। तते णं ते जितसत्तुपा०, छप्पि०, जेट्ठपुत्ते रज्जे ठावेत्ता, पुरिससहस्सं-

वाहिणीयाओ दुरूढा, सव्विड्ढीए जेणेव मल्ली अ० जाव पज्जुवासंति; तते णं मल्ली अ० तीसे महालियाए कुंभगस्स तेसिं च जियसत्तुपामुक्खाणं धम्मं कहेति, परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया, तामेव दिसिं पडिगया, कुंभए समणोवासए जाते, पडिगए, पभावती य, तते णं जितसत्तू छप्पि राया धम्मं सोच्चा, आलित्तए णं भंते ! जाव पव्वइया, चोद्दसपुव्विणो अणंते केवले सिद्धा; तते णं मल्ली अरहा सहसंबवणाओ निक्खमतिर, बहिया जणवयविहारं विहरइ; मल्लिस्स णं भिसगपामोक्खा अट्ठावीसं गणा अट्ठावीसं गणहरा होत्था, मल्लिस्स णं अरहओ चत्तालीसं समणसाहस्सीओ उक्को०, बंधुमतिपामोक्खाओ पणपण्णं अज्जियासाहस्सीओ उक्को०, सावयाणं एगा सतसाहस्सी चुलसीतिं सहस्सा०, सावियाणं तिन्नि सयसाहस्सीओ पण्णट्ठिं च, सहस्सा छस्सया चोद्दसपुव्वीणं, वीससया ओहिनाणीणं, बत्तीसं सया केवलणाणीणं, पणतीसं सया वेउव्वियाणं, अट्ठसया मणपज्जवनाणीणं, चोद्दससया वाईणं, वीसं सया अणुत्तरोववातियाणं; मल्लिस्स अरहओ दुविहा अंतगडभूमी होत्था, तंजहा—जुयंतकरभूमी परियायंतकरभूमी य, जाव वीसतिमाओ पुरिसजुगाओ जुयंतकरभूमी, दुवासपरियाए अंतमकासी; मल्ली णं अरहा पणुवीसं धणूतिमुद्धं उच्चत्तेणं, वण्णेणं पियंगुसमे, समचउरंससंठाणे, वज्जरिसभणारायसंघयणे, मज्झदेसे सुहंसुहेणं विहरित्ता, जेणेव सम्मेए पव्वए, तेणेव उवागच्छइ २ त्ता, संमेयसेलसिहरे पाओवगमणुववण्णे, मल्लीण

१ ०या जाव चो० ग ।

य एगं वाससतं आगारवासं, पणपण्णं वाससहस्साति वाससयऊणातिं केवलिपरियागं पाउणित्ता, पणपण्णं वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता; जे से गिम्हाणं, पढमे मासे, दोचे पक्खे, चित्तसुद्धे; तस्स णं चेत्तसुद्धस्स चउत्थीए, भरणीए णक्खत्तेणं, अद्धरत्तकालसमयंसि, पंचहिं अज्जियासएहिं अब्भिंतरियाए परिसाए, पंचहिं अणगारसएहिं बाहिरियाए परिसाए, मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं, वग्घारियपाणी खीणे वेयणिज्जे, आउए, नामे, गोए; सिद्धे एवं परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा;-जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए, नंदीसरे अट्ठाहियाओ पडिगयाओ; एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सूत्रम्-८४ ॥ मल्लीणायज्झयणं संमत्तं ॥ ८ ॥

'अट्ठाहियामहिमं' ति-अष्टानामह्नां समाहारोऽष्टाहं, तदस्ति यस्यां महिमायां साऽष्टाहिका, इदं च व्युत्पत्तिमात्रं, प्रवृत्तिस्तु महिमामात्र एवेति दिवसस्य मध्ये तद्द्वयं न विरुध्यते इति; 'दुविहा अंतकरभूमि'त्ति-अन्तकराः-भवान्तकराः निर्वाणयायिनस्तेषां भूमि-कालान्तरभूमिः, 'जुयंतकरभूमी'त्ति-इह युगानि-कालमानविशेषास्तानि च क्रमवर्त्तीनि तत्साधर्म्याद्ये क्रमवर्त्तिनो गुरुशिष्यप्रशिष्यादिरूपाः पुरुषास्तेऽपि युगानि तैः प्रमिताऽन्तकरभूमिः युगान्तकरभूमिः, 'परियायंतकरभूमी'ति पर्यायः-तीर्थंकरस्य केवलित्वकालस्तमाश्रित्यान्तकरभूमिर्या सा तथा तत्र, 'जावे'त्यादि इह पञ्चमी द्वितीयार्थे द्रष्टव्या ततो यावद्विंशतितमं पुरुष एव युगं पुरुषयुगं विंशतितमं प्रतिशिष्यं यावदित्यर्थः, युगान्तकरभूमिर्मल्लिजिनस्याभवत्;

मल्लिजिनादारभ्य तत्तीर्थे विंशतितमं पुरुषं यावत् साधवः सिद्धास्ततः परं सिद्धिगमनव्यवच्छेदोऽभूदिति हृदयं, 'दुवासपरियाए'त्ति-द्विवर्षपर्याये केवलिपर्यायापेक्षया भगवति जिने सति अन्तमकार्षीत्-भवान्तमकरोत्, तत्तीर्थे साधुर्नाराद् कश्चिदपीति; 'दुमासपरियाए' इति क्वचित्, क्वचिच्च-'चउमासपरियाए' इति दृश्यते; 'वग्घारियपाणी'ति-प्रलम्बितभुजः, 'जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए'त्ति, यथा जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यां ऋषभस्य निर्वाणमहिमोक्तस्तथेह मल्लिजिनस्य वाच्य इत्यर्थः, स चैवमर्थतः-यत्र समये मल्लिरर्हन् कालगतो व्यतिक्रान्तः समुद्घातः छिन्नजातिजरामरणबन्धनः सिद्धः, तत्र समये शक्रश्चलितासनः प्रयुक्तावधिर्विज्ञातजिननिर्वाणः सपरिवारः सम्मेतशैलशिखरेऽवततार, ततोऽसौ विमना निरानन्दोऽश्रुपूर्णनयनो जिनशरीरकं त्रिःप्रदक्षिणीकृत्य अनतिदूरासन्ने नमस्यन् पर्युपास्ते स्म, एवं सर्वेऽपि वैमानिकादयो देवराजाः, ततः शक्रो देवैर्नन्दनवनात् आनायितगोशीर्षसरसदारुविहितचितित्रयः क्षीरसमुद्रादानीतक्षीरोदकेन जिनदेहं स्नापयामास, गोशीर्षचन्दनेनानुलिलेप, हंसलक्षणं शाटकं निवासयामास, सर्वालङ्कारविभूषितं चकार, शेषा देवा गणधरानगारशरीरकाण्येवं चक्रुः; शक्रस्ततो देवैस्तिस्रः शिबिकाः कारयामास, तत्रैकत्रासौ जिनशरीरमारोपयामास, महद्धर्या च चितिस्थाने नीत्वा चितिकायां स्थापयामास, शेषदेवा गणधरानगारशरीराणि द्वयोः शिबिकयोरारोप्य चित्योः स्थापयामासुः; ततः शक्रादेशादग्निकुमारा देवास्तिसृष्वपि चितिष्वग्निकायं विकुर्वन्तो वायुकुमारास्तु वायुकायं, शेषदेवाश्च कालागुरुप्रवरकुन्दरुक्कतुरुक्कधूपान् घृतं मधु च कुम्भाग्रशः प्रचिक्षिपुः; ततो मांसादिषु दग्धेषु मेघकुमारा देवाः क्षीरोदकेन चितीर्निर्वापयामासुः, ततः शक्रो भगवतो दक्षिणमुपरितनं सक्थि जग्राह, ईशानश्च वामं, चमरोऽधस्तनं दक्षिणं, बलिर्वामं, शेषा यथाऽर्हमङ्गोपाङ्गानि गृहीतवन्तः, ततस्तीर्थकरादिचितिक्षि-

तिषु महास्तूपान् चक्रुः, परिनिर्वाणमहिमानं च; ततः शक्रो नन्दीश्वरे गत्वा पूर्वस्मिन्नञ्जनकपर्वते जिनायतनमहिमानं चकार, तल्लोकपालास्तु चत्वारश्चतुर्षु पूर्वाञ्जनपार्श्ववर्त्तिषु दधिमुखपर्वतेषु सिद्धायतनमहिमानं चक्रुः; एवमीशानः उत्तरस्मिं- स्तल्लोकपालास्तत्पार्श्ववर्त्तिदधिमुखेषु, चमरो दक्षिणाञ्जनके तल्लोकपालास्तथैव, बलिः पश्चिमेऽञ्जनके तल्लोकपालास्तथैव; ततः शक्रः स्वकीये विमाने गत्वा सुधर्म्मसभामध्यव्यवस्थितमाणवकाभिधानस्तम्भवर्त्तिवृत्तसमुद्गकानवतार्य सिंहासने निवेश्य, तन्मध्यवर्त्तिजिनसकथीन्यपूपुजत् मल्लिजिनसक्थि च तत्र प्राक्षिपद्, एवं सर्वे देवा इति; 'एव'मित्यादि निगमनम् । इह च ज्ञाते यद्यपि दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकयोजना सूत्रेण न दर्शिता, तथापि द्रष्टव्या, अन्यथा ज्ञातत्वानुपपत्तेः; सा च किलैवम्—"उग्गत- वसंजमवओ पगिट्ठफलसाहगस्सवि जियस्स । धम्मविसएवि सुहुमावि होइ माया अणत्थाय ॥ १ ॥ जह मल्लिस्स महाबल- भवंमि तित्थयरनामबंधेऽवि । तवविसय थेवमाया जाया जुवइत्तहेउत्ति ॥ २ ॥" समाप्तमिदमष्टमज्ञाताध्ययनविवरणम् ।

---

१ सा० उग्रतपःसंयमवतः प्रकृष्टफलसाधकस्यापि जीवस्य धर्मविषयाऽपि सूक्ष्माऽपि भवति माया पुनरनर्थाय ॥ १ ॥ यथा मल्लया महाबलभवे तीर्थकरनामबन्धेऽपि तपोविषया स्तोका माया जाता युवतिभावहेतुः ॥ २ ॥

निर्वाण- स्थाने स्तूपादि- रचना- वर्णनम् ।